और फूलों की बरसात हुई
(Translation of "And The Flowers Showered".)

प्रवचन-क्रम

1. पुष्प वर्षा होने लगी..2
2. एकढीठ-छात्र...20
3. उत्तेजना से भरा स्वभाव..39
4. मार्ग क्या है?...60
5. क्या वह मर गया है?...80
6. धर्नुविद्या की कला...101
7. मठ में लगी हुई आग...118
8. तोज़ान के पांच पाउन्ड़स..138
9. बहरे, गूंगे और अंधे होना..154 10...द्वैतता अर्थात दोनों ओर देखना .... 179 11..न मन, न बुद्ध और न विषय वस्तुएं 197

1

और फूलों की बरसात हुई
पहला प्रवचन

पुष्प वर्षा होने लगी

बुद्व के शिष्यों में से सुभूति एक था। वह शून्यता की सामर्थ्य को समझने में समर्थ था जिसकी दृष्टि में विषयी और विषय और उसके सापेक्ष संबंध में उनके सिवाय कुछ भी अस्तित्व में नही रहा।

एक दिन, जब सुभूति एक वृक्ष के नीचे सर्वोच्च शून्यता की भावदशा में बैठा हुआ था, कि उसके चारों ओर पुष्प बरसने प्रारम्भ हो गए। देवताओं ने बहुत धीमें स्वर में, जैसे लगभग पफुसपफुसाओं हुए उससे कहा:
"हम शून्यता पर दिए गए आपके प्रवचन के लिए-
आपकी स्तुति कर रहे हैं।"
सुभूति ने कहा: " लेकिन मैंने तो शून्यता पर कुछ भी नहीं कहा है।" देवताओं ने प्रत्युत्तर में कहा: आपने शून्यता पर न कुछ कहा है।
और न हमने शून्यता पर कुछ भी सुना है यही वास्तविक शून्यता है।

और सुभूति पर वर्षा के समान पुष्प बरसने लगे।

हाँ, यह होता है। यह एक अलंकार नहीं है, यह एक तथ्य है इसलिए इस कहानी
को अलंकारित रूप में मत लो। यह शाब्दिक रूप से भी सत्य है...
कोई एक वैयक्तिक आत्मा अंतिम रूप को उपलब्द्ध होती है।
हम उस अखण्ड अस्तित्व के एक भाग हैं और वह अखण्ड तुमसे उदासीन नहीं
है हो भी नहीं सकता। एक मां अपने स्वयं के बच्चे से कैसे उदासीन हो सकती है। यह असंभव है। जब बच्चा विकसित होता हैं माँ भी उसके साथ विकसित होती है। जब बच्चा प्रसन्न होता है मां भी उसके साथ प्रसन्न होती हैं जब बच्चा नाचता है तो मां के अंदर भी कुछ चीज नृत्य करती है। जब बच्चा बीमार होता है, तो मां भी बीमार हो जाती है जब बच्चा दुखी होता है वो मां भी दुःखी हो जाती है... क्योंकि वे दो नहीं है वे एक है उनके हृदय एक सुरताल में धड़कते हैं।
अखण्ड अस्तित्व तुम्हारी मां है। वह अखण्ड तुमसे उदासीन नही है। तुम अपने हृदय में सत्य को जितनी अधिक गहराई तक संभव हो, प्रवेश करने दो, क्योंकि यह सचेतनता थी कि अखण्ड तुम्हारे साथ ही प्रसन्नता का अनुभव करता है, तुम्हें बदल देगी। तब तुम पृथक नहीं हो, तब तुम यहां एक परदेसी नहीं हो तब तुम एक गृहविहिन घुमक्कड़ नहीं हो, तब यह एक घर है, और अखण्ड अस्तित्व तुम्हारा पालन पोषण करता है, तुम्हारे बारे में फिक्र करता है ओर तुमसे प्रेम करता है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि जब एक व्यक्ति बुद्धत्व को उपलब्ध होता है, जब कोई व्यक्ति सत्य के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचता है, तो पूरा अस्तित्व नृत्य करता है, पूरा अस्तित्व गीत गाता है और पूरा अस्तित्व उत्सव आनंद और समारोह मनाता है। यह शाब्दिक रूप से भी सत्य है। यह कोई अलंकार मात्र नहीं है, यह बात स्मरण रहे, अन्यथा तुम पुरी स्थिति से ही चूक जाओगे।
पुष्प बरसने लगते हैं और तब वे बरसते चले जाते है वे कभी भी नही रूकते।
बुद्वत्व को उपलब्ध होने के लिए जो पुष्प वर्षा हुई, वह अभी भी हो रही है। सुभूति के लिए जो पुष्प बरसे, वे अभी भी बरस रहे हैं तुम उन्हें नहीं देख सकते, इसलिए नहीं कि वे नही बरस रहे हैं बल्कि इसलिए क्योंकि तुम उन्हें देखने में समर्थ नहीं हो। अस्तित्व उन सभी बुद्वों के लिए जो अभी तक हुए है उन सभी के लिए जो बुद्वत्व उपलब्ध हो रहे हैं और उन सभी के लिए जो बुद्व होंगे। शाश्वत रूप से समारोह मनाए चली जाती है।- क्योंकि अस्तित्व के लिए, अतीत वर्तमान और भविष्य विद्यमान नहीं है। वह एक निरन्तरता है। वह एक शाश्वतता है केवल अभी ही अस्तित्व में है। अभी अनंत है।

उनकी वर्षा अभी भी हो रही है लेकिन तुम उन्हें नहीं देख सकते। जब तक
वे तुम्हारे लिए न बरसे, तुम उन्हें नही देख सकते। और एक बार तुम उन्हें अपने लिए बरसता देख लेते हो तो तुम देखोगे कि वे प्रत्येक बुद्व के लिए और प्रत्येक बुद्वत्व को उपलब्ध होने वाली आत्मा पर निरंतर बरस रहे है। पहली बात यह कि तुम्हें जो भी घटित होता है, अस्तित्व उसकी देखभाल करता है। अस्तित्व निंरतर प्रार्थना कर रहा हैं कि अंतिम सत्य तुम्हें भी घटित होना चाहिए। वास्तव में तुम कुछ भी नहीं हो, बल्कि अखण्ड अस्तित्व के द्वारा अंतिम सत्य तक पहुंचने के लिए बढ़ाया गया एक हाथ हो। तुम कुछ भी नहीं हो, बल्कि अखण्ड अस्तित्व से चन्द्रमा को स्पर्श करने को आती हुई एक लहर हो। तुम कुछ भी नहीं हो, बल्कि एक पुष्प का खिलना हो, जिससे तुम्हारे द्वारा अखण्ड अस्तित्व सुंगध के साथ भर जाए।
यदि तुम स्वयं अपने "मैं" को छोड़ सकते हो, तो व पुष्प इसी सुबह इसी क्षण तुम पर बरस सकते हैं। देवता हमेशा तैयार हैं, उनके हाथ सदा पुष्पों के साथ भरे रहते हैं। वे पूरी तरह से निरिक्षण करते है और प्रतीक्षा करते है जब कभी भी कोई व्यक्ति एक सुभूति की भांति शून्य होता है, जब कभी भी कोई व्यक्ति एक अनुपस्थिति की भांति होता है, अचानक पुष्प बरसना प्रारम्भ हो जाते हैं।
यह आधार भूत सत्यों में से एक है। बिना इसके वहां आस्था की कोई भी संभावना नहीं है और इसके बिना तुम्हारी भी कभी सत्य तक पहुंचने की कोई भी संभावना नहीं है। जब तक कि अखण्ड अस्तित्व सहायता नही करता, तुम्होरे लिए वहाँ तक पहुंचने की कोई भी संभावना नहीं है जब तक कि अखण्ड अस्तित्व सहायता नहीं करता तुम्हारे लिए वहां तक पहुंचने की कोई भी संभावना नहीं है तुम कैसे पहुंच सकते हो? और सामान्य रूप से हमारे मन ठीक इसके विपरित सोचते हैं। हम अखण्ड अस्तित्व को एक मित्र की भांति नहीं, एक शत्रु की भांति सोचते हैं और उसे कभी मां की भांति नही सोचते हैं। हम पूरे अस्तित्व के बारे में यों सोचते हैं जैसे मानो वह हमें नष्ट करने का प्रयास कर रहा है। हम अखण्ड अस्तित्व की ओर जन्म के द्वार के द्वारा नहीं, मृत्यु के द्वार के द्वारा देखते हैं। तुम्हें ऐसा प्रतीत होता है जैसे मानो पुरा अस्तित्व तुम्हारे विरूद्व तुमसे संघर्ष कर रहा हो और तुम्हें तुम्हारे लक्ष्यों और उद्देश्यों तक पहुंचने और उन्हें सफल बनाने के लिए तुम्हें अनुमति नहीं दे रहा हो। इसलिए तुम उसके साथ निरन्तर युद्व कर रहे हो। ओैर तुम जितना अधिक लड़ते हो, उतनी ही अधिक तुम्हारी गलत समझ उसका सत्य होना सिद्व करती है, क्योंकि यदि तुम लड़ते हो, तो तुम्हारी अपना लड़ना ही अखण्ड अस्तित्व के द्वारा प्रतिबिम्बित होता है।
स्मरण रहे, अपूर्ण अस्तित्व तुम्हें संभालता है। जब तुम उससे लड़ते हो, पूरा अस्तित्व तुम्हें सहारा देती है जब तुम लड़ते हुए गलत होते हो वह तब भी तुम्हें संभालता है यह दूसरा सत्य है जो भली- भांति समझ लेना है। यदि तुम इसे नही समझते, तो तुम्हारे लिए आगे बढ़ना कठिन होगा। यदि तुम अखण्ड अस्तित्व के साथ लड़ते हो, वह तब भी तुम्हें संभालता है क्योंकि वह संभलने ओैर सहारा देने के सिवा अन्य कोई दूसरा कार्य कर ही नहीं सकता। यदि तुम गलत की ओर जाते हो, वह तब भी तुम्हारी देखभाल और फिक्र करता है। यदि बच्चा कुछ गलत कार्य करता है अथवा गलत दिशा में चला जाता है मां तब भी उसकी फिक्र करती है यदि बच्चा एक चोर बन जाता है अथवा बीमार होता है, मां तब भी उसकी फिक्र करेगी। वह बच्चे को विष नही दे सकती। यदि बच्चा पूरी तरह गलत दिशा में भटक जाता है, मां तब भी उसके लिए प्रार्थना करेगी। जीसस की दो भाइयों की कहानी का यही अर्थ है।
एक भाई घर से दुर चला गया, और चला ही नहीं गया बल्कि भटक गया। उसने अपने पिता से पाई विरासत का बड़ा भाग जुए और शराब पीने में व्यर्थ नष्ट कर दिया और एक भिखारी बन गया। दूसरा पिता के ही साथ बना रहा। उसके व्यापार में सहायता की, खेतों पर और बगीचों पर कार्य किया। उसने पिता की समर्पित भाव से सेवा करते हुए हर तरह की उनकी सहायता की और विरासत में मिली सम्पत्ति में वृद्वि की। तभी अचानक सूचना आई कि दूसरा भाई भिखारी बन गया है और सड़को पर भीख मांग रहा है पिता का पूरा हृदय उसके लिए पीड़ित रहने लगा और उसकी सभी प्रार्थनाएं उसी के लिए होती थी। वह अपने निकट रहने वाले बेटे

को पूरी तरह भूल गया और केवल उसी को याद करता रहा जो उससे दूर था। रात में सपनो में वह दूसरा ही मौजूद रहता था और वह बेटा जो उसके निकट था, उसके लिए कार्य कर रहा था और जो प्रत्येक तरह से अच्छा था, वह जैसे मौजूद ही नहीं था।
और तब एक दिन भिखारी बना वह बेटा घर पर वापस लौटा, और पिता ने उसके लिए
एक बड़ी दावत का आयोजन किया। वह भला बेटा जो खेतों से घर आ रहा था उससे किसी व्यक्ति ने कहा- "अपने पिता के अन्याय को तो देखो। तुम उससे प्रेम करते हो, उसकी देखभाल तथा सेवा करते हुए उसके साथ ही पूरी तरह से अच्छे और नैतिक बने रहते हो और तुमने उनकी इच्छा के विरूद्व कभी भी कोई कार्य नहीं किया, लेकिन उन्होनें तुम्हारे लिए कभी भी एक दावत का आयोजन नहीं किया। तुम्हारे भाई की दावत के लिए सबसे अधिक मोटा ओर तगड़ा दुम्बा जिन्हें किया गया है, जो घर से भटककर दूर भाग गया था। वह एक भिखारी की भांति आ रहा है और पूरा घर समारोह मना रहा है"
उस भले बेटे को बहुत चोट लगी। यह दावत ही असंगत और मूर्खतापूर्ण थी।
वह क्रोधित होता हुआ घर वापस आया और अपने पिता से कहा- "आप यह क्या कर रहे है? आपने कभी मेरे लिए तो दावत नहीं दी, जब कि मैं आपकी सेवा करता रहा हूं और इस दूसरे बेटे ने आपके लिए क्या किया है केवल उसने अपने भाग की संपत्ति को जुआ आदि अन्य प्रत्येक तरह के बुरे कार्यो में व्यर्थ नष्ट कर दिया और वह एक भिखारी बनकर घर लौटा है।"
पिता ने कहा- "हां, क्योंकि तुम मेरे इतने अधिक निकट हो और तुम बहुत भले और आनंदित हो, इसलिए मुझे तुम्होरे बारे में पिफक्र करने की जरूरत नहीं हैं। लेकिन वह बेटा जो भटक गया है-मेरी प्रार्थनाएं और मेरा प्रेम उसी का अनुसरण करता हे।"
और जीसस बार-बार अपने शिष्यों को यह कहानी सुनाया करते थे, क्योंकि जैसा कि उन्होनें कहा- "परमात्मा संतो को भूल सकता है, इस बारे में उनका स्मरण रखने की जरूरत ही नहीं है लेकिन परमात्मा कभी पापियों और अपराधियों को नही भूल सकता।"
यदि वह एक पिता है और मैं तुमसे कहता हूं कि वह पिता न होकर एक मां है। पिता एक ऐसी गहन चीज नही है जैसी की एक मां होती है इसी कारण हिंदू उसे मां कहते हैं परमात्मा एक मां है वह एक मां की तरह पालन-पोषण और रक्षा करती है। और जीसस ने कहा कि जब कभी भी ऐसा होता है कि एक गड़़रिया घर वापस लौट रहा है और वह देखता है कि एक भेडं़े खो गई है वह सभी भेड़ो को जंगल में अंधेरी रात में छोड़ देता है और खोई हुई भेड़ की तलाश में निकल पड़ता है। जब वह खोई हुई घायल भेड़ को खोज लेता है तो वह खोई हुई भेड़ को अपने कंधो पर लेकर आनंद मनाता घर वापस लौटता है, क्योंकि वह जो खो गया था, वह फिर से मिल जाता है।
जब कभी भी ऐसा होता है, जब कभी भी खोई हुई एक भेड़ फिर से मिल जाती है गड़रिया समारोह मनाता है। हम सभी खोई हुई भेड़े ही है। इस समारोह मनाने में ही पुष्प बरसना शुरू हो जाते हैं।
पूरब में देवता मानकर हम जिनकी पूजा करते हैं, वे व्यक्ति नहीं है, वे प्राकृतिक शक्तियां हैं। केवल एक हृदय और एक हृदय की धड़कन देने के लिए प्रत्येक शक्ति में चेतन धर्म का आरोपण कर एक प्राणधारी बना दिया गया है- केवल उसे अधिक ध्यान देने के लिए ही ऐसा किया गया है। हिंदुओं और बौद्धों ने इसीलिए सभी प्राकृतिक शक्तियों को देवताओं में बदल दिया है और वे ठीक हैं। जब सुभूति शून्यता को उपलब्ध हुआ, देवताओं ने पुष्प वर्षा करनी प्रारम्भ कर दी।
और आर्य बहुत सुंदर और आकार्षक हैं। हिंदुओं और बौद्धों के लिए सूर्य
एक देवता है, आकाश एक देवता है और प्रत्येक वृक्ष के पास अपना देवता है, जिसकी पूजा की जाती है। वायु एक देवता है, पृथ्वी एक देवी है। प्रत्येक शक्ति के पास अपना एक हृदय है- यही इसका अर्थ है। प्रत्येक अनुभव करता है, यही इसका अर्थ है। कोई भी तुमसे उदासीन नहीं है- और जब तुम सत्य को उपलब्ध होते हो, तो प्रत्येक शक्ति समारोह मनाती है। तब सूर्य एक भिन्न ढंग से चमकता है। उसके गुण और लक्षण बदल जाते हैं।

वे लोग जो अज्ञानी हैं; उनके लिए प्रत्येक चीज़ वैसी ही समान बनी रहती है। सूरज पुराने ढंग से ही चमकता है, क्येंकि उसके गुण और लक्षणों का परिवर्तन बहुत सूक्ष्म होता है और केवल वह एक ही उसका अनुभव कर सकता है, जो शून्य हो गया हो। वह स्थल नहीं होता है और अहंकार उसका अनुभव नहीं कर सकता है, क्येंकि स्थूलता ही उसका क्षेत्र है। सूक्ष्म का केवल तभी अनुभव किया जा सकता है, जब वहां कोई भी अहंकार न हो, क्येंकि वह इतना अधिक सूक्ष्म है कि यदि तुम वहां एक उपस्थिति के रूप में हो, तो तुम उससे चूक जाओगे। तुम्हारी उपस्थिति का होना ही एक अठरोध है।
जब कोई एक पूर्ण रूप से शून्य हो जाता है, सूर्य के गुण तुरंत बदल जाते हैं। उसके पास इस बारे में एक स्वागत-गान होता है। उसकी उष्णता केवल मात्र उष्णता ही नहीं रह जाती, उसके पास एक ऊष्म प्रेम होता है- वह एक प्रेमपूर्ण ऊष्मा होती है। वायु भिन्न तरह से चलने लगती है वह तुम्हारे चारों ओर थोड़ी अधिक देर तक रुकती है, वह कहीं अधिक संवेदनशीलता से तुम्हारा स्पर्श करती है, जैसे मानो उसके पास हाथ हों। वह स्पर्श पूर्ण रूप से भिन्न होता है। अब उस स्पर्श के चारों ओर एक संवेदनशीलता होती है। वृक्ष में फूल खिलेंगे, लेकिन उसी ढंग से नहीं। अब पुष्प वृक्ष में ऐसे आ रहे हैं जैसे मानों वे हर्ष से उछल रहे हों।
यह कहा जाता है कि बुद्ध जब कभी एक वन से होकर गुज़रते थे तो वृक्ष पुष्पित होना शुरू हो जाते थे, जबकि उनके खिलने का मौसम भी नहीं होता था। ऐसा होना ही है। बुद्ध को पहिचानने में मनुष्य भूल कर सकते हैं, लेकिन वृक्ष भूल कैसे कर सकते हें? मनुष्य के पास मन होता है और मन उनसे चूक सकता है लेकिन वृक्ष उनसे कैसे चूक सकते हें? उनके पास कोई मन नहीं होते, और जब एक बुद्ध वन में चलता है, उनमें फूल खिलना प्रारम्भ हो जाते हैं। यह स्वाभाविक है, ऐसा होना ही चाहिए। यह एक चमत्कार नहीं है। लेकिन तुम उन पुष्पों को देखने में समर्थ नहीं हो सकते हो, क्येंकि वे पुष्प वास्तव में भौतिक रूप से नहीं हैं। वे पुष्प वृक्षों की अनुभूतियां हैं। जब बुद्ध उनके निकट से गुज़रते हैं तो वृक्ष एक भिन्न तरह कंपते हुए डोलने लगते हैं, वे एक भिन्न ढंग से धड़कने लगते हैं, और वे और अधिक वैसे ही नहीं बने रहते। यही इसका अर्थ है। पूरा अस्तित्व तुमहारे लिए फिक्र करता है। यह अखण्ड अस्तित्व ही तुम्हारी मां है।
अब इस बोध-कथा को समझने का प्रयास करो, जो श्रेष्ठतम बोध कथाओं में एक
है।
सुभूति बुद्ध के शिष्यों में से एक था।
बुद्ध के पास हजारों शिष्य थे। सुभूति उनमें से एक था। उसके बारे में विशेष
भी नही ंथा। वास्तव में सुभूति के बारे में कोई भी व्यक्ति अधिक नहीं जानता है और उसके बारे में केवल यही कहानी है। वहां ख्याति प्राप्त; प्रसिद्ध, महान विद्वान, राजकुमार और असाधारण शिष्य थे। उन राजकुमारों के
पास एक बड़ा राज्य था, जिसका परित्याग कर उसे छोड़कर वे बुद्ध के शिष्य बन गए
थे, और उन सभी के मध्य उनका एक नाम था। लेकिन उनमें से किसी पर पुष्पों की वर्षा नहीं हुई। पुष्पों ने इस सुभूति को चुना, जो केवल उन शिष्यों में से एक था और जिसके बारे में विशेष कुछ भी नहीं था।
पुष्प केवल तभी बरसते हैं, अन्यथा एक बुद्ध के चारों ओर एकत्रित शिष्यों में तुम भी एक विशेष बन सकते हो- और तुम चूक सकते हो। एक बुद्ध के निकट बने रहने से भी, तुम अहंकारी होने का अनुभव कर सकते हो, तुम एक धार्मिक शासन सृजित कर सकते हो और कह सकते हो- "मैं एक सामान्य शिष्य नहीं हूं, मैं कुछ विशिष्ट हूं। मैं ठीक बुद्ध के बाद हूं। दूसरे लोग केवल सामान्य हैं, एक समूह हैं, लेकिन मैं एक समूह नहीं हूं। मेरे पास अपना एक नाम है, एक अपनी पहिचान है। बुद्ध के पास आने से पूर्व भी मैं एक विशिष्ट व्यक्ति था-और वे विशिष्ट बने ही रहते हैं।
सारिपुत्र बुद्ध के पास आया। जब वह आया तो उसके अपने पांच सौ शिष्य उसके साथ थे। वह एक सद्गुरु था- निश्चित रूप से वह बोध को उपलब्ध सद्गुरु न था, वह कुछ भी नहीं जानता था और तब भी वह अनुभव करता था कि वह सभी कुछ जानता था, क्योंकि वह एक महान विद्वान था। वह सभी धर्मशास्त्रों को जानता था। वह एक ब्राह्मण के घर में जन्मा था और बहुत अधिक प्रतिभाशाली और कुशाग्र

बुद्धि का था। प्रारम्भिक बचपन से ही वह अपनी असाधारण स्मृति के कारण जाना जाता था- और वह किसी भी चीज़ को याद रख सकता था। केवल एक धर्मग्रंथ को एक बार पढ़कर ही वह तुरन्त उसकी स्मृति बन जाता था। वह पूरे देश भर में विख्यात था। जब वह बुद्ध के पास आया तो वह "कोई एक" व्यक्ति था। किसी रूप से कुछ होना ही उसके लिए एक अवरोध बन गया था।
यह देवता बहुत अधिक अतर्कपूर्ण और अपरिमेय प्रतीत होते हैं- उन्होंने सुभूति जैसे एक शिष्य को चुना, जो केवल शिष्यों के समूह में एक सामान्य शिष्य था और उसके बारे में विशिष्ट कुछ भी न था। ये देवता सनकी प्रतीत होते हैं। उन्हें सारिपुत्र को चुनना चाहिए था, जो चुने जाने योग्य एक उचित व्यक्ति था। लेकिन उन्होंने उसका चुनाव नहीं किया। उन्होंने आनंद को भी नहीं चुना जो बुद्ध का चचेरा भाई था और जो निरंतर चालीस वर्षों तक बुद्ध की एक छाया बनकर रहा और एक क्षण के लिए भी वह कभी बुद्ध से दूर नहीं रहा। वह बुद्ध के साथ एक ही कक्ष में सोता था और वह बुद्ध के साथ निरंतर उनके बगल में रहते हुए ही भ्रमण करता था। वह सबसे अधिक ख्याति प्राप्त व्यक्ति था। वे सभी बोध कथाएं जो बुद्ध ने कही, वे आनंद को बताते हुए प्रारम्भ होती है। वह कहते हैं- "आनंद। एक बार ऐसा हुआ। आनंद और आनंद और आनंद- वह उसका नाम दोहराए चले जाते हैं। लेकिन ये देवता पागल हैं, जो उन्होंने सुभूति को चुना- एक "कोई नहीं" "कुछ नहीं" को। स्मरण रहे, केवल "कोई नहीं" जैसे लोग ही चुने जाते हैं- क्योंकि यदि तुम इस संसार में कोई अथवा कुछ हो, तो तुम उस दूसरे संसार में कुछ भी नहीं हो। यदि यहां तुम एक "कोई नहीं" हो, तो उस दूसरे संसार में तुम "कुछ" हो जाते हो। मूल्यों में अंतर है। यहां स्थूल चीज़ें मूल्यवान हैं, वहां सूक्ष्म चीज़ों का मूल्य है। और सबसे अधिक सूक्ष्म से भी सूक्ष्मतम है- न हो जाना। सुभूति संघ में रहता था- कोई उसका नाम तक नहीं जानता था- और जब यह समाचार आया कि सुभूति पर पुष्प बरस रहे हैं तो प्रत्येक व्यक्ति को आश्चर्य हुआ। यह सुभूति कौन है? हमने उसके बारे में कभी नहीं सुना। क्या ऐसा किसी संयोगवश हो गया? क्या देवताओं ने गल्ती से उसका चुनाव किया?"- क्योंकि वहां ऐसे अनेक थे जो धार्मिक अनुशासन की दृष्टि से उससे कहीं अधिक उच्च थे। सुभूति को अनिवार्य रूप से उनमें अंतिम होना चाहिए था। सुभूति के बारे में केवल यही एक कहानी है।
इसे भली भांति समझने का प्रयास करो। तब तुम एक महान सद्गुरु के निकट
एक "कोई नहीं" बने रहते हो। देवता सनकी हैं, वे केवल तुम्हें तभी चुनेंगे जब तुम होते ही नहीं हो। और जब तुम होने का प्रयास करते हो और तुम जितने अधिक "कुछ" होने में तुम सफल होते हो तुम उतना ही अधिक चूक जाओगे। यह वही चीज़ है जो हम इस संसार में कर रहे हैं और यही हम एक बुद्ध के चारों ओर भी करना प्रारम्भ कर देते हैं। तुम समृद्धियों को पाने की लालसा करते हो। क्यों?- क्योंकि समृद्धियों के साथ तुम कुछ अथवा "कोई एक" बन जाते हो। तुम प्रतिष्ठा और शक्ति पाने की लालसा करते हो। क्यों?- क्योंकि प्रतिष्ठा और शक्ति के साथ तुम सामान्य नहीं हो। तुम सीखने, छात्रवृत्ति पाने और ज्ञान प्राप्त करने के लिए लालसा करते हो। क्यों?- क्योंकि ज्ञान के साथ तुम्हारे पास गर्व करने को कुछ चीज़ होती है।
लेकिन देवता इस तरह से तुम्हें नहीं चुनेंगे। उनके पास चुनाव करने के अपने अलग तरीके हैं। यदि तुम स्वयं अपना ही ढोल बहुत अधिक पीट रहे हो, तो इस बारे में देवताओं को तुम पर फूल बरसाने की कोई भी आवश्यकता नहीं है- तुम स्वयं अपने ही ऊपर फूलों को फेंक रहे हो, जिसकी वहां कोई ज़रूरत ही नहीं है। जब तुम किसी भी चीज़ के बारे में गर्व करना बंद कर देते हो, तो अचानक पूरे अस्तित्व को तुम पर गर्व होने लगता है। जीसस कहते हैं- "जो लोग इस संसार में प्रथम हैं, वे मेरे परमात्मा के राज्य में अंतिम हो जायेंगे ओर जो लोग यहां अंतिम हैं, वे वहां प्रथम हो जाएंगे।"
एक बार ऐसा हुआ कि एक ही शहर में एक ही दिन एक बहुत धनी व्यक्ति और एक भिखारी दोनों की ही मृत्यु हुई। भिखारी का नाम लाज़ास था। धनी व्यक्ति सीधा नर्क गया और लाज़ारुस सीधा स्वर्ग गया। धनी व्यक्ति ने ऊपर की ओर देखा और लाज़ारुस को परमात्मा के निकट बैठे हुआ पाया; और वह स्वर्ग की ओर देखकर

चिल्लाते हुए बोला- "ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ चीज गलत हो गई है। मुझे वहां होना चाहिए था और इस भिखारी लाजारुस को यहां होना चाहिए था।" परमात्मा हंसा और उसने कहा- "जो लोग अंतिम हैं, वे प्रथम हो जाएंगे ओर
जो लोग प्रथम हैं वे अंतिम हो जाएंगे। तुमने पहले ही पर्याप्त मज़े कर लिए हैं अब इस लाज़ारुस को भी थोड़ा सा आनंद लेने दो।"
और धनी व्यक्ति क्रोध के साथ बहुत गर्मी का अनुभव कर रहा था- निश्चित रूप से नर्क में तुम्हारे लिए एयरकंडीशनिंग अभी तक नहीं हुई है। उसे बहुत तेज़ प्यास लग रही थी लेकिन वहां पानी नहीं था। इसलिए उसने चीखते हुए कहा- "परमात्मा! कम से कम थोड़े से पानी के साथ लाज़ारुस को यहां भेजिए। बहुत अधिक प्यासा हूं।"
और परमात्मा ने कहा- "लाजरुस अनेक बार प्यासा था, और वह द्वार पर लगभग
मर रहा था और तुमने उसे कभी भी कुछ भी नहीं दिया। वह तुम्हारे द्वार पर भूखा मर रहा था और प्रत्येक दिन दावत होती थी और अनेक लोग आमंत्रित किए जाते थे, लेकिन उसे हमेशा तुम्हारे नौकरों के द्वारा द्वार से दूर हटा दिया जाता था क्येंकि मेहमान आ रहे होते थे जिनमें शक्तिशाली राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ, और धनी व्यक्ति होते थे और एक भिखरी का वहां खड़ा होना तुम्हें अशोभनीय दिखाई देता था। तुम्हारे नौकर उसका पीछा करते हुए उसे दूर भाग देते थे और वह भूखा होता था, जब कि जो लोग आमंत्रित किए जाते थे वे भूखे नहीं होते थे। तुमने कभी लाज़ारुस की ओर नहीं देखा और अब यह असंभव है।"
और यह कहा जाता है कि इसे सुनकर लाज़ारुस हंसा।
अनेकानेक ईसाई रहस्यदर्शियों के लिए, यह गहन कथा विचार करने योग्य बन गई। वह ठीक एक ज़ेन कुआन को समान बन गई, और मठों में ईसाइ्र रहस्यदर्शी बार-बार यह पूछा करते थे कि लाजरुस क्यों हंसा।
वह सभी चीजों की मूर्खता और व्यर्थता पर हंसा। वह कभी नहीं जानता था
कि लाजरुस के समान एक कोढ़ी और भिखारी जैसा कोई नहीं और कुछ नहीं जैसा व्यक्ति भी कभी स्वर्ग में प्रवेश करेगा। जो कुछ भी हुआ था, वह उस पर विश्वास ही न कर सका। और वह दूसरी चीज पर भी विश्वास न कर सका कि नगर के सबसे अधिक धनी व्यक्ति को नर्क में जाना चाहिए। वह हंसा।
और लाज़ारुस अभी भी हंसता है और वह तब भी हंसेगा जब तुम मर जाओगे। यदि तुम कोई कुछ हो, तो वह हंसेगा क्येंकि तुम स्वर्ग से बाहर फेंक दिए जाओगे। यदि तुम कोई भी नहीं हो और एक सामान्य व्यक्ति हो, वह तब भी हंसेगा, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारा स्वागत किया जायेगा।
इस संसार में क्योंकि अहंकार अस्तित्व में हैं, इसलिए सभी मूल्यांकन अहंकार से ही संबंधित है। दूसरे संसार में दूसरे आयाम हैं और मूल्यांकन का संबंध र्निहंकारिता से है। इसीलिए बुद्ध अनात्मा- अनन्ता पर बल देते हैं। उन्होंने कहा- "यह भी विश्वास मत करो कि मैं एक आत्मा हूं, क्योंकि वह भी एक सूक्ष्म अहंकार बन सकता है। यह मत कहो: "अहं ब्रह्मासि- मैं आत्मा हूं" मैं ही अंतिम सारभूत हूं। यह भी मत कहो क्येंकि "मैं" बहुत चतुर है। वह तुम्हें धोखा दे सकता है। यह अनेकानेक जन्मों से तुम्हें धोखा ही देता आया है। वह तुम्हें धोखा दिये चला जा सकता है। समान्य रूप से कहो- "मैं नहीं हूं", और उस "न होने" में बने रहो, उस शून्यता में बने रहो- और आत्मा से भी खाली हो जाओ।
उस एक को आत्मा से भी छुटकारा पा लेना है। एक बार आत्मा भी दूर पेंफक
दी जाती है, तो कुछ भी चीज कम नहीं हुई है। तुम अतिरेक से एक बाढ़ की तरह प्रवाहित होने लगते हो और तुम पर पुष्प बरसने लगते हैं।
सुभूति बुद्ध के शिष्यों में से एक था।
स्मरण रहे- उनमें से एक।
वह शून्यता की सामर्थ्य को समझने में समर्थ था।
वह अनेक में से केवल एक था, इसी कारण वह शून्यता की सामर्थ्य को समझने योग्य था। कोई भी व्यक्ति उसके बारे में बात नहीं करता था और न कोई भी व्यक्ति उसके बारे में जानता था। वह बुद्ध की यात्राओं में उनका अनुसरण करते हुए अनेकानेक पदों पर उनके साथ चला था। कोई भी व्यक्ति नहीं जानता था कि वह भी वहां था, यदि वह मर भी जाता तो कोई भी व्यक्ति उसके प्रति सचेत न होता। यदि वह पलायन कर कहीं दूर चला जाता तो कोई भी व्यक्ति नहीं जानता,

क्येंकि कोई भी व्यक्ति कभी यह जानता भी नहीं था कि सुभूति वहां था। उसने धीमे-धीमे "कोई नहीं" और "कुछ नहीं" बनकर शून्यता की सामर्थ्य को जाना। इसका अर्थ क्या है? ......क्येंकि वह जितना अधिक एक अनुपस्थिति बनता गया, उसने उतना अधिक यह अनुभव किया कि बुद्ध उसके निकट आ रहे थे। कोई अन्य व्यक्ति इसके प्रति सचेत नहीं था, लेकिन बुद्ध सचेत थे। जब उस पुष्प वर्षा हुई तो प्रत्येक व्यक्ति आश्चर्य कर रहा था, लेकिन बुद्ध के लिए वह एक आश्चर्य न था। जब बुद्ध को इसकी सूचना दी गई कि कुछ चीज सुभूति को घटित हुई है तो बुद्ध ने कहा- "मैं प्रतीक्षा कर रहा था। किसी भी क्षण वह घटित होने जा रहा था, क्योंकि उसने स्वयं को इतना अधिक मिटा दिया था कि किसी भी दिन यह होने जा रहा था। इस बारे में मेरे लिए इसमें कोई भी आश्चर्य नहीं है।" वह शून्यता की समार्थ्य को समझने में समर्थ था।
खाली होने के द्वारा, शून्य होने के द्वारा! तुम शून्यता की शक्ति को नहीं जानते। तुम अपने ही अंदर पूर्ण रूप से अनुपस्थित होने की शक्ति को नहीं जानते। तुम केवल अहंकार की निर्धनता को जानते है।
लेकिन समझने का प्रयास करो। अहंकार के साथ क्या तुमने वास्तव में कभी शक्तिशाली होने का अनुभव किया है? अहंकार के साथ तुमने हमेशा शक्तिहीन होने का अनुभव किया है। इसी वजह से अहंकार कहता है: "अपने साम्राज्य को थोड़ा और अधिक बड़ा बनाओ, जिससे तुम अनुभव कर सको कि तुम शक्तिशाली हो। नहीं, इस घर से कुछ भी नहीं होगा, एक और अधिक बड़े घर की आवश्यकता है। नहीं, इतने अधिक बैंक बैलेंस से कुछ नहीं होगा, एक बड़ा बैंक बेलेंस ज़रूरी है। नहीं, इतनी अधिक प्रसिद्धि से कुछ नहीं होगा, थोड़ी सी और अधिक होना चाहिए।" अहंकार हमेशा और अधिक की मांग करता है कि क्यों? यदि वह शक्तिशाली है, फिर अधिक के लिए क्यों मांगते चले जाना? और अधिक के लिए-यही लालसा कहती है, इससे प्रदर्शित होता है कि अहंकार शक्तिहीन होने का अनुभव करता है। तुम्हारे पास दस लाख रुपये हैं ओर तुम शक्तिहीन हो। अहंकार कहता है: "दस लाख से काम नहीं चलेगा। एक करोड़ होना चाहिए।" और मैं तुमसे कहता हूं कि एक करोड़ रुपयें से तुम दस गुने अधिक शक्तिहीन बन जाओगे। और तब अहंकार कहेगा- "नहीं, इससे भी काम नहीं चलेगा।"
अहंकार के साथ, तुम कुछ भी नहीं करोगे। प्रत्येक चीज़ केवल यह सिद्ध करती है कि तुम दुर्बल और शक्तिहीन हो। तुम जितनी अधिक शक्ति पाते हो उसके विरोध में तुम उतने ही अधिक शक्तिहीन होने का अनुभव करते हो। तुम जितने अधिक धनी और समृद्ध बनते हो तुम अधिक निर्धन होने का अनुभव करते हो। तुम जितने अधिक स्वस्थ होते हो तुम मृत्यु से उतने से अधिक भयभीत रहते हो। तुम जितने युवा हो, तुम उतना अधिक यह अनुभव करते हो कि वृद्धावस्था निकट आ रही है। विरोधी अथवा विपरीत ठीक कोने में कहीं आसपास होता है। और यदि तुम्हारे पास थोड़ी सी भी समझ है तो विपरीत तुम्हारी गर्दन के चारों ओर बस पहुंच ही रहा है। तुम जितने अधिक सुंदर होते हो तुम अपने अंदर की कुरूपता का उतना ही अधिक अनुभव करते हो।
अहंकार ने कभी भी शक्तिशाली होने का अनुभव नहीं किया है। वह शक्ति का केवल सपना देखता है, वह शक्ति के बारे में चिंतन मनन करते हुए सोचता है- लेकिन वे सामान्य रूप से सपनों के सिवा अन्य कुछ भी नहीं हैं। और सपने वहां केवल तुम्हारे अंदर की दुर्बलता को छिपाने के लिए हैं। लेकिन सपने वास्तविकता को नहीं छिपा सकते। तुम यहां से अथवा वहां से, अथवा किसी भागने के गुप्त मार्ग से जो कुछ भी करते हो, वास्तविकता फिर अंदर आ जाती है और तुम्हारे सभी सपनों को तोड़ देती है।
संसार में अहंकार सबसे अधिक दुर्बल चीज़ है। लेकिन कोई भी उसका अनुभव नहीं करता है, क्योंकि वह और अधिक के लिए मांगता चला जाता है और वह कभी तुम्हें स्थिति की ओर देखने का अंतराल नहीं देता है। इससे पहले तुम सचेत हो सको वह तुम्हे कहीं और आगे, और आगे धकेलता है। लक्ष्य हमेशा कहीं न कहीं क्षितिज के निकट होता है। तुम सोचते हो कि वह इतना अधिक निकट है कि मैं वहां शाम तक पहुंच जाऊंगा।
वह शाम कभी नहीं आती, और क्षितिज हमेशा समान दूरी पर बना रहता है। क्षितिज एक भ्रांति है और अहंकार के सभी लक्ष्य केवल भ्रांति होते हैं।
लेकिन वे आशा देते हैं और तुम यह अनुभव किए चले जाते हो- किसी दिन अथवा

दूसरे दिन मैं शक्तिशाली बनूंगा। ठीक अभी तुम शक्तिहीन दुर्बल और हीन बने रहते हो, लेकिन सपने में, आशा में और भविष्य में तुम शक्तिशाली बन जाते हो। तुम्हें सचेत होना चाहिए कि कई बार केवल अपनी कुर्सी पर बैठे हुए ही तुम दिन में ही सपने देखना शुरू कर देते हो कि तुम पूरे संसार के सम्राट अथवा अमेरिका के प्रेसीडेंट बन गए हो, और तुरन्त ही तुम इसमें मज़ा लेना प्रारम्भ कर देते हो कि प्रत्येक व्यक्ति तुम्हारी ओर देख रहा है और तुम प्रत्येक व्यक्ति के ध्यान का केन्द्र बिंदु बन गए हो। वह सपना ही तुम्हें प्रमुदित कर एक नशा देता है। यदि तुम इस तरह के सपने देखते हो तो तुम भिन्न ढंग से चलने लगोगे।
ऐसा ही प्रत्येक व्यक्ति के साथ हो रहा है: तुम्हारी समार्थ्य सपनों में ही बनी रहती है अन्यथा तुम दुर्बल और लाचार बने रहते हो। सत्य ठीक इसके विपरीत है, जब तुम नहीं खोजते, वह आता है। जब तुम नही ंमांगते, वह तुम्हें दिया जाता है, जब तुम लालसा नहीं करते, तो वह वहां होता है, जब तुम क्षितिज की ओर नहीं जाते तो अचानक तुम्हें अनुभव होता है कि वह हमेशा से ही तुम्हारे पास रहा है और तुमने उसे कभी नहीं जिया। वह वहां तुम्हारे अंदर है और तुम बाहर खोज रहे हो। वह वहां तुम्हारे ही अंदर है और तुम बाहर जाते हो। तुम उसे अपने साथ लिए हुए चल रहे हो और वह सर्वोत्तम शक्ति अथवा स्वयं दिव्यता तुम्हारे ही अंदर है, और तुम एक भिखारी की भांति उसे यहां और वहां देख रहे हो।
वह शून्यता की समार्थ्य को समझने योग्य था।
केवल शून्य होकर ही तुम उसे समझोगे- और इस बारे में उसे समझने का अन्य कोई भी उपाय नहीं है। तुम जो कुछ भी समझना चाहते हो, वही बन जाओ, क्योंकि केवल उसे समझने का यही एक उपाय है। एक समान्य सा व्यक्ति, कोई नहीं बनने का प्रयास करो, जिसके साथ न कोई नाम और पहिचान हो, जिसके पास दावे करने जैसा कुछ भी न हो, जिसके साथ दूसरों को बाध्य बनाने वाली कोई शक्ति न हो, दूसरों पर प्रभुत्व जमाने अथवा उन्हें अपने अधिकार में लेने की कोई भी कामना न हो और ठीक ऐसे बनो जिसकी कोई सत्ता ही न हो। इसका प्रयास करो- और देखो कि तुम कितने अधिक शक्तिशाली बन जाते हो, तुम अतिरेक से छलकती हुई कितनी अधिक ऊर्जा से भर जाते हो, तुम इतने अधिक शक्तिशाली हो जाते हो कि तुम अपनी शक्ति को बांट सकते हो, और तुम इतने अधिक आनंदित हो जाते हो कि तुम उस आनंद को लाखों लोगों को दे सकते हो। और तुम जितना अधिक देते हो, तुम उतने ही अधिक समृद्ध बन जाते हो। तुम जितना अधिक बांटते हो वह उतना अधिक बढ़ता है। तुम एक बाट बन जाते हो।
वह शून्यता की समार्थ्य को समझने में समर्थ था केवल कोई नहीं: "कुछ नहीं" बनने के द्वारा ही उसकी दृष्टि में विषयी और विषय और उसके सापेक्ष संबंध में उनके सिवा अस्तित्व में कुछ भी नहीं रहा।
यह बुद्ध के खोजे गए सबसे अधिक गहनतम ध्यानों में से एक है। वह कहते हैं कि प्रत्येक वस्तु अस्तित्व में एक दूसरे से संबंधित है, यह एक सापेक्षता है। यह परस्पर आश्रित होने के सिद्धांत पर आधारित है। वह एक परिपूर्ण नहीं है, और यही वास्तविक चीज़ है।
उदाहरण के लिए तुम निर्धन हो और मैं धनी हूं। क्या यह एक वास्तविक चीज
है अथवा केवल एक सापेक्षता है। मैं किसी अन्य व्यक्ति की अपेक्षा निर्धन हो सकता हूं और तुम किसी अन्य व्यक्ति की अपेक्षा धनी हो सकते हो। एक भिखारी भी किसी अन्य भिखारी की अपेक्षा धनी हो सकता है। इस स्थान में धनी भिखारी हैं और निर्धन भिखारी भी हैं। एक धनी व्यक्ति भी एक कहीं अधिक बड़े धनी व्यकित की तुलना में एक निर्धन हो सकता है। तुम निर्धन हो- क्या तुम्हारी निर्धनता अस्तित्वगत है अथवा केवल एक सापेक्षता है। यह एक सापेक्ष चीज़ है। यदि वहां तुलना करने को कोई भी व्यक्ति न हो, तो तुम कौन होगे- एक निर्धन व्यक्ति अथवा एक धनी व्यक्ति?
ज़रा सोचो... अचानक पूरी मनुष्यता मिट जाती है, और पृथ्वी पर तुम अकेले
बच जाते हो, तो तुम क्या होगे, निर्धन अथवा धनी? तुम सामान्य रूप से तुम ही रहोगे, न धनी होगे और न निर्धन क्योंकि तुम तुलना कैसे करोगे? तुलना करने को वहां कोई रोकफेलर नहीं है और न तुलना करने को कोई भिभारी है। जब तुम एकार्की हो, तो तुम सुंदर होगे अथवा कुरूप? तुम कोई भी नहीं होगे, तुम

रूप से तुम होगे। किसी के साथ तुलना करने को जब कोई भी नहींहोगा, तो तुम कुरूप अथवा सुंदर कैसे हो सकते हो? जैसा कुरूपता और सुंदरता, समृद्धता और निर्धनता के साथ है, कैसा ही सभी चीज़ों के साथ है। तुम बुद्धिमान होगे अथवा एक मूर्ख? मूर्ख अथवा बुद्धिमान में से तुम कुछ भी कोई भी नहीं होगे। इसलिए बुद्ध कहते हैं कि ये सभी चीजें अस्तित्व में सापेक्ष संबंधों में रहती हैं। वे अस्तिवगत नहीं हैं, और वे केवल धारणाएं हैं। और इन चीजों के बारे में, जो हैं नहीं, हम इतने अधिक चिंतित और परेशान हो जाते हैं। यदि तुम कुरूप हो तो बहुत अधिक परेशान हो जाते हो। यदि तुम सुंदर हो, तुम तब भी चिंतित हो। चिंता अथवा परेशानी किसी ऐसी चीज़ के द्वारा उत्पन्न हो रही है, जो नहीं है।
एक सापेक्ष कोई चीज नहीं होती। यह केवल एक सापेक्ष संबंध है, जैसे मानो तुमने आकाश में एक डिजायन खींची हो अथवा हवा में एक फूल बनाया हो। इन सापेक्ष चीजों की अपेक्षा पानी का एक बुलबुला कहीं अधिक सारपूर्ण होता है। यदि तुम अकेले हो, तो तुम कौन हो? कोई भी नहीं हो। कोई कुछ होना, किसी व्यक्ति के सापेक्ष संबंध में आता है।
इसका अर्थ है कि केवल "कोई नहीं" होना भी स्वभाव में ही बने रहना है केवल "कोई नहीं" होना, अस्तित्व में ही बने रहना है।
और स्मरण रहे, तुम अकेले हो। केवल तुम्हारे बाहर ही समाज अस्तित्व में है। अपने अंदर गहराई में तुम अकेले हो। अपनी आंखें बंद करो और अंदर देखो कि तुम सुंदर हो अथवा कुरूप हो। दोनों ही धारणाएं विलुप्त हो जाती हैं। वहां अंदर न तो सुंदरता है और न कुरूपता है। अपनी आंखें बंद करो और यह चिंतन तथा मनन करो कि तुम कौन हो? आदरणीय हो अथवा सम्मान योग्य नहीं हो। नैतिक हो या अनैतिक हो? युवा हो अथवा वृद्ध हो? काले हो अथवा गोरे हो? एक स्वामी हो अथवा एक गुलाम हो? तुम कौन हो? अपनी आंखें बंद करो और तुम्हारे अकेलेपन में प्रत्येक धारणा गिर जाती है। तुम कोई भी चीज़ नहीं हो सकते। तब शून्यता उत्पन्न होती है। सभी धारणाएं मिट जाती हैं, केवल तुम्हारा अस्तित्व बना रहता है।
बुद्ध द्वारा खोजे गए यह सबसे अधिक गहनतम ध्यानों में से एक है "कोई नहीं" बन जाना। और ऐसा बलपूर्वक नहीं करना है। तुम्हें यह नहीं सोचना है कि तुम कोई नहीं, कुछ नहीं हो, तुम्हें इसका अनुभव करना है, अन्यथा तुम्हारा कोई नहीं होना बहुत अधिक बोझिल बन जायेगा। तुम्हें यह नहीं सोचना है कि तुम "कोई नहीं" हो, तुम्हें सामान्य रूप से यह अनुभव करना है कि वे सभी चीजें, जिनके बारे में तुम सोच रहे हो, वे तुमसे सापेक्ष रूप से संबंधित हैं।
और सत्य परिपूर्ण होता है, वह सापेक्ष रूप, से संबंधित नहीं होता है। सत्य सापेक्ष नहीं है, वह किसी चीज पर आश्रित नहीं होता है। वह सामान्य रूप से वहां होता है। इसलिए अपने अंदर ही सत्य को खोजो और सापेक्ष संबंधों के बारे में फिक्र मत करो। वे भिन्न हैं, उनकी व्याख्याएं भिन्न हैं। और यदि व्याख्याएं बदलती हैं, तो तुम बदलते हो।
कोई भी चीज़ फैशन में है- यदि तुम उसका प्रयोग करते हो तो तुम आधुनिक हो, तुम्हारी प्रशंसा की जाती है। कुछ चीज फैशन से बाहर हो चुकी है- यदि तुम उसका प्रयोग करते हो तो तुम समय से पीछे हो और तुम्हारा सम्मान नहीं किया जाता है। पचास वर्ष पूर्व वह फैशन में था और तुम आधुनिक कहे जाते रहे। पचास वर्षों बाद वह फिर फैशन में आ सकता है और तब तुम फिर आधुनिक कहे जाओगे। ठीक अभी तुम समय से पीछे हो। लेकिन तुम कौन हो- क्या तुम बदलते हुए फैशन हो, क्या तुम बदलती हुई धारणाएं और सापेक्ष-संबंध हो?
मेरे एक मित्र साम्यवादी थे, लेकिन वह बहुत अधिक धनी व्यक्ति थे- और उन्होंने इस विरोधाभास का कभी भी अनुभव नहीं किया था। वह एक बुर्जुआ थे, भली-भांति सम्पन्नता में पोषित हुए थे और उन्होंने अपने हाथों से भी कोई भी कार्य नहीं किया था। उनके पास अनेक सेवक थे और उनका संबंध एक पुराने राजसी परिवार से था। और तब सन 1940 में वह रूस गए। जब वह वहां से वापस लौटे तो उन्होंने मुझे बताया- "मैं रूस में जहां कहीं भी गया मै। ने वहां अपराधी होने का अनुभव किया- क्योंकि जब भी मैं किसी भी व्यक्ति से हाथ मिलाता था तो मैं तुरंत ही यह अनुभव कर सकता था कि दूसरे व्यक्ति ने यह अनुभव किया कि

मेरे हाथ श्रम करने का कोई भी संकेत अपने साथ लिए हुए नहीं थे। वे हाथ प्रोलेटेरियन (सर्वहारा वर्ग) के न होकर बुर्जुआ (सामंतवादी) के कोमल ओर स्त्रैण हाथ थे। और तुरंत ही दूसरे व्यक्ति के चेहरे के भाव बदल जाते थे और वह मेरे हाथों को तुरंत छोड़ देता था, जैसे मानो मैं एक अछूत था।" उन्होंने मुझे बताया- "भारत में, जब भी मैं किसी भी व्यक्ति से हाथ मिलता था, मेरे हाथों की प्रशंसा की जाती थी। वे सुंदर, स्त्रैण, कोमल और कलात्मक थे। लेकिन रूस में अपने हाथों के बारे में मैंने इतना अधिक अपराधी होने का अनुभव किया कि मैंने यह सोचना शुरू कर दिया कि कैसे उनकी कोमलता को नष्ट कर दिया जाए, जिससे कोई भी व्यक्ति मुझे एक राजा, एक बुर्जुआ, एक शोषक अथवा एक धनी व्यक्ति व्यक्ति की भांति न देख...-" क्योंकि वहां श्रम करना एक मूल्य बन गया है। यदि रूस में तुम सर्वहारा वर्ग के हो, तो तुम कुछ हो, यदि तुम एक धनी व्यक्ति हो तो तुम एक अपराधी हो। कोई भी चीज केवल एक सापेक्ष
धारणा है।
भारत में हमने भिक्षुओं, स्वामियों ओर संन्यासियों का सम्मान किया
है, और माओ से पूर्व ऐसा ही चीन में भी किया जाता रहा है। एक व्यक्ति जिसने
संसार का परित्याग कर दिया है, वह संसार के लिए सबसे अधिक सम्मानित व्यक्ति था और समाज उसके बारे उसकी देखभाल करता था। वह मनुष्यता के सर्वोच्च शिखर पर था तब चीन में साम्यवाद आया और हजारों मठ पूरी तरह नष्ट कर दिए गए और सभी अतीत के सम्मानित और भिक्षु लोग अपराधी कहे जाने लगे। उन्हें अब
कार्य करना होता है। तुम केवल भ्ल्लाजन तभी पा सकते हो जब तुम कोई कार्य करते हो और भिक्षा मांगना कानून द्वारा निषिद्ध का दिया गया और अब कोई भी व्यक्ति नहींमांग सकता।
यदि बुद्ध चीन में जन्म लेते तो अब उनके लिए बहुत अधिक कठिनाई खड़ी हो
जाती। उनहें भिक्षा मांगने की अनुमति नहीं होती और उन्हें एक शोषक समझा जाता। यदि मार्क्स का जन्म भी चीन अथवा रूस में हुआ होता तो वह कठिनाई में
पड़ जाते, क्योंकि अपने जीवन भर, ब्रिटिश म्यूज़्यिम में पुस्तकें पढ़ने के अतिरिक्त उन्होंने अन्य कोई दूसरा कार्य नहीं किया। वह सर्वहारा वर्ग के अथवा एक श्रमिक नहीं थे- और उनका मित्र तथा उनके कार्यों में सहयोग करने वाला, फ्रीड्रिक एंजिल्स एक धनी व्यक्ति था। वे वहां देवताओं के समान पूजे जाते हैं। लेकिन यदि फ्रीड्रि एंजिल्स रूस भ्रमण करने को आता, तो वह कठिनाई में पड़ जाता। उसने कभी भी कार्य नहीं किया था, वह दूसरों के श्रम पर जीवित रहा और उसने मार्क्स की आर्थिक सहायता की। और बिना उसकी सहायता के मार्क्स "दास केपीटल" और "कम्युनिस्ट घोषणापत्र" जैसी क्रांतिकारी पुस्तकें नहीं लिख सकता था।
लेकिन अब भिन्न स्थिति है, अब रूस में मार्क्स कठिनाइ्र में पड़ गया होता, क्योंकि अब वहां फैशन बदल गया है। यह स्मरण रहे कि वह जो बदलता है, वह सापेक्ष है और वह जो अपरिवर्तनीय बना रहता है, वही स्वयं और परिपूर्ण है- और तुम्हारी आत्मा स्वयं है, और वह सापेक्षता का एक भाग नहीं है।
उसकी दृष्टि में विषयी और विषय की सापेक्षता में उनके सिवाय अस्तित्व में कुछ भी न रहा।
यदि तुम इस दृष्टिकोण को भली-भांति समझ सकते हो, तो इस पर चिंतन, मनन
और ध्यान करो, और अचानक तुम अपने अंदर बोध के प्रकाश से भर जाते हो ओर तुम देखते हो कि प्रत्येक वस्तु शून्य है।
एक दिन, जब सुभूति, एक वृक्ष के नीचे सर्वोच्च शून्यता की भावदशा में बैठा हुआ था...
"सर्वोच्च शून्यता" के शब्दों का स्मरण बना रहे, क्योंकि जब कभी तुम
भी शून्य होने का अनुभव करते हो- लेकिन वह सर्वोच्च नहीं होती है। जब कभी तुम भी शून्य होने का अनुभव करते हो, लेकिन सर्वोच्च शिखर आनंद की शून्यता नहीं- एक निराशा का नकारात्मक खालीपन होता है वह, एक विधायक और स्पष्ट शून्यता नहीं होती जहां इस अंतर का स्मरण बनाए रखना है।
एक नकारात्मक शून्यता का अर्थ है कि तुम एक समझ का नहीं एक विफलता का अनुभव कर रहे हो। तुमने संसार में कुछ चीज़ प्राप्त करने का प्रयास किया है ओर तुम उसे प्राप्त नहीं कर पाए हो। तुम खाली होने का अनुभव करते हो, क्योंकि जो चीज तुमने चाही थी उसे तुम न पा सके; जिस स्त्री को तुमने चाहा

था और उसे न पा सके, तो तुम खाली होने का अनुभव करते हो। जिस पुरुष के तुम पीछे पड़ी थीं वह भाग गया ओर तुम खाली होने का अनुभव करती हो। जो सफलता तुमने अपने सपनों में देखी थी और वह घटित न हो सकी- और तुम खाली होने का अनुभव करते हो। यह खालीपन अथवा शून्यता नकारात्मक है। यह एक उदासी है, यह एक अवसाद है और यह मन की एक निराश स्थिति है। यदि तुम इस तरह की शून्यता का अनुभव कर रहे हो, तो स्मरण रहे कि तुम्हारे ऊपर फूल नहीं बरसेंगे। तुम्हारी शून्यता वास्तविक और विधायक नहीं है। तुम अभी भी चीजों के पीछे भाग रहे हो, और इसी कारण तुम खालीपन का अनुभव कर रहे हो। तुम अभी भी अहंकार के पीछे-पीछे भाग रहे हो, तुम कोई कुछ होना चाहते थे और न हो सके। यह एक समझ न होकर एक विफलता है।
इसलिए स्मरण रहे, यदि तुम एक विफलता के कारण संसार का परित्याग करते हो, तो यह एक परित्याग करना नहीं है। यह एक संन्यास नहीं है, यह प्रामाणिक नहीं है। यदि तुम एक समझ के द्वारा संसार का परित्याग करते हो तो वह पूर्ण रूप से एक अलग चीज है। तुम एक उदासी की भांति नहीं, तुम अपने अंदर की निराशा के साथ नहीं और अपने चारों ओर की विफलता के कारण परित्याग नहीं करते हो। स्मरण रहे, तुम उसे एक आत्मघात की भांति नहीं करते हो। यदि तुम्हारा संन्यास एक आत्मघात जैसा है, तब फूल तुम्हारे ऊपर नहीं बरसेंगे- तब तुम अवकाश ले रहे हो...-
तुमने ईसप की इस कहानी के बारे में ज़रूर सुना होगा...-
एक लोमड़ी एक बगीचे होकर गुजर रही थी लेकिन वहां अंगूर लटक रहे थे, लेकिन उसकी लता एक वृक्ष की ऊंचाई पर टिकी थी। उसने छलांग लगाने के कई प्रयास किए, लेकिन वे उसकी पहुंच के बाहर थे। इसलिए वह यह कहती हुई आगे बढ़ गई- "वे अभी खाने योग्य हैं ही नहीं, वे अभी पके नहीं हैं और मीठे नहीं हैं। वे खट्टे हैं।" वह उन तक पहुंच ही न सकी।
लेकिन अहंकार के लिए यह अनुभव करना बहुत कठिन है कि मैं विफल हो गया हूं। वस्तुतः उसे पहिचानने की अपेक्षा कि वे मेरी पहुंच के बाहर थे- अहंकार कहेगा- "वे किसी भी योग्य न थे।"
तुम्हारे अनेक तथाकथित संन्यासी और संत ईसप की कथा की इस लोमड़ी की ही भांति हैं। उन्होंने संसार का परित्याग इसलिए नहीं किया क्योंकि उन्होंने उसकी व्यर्थता को समझा, बल्कि इसलिए किया क्योंकि वे असफल हुए और वहां के सुख उनकी पहुंच के बाहर थे और वे अभी भी असंतोष और शिकायत से भरे हुए हैं। तुम उनके पास जाओ ओर वे तब भी संसार के विरुद्ध कह रहे होंगे- "धन तो धूल के समान है और एक सुंदर स्त्री क्या होती है?- वह और कुछ भी न होकर रक्त और हड्डियों का एक ढांचा है।" वे किसको आश्वस्त करने का प्रयास कर रहे हैं? वे स्वयं को ही आश्वस्त करने का प्रयास कर रहे हैं कि अंगूर खट्टे हैं।
जब तुमने संसार का परित्याग ही कर दिया तोस्त्री के बारे में बात क्यों करते हो? जब तुम्हारा धन के साथ कोई संबंध ही नहीं है, फिर धन के बारे में बात क्यों करते हो? एक गहरा संबंध अभी भी बना हुआ है, यद्यपि तुम अपनी असफलता को स्वीकार नहीं कर सकते और समझ अभी भी उत्पन्न नहीं हुई है। जब कभी तुम किसी भी चीज के विरुद्ध होते हो तो स्मरण रहे, समझ अभी उत्पन्न नहीं हुई है, क्योंकि समझ में पक्ष और विपक्ष दोनों विलुप्त हो जाते हैं। समझ में तुम संसार के प्रति शत्रुतापूर्ण नहीं होते हो। समझ में तुम संसार की और वहां के लोगों की निंदा नहीं करते। यदि तुम निंदा अथवा तिरस्कार किए चले जाते हो, तो इससे यह प्रदर्शित होता है कि कहीं न कहीं" तुम्हारे अंदर एक घाव है और तुम ईर्ष्या का अनुभव कर रहे हो- क्योंकि बिना ईर्ष्या के वहां कोई भी तिरस्कार नहीं हो सकता है। तुम लोगों की निंदा करते हो, क्येंकि किसी न किसी तरह कहीं अचेतन में तुम यह अनुभव करते हो कि वे लोग तो मजे ले रहे हें और तुम विफल हो गए। तुम कहे चले जाते हो कि यह संसार एक सपना है लेकिन यदि वास्तव में वह एक सपना है तब इस बात पर बल क्यों देते हो कि वह एक सपना है? कोई भी व्यक्ति सपनों के बारे में आग्रह नहीं करता है। सुबह जब तुम जागते हो, तुम जानते हो कि तुम्हारा सपना एक सपना था- बात समाप्त हो गई। तुम लोगों को जाकर यह नहीं बताते कि वे जो कुछ भी हैं- वह एक सपना है।

मन की एक चालबाजी का स्मरण बना रहे: तुम केवल स्वयं अपने को कायल करने
के लिए ही, किसी चीज के बारे में लोगों को कायल करने का प्रयास करते हो, क्योंकि जब दूसरे लोग आश्वस्त होने का अनुभव करते हैं, तुम्हें ठीक लगता है। यदि तुम लोगों को जाकर यह बताते हो कि सेक्स करना एक पाप अथवा अपराध है और वे लोग कायल हो जाते हैं और वे तुम्हारे तर्कों को गलत सिद्ध नहीं कर सकते, तो तुम प्रसन्न होते हो। तुम स्वयं आश्वस्त हो गए हो। दूसरे लोगों की आंखों में देखकर तुम अपनी विफलता कोढकने का प्रयास कर रहे हो। नकारात्मक शून्यता व्यर्थ है। वह पूरी तरह से किसी चीज़ की अनुपस्थिति
है। विधायक शून्यता, किसी चीज की अनुपस्थिति न होकर उपस्थिति है; और इसी कारण विधायक शून्यता एक शक्ति बन जाती है। नकारात्मक शून्यता, मन की एक उदास ओर निराश स्थिति बन जाती है और तुम स्वयं अपने को अंदर पूरी तरह से गुफा में बंद कर लेते हो। एक असफलता और निराशा का अनुभव करते हुए प्रत्येक स्थान एक दीवार के खड़े होने का अनुभव करते हो जिसके तुम पार नही ंजा सकते हो, तुम लाचार दोषी और तिरस्कृत होने का अनुभव करते हो।
लेकिन यह एक विकास नहीं है, यह पीछे की ओर लौटना है। और अपने अंदर गहराई में तुम पुष्पित नहीं हो सकते, क्योंकि निराशा नहीं, केवल समझ ही पुष्पित होकर खिलती है और यदि तुम खिल नहीं सकते तो अस्तित्व तुम पर पुष्प बरसाने नहीं जा रहा है। अस्तित्व तुम्हें पूरी तरह से प्रत्युत्तर देता है; तुम जो कुछ भी हो, अस्तित्व तुम्हें इसके कहीं अधिक देता है। यदि तुम्हारे अस्तित्व के अंदर अनेक पुष्प खिले हुए हैं तो तुम्हारे ऊपर लाखों गुने पुष्प और बरसेंगे। यदि तुम गहरे अवसाद और निराशा में हो तो अस्तित्व भी इसमें सहायता करती है तो लाख गुनी अधिक निराशा आकर तुम्हें डुबो देगी। तुम्हारे अंदर जो कुछ भी है, वह तुम्हारे द्वार पर दस्तक देगा। तुम्हारे पास जो कुछ भी है, तुम्हें उससे अधिक-से-अधिक और दिया जायेगा। इसलिए सजग और सावधान रहो और स्मरण रहे कि सर्वोच्च शून्यता एक विधायक घटना है। वह एक असफलता नहीं है। वह सामान्य रूप से उस चीज़ की ओर देखता है और समझता है कि स्वप्न सफल और परिपूर्ण नहीं हो सकते। और तब वह एक कामी भी उदास होने का अनुभव न कर प्रसन्न होता है कि वह इस समझ तक पहुंच गया है कि सपने कभी भी पूरे नहीं हो सकते। वह एक कभी भी अवसाद ग्रस्त और निराश नहीं होता है। वह पूरी तरह से प्रसन्न और आनंदित होने का अनुभव करता है क्योंकि अब यह उसकी समझ में आ गया है कि अब मैं असंभव और व्यर्थ की चीज़ के लिए प्रयास नहीं करूंगा। और वह एक यह कमी भी नहीं कहता है कि कामना की वस्तु अथवा विषय गलत है, जब तुम विधायक सवोच्च शून्यता की स्थिति में होते हो तो तुम कहते हो कि कामना ही गलत है, न कि कामना की विषय अथवा वस्तु गलत है- और यही सबसे बड़ा अंतर है। नकारात्मक शून्यता में तुम कहते हो कि कामना करने का विषय और वस्तु गलत हो, इसलिए विषय और वस्तु को बदल दो। यदि वह समृद्धि, धन और शक्ति व सत्ता है; तो उसे छोड़ दो- परमात्मा, मुक्ति और स्वर्ग को विषय बना लो। विषय को बदल दो।
यदि शून्यता, परिपूर्ण, सर्वोच्च और विधायक है, तो तुम विषय और वस्तु
को गलत होने की भांति नहीं देखते हो तुम पूरी तरह से देखते हो कि विषय और वस्तु तो ठीक हैं पर कामना ही गलत और व्यर्थ है। तब तुम कामना को एक विषय से दूसरे विषय पर नहीं बदलते, तुम स्वयं कामना को ही पूरी तरह से छोड़ देते हो।
कामनायुक्त होकर तुम्हारी खिलावट होती है। कामना करने से, तुम अधिक
से अधिक लकवाग्रस्त और मृत हो जाते हो।
एक दिन, जब सुभूति, एक वृक्ष के नीचे सर्वोच्च शून्यता की भाव दशा में बैठा हुआ था...-
शून्य लेकिन प्रसन्न, अंदर से पूरी तरह खाली, लेकिन फिर भी भरा हुआ, शून्य, लेकिन कहीं किसी चीज की कमी नहीं थी, शून्य, लेकिन अतिरेक आनंद की बाढ़ से उमड़ता हुआ। शून्य लेकिन विश्रामपूर्ण होकर अपने शाश्वत घर में स्थित।
--... कि उसके चारों ओर पुष्प बरसने प्रारम्भ हो गए।
उसे आश्चर्य हुआ, क्योंकि वह "कोई नहीं, कुछ नहीं" था। उसने कभी भी इसकी आशा नहीं की थी। यदि तुम आशा अथवा अपेक्षा करते हो, तो वे कभी नहीं

बरसते, और यदि तुम अपेक्षा नहीं करते हो, तो वे बरसते हैं- लेकिन तब तुम्हें आश्चर्य होता है। क्यों? सुभूति ने अनिवार्य रूप से यह सोचा होगा कि कहीं कोई चीज़ गलत हो गई है। एक कोई नहीं, कुछ नहीं जैसे व्यक्ति पर पुष्प बरसना और वह भी तब, जब वह पूर्ण रूप से खाली और शून्य था जब वह न परमात्मा के बारे में सोच रहा था, न मुक्ति के बारे में सोच रहा था, यहां तक कि वह ध्यान भी नहीं कर रहा था- क्योंकि जब तुम ध्यान कर रहे होते हो, तुम खाली नहीं होते, तुम कुछ चीज कर रहे हो और तुम प्रयास के साथ भरे हुए हो, तुम कोई भी कार्य नहीं कर रहे हो। सुभूति को अनिवार्य रूप से सजग होना ही था कि कुछ चीज गलत हो गई है। देवता पगला गए हैं। यह पुष्प वर्षा आखिर क्यों और यह पुष्पों के खिलने का मौसम भी नहीं है? उसने अनिवार्य रूप से वृक्षों की ओर देखा होगा और तब फिर उसने निश्चित रूप से स्वयं अपनी ओर देखा होगा। मुझ पर पुष्प वर्षा हो रही है। वह इस पर विश्वास ही न कर सका।
स्मरण रहे, जब कभी तुम्हें अंतिम सत्य घटित होता है, तुम आश्चर्यचकित
हो जाओगे- क्योंकि तुमने कभी भी उसकी अपेक्षा नहीं की थी, तुम उसके लिए प्रतीक्षा भी नहीं कर रहे थे और न तुम उसकी आशा कर रहे थे। और वे लोग, जो अपेक्षा, प्रतीक्षा और आशा कर रहे हैं तथा उसकी कामना करते हुए प्रार्थनाएं कर रहे हें- उनके साथ यह कभी भी घटित नहीं होता है, क्येंकि वे बहुत तनावग्रस्त हैं। वे कभी भी खाली और शून्य नहीं होते और न कभी भी विश्राममय होते हें।
पूरा अस्तित्व और विश्व तुम तक तभी आता है, जब तुम परम विश्राम में होते हो, क्योंकि तब तुम खुले हुए और आसानी से आघात सहन करने में समर्थ होते हो- तुम्हारे सभी द्वार खुले हुए होते हैं। कहीं से भी परमात्मा स्वागत करता है। लेकिन तुम प्रार्थना नहीं कर रहे हो, तुम उससे आने के लिए याचना नहीं कर रहे हो, तुम कोई भी कार्य नहीं कर रहे हो। जब तुम कोई भी कार्य नहीं कर रहे हो, तब तुम केवल सर्वोच्च शून्यता की चित्तवृत्ति में डूबे हो, तुम एक मंदिर बन जाते हो और वह आता है।
सर्वोच्च शून्यता की भावदशा में पुष्प उसके चारों ओर बरसने प्रांरम्भ हो गए।
उसने चारों ओर देखा- आखिर यह क्या हो रहा है?
देवताओं ने बहुत धीमे स्वर में जैसे लगभग फुसफुसाते हुए उससे कहा: हम शून्यता पर आपके द्वारा दिए गए प्रवचन के लिए आपकी स्तुति कर रहे हैं।
वह विश्वास ही न कर सका। वह इसकी कभी अपेक्षा नहीं कर रहा था। वह विश्वास ही न कर सका कि वह इस योग्य था अथवा वह इसके लिए समर्थ था, अथवा वह इतना विकसित हो गया था।
देवताओं ने बहुत धीमे स्वर में जैसे लगभग फुसफुसाते हुए उससे कहा: हम लोग शून्यता पर आपके द्वारा दिए गए प्रवचन के लिए आपकी स्तुति कर रहे हैं। उन्हें फुसफुसाते हुए धीमे स्वर में कहना पड़ा। उन लोगों ने निश्चित रूप से इस सुभूति की आश्चर्यचकित आंखों की ओर देखा होगा, जो इतने अधिक आश्चर्य से भरी हुई थीं। उन्होंने कहा: हम आपकी प्रशंसा कर रहे हैं। इतना अधिक आश्चर्य मत कीजिए और न इतने अधिक चकित होइये। विश्रामपूर्ण ही बने रहिए। हम लोग शून्यता पर आपके द्वारा दिये गये प्रवचन की प्रशंसा कर रहे हैं।
सुभूति ने कहा: लेकिन मैंने तो शून्यता पर कुछ भी नहीं कहा है देवताओं ने प्रत्युत्तर में कहा: "आपने शून्यता पर न कुछ भी कहा है और न हमने शून्यता पर कुछ भी सुना है। यही वास्तविक शून्यता है। और सुभूति पर वर्षा की भांति पुष्प बरसने लगे।
इसे समझने का प्रयास करो। उन्होंने कहा: "हम लोग शून्यता पर आपके द्वारा दिए गए प्रवचन की प्रशंसा कर रहे हैं" और वह किसी भी व्यक्ति से कुछ भी बातचीत नहीं कर रहा था, जहां कोई भी व्यक्ति न था। वह स्वयं से भी बातचीत नहीं कर रहा था, क्येंकि वह खाली और शून्य था, वह विभाजित न था वह किसी भी प्रकार की कोई बात कर ही नहीं रहा था, वह सामान्य रूप से वहां था। उसके भाग पर कुछ भी नहीं किया जा रहा था, न विचारों के ही बादल उसके मन से होकर गुजर रहे थे और न उसके हृदय में कोई अनुभूति ही उत्पन्न हो रही थी। वह

सामान्य रूप से वहां यों था जैसे मानो वह वहां थ ही नहीं। वह पूरी तरह शून्य था।
और देवताओं ने कहा: "हम लोग शून्यता पर आपके द्वारा दिए गए प्रवचन की प्रशंसा कर रहे हैं।"
इसलिए उसे और भी अधिक आश्चर्य हुआ और उसने कहा: "आप क्या कह रहे हें? मैंने तो शून्यता पर कुछ भी नहीं कहा है। मैंने कोई भी बात कही ही नहीं है।"
उन लोगों ने कहा: "आपने कुछ भी नहीं कहा है और न हम लोगों ने कुछ भी सुना है। यही वास्तविक शून्यता है।"
तुम्हारे लिए शून्यता पर कोई भी प्रवचन नहीं हो सकता, तुम केवल शून्य
हो सकते हो, केवल वह ही प्रवचन है। प्रत्येक अन्य चीज के बारे में बातचीत हो सकती है, प्रत्येक अन्य चीज एक उपदेश बन सकती है, उपदेश का एक विषय बन सकती है, प्रत्येक अन्य चीज की व्याख्या हो सकती है। उस पर तर्क-वितर्क हो सकता है- लेकिन शून्यता पर नहीं, क्योंकि उसके बारे में कोई भी बात कहने का ठीक प्रयास करना ही, उसे नष्ट कर देता है। जिस क्षण तुम उसे कहते हो, वह वहां नहीं होता है। एक अकेला शब्द कहना ही पर्याप्त होता है और शून्यता खो जाती है। एक अकेला शब्द ही तुम्हें भर सकता है ओर शून्यता विलुप्त हो जाती है।
नहीं, उसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। किसी भी व्यक्ति ने उसके बारे में अभी तक कुछ भी नहीं कहा है। तुम केवल खाली ओर शून्य हो सकते हो, और यही प्रवचन है। "होना ही" प्रवचन है।
शून्यता कभी भी विचार का एक विषय नहीं बन सकती, निर्विचार होना ही उसके स्वभाव है। इसीलिए देवताओं ने कहा- "आपने कुछ भी नहीं कहा और हमने कुछ भी नहीं सुना। यही इसका सौंदर्य है। इसी कारण हम लोग आपकी स्तुति कर रहे हैं। ऐसा होना दुर्लभ है कि कोई भी व्यक्ति पूरी तरह से शून्य हो जाए। यही सच्ची शून्यता है।" और वह इस बारे में सचेत न था कि वह शून्यता थी क्योंकि यदि तुम सचेत होते हो, तो तुम्हारे अंदर बाहर की कोई चीज़ प्रविष्ट हो गई है ओर तुम विभाजित हो गए हो। जब कोई एक वास्तव में शून्य होता है तो वहां शून्यता की अपेक्षा अन्य कुछ भी नहीं होता है, यहां तक कि शून्यता की सचेतनता नहीं होती है। वहां साक्षी भी नहींहोता है। कोई एक पूर्ण रूप से सजग होता है, वह सोचा हुआ नहीं होता है- लेकिन साक्षी वहां नहीं होता है। वह साक्षी होने के भी पार चला जाता है, क्योंकि जब कभी तुम किसी चीज के साक्षी होते हो तोअंदर वहां एक बहुत थोड़ा सा तनाव और एक सूक्ष्म प्रयास होता है और तब शून्यता कुछ अन्य चीज होती है और तुम कुछ अन्य चीज़ होते हो। तुम खाली और शून्य नहीं होते हो, तुम उसके साक्षी होते हो तब शून्यता पुनः मन में केवल एक विचार होती है।
लोग मेरे पास आते हैं और कहते हैं- "मैंने शून्यता के एक क्षण का अनुभव
कर लिया है।" और मैं उनसे कहता हूं: "यदि तुमने उसका अनुभव कर लिया है तो उसके बारे में भूल जाओ, क्येंकि उसका अनुभव कौन करेगा, अनुभवकर्ता का होना ही पर्याप्त है, उसका होना ही पर्याप्त बाधा है। उसका अनुभव करेगा कौन? शून्यता का अनुभव नहीं हो सकता, वह एक अनुभव नहीं है क्योंकि अनुभव करने वाला वहां नहीं है: अनुभव और अनुभवकर्ता एक हो गए हैं। यह एक म्गचमतपमदबपदह अर्थात अभी तुम उसका अनुभव कर रहे हो।
मुझे इस मगचमतपमदबपदह शब्द को आविष्कार की व्याख्या करने की अनुमति दो: यह एक प्रक्रिया है जो अविभाजित है- जिसके दोनों ध्रुव ओर दोनों किनारे विलुप्त हो गए हैं और केवल नदी ही अस्तित्व में है। तुम यह नहीं कह सकते कि: मैंने अनुभव कर लिया", क्योंकि तुम वहां नहीं थे- तुम कैसे इसका अनुभव कर सकते हो? और एक बार तुम इसमें प्रविष्ट होते हो, तो तुम उसे अतीत का एक अनुभव नहीं बना सकते, तुम यह नहीं कह सकते- "मैंने अनुभव किया", तब वह अतीत की एक स्मृति बन जाता है।
नहीं, शून्यता कभी भी एक स्मृति नहीं बन सकती, क्येंकि शून्यता कभी भी अपना एक निशान अथवा चिन्ह तक नहीं छोड़ जाती। वह कोई भी पदचिन्ह नहीं छोड़ सकती। फिर शून्यता अतीत की एक स्मृति कैसे बन सकती है? तुम यह कैसे कह सकते हो?- "मैंने अनुभव कर लिया?" वह हमेशा उसी में होती है, उसका अनुभव हो

रहा होता है। वह न तो अतीत है और न भविष्य है, वह हमेशा निरंतर जारी रहने वाली एक प्रक्रिया है। एक बार तुमने उसमें प्रवेश कर लिया तो तुम प्रविष्ट हो गए। तुम यह भी नहीं कह सकते- "मैंने अनुभव कर लिया?"- इसी कारण सुभूति इसके प्रति सचेत नहीं था कि क्या हो रहा था। वह वहां था ही नहीं। उसके और पूरे विश्व के मध्य वहां कोई भी अंतर नहीं था। सभी भेद और सीमाएं विलुप्त हो गए थे। पूरा विश्व उसके अंदर पिघलना शुरू हो गया था, वह विश्व में पिघल कर उसके एकत्व में लीन हो गया था और देवताओं ने कहा- "यही सच्ची शून्यता है।"
और सुभूति के ऊपर वर्षा के समान पुष्प बरसने लगे।
अंतिम पंक्ति को बहुत बहुत सावधानी से समझ लेना है, क्योंकि जब कोई व्यक्ति कहता है कि तुम शून्य हो गए हो, तो तुरंत अहंकार वापस लौटकर आ सकता है- क्योंकि तुम सचेत हो जाओगे और तुम अनुभव करोगे कि कुछ चीज प्राप्त हो गई है। अचानक देवता तुम्हें सचेत बनायेंगे कि तुम शून्य हो।
लेकिन सुभूति एक दुर्लभ व्यक्ति है, वह असाधारण रूप से दुर्लभ है। यद्यपि देवताओं ने उसके चारों ओर जयघोष किया, उसके कानों में फुसफुसा कर कहा और वर्षा के समान उस पर पुष्प भी बरसने लगे, पर उसने चिता नहीं की। वह सामान्य रूप से मौन बना रहा। देवताओं ने उससे कहा- "आपने शून्यता पर एक अच्छा प्रवचन दिया। उसने बिना वापस लौटे उसे सुना। उन्होंने कहा:"आपने भी नहीं कहा और हमने कुछ भी नहींसुना। यही वास्तविक शून्यता है। " वहां कोई भी अहंकार नहीं था जो यह कह सकता- "मुझे सच्ची प्रसन्नता और आनंद घटित हुआ और अब मै। बद्धत्व को उपलब्ध हो गया हूं", अन्यथा वह अंतिम स्थिति से चूक गया होता, और यदि वह वापस लौट आता तो तुरंत फूल बरसना बंद हो जाते। नहीं, उसने निश्चित रूप से अपनी आंखें बंद कर ली होंगी और सोचा होगा- ये देवता पागल हो गए है। और ये फूल अपने जैसे हैं- फिक्र मत करो।"
शून्यता इतनी अधिक सुंदर थी कि अब उससे अधिक सुंदर और आकर्षक कुछ भी नहीं हो सकता। वह पूरी तरह से अपनी सर्वोच्च शून्यता में ही बना रहा- और इसी कारण सुभूति पर पुष्प वर्षा के समान बरसते रहे।
सुभूति के बारे में केवल यही एक कहानी है। उसके बारे में अन्य कुछ भी नहीं कहा गया है। कहीं भी उसका पुनः उल्लेख नहीं किया गया है। लेकिन मैं तुम से कहता हूं कि पुष्प अभी भी बरस रहे हैं। सुभूति अब ओर अधिक किसी वृक्ष के नीचे नहीं बैठा है- क्योंकि कोई एक जब वास्तव में पूर्ण रूप से शून्य हो जाता है, वह अस्तित्व में घुल कर मिट जाता है। लेकिन पूरा अस्तित्व अभी भी उसका समारोह मना रहा है। पुष्प बरसते चले जा रहे हैं। लेकिन तुम उन्हें जानने में केवल तभी समर्थ होगे, जब वे तुम्हारे लिए बरसेंगे। जब परमात्मा तुम्हारा द्वार खटखटाता है, केवल तभी तुम जानते हो कि परमात्मा है, उससे पूर्व तुम उसे नहीं जानते। सभी तर्क-वितर्क व्यर्थ हैं सभी प्रवचनों का कोई भी प्रयोजन नहीं है। यदि परमात्मा तुम्हारे द्वार पर दस्तक नहीं देता है। यदि तुम्हें वह घटित नहीं होता है तो कुछ भी दृढ़ विश्वास नहीं बन सकता।
मैंने सुभूति के बारे में बातचीत की, क्योंकि ऐसा मुझे भी घटित हुआ है
ओर यह केवल अलंकारिक नहीं है, यह शाब्दिक रूप से भी सत्य है। पहले मैंने सुभूति के बारे में पढ़ा था, लेकिन मैंने सोचा- "यह एक अलंकारिक और एक सुंदर काव्यात्मक वर्णन है। मेरी कभी थोड़ी-सी-भी यह धारणा नहीं थी कि ऐसा वास्तव में होता है। मैंने कभी नहीं सोचा था कि वह एक वास्तवकि घटना थी, एक सत्य चीज थी, जो घटित भी होती है।
लेकिन अब मैं तुमसे कहता हूं कि ऐसा होता है। यह मुझे घटित हुआ, यह तुम्हें भी घटित हो सकता है...- लेकिन एक सर्वोच्च विधायक शून्यता की जरूरत है।
और कभी भी भ्रमित मत होना। कभी यह मत सोचना कि तुम्हारी नकारात्मक शून्यता कभी भी सर्वोच्च बन सकती है। तुम्हारी नकारात्मक शून्यता एक अंधकार के समान है और विधायक शून्यता एक प्रकाश के समान है, यह एक उदित होते हुए सूर्य के समान है। नकारात्मक शून्यता एक मृत्यु के समान है और सर्वोच्च शून्यता एक शाश्वत जीव न है। यह एक आनंदमग्नता है।

उस भाव-दशा को अपने अंदर गहरे से गहरे प्रवष्टि होने की अनुमति दो।
जाओ, और वृक्षों के नीचे जाकर बैठो। कोई भी कार्य न करते हुए बस बैठे रहो।
प्रत्येक चीज रुक जाती है। जब तुम रुकते हो तो प्रत्येक चीज रुक जाती है।
समय भी गतिशील नहीं होगा, जैसे मानो अचानक संसार उस शिखर तक आ गया है कि वहां कोई भी गतिशीलता नहीं है। लेकिन इस विचार को अंदर मत लाना कि अब मैं शून्य हो गया हूं, अन्यथा तुम चूक जाओगे। और यदि देवता तुम्हारे ऊपर पुष्प बरसाना प्रारम्भ करते हैं, तो उस ओर अधिक ध्यान मत देना।
और अब तुम इस कहानी को जानते हो, यह पूछना ही मत कि क्यों? सुभूति को पूछना पड़ा था, तुम्हें इसकी ज़रूरत नही ंहै। और यदि वे आपस में ही फुसफुसाते हुए यह कहें- "हमने वास्तविक शून्यता को और उस पर दिए गए प्रवचन को सुना है", तो फिक्र करना ही मत और पुष्प तुम पर भी वर्षा के समान बरसेंगे।

और फूलों की बरसात हुई
दूसरा प्रवचन

एकढीठ-छात्र

जब यामूका एक ढीठ छात्र था।
वह सद्गुरु डोक्यंन से भेंट करने गया।

सद्गुरु को प्रभावित करने के लिए उसने उनसे कहा...
"वहां कोई मन नहीं है, वहां कोई भी शरीर नहीं है-
और न वहां कोई बुद्ध ही है।
वहां न कुछ अच्छा है, वहां न कुछ भी बुरा है।
वहां न कोई सद्गुरु है, और न कोई भी छात्र है।
वहां न कोई कुछ दे रहा है, और वहां न कोई कुछ ले रहा है।
जो कुछ हम सोचते हैं, हम देखते हैं और अनुभव करते हैं
वह साथ नहीं है। ये प्रतीत होनेवाली कोई भी चीजें-
वास्तव में अस्तित्व में नहीं हैं।"

डोक्यूंन खामोशी से बैठा हुआ अपने पाइप से धूम्रपान कर रहा था, और कुछ भी नहीं कह रहा था।
अचानक उसने अपना डंडा उठाया, और यामूका पर प्रहार करते हुए उसने उसकी विकट रूप से पिटाई कर दी।

यामूका क्रोध में उछलने कूंदने लगा।

डोक्यूंन ने कहा: "जब इनमें से कोई चीज़ें-
वास्तव में अस्तित्व में नहीं हैं और सभी कुछ एक शून्यता है
तो तुम्हारा यह क्रोध कहां से आ रहा है?
इस बारे में विचार करना।
उधार ज्ञान से बहुत अधिक सहायता नहीं मिलती है। दूसरे किनारे पर पहुंचने के लिए केवल आत्मा ही वाहन बन सकती है।
तुम सोचते हुए सूचनाएं एकत्रित किए चले जा सकते हो- लेकिन वे कागज की नौकाएं हैं और उनसे समुद्री यात्रा में कोई भी सहायता नहीं मिलेगी। यदि तुम इसी किनारे पर बने रहते हो और उनके बारे में बातचीत किए चले जाते हो, तो वह ठीक है- यदि तुम कभी भी समुद्री यात्रा पर नहीं जाते हो तो कागज से बनी नौकाएं भी असली नौकाओं की भांति उतनी ही अच्छी हैं, लेकिन यदि तुम कागज़ की नौकाओं के साथ समुद्री यात्रा पर जाते हो, तो तुम डूब जाओगे। शब्द और भी नही ंहैं बल्कि वे कागज की नौकाएं ही हैं - वे उतनी भी वास्तविक और सारपूर्ण नहीं हैं।

और जब हम ज्ञान संग्रहीत करते हैं, तो हम करते क्या हैं? अंदर से कुछ
भी नहीं बदलता है। आत्मा पूर्ण रूप से अप्रभावित बनी रहती है। ठीक धूल की भांति ही, सूचनाएं तुम्हारे चारों ओर इकट्ठी हो जाती हैं- ठीक उसी तरह जैसे एक दर्पण पर चारों ओर धूल इकट्ठी हो जाती है, दर्पण वैसा ही बना रहता है, केवल वह अपने प्रतिबिम्बित करने के गुण को खो देता है। तुम मन के द्वारा क्या जानते हो, उससे कुछ भी अंतर नहीं पड़ता है- तुम्हारी चेतना समान बनी रहती है। वास्तव में वह और अधिक बुरी हो जाती है, क्योंकि इकट्ठा किया गया ज्ञान, तुम्हारी प्रतिबिम्बित करने वाली चेतना के चारों ओर ठीक एक धूल के समान जम जाता है और तुम्हारी चेतना कम से कम प्रतिबिम्बित करती है।
तुम जितना अधिक जानते हो, तुम उतने ही कम सचेत बनते हो। जब तुम पूर्ण रूप से विद्वता और उधार ज्ञान से भर जाते हो, तुम पहिले ही से मृत हो जाते हो। तब तुम्हारे अपने की भांति तुम्हारे पास कुछ भी नहीं आता है।
प्रत्येक चीज़ उधार की और तोते के समान होती है।

मन एक तोता है। मैंने सुना है कि जोसेफ स्टालिन के दिनों में एक बहुत ख्यातिप्राप्त साम्यवादी, मास्को के पुलिस स्टेशन पर आया और उसने अपने तोते के खोने की रिपार्ट लिखवाई। क्योंकि यह व्यक्ति एक बहुत ख्यातिप्राप्त साम्यवादी था, इसलिए पुलिस स्टेशन के प्रमुख अधिकारी ने उससे तोते के बारे में पूछताछ की, क्येंकि उसके खोजने के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण था। अपनी जांच के दौरान उसने पूछा- "क्या यह तोता मनुष्य की तरह भी बोल सकता है? उस साम्यवादी कामरेड को अंदर थोड़े से भय का अनुभव हुआ और तब उसने कहा- "हां, वह बात भी करता है, लेकिन कृपया नोट कीजिए, वह जो कुछ भी राजनैतिक मत प्रकट करता है, वह पूरी तरह से उसका अपना होता है।
लेकिन एक तोते के पास कैसे अपना कोई मत हो सकता है? एक तोते के पास अपना
मत अथवा राय हो ही नही ंसकती - और न मन ही हो सकता है, क्येंकि मन एक यांत्रिकत्व है। एक तोता एक मन की अपेक्षा कहीं अधिक जीवंत होता है। एक तोते के पास भी अपने कुछ मत हो सकते हैं, लेकिन उसके पास मन नहीं हो सकता। मन एक कम्प्यूटर अथवा एक बायोकम्प्यूटर की भांति होता है। वह सूचनाएं संग्रहीत करता है। वह कभी भी मौलिक नहीं होता है, वह हो भी नहीं सकता है। जो कुछ भी उसके पास है, वह उधार दूसरों से लिया हुआ है।
तुम केवल तभी मौलिक बनते हो, जब तुम मन का अतिक्रमण कर जाते हो। जब मन गिर जाता है और चेतना तुरंत ही प्रत्यक्ष रूप से अस्तित्व के साथ सम्पर्क करते हुए उसका साक्षात्कार करती है, तुम मौलिक बन जाते हो। तब पहली बार प्रामाणिक रूप से तुम स्वयं में होते हो, अन्यथा सभी विचार उधार के होते हें तुम धर्म ग्रंथों को उद्धृत कर सकते हो, तुम हृदय के द्वारा सभी वेदों, कुरान और गीता को जान सकते हो, लेकिन उससे कोई भी अंतर नहीं पड़ता, वे तुम्हारे अपने नहीं हैं और जो ज्ञान तुम्हारा अपना नहीं है, वह खतरनाक है, वह अज्ञान की तुलना में कहीं अधिक खतरनाक है, क्येंकि वह छिपा हुआ अज्ञान है और तुम यह देखने में समर्थ नहीं होगे कि तुम स्वयं अपने को ही धोखा दे रहे हो। तुम अपने साथ नकली सिक्के लिए चल रहे हो और सोच रहे हो कि तुम एक धनी व्यक्ति हो, तुम नकली पत्थर साथ लिए हुए चल रहे हो और सोच रहे हो कि वे कोहनूर हैं। देर अथवा सबेर तुम्हारी निर्धनता प्रकट होगी ही और तब तुम्हें आघात लगेगा।
जब कभी मृत्यु निकट आती है, अथवा जब तुम मरने लगते हो, तब यही घटना घटित होती है। उसी आघात में मृत्यु तुम्हें अचानक सचेतनता देती कि तुमने कोई भी चीज़ प्राप्त नहीं की है- क्योंकि केवल वही चीज एक प्राप्य होती है, जिसे आत्मा प्राप्त करती है। तुमने ज्ञान के कुछ खण्ड यहां से और कुछ खण्ड वहां से एकत्रित कर लिए हैं और तुम ज्ञान का एक महान कोष बन गए हो, लेकिन उद्देश्य यह नहीं है, और विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो कि सत्य की खोज में हैं। उनके लिए यह एक सहायता न होकर एक अवरोध है। ज्ञान तो अतिक्रमण करने के लिए होता है। जब वहां कोई भी ज्ञान नहीं होता है, तो जानना घटित होता है, क्योंकि जानना तुम्हारा स्वभाव है, वह चेतना का गुण है। वह ठीक एक दर्पण के समान है। जो कुछ वहां होता है, दर्पण उसे प्रतिबिम्बित करता है। चेतना उस सत्य को प्रतिबिम्बत करती है, जो ठीक तुम्हारे सामने होता है, जो ठीक तुम्हारी नाक की सीध में होता है।
लेकिन मन बीच में आ जाता है- और मन बकबक किए चले जाता है और सत्य ठीक तुम्हारे सामने ही बना रहता है और मन व्यर्थ की बातें किए चले जाता है। तुम मन के साथ जाते हो और चूक जाते हो। मन विफल होने का एक बहुत बड़ा कारण है।
इस सुंदर प्रसंग में प्रवेश करने से पूर्व, थोड़ी सी चीज़ें और। पहिली बात: ज्ञान उधार का होता है, इसका अनुभव करो। प्रामाणिक रूप से इसका अनुभव करना ही उसका छूट जाना बन जाता है। तुम्हें और कुछ भी नहीं करना होता है। सामान्य रूप से यह अनुभव कर लेना है कि तुम जो कुछ भी जानते हो, तुमने उसे सुना अथवा पढ़ा है और तुमने उसे जाना नहीं है। यह ग्रह्य ज्ञान का प्रकट होना न होकर तुम्हारे मन की ही एक कंडीशनिंग अथवा एक स्थिति है। यह तुम्हें पढ़ाया गया है, तुमने उसे सीखा नहीं है। सत्य सीखा जा सकता है... पढ़ाया नहीं जा सकता। सीखने का अर्थ है कि जो कुछ भी तुम्हारे चारों ओर है

उसके प्रति उत्तरदायी बने रहना। यही है बहुत अच्छी तरह से सीखना, लेकिन यह ज्ञान नहीं है।
इस बारे में सत्य को सिवाय उसे खोजने के द्वारा पाने का अन्य कोई भी मार्ग नहीं है। उस तक जाने का वहां कोई छोटा रास्ता अथवा पगडंडी नहीं है। उसे पाने के लिए तुम उसे उधार नहीं ले सकते, तुम उसे चुरा नहीं सकते और तुम उसे धोखा नहीं दे सकते। वहां पूरी तरह से कोई भी मार्ग नहीं है, जब तक तुम अपने अंदर बिना मन के नहीं हो जाते-क्योंकि मन संशयग्रस्त होकर डगमगा रहा है, मन निरंतर कांप रहा है, मन कभी भी स्थिर नहीं होता और वह एक निरंतर गतिशील हो रहा है। मन ठीक एक हवा के समाना है जो निरंतर बह रही है और वह हवा में कांपती हुई एक ज्योति के समा है। जब मन वहां नहीं होता है तो हवा थम जाती है और ज्योति भी अकम्प और स्थिर हो जाती है। जब तुम्हारी चेतना एक स्थिर ज्योति के समान हो जाती है, तो तुम सत्य को जानते हो। तुम्हें सीखना है कि कैसे मन का अनुरण न किया जाए।
भी व्यक्ति तुम्हें सत्य नहींदे सकता है। कोई भी नहीं - एक बुद्ध, एक जीसस अथवा एक कृष्ण भी उसे तुम्हें नहीं दे सकते हैं। और यह बात सुंदर है कि कोई भी व्यक्ति उसे तुम्हें नहीं दे सकता है, अन्यथा वह बाजार की एक वस्तु मात्र बनकर रह जाती। यदि वह दी जा सकती, तब उसे बेचा भी जा सकता है। यदि उसे दिया जा सकता है तब उसकी चोरी भी की जा सकती है। यदि उसे दिया जा सकता है, तो तुम उसे अपने मित्र से उधार भी ले सकते हो। यह सुंदर है कि सत्य किसी भी तरह से हस्तांतरित नहीं किया जा सकता, यदि तुम उसे नहीं समझते, तुम उस तक नहीं पहुंच सकते। जब तक तुम स्वयं वह हो नहीं जाते वह कभी भी तुम्हारे नही ंहो सकता है। वास्तव में, वह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे तुम रख सकते हो। वह कोई सामग्री, कोई वस्तु और एक विचार नहीं है। तुम वह हो सकते हो, तुम उसे अपने पास रख नहींसकते हो।
इस संसार में, हमारे पास प्रत्येक वस्तु हो सकती है- प्रत्येक वस्तु हमारे आधिपत्य का एक भाग बन सकती है। सत्य पर कभी भी अधिकार नहीं किया जा सकता है। वस्तुएं अधिकार में रखी जा सकती हैं, विचारों का स्वामी बना जा सकता है, पर सत्य का कभी भी नहीं। सत्य एक सारभूत तत्व है। तुम वह हो सकते हो, तुम उस पर आधिपत्य नहींकर सकते। तुम उसे अपने पास अपनी सेप़्ाफ में नहीं रख सकते हो, तुम उसे अपनी पुस्तक में नहीं रख सकते हो और न तुम उसे अपने हाथ में रख सकते हो। जब वह तुम्हारे पास होता है तुम वही होते हो। तुम सत्य ही बन जाते हो। यह एक धारणा अथवा विचार नहीं है, पर स्वयं में होना है।
दूसरी बात जो स्मरण रखना है, वह है मनुष्य की प्रवृत्ति की, जो अपने पास उस चीज को प्रदर्शित करने का प्रयास करती है, उसके पास नहींहोती है। यदि वह तम्हारे पास है तो उसे प्रदर्शित करने का प्रयास मत करो, वहां उसका कोई प्रयोजन नहीं है। यदि वह तुम्हारे पास नहीं हैं तो उसे तुम दिखाने का यों प्रयास करते हो जैसे मानो वह तुम्हारे पास है। इसलिए स्मरण रहे, तुम जो कुछ भी लोगों को दिखाना चाहते हो, वह चीज़ तुम्हारे पास नहीं होती है। यदि तुम एक धनी व्यक्ति के घर जाते हो, उसके अतिथि बनते हो- तो कुछ भी नहीं बदलता है, यदि वह वास्तव में समृद्ध है तो कोई भी चीज नहीं बदलती है, वह पूरी तरह तुम्हें स्वीकार करता है। एक निर्धन व्यक्ति के घर जाओ, तो वह प्रत्येक चीज़ बदलता है। वह अपने पड़ोसी से फर्नीचर उधार ला सकता है, वह किसी अन्य व्यक्ति से गलीचा मांगकर ला सकता है और पर्दे किसी अन्य व्यक्ति से ले सकता है। वह तुम्हें प्रभावित करना चाहता है कि वह समृद्ध है। यदि तुम धनी नहीं हो तो तुम लोगों को प्रभावित करना चाहोगे कि तुम धनी हो। और यदि तुम नहीं जानते हो, तो तुम चाहोगे कि लोग यह सोचें कि तुम जानते हो। जब कभी भी तुम किसी व्यक्ति को प्रभावित करना चाहते हो, तो इसे याद रखो, क्योंकि प्रभावित करना मनुष्य की एक प्रवृत्ति है, क्येंकि कोई भी नहीं चाहता कि वह निर्धन दिखाई दे- और जहां चीजों का संबंध दूसरे संसार से है, वहां यह और भी अधिक है।
जहां तक इस संसार की वस्तुओं का संबंध है, तुम एक निर्धन व्यक्ति हो सकते हो और यह निर्धनता से अधिक नहीं है। लेकिन जहां तक आत्मा, परमात्मा, मुक्ति और सत्य का संबंध है उसे सहन करना बहुत अधिक हो जाता है, इस बारे

में अपनी निर्धनता को सहना बहुत कठिन हो जाता है। तुम लोगों को प्रभावित करना चाहते हो कि तुम्हारे पास कुछ चीज है और जहां तक इस संसार की वस्तुओं का संबंध है उन्हें प्रभावित करना कठिन है क्योंकि वे वस्तुएं दृश्यमान हैं। लोगों को दूसरे संसार की चीजों के बारे में प्रभावित करना सरल है क्येकि वे चीजें दिखाई नहीं देतीं। तुम बिना जाने हुए लोगों को प्रभवित कर सकते हो कि तुम जानते हो।
समस्या तब उत्पन्न होती है जब तुम दूसरों को प्रभावित करते हो, तो इस बारे में यह संभावना होती है कि उनकी आंखों में उनके दृढ़ विश्वास को देखकर तुम स्वयं से ही प्रभावित होकर यह सोच सकते हो कि तुम्हारे पास "कुछ चीज" है। यदि अनेक लोग कायल हो जाते हैं कि तुम जानते हो, तो धीमे-धीमे तुम आश्वस्त हो जाओगे कि तुम जानते हो- इस बारे में यही समस्या है, क्योंकि दूसरों को धोखा देना अधिक बड़ी समस्या नहीं है। लेकिन यदि तुम अपने प्रयासों के द्वारा स्वयं ही धोखा खा जाते हो तब तुम्हें तुम्हारी मूर्च्छा से बाहर लाना लगभग असंभव होगा, क्योंकि तुम सोचते हो कि यह बिल्कुल भी मूर्च्छा अथवा नींद नहीं है। तुम सोचते हो कि तुम पूरी तरह जागे हुए हो। तुम्हें तुम्हारे अज्ञान से बाहर लाना बहुत कठिन होगा, क्योंकि तुम सोचते हो कि तुम पहले ही बुद्धत्व को उपलब्ध हो चुके हो। तुम्हें तुम्हारी बीमारी से बाहर लाना बहुत कठिन होगा, क्योंकि तुम विश्वास करते हो कि तुम स्वस्थ हो और पहले ही से पूर्ण हो।
जो सबसे बड़ा अवरोध तुम्हारे और सत्य के मध्य खड़ा हुआ है, वह यह है कि तुमने दूसरों के द्वार स्वयं अपने को आश्वस्त किया है कि "वह" तुम्हारे पास पहले ही से है। इसलिए यह एक दुष्चक्र है। पहली बात: तुम दूसरों को कायल करने का प्रयास करते हो- और तुम दूसरों को कायल कर सकते हो क्योंकि वह चीज़ अदृश्य है। दूसरी बातः "वह" दूसरों के पास नहीं है, इसलिए वे उसे नहीं जानते हैं। यदि तुम जाओ और परमात्मा के बारे में बात करना शुरू कर दो और बातें किए चले जाओ, तो देर अथवा सबेर लोग यह सोचना शुरू कर देंगे कि तुम परमात्मा के बारे में जानते हो- क्योंकि वे भी उसे नहीं जानते। परमात्मा शब्द के सिवाय वे उसके बारे में कोई भी बात नहीं जानते, और तुम सिद्धांतों और तत्वज्ञान के बार में तर्क-वितर्क करते हुए बहुत अधिक चालाक और चतुर बन सकते हो। और यदि तुम उन्हें बताते चले जाते हो तो केवल उबाहट के कारण वे तुमसे कहेंगे- हां, हम विश्वास करते हैं कि आप जानते हैं, लेकिन अब बात समाप्त की कीजिए।"
मैंने सुना है कि एक बार ऐसा हुआ: वहां यहूदियों के हसीदी पंथ का महान रहस्यदर्शी बालशेम मौजूद था। परमात्मा को जानने का दावा करने वाला एक सिद्धांत उससे भेंट करने आया। उधार ज्ञान को बटोरने वाले लोग दावेदार बनते हैं। क्योंकि विद्वान होने से मेरा अर्थ उस व्यक्ति से है जो कोई भी बात शास्त्रों, शब्दों और भाषा के द्वारा जानता है और जिसने कभी भी स्वयं सत्य का साक्षात्कार नहीं किया है। और उसने पुराने पैगंबरी और ओल्ड टेस्टामेंट के बारे में बातचीत करना शरू कर दी और उनके बारे में व्याख्या करने लगा... निश्चित रूप से उसके पास प्रत्येक चीज उधार की थी जो मौलिक न होने के साथ उसके भाग पर मूर्खतापूर्ण थी क्येंकि वह एक ऐसे व्यक्ति से बातचीत कर रहा था, जो जानता था।
बालशेम करुणावश उसे सुनता रहा और अंत में उसने कहा: "बहुत बुरा है, बहुत ही अधिक बुरा है कि महान दार्शनिक मैमोनाइड्स तुम्हें जानता था...-।" मेमोनाइड्स बहुत अधिक महान यहूदी दार्शनिक है, इसलिए वह दावा करने वाला विद्वान बहुत अधिक प्रसन्न हुआ, महान मेमोनाइड्स ने यह कह कर कि वह उसे जानता है उसे जो सम्मान दिया था, उससे वह बहुत आनंदित हुआ... । इसीलिए उसने कहा: "मै। बहुत अधिक प्रसन्न हूं कि आप मुझे पहिचानते हैं और आप मुझे मान्यता देते हैं, पर केवल एक बात मैं ओर पूछना चाहता हूं आप यह क्यों कहते हैं?- "बहुत बुरा है, बहुत अधिक बुरी बात हुई कि महान मेमोनाइड्स ने तुम्हें जाना--... आखिर आपके कहने का अर्थ क्या है? कृपया मुझे यह बतलाइये। आप कहना क्या चाहते हैं?"
बालशेम ने कहा: "तब तुमने उन्हें बोर किया होगा, पर मुझे नहीं।"

केवलमात्र ऊब जाने के कारण लोग यह विश्वास करना शुरू कर देते हैं- "हां, तुम जानते हो- लेकिन कृप्या खामोश हो जाओ।" और सिवाय इसके तुम कुछ नहीं जानते, और तुम उतने ही अज्ञानी हो जितने वे हैं। वहां केवल एक ही अंतर है, तुम उसे व्यक्त करने में अधिक पारंगत हो, तुमने कुछ अधिक पढ़ा है और तुमने थोड़ी सी अधिक धूल-धमास इकट्ठी की है, और वे लोग तर्क-वितर्क नहीं कर सकते, और तुम उन्हें उनके स्थानों पर बिठाकर खामोश बना सकते हो। उन्हें विश्वास करना होगा कि तुम जानते हो, और इससे उन्हें कोई भी अंतर नहीं पड़ता कि तुम उसे जानते हो अथवा नहीं?
यदि तुम सोचते हो कि तुम जानते हो तो प्रसन्न बने रहो, लेकिन तुम एक ऐसी पत्थर की दीवार खड़ी कर रहे हो कि उसे तोड़ना तुम्हारे लिए ही कठिन होगा- क्योंकि यदि तुम दूसरों को कायल करते हो, तो तुम भी उससे आश्वस्त हो जाते हो, कि हां, मैं जानता हूं। इसी तरह से वहां बहुत अधिक तथाकथित सद्गुरू हैं। वे कोई भी बात नहीं जानते, लेकिन उनके पास अनुसरणकर्त्ता हैं और उन अनुसरणकर्त्ताओं के कारण ही वे आश्वस्त हैं कि वे जानते हैं। उनके अनुसरणकर्त्ताओं को उनसे अलग कर दो कि तुम देखोगे कि उनका आत्मविश्वास चला गया है।
मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि लोग अपने अंदर गहराई में केवल स्वयं को आश्वस्त करने के लिए ही कि वे जानते हें, अनुसरणकर्त्ताओं को इकट्ठा कर लेते हैं। बिना अनुसरण करने वालों के तुम कैसे स्वयं अपने को आश्वस्त कर सकते हो? वहां कोई अन्य उपाय नहीं है- और तुम अकेले हो। और प्रत्यक्ष रूप से स्वयं अपने को धोखा देना कठिन है और दूसरों के द्वारा स्वयं अपने को धोखा देना सरल है। जब तुम किसी व्यक्ति से बात करते हो तो उसकी आंखों में एक चमक देखते हो, तुम उससे कायल हो जाते हो कि अनिवार्य रूप से तुम्हारे पास कुछ चीज है अन्यथा उसकी आंखों और उसके चेहरे पर यह चमक क्यों आई? वह प्रभावित हुआ था। इसी कारण हम लोगों को प्रभावित करने के लिए इतने अधिक व्यग्र होते है। मन, लोगों को प्रभावित करना चाहता है, जिससे उनके द्वारा वह प्रभावित हो सकें और तब उसके उधार ज्ञान पर विश्वास कर सकें जैसे मानो वह एक ईश्वरीय ज्ञान है। इससे सावधान रहो। यह छल-कपट के जालों में से एक है। एक बार तुम उसमें गिर जाते हो तो तुम्हारे लिए उससे बाहर आना कठिन होगा।
एक विद्वान पंडित की अपेक्षा एक पापी, सत्य तक कहीं अधिक सरलता से पहुंच सकता है, क्येंकि पापी अपने अंदर गहराई में यह अनुभव करता है कि वह एक अपराधी है। वह पश्चाताप कर सकता है और वह अनुभव करता है कि उसने कुछ कार्य गलत किए हैं। तुम एक भी पापी ऐसा नहीं खोज सकते हो जो आधारभूत रूप से प्रसन्न हो। वह अपराध का अनुभव करता है कि उसने कुछ कार्य गलत किया है और अपने अचेतन में वह पश्चाताप करता है ओर जो कुछ उसने किया है वह उसे अनकिया करना चाहता है, जिससे उसके जीवन में एक संतुलन लाया जा सके ओर किसी दिन वह उस संतुलन को लायेगा। लेकिन यदि तुम एक ज्ञानी हो, शब्दों, सिद्धांतों और दर्शनशास्त्र के एक महान पंडित हो, तब यह होना कठिन है, क्योंकि तुम अपने उधार ज्ञान के बारे में कभी भी अपराधबोध का अनुभव न करते हुए उसके बारे में अहंकारपूर्ण प्रसन्नता का अनुभव करते हो।
एक बात का स्मरण बना रहे, तुम्हें जो भी चीज़ अहंकार की अनुभूति कराती
है वह एक अवरोध है और जो भी चीज तुम्हें निर्हकारिता की अनुभूति देती है, वही मार्ग है।
यदि तुम एक पापी अथवा अपराधी हो और तुम अपराध करने का अनुभव करते हो,
तो इसका अर्थ है कि तुम्हारा अहंकार हिल गया है। अपराध करने के द्वारा तुम अहंकार इकट्ठा नहीं कर सकते। ऐसा अनेक बार हुआ है कि एक अपराधी ने एक क्षण में छलांग लगा ली है और वह एक संत बन गया है। ऐसा ही प्रथम रामकथा लिखने वाले भारतीय संता बाल्मीक को घटित हुआ। बाल्मीक एक डाकू और हत्यारे थे और एक क्षण में उनका रूपांतरण हो गया। ऐसा कभी भी किसी पंडित के साथ घटित नहीं हुआ और भारत अनेक पंडितों और विद्वान ब्राह्मणों का एक महान देश है। भारतीय विद्वानों के साथ तुम उनका कोई मुकाबला नहीं कर सकते ओर उनके पास हजारों वर्षों की एक लम्बी विरासत है और वे लोग शब्दों और शब्दों तथा केवल शब्दों पर ही जीते रहे हैं। लेकिन ऐसा कभी भी नहीं हुआ कि एक विद्वान अथवा

पंडित ने एक क्षण में छलांग लगाई हो, उसके अंदर विस्फोट हुआ हो और अपने अतीत से मुक्त होकर वह पूर्णरूप से नूतन बन गया हो। इस ढंग से ऐसा कभी भी नहीं हुआ। लेकिन अपराधियों के साथ एक क्षण में ऐसा कई बार हुआ है, क्योंकि अपने अंदर गहराई में, वे जो कुछ भी कर रहे थे, वे अहंकार के साथ व्यवस्था बनाने में कभी भी समर्थ नहीं हुए। वे जो कुछ भी कर रहे थे वह अहंकार को तोड़ने वाला था- और अहंकार ही वह पत्थर की दीवार है।
यदि तुम अनुभव करते हो कि तुम एक नैतिकवादी और एक कट्टर धार्मिक व्यक्ति हो, तो तुम सूक्ष्म अहंकार सृजित करोगे। यदि तुम सोचते हो कि तुम एक ज्ञानी हो, तो तुम एक सूक्ष्म अहंकार सृजित करोगे। स्मरण रहे, कि सिवाय अहंकार के वहां कोई भी पाप नहीं है, इसलिए उसे कभी इकट्ठा मत करो और वह हमेशा मिथ्या चीजों के द्वारा इकट्ठा हो जाता है, क्योंकि असली चीज़ें उसे हमेशा खण्ड-खण्ड कर देती हैं। यदि तुम वास्तव में जानते हो तो अहंकार विलुप्त हो जाता है और यदि तुम नहीं जानते हो तो वह इकट्ठा होकर बड़े से बड़ा
और मज़बूत बन जाता है। यदि तुम वास्तव में एक निर्मल हृदय और धार्मिक व्यक्ति हो तो अहंकार विलुप्त हो जाता है, लेकिन यदि एक कट्टर धर्मनिष्ठ
और नैतिकतावादी हो तो अहंकार शक्तिशाली हो जाता है। यह हमेशा निर्णय करने
का एक मापदण्ड होना चाहिए कि तुम जो कुछ भी कर रहे हो वह अच्छा है अथवा बुरा है, उसका निर्णय अहंकार के द्वारा करो। यदि अहंकार शक्तिशाली बन गया
है, तब वह गलत है, जितनी भी शीघ्र हो सके उसे तुरंत छोड़ दो। यदि अहंकार शक्तिशाली , तो वह अच्छा है।
यदि तुम प्रत्येक दिन मंदिर और प्रत्येक रविवार को चर्च जाते हो, और
तुम अहंकार के मजबूत होने का अनुभव करते हो तो चर्च मत जाओ- मंदिर जाना बंद
कर दो, क्योंकि वह एक विष है और वह तुम्हारी सहायता नहीं कर रहा है। यदि
तुम चर्च जाने के द्वारा यह अनुभव करते हो कि तुम धार्मिक हो अथवा तुम दूसरों की अपेक्षा कहीं अधिक महान, कहीं अधिक निर्मल और कुछ असाधारण व्यक्ति हो और यदि यह रवैया तुम्हारे अंदर आता है कि तुम दूसरों की अपेक्षा कहीं अधिक धार्मिक हो तब उसे छोड़ दो, क्योंकि यह दृष्टिकोण ही संसार में मौजूद केवल मात्र पाप है। अन्य सभी कार्य बच्चों के खेल जैसे हैं। यही दृष्टिकोण कि मैं तुम्हारी अपेक्षा कहीं अधिक धार्मिक हूं, केवल मात्र पाप है।
केवल वही करो जिससे तुम्हारा अहंकार मजबूत न होता हो और देर अथवा सबेर तुम बुद्धत्व को उपलब्ध हो जाओगे, क्योंकि जब वहां अहंकार नहीं है और एक क्षण के लिए भी वह तुम्हें छोड़ देता है- तो अचानक आंखें खुलती हैं और तुम उसे देख लेते हो। एक बार उसे देख लिया, तो वह कभी नहीं भूलता। एक बार दृष्टि मिल गई, तो वह तम्हारे जीवन में एक ऐसा शक्तिशाली चुम्बक बन जाता है कि वह तुम्हें विश्व के केंद्र के निकट से निकट खींचता चला जाता है। देर अथवा सबेर तुम्हारा उसमें विलय हो जायेगा।
लेकिन अहंकार प्रतिरोध करता है, अहंकार समर्पण करने से रोकता है। वह प्रेम का प्रतिरोध करता है, वह प्रार्थना करने से रोकता है, वह ध्यान करने से रोकता है और वह परमात्मा का भी प्रतिरोध करता है। सम्पूर्ण अस्तित्व के विरुद्ध लड़ने में, अहंकार ही एक प्रतिरोध है और इसी कारण वह एक पाप है और अहंकार की दिचस्पी हमेशा लोगों को प्रभावित करने की है। तुम जितना अधिक लोगों को प्रभावित करना चाहते हो, अहंकार उतना ही अधिक भोजन पाता है। यह एक सत्य है। यदि तुम किसी भी व्यक्ति को प्रभावित नहीं कर सकते हो तो तुम्हारे समर्थक अपने को वापस खींच लेते हैं और अहंकार कंपना शुरू हो जाता है उसके पास वास्तविकता में कोई भी आधार नहीं है और वह दूसरी की राय पर निर्भर है।
अब इस प्रसंग में प्रवेश करो: एक ढीठ छात्र।
यह एक विरोधाभास है, क्योंकि एक छात्र कभी भी ढीठ नहीं हो सकता, और यदि
वह है, तो वह एक छात्र नहीं हो सकता। एक छात्र उद्धत अथवा अविनीत नहीं हो सकता, क्योंकि एक छात्र होने का अर्थ है- ग्राह्यशील होना, सीखने को तैयार होना। और सीखने के लिए शीघ्रता क्या है? सीखने की तत्परता का अर्थ है: मैं जानता हूं कि मैं अज्ञानी हूं। यदि मैं जानता हूं कि मैं जानता हूं, तो मैं

कैसे सीख सकता हूं? तो द्वार बंद हैं, मैं सीखने को तैयार नहीं हूं; वास्तव में, मैं सिखाने को तैयार हूं।
एक ज़ेन मठ में एक बार ऐसा हुआ कि एक व्यक्ति आया और वह दीक्षा लेना चाहता था। सद्गुरु ने कहा: "यहां हमारे पास दीक्षा लेने वालों की दो श्रेणियां हैं मेरे पास आश्रम अथवा मठ में पांच सौ निवासी हैं और हमारे पास दो श्रेणियां हैं एक तो है शिष्य और एक है सद्गुरु की। इसलिए तुम किस श्रेणी में सम्मिलित होना चाहोगे?" वह व्यक्ति पूर्णरूप से नया था। उसे थोड़ी सी हिचकिचाहट का अनुभव हुआ। उसने कहा यदि यह संभव है तो मैं सद्गुरु जैसी दीक्षा लेना चाहूंगा।"
सद्गुरु केवल मज़ाक कर रहा था। वह केवल हास-परिहास कर रहा था- और उसने उसके अचेतन की गहराई में झांकना चाहता था।
प्रत्येक व्यक्ति एक सद्गुरु होना चाहता है और यदि तुम शिष्य भी बनते
हो तो तुम केवल एक साधन की भांति। एक सद्गुरु बनने का तुम उसका साधन की भांति प्रयोग करते हो। तुम्हें एक अनिवार्यता की भांति उससे होकर गुज़रना होता है, अन्यथा तुम कैसे एक सद्गुरु बन सकते हो? इसलिए तुम्हें एक शिष्य बनना होता है, लेकिन अहंकार की खोज सद्गुरु बनने की होती है, अहंकार सीखना नहीं, सिखाना चाहता है और यदि तुम सीखते भी हो, तो वह सीखना इस विचार के साथ होता है कि कैसे सिखाने के लिए तैयार हुआ जाये?
तुम मुझे सुनते हो। सुनने के साथ मेरे पास भी दो श्रेणियां हैं: तुम
एक शिष्य के समान सुन सकते हो और तुम एक होने वाले सद्गुरु की भांति सुन सकते हो। यदि तुम एक होने वाले सद्गुरु के समान सुनते हो तो तुम चूक जाओगे क्योंकि तुम उसे उस भक्ति की भांति नहीं सुन सकते हो। यदि तुम तैयार होने की और चमत्कार होने की केवल प्रतीक्षा कर रहे हो कि कैसे छलांग लगाकर एक सद्गुरु बना जाए और दूसरों को सिखाया जाये तो तुम ग्राह्यशील नहीं बन सकते हो। यदि तुम एक शिष्य हो और साथ में सद्गुरु बनने का कोई भी विचार नहीं है, केवल तुम तभी सीख सकते हो। पूरब में पुरानी परम्पराओं में से एक यह थी कि एक व्यक्ति सिखाना तब तक शुरू न करता था, जब तक कि उसका सद्गुरु उससे वैसा न कहे।
वहां बुद्ध का एक शिष्य था जो अनेक वर्षों तक उनके साथ बना रहा। उसका नाम पूर्ण था। वह बुद्धत्व को उपलब्ध हो गया और तब भी वह बुद्ध के ही साथ बना रहा। अपना बुद्धत्व घटने के बाद भी वह सुबह प्रत्येक दिन बुद्ध को सुनने के लिए आता। अब वह स्वयं एक बुद्ध था, उसमें कुछ भी कमी नहीं थी, अब वह अपने अधिकार के साथ खड़ा था, लेकिन पवचन में उसका आना जारी रहा।
एक दिन बुद्ध ने पूर्ण से पूँछा: " अब भी तुम क्यों आते रहते हो? अब तुम आना बंद कर सकते हो।"
और पूर्ण ने कहा:" जब तक आप ऐसा नहीं कहते, तो मैं अपना कैसे बंद कर सकता हुँ। यदि आप ऐसा कह रहे हैं, तो ठीक है"
तब उसने बुद्ध के प्रवचनों में जाना बंद किया, लेकिन वह संघ के साथ, सुनिश्चित पद्धति से ठीक एक छाया की भांति भ्रमण करता रहा। तब कुछ वर्षो के बाद तुम ने पुनः उससे कहा:"पूर्ण। तुम मेरा अनुसरण क्यों किये चले जाते हो? बुद्ध जाओं और लोगों का सिखाओं। तुम्हें यहाँ मेरे साथ रहने की जरूरत नहीं है।"
और पूर्ण ने कहा: " मै प्रतीक्षा कर रहा था। जब आप ऐसा कह रहे हैं तो मैं बाहर जाऊँगा। मैं एक शिष्य हूँ, इसलिए जो कुछ भी आप कहते हैं मैं उसका अनुपालन करूंगा। यदि आप ऐसा कहते हैं, तो ठीक है। इसलिए मुझे कहाँ जाना चाहिए। मुझे किस दिशा में जाना चाहिए? मुझे किसे सिखाना चाहिए? आप पूरी तरह से मझे निर्देश दीजिए और मैं उसका अनुसरण करूंगा। मैं तो एक अनुसरणकर्ता हूं।"
इस व्यक्ति ने अनिवार्य रूप से बुद्ध के पूर्ण रूप से सुना है, क्योंकि जब वह बुद्धत्व को उपलब्ध भी हो जाता है, वह एक शिष्य ही बना रहता है। और इस बारे में ऐसे लोग है जो पूर्ण से अज्ञानी है, और वे पहिले से ही सद्गुरु है। यदि वे सुन भी रहे है तो वे इस दृष्टिकोण से सुन रहे है कि देर अथवा सवेर उन्हें भी सिखाना होगा। तुम केवल दूसरों को बताने के लिए सुनते हो कि तुमने क्या सीखा है। मन यह विचार पूरी तरह गिरा दो, क्योंकि यदि वहाँ

वह विचार है, यदि होने वाला सद्गुरु वहाँ है, तो शिष्य उस विचार के साथ मौजूद नहीं रह सकता, वे कभी भी एक साथ नहीं रह सकते।
एक शिष्य, पूरी तरह से एक शिष्य होता है। एक दिन ऐसा होता है कि वह एक सद्गुरु बन जाता है, लेकिन वह एक लक्ष्य नहीं है, वह केवल एक परिणाम है। केवल एक सीखने वाला बनने के द्वारा ही कोई एक बुद्धिमान बनता है। वह एक फल अथवा परिणाम है, लक्ष्य नहीं है। यदि तुम पूरी तरह से बुद्धिमान बनने के लिए ही सीखते हो, तो तुम कभी नहीं सीख पाओगे, क्योंकि बुद्धिमान बनना एक अहंकारपूर्ण लक्ष्य है, वह अहंकार की ही एक यात्रा हैं और यदि तुम केवल परिपक्व होने की प्रतीक्षा कर रहे हो और एक सद्गुरु बन जाते हो, तो यह शिष्यत्व केवल वह द्वार है जिससे होकर गुजर जाना है। अच्छा है, जितनी शीघ्र हो सके वह समाप्त हो जाए, क्योंकि तुम उसमें प्रसन्न नहीं हो और तुम चाहते हो उसका अंत हो जाए- तब तुम एक शिष्य नहीं हो और तुम कभी भी एक सद्गुरु नहीं बनोगे...... क्योंकि जब एक शिष्य परिपक्व होता है, वह सहज स्वाभाविक रूप से एक सद्गुरू बन जाता है। वह केई लक्ष्य नहीं होता है जिसका कि अनुसरण करना होता है, वह एक उपाजात अर्थात एक बाईप्रोडक्ट की भाँति घटित होता है।
एक ढीठ छात्र, जो अविनीत और रुक्ष भी है, वह सोच रहा है कि पहले से ही जानता है--... और केवल वह धृष्टता ही है जो एक ऐसे मन के साथ हो सकती है, जो सोचता है कि वह उसे पहले से ही जानता है।
जब यामूका एक ढीठ और धृष्ट छात्र था
वह सद्गुरु डोक्यंन से भेंट करने गया
सद्गुरु को प्रभावित करने के लिए उसने उनसे कहा......
ये यामूका जैसे लोग मेरे पास लगभग प्रतिदिन आते हैं। मैं अनेक ऐसे लोगों से मिला हूँ। यह यामूका तो एक नमूना हैं। वे लोग मेरे पास आते हैं और कभी-कभी में उनसे बहुत अधिक मजा लेता हुँ।
एक बार ऐसा हुआ कि मेरे पास एक व्यक्ति आया और वह एक घंटे तक बात करता रहा और उसने पूरी वेंदांत सुना डाला। वह कई दिनों से मुझे पत्र लिखते हुए मुझसे भेंट करने के लिए समय माँग रहा था। उसे बहुत दूर से यात्रा करके आना था और वह यह कहता रहा था कि वह थोड़े से प्रश्न पूँछना चाहता हैं जब वह आया तो वह प्रश्न पूंछने के बारे में भूल गया और उसने मुझे उत्तर देना प्रारम्भ कर दिया और मैंने उससे कोई भी बात पूंछी नहीं थी। एक घंटे तक वह बातें, बातें और बाते ही करता रहा और वहाँ कोई भी अंतराल तक न था कि मैं उसे टोंक सकूँ। नहीं, वह तब भी नहीं सुनता इसलिए मुझे हाँ और हाँ कहना पड़ा। और मैंने उसे सुना और उसका आनंद लिया और एक घंटे बाद उसने कहा: "अब मुझे जाना होगा, क्योंकि मेरा समय समाप्त हो गया- लेकिन मैंने आपसे बहुत सी बातें सीखीं। और मैं इस भेंट को हमेशा हमेशा के लिए याद रखूंगा। मैं इस स्मृति को प्रिय मानते हुए अपने पास रखूंगा और आपने मेरी सभी समस्याओं का समाधान कर दिया।"
वास्तव में यही उसकी समस्या थी कि वह बातचीत करके कुछ बातें कहना चाहता था और मुझे कुछ जानकारी देना चाहता था। क्योंकि मैंने उसे सुना इसलिए वह बहुत प्रसन्न था। वह वैसा ही बना रहा, लेकिन वह बहुत प्रसन होकर गया।
लोग मेरे पास आते हैं और वे कहते हैं कि वे निश्चित रूप से जानते हैं
कि "सभी ब्रह्मा ही हैं। भारत ज्ञान के साथ बहुत अधिक बोझिल है और मूर्ख लोग इस बोझ के कारण ही और अधिक महान मूर्ख बन गए हैं, क्योंकि वे जानते है और वे ज्ञानियों की भांति बातें करते हैं। वे कहते है कि सभी कुछ ब्रह्म ही है और सत्य अद्वैत और अंत में वे कहते है-"मेरा मन बहुत अधिक तनावग्रस्त रहता है। क्या आप किसी बात का सुझाव दे सकते है"।
यदि तुम जानते हो कि अस्तित्व अद्वैत है, यदि तुम जानते हो कि द्वैत विद्यमान नहीं है तो तुम कैसे मुसीबत में पड़कर तनावग्रस्त हो सकते हों यदि तुम इसे जानते हो तो सारी कठिनाईयाँ मिट जाती है सारी चिंता विलुप्त हो? जाती है और दुःख मिट जाते है, लेकिन यदि तुम उनसे यह कहते हो कि तुम नहीं जानते हो, तो वे इसे सुनेंगे ही नहीं। और यदि तुम केवल उन्हें सुनते चले जाओ, तो अंत में सत्य अपने आप ही प्रकट हो जाएगा।

एक कचहरी में एक बार ऐसा हुआ कि एक व्यक्ति पर जेब घड़ी चुराने का इल्ज़ाम लगाया गया। वह व्यक्ति जिसकी घड़ी चुरा ली गई थी उसे थोड़ा कम दिखाई देता था। उसकी दृष्टि कमजोर थी और वह केवल चश्में के साथ ही देख सकता था। वह अपना चश्मा कहीं रखकर भूल गया था और जब सड़क पर चलते हुए इस व्यक्ति ने जेब काट कर उसकी घड़ी ले ली। जब न्यायाधीश ने जाँच पड़ताल करते हुए उससे पूछा- "क्या आप इस व्यक्ति को पहिचान सकते हैं कि यही वह व्यक्ति है जिसने आपकी घड़ी ली है?"
लूटे हुए व्यक्ति ने उत्तर दिया: "यह कहना कठिन है, क्योंकि मेरी दृष्टि कमजोर है और बिना चश्में के मैं ठीक से नहीं देख सकता हूं और प्रत्येक चीज थोड़ी धुंधली दिखाई देती हैं इसलिए मैं ठीक-ठीक नहीं कह सकता कि यही वह व्यक्ति है अथवा नहीं है, लेकिन मेरी घड़ी चुरा ली गई और मैं महसूस करता हूं कि यही वह व्यक्ति है।"
लेकिन क्योंकि वहाँ कोई दूसरा चश्मदीद गवाह अथवा अन्य कोई प्रमाण नहीं था और और उसे सिद्ध नहीं किया जा सकता था, मजिस्ट्रेट उस व्यक्ति को मुक्त करना पड़ा, और उसने कहा:" अब तुम मुक्त किये जाते हो। तुम जा सकते हो।"
लेकिन वह व्यक्ति थोड़ी उलझन में दिखाई दिया। न्यायधीश ने कहा: "अब तुम जा सकते हो, तुम मुक्त हो।" वह व्यक्ति तब भी उलझन में दिखाई दिया और न्यायाधीश ने पूछा:" क्या तुम कोई अन्य बात पूछना चाहते हो?"
उसने कहा:"हाँ, क्या मैं वह घड़ी पा सकता हूं" क्या मैं उसे अपने पास रख सकता हूँ?"
यही है, जो हो रहा है--... लोग बातें किये चले जाते है और यदि तुम उन्हें सुनते चले जाओ और अंत में तुम पाओगे कि उनका सभी वेंदात व्यर्थ है और आखिर में वे कुछ ऐसी बात पूँछते है जो सत्य को प्रकट कर देती है। वह दूसरा व्यक्ति केवल मौखिक रूप से वाग्यव्यवहार कर रहा है।
यह यामूका सद्गुरु डोक्यंन से भेंट करने गया। डोक्यून जापान में सबसे अधिक प्रेमपूर्ण व्यक्तियों में और सबसे अधिक सम्मानित लोगों में एक बुद्ध था।
सद्गुरु को प्रभावित करने की चाह से उसने कहा...
जब तुम एक सद्गुरु को प्रभावित करना चाहते हो तो तुम एक मूर्ख हो, तुम पूर्ण रूप से एक निर्बुद्धि हो। तुम चाहो, तो सारे संसार को प्रभावित कर सकते हो लेकिन कम-से-कम इस बारे में एक सद्गुरू को प्रभावित करने का प्रयास मत करें। अपने हदय के द्वार खोलो। मूर्खतापूर्ण बातें मत करो, और कम से कम वहाँ तो सच्चे बने रहो।
यदि तुम एक डॉक्टर के पास जाते हो, तो अपनी सारी बीमारियाँ उनके सामने खुलकर कह देते हो,, तुम उसे जाँच करने और रोग का निर्णय लेने की अनुमति देते हो। जो कुछ भी वहाँ है तुम उस बारे में प्रत्येक बात बतलाते हो और तुम उससे केई भी बात नहीं छिपाते हों यदि तुम डॉक्टर से कुछ भी छिपाते हो, तो पहली बात तो यह कि तुम उसके पास क्यों जाते हो? छिपाते चले जाओ। लेकिन यदि तुम उससे छिपाते हो तो फिर कैसे उससे सहायता पाने की आशा कर सकते हो?
तुम एक डॉक्टर से शरीर के बारे में प्रत्येक चीज बतलाते हो और एक सद्गुरु से तुम्हें अपनी आत्मा की प्रत्येक चीज बतानी होगी, अन्यथा कोई भी सहायता पाना संभव नहीं है जब तुम एक सद्गुरू के पास जाते हो, तो पूर्ण से जाओं उसके और अपने मध्य शब्दों का अबोध सृजित मत करो केवल उससे वहीं कहो जो तुम जानते हों। यदि तुम कुछ भी नहीं जानते हो तो कहो-"मैं नहीं जानता हूँ।"
जब पी.डी. ऑस्पेंस्की गुरु जिएफ के पास आया तो वह पहले से ही विश्व प्रसिद्ध एक महान विद्वान था- स्वयं गुरु जिएफ की अपेक्षा वह विश्व में कहीं अधिक विख्यात था। उन दिनों गुरु जिएफ एक अज्ञात फकीर था और ऑस्पेंस्की के द्वारा वह विख्यात बना। गुरु जिएफ से मिलने के पूर्व ही उसे एक महान ग्रंथ लिखा था। वह पुस्तक वास्तव में अद्वितीय है, क्योंकि वह उसमें इस तरह लिखता है जैसे मानो वह जानता है, और वह एक ऐसा पारंगत व्यक्ति कि वह धोखा दे सकता है। वह ग्रंथ है: टरशियम ओरगेनम- धर्मप्रधान व्यवस्था का तीसरा विचार और यह वास्तव में वह विश्व की अद्वितीय पुस्तकों में से एक

है। क्या-कभी अज्ञान भी ये कार्य कर सकता हैं यदि तुम कार्यकुशल हो तो अपने अज्ञान के साथ भी तुम वे कार्य कर सकते हो।
इस पुस्तक में आस्पेंसकी यह दावा करता है- और उसका दावा ठीक भी है कि संसार में वहाँ प्रामाणिक पुस्तकें केवल तीन ही है: पहली है: अरस्तू की "आरगेनम", जिसमें धर्मप्रधान व्यवस्था के प्रथम विचार है, दूसरी है, नेकन की "नोवम आरगेनम" अथवा धर्मप्रधान व्यवस्था के नूतन विचार और तीसरी है- "टरशियम आरेगेनम" अर्थात धर्मप्रधान व्यवस्था का तीसरा विचार। और वास्तव में यें तीनों पुस्तके अद्वितीय हैं। सभी तीनों लेखक अज्ञानी है, इसमें से कोई भी सत्य के बारे में कोई भी बात नहीं जानता है, लेकिन वे सभी बहुत पारंगत व्यक्ति है। बिना सत्य को जाने हुए उन्होनें वास्तव में चमत्कार किया है और इतनी अधिक सुंदर पुस्तके लिखी है। वे लगभग उसके चारों ओर आ गए है और वे लगभग पहुंच ही गए है।
जब आस्पेस्की गुरू जियेफ के पास आया तो उसका एक नाम था और गुरु जिएफ कोई भी नहीं था। निश्चित रूप से वह इस जानकारी के साथ आया था कि गुरु जिएफ एक आत्मवान व्यक्ति है, वह वास्तव में एक जानकारियां बटोरने वाला व्यक्ति नहीं है, बल्कि उसमें बहुत महत्वपूर्ण और सारभूत तत्त्व है। गुरु जिएफ ने किया क्या? उसने एक बात बहुत सुंदर की और वह मौन बना रहा। औस्पेस्की प्रतीक्षा करता रहा और प्रतीक्षा करते हुए वह बहुत बैचेन हो गया। इस व्यक्ति के सामने उसके पसीना निकलना शुरू हो गया, क्योंकि वह उसकी ओर देखते हुए पूर्ण रूप से मौन बना रहा। वह घबरा देने वाली स्थिति थी। उसकी जलती हुई आंखें उसके अंदर बहुत बहुत गहराई तक प्रविष्ट हो रही थीं- यदि वह चाहता तो अपनी आंखों से तुम्हें जला सकता था और उसका चेहरा कुछ ऐसा था कि यदि वह चाहता तो अपने चेहरे से ही तुम्हारे अस्तित्व को थर्रा सकता था। यदि वह तुम्हारे अंदर देखता तो तुम बहुत व्याकुल हो उठते। वह एक पत्थर की मूर्ति के समान बैठा रहा और आस्पैंस्की ने कॉपना शुरू कर दिया जैसे उस पर जूड़ी बुखार ने आक्रमण कर दिया हो। तब उसने साहस कर पूछा: "लेकिन आप मौन क्यों हैं? आप कुछ कहते क्यों नहीं?"
गुरुजिएफ ने कहा: "पहले तो एक चीज का निर्णय हो जाना है, पूर्णरूप से निर्णय हो जाना है, केवल तभी मैं एक भी शब्द कहूंगा। दूसरे कमरे के अंदर चले जाओ। तुम वहां कागज का एक टुकड़ा पाओगे। तुम जो कुछ भी तुम जानते हो, उस पर लिख देना और उसे भी लिख देना, जिसे तुम नहीं जानते हो। दो खाने बना लेना : एक तुम्हारे ज्ञान का हो और एक तुम्हारे अज्ञान का हो। क्योंकि जो कुछ भी तुम जानते हो, मुझे उस बारे में बात करने की कोई भी ज़रूरत नहीं है। हम उसके साथ ही समाप्त हो जाते हैं, तुम जानते हो, फिर उस बारे में बात करने की कोई भी ज़रूरत नहीं है। जो कुछ भी तुम नहीं जानते हो, मैं उसके बारे में बात करूंगा।"
ऐसा कहा जात है कि ऑस्पेंस्की इस कमरे के अंदर गया, कुर्सी पर बैठा, कागज और पेंसिल को उठाया और अपने जीवन में पहली बार उसने यह अनुभव किया कि वह कुछ भी नहीं जानता है। इस व्यक्ति ने उसके पूरे तथाकथित ज्ञान को नष्ट कर दिया, क्योंकि पहली बार वह सचेतनता के साथ यह लिखने जा रहा था: मैं परमात्मा को जानता हूं। पर इसे कैसे लिखा जाए- क्योंकि वह नहीं जानता था। कैसे लिखा जाए: मैं सत्य को जानता हूं?
ओस्पेंस्की एक प्रामाणिक व्यक्ति था। आधा घंटे के बाद वह वापस लौटा
और गुरुजिएफ को कोरा कागज़ देते हुए कहा: "अब आप कार्य शुरु कीजिए। मैं कुछ भी नहीं जानता हूं।"
गुरुजिएफ ने पूछा:"तुम टरशियम ओरगेनम कैसे लिख सके? तुम कोई भी बात नहीं जानते और तुमने लिखा है- "धर्म प्रधान व्यवस्था का तीसरा विचार।"
यह ऐसा ही है जैसे मानो लोग अपनी नींद में लिखते चले जाते हैं, अपने सपनों में लिखे चले जाते हैं और वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं और वे नहीं जानते कि उनके द्वारा क्या हो रहा है?
सद्गुरु को प्रभावित करने के लिए यामूका ने कहा:
वहां कोई मन नहीं है, वहां कोई भी शरीर नहीं है, और न वहां कोई बुद्ध है वहां न कुछ अच्छा है, वहां न कुछ भी बुरा है
वहां न कोई सद्गुरु है, और न कोई भी छात्र है

वहां न कोई कुछ दे रहा है और वहां न कोई कुछ ले रहा है।
जो कुछ भी हम सोचते हैं, हम देखते हैं और अनुभव करते हैं-वे सत्य नहीं है; ये प्रतीत होने वाली कोई भी चीजें वास्तव में अस्तित्व में नहीं हैं। यह सर्वोच्च सिखावन है, यह अंतिम सत्य है। यह बुद्ध की पूरी परम्परा
का सारभूत तत्व है- बुद्ध कहते हैं कि प्रत्येक वस्तु शून्य है। यह वही है, जिसके बारे में मैं तुम्हारे साथ सोसान के वचनों पर व्याख्या करते हुए बातचीत कर रहा था: प्रत्येक वस्तु में शून्यता है, प्रत्येक वस्तु केवल सापेक्ष है और पूर्ण रूप से कुछ भी अस्तित्व में नहीं है। यह सर्वोच्च समझ है, लेकिन तुम इस बात को एक पुस्तक में पढ़ सकते हो। यदि तुम इसे एक पुस्तक में पढ़ते हो तो वह पूरी तरह मूर्खतापूर्ण लगेगा।
वहां मन नहीं है, वहां शरीर नहीं है।
वहां बुद्ध भी नहीं है
बुद्ध ने कहा है: "मैं हूं ही नहीं"। लेकिन जब बुद्ध इसे कहते हैं, तो उसके अर्थ हैं कि वह कुछ चीज़ है। जब यामूका इसी बात को कहता है तो उसका अर्थ कुछ भी नहीं है। जब बुद्ध इसे कहते हैं तो वह बहुत महत्वपूर्ण है: "मैं हूं ही नहीं"- वह कहते हैं, "यदि मैं नहीं हूं, इसलिए और अधिक सजग बनो- जो तुम नहीं हो सकते।
वह कहते हैं- "यह मेरा अनुभव और समझ है। "व्यक्तित्व केवल एक लहर के समान है अथवा वह पानी पर खींची गई एक रेखा है। वह एक आकृति है और रूप अथवा आकृति निरंतर बदल रही हैं। रूप सत्य नहीं है। केवल अरूप ही सत्य हो सकता है। केवल अपरिवर्तनीय ही सत्य हो सकता है। और बुद्ध कहते हैं: तुम्हारा रूप विलुप्त होने के लिए सत्तर वर्ष का समय ले सकता है, लेकिन वह विलुप्त हो जाता है- और वह, जो एक दिन नहीं था और पुनः जो एक दिन नहीं होगा, वह मध्य में नहीं हो सकता। मैं नहीं था एक दिन और एक दिन मैं नहीं रहूंगा। दोनों ओर कुछ भी नहीं है- तो क्या ठीक मध्य में, मैं हूं, यह संभव नहीं है। दो अनस्तित्व के मध्य में यह अस्तित्व कैसे विद्यमान हो सकता है? दो शून्यताओं के मध्य में, वहां कैसे कोई महत्वपूर्ण चीज़ हो सकती है? वह एक झूठा सपना होना चाहिए।
सुबह तुम यह क्यों कहते हो कि सपना झूठा था? वह था, लेकिन तुम क्यों कहते हो कि वह मिथ्या था? असली और नकली होने का मापदण्ड क्या है? तुम निर्णय कैसे करोगे? और सुबह प्रत्येक व्यक्ति यह कहता है- "मैंने सपना देखा था और वह सपना मिथ्या था।" सपने का अर्थ है- नकली या मिथ्या होना- लेकिन क्यों? मापदण्ड यह है कि शाम को वह वहां नहीं था, जब मैं सोने के लिए गया, तो वह वहां नहीं था, जब मैं पुनः नींद से बाहर आया, तो भी वह वहां नहीं था, इसलिए वह मध्य में कैसे हो सकता है? कमरा वास्तविक है, सपना नकली है- जब तुम सोने गए तो कमरा वहांथा और जब तुम नींद से बाहर आए कमरा तब भी वहां था। कमरा असली और सत्य है, सपना मिथ्या है, क्येंकि सपने के पास उसके चारों ओर दो शून्यताएं हैं और दो शून्यताओं के मध्य में कुछ भी नहीं होता है। लेकिन कमरा बना रहता है, इसलिए तुम कहते हो: कि कमरा असली और सत्य है और सपना नकली और असत्य है।
एक बुद्ध इस संसार से बाहर आकर जाग गया है और वह उसे ठीक एक सपने के समान ही देखता है। तुम्हारा संसार भी मिथ्या है। वह इस बड़े सपने से जिसे हम संसार कहते हैं, बाहर आकर जाग गया है और तब वह कहता है- "वह वहां नहीं था, अब पुनः वह वहां नहीं है इसलिए मध्य में वह कैसे बना रह सकता है? इसीलिए बुद्ध, शंकराचार्य यह कहे चले जाते हैं-"संसार एक भ्रांति है, वह एक सपना है। लेकिन तुम उसे नहीं कह सकते, तुम केवल शब्द लेकर उन्हें दोहरा नहीं सकते।
इस याकूमा ने अनिवार्य रूप से इसे सुना होगा, अनिवार्य रूप से पढ़ा होगा अथवा अध्ययन कर उसे सीखा होगा। वह एक तोते के समान दोहरा रहा है- वहां न मन है, वहां न शरीर है और वहां न कोई बुद्ध है।
वहां न कुछ अच्छा है और वहां न कुछ भी बुरा है
क्येंकि वे सभी संबंधित और सापेक्ष हैं। स्मरण रहे, बुद्ध किसी भी चीज़ को सापेक्ष और मिथ्या कहते हैं और किसी चीज को परिपूर्ण सत्य कहते

हैं। सत्य का मापदण्ड स्वयं भू होना अथवा परिपूर्णता है और सपनों का मापदण्ड है सापेक्षता।
इसे समझने का प्रयास करो, क्योंकि यह आधारभूत है। तुम कहते हो तुम्हारा मित्र लम्बा है। तुम्हारे कहने का क्या अर्थ है? उसका लम्बा होना अथवा लम्बा न होना केवल तभी कहा जा सकता है- जब वह किसी व्यक्ति की अपेक्षा लम्बा हो। वह किसी अन्य व्यक्ति के समाने ठिगना हो सकता है, इसलिए उसमें लम्बाई नहीं है। लम्बाई केवल एक संबंध है, वह एक सापेक्ष घटना है। किसी अन्य व्यक्ति की तुलना में वह लम्बा है और किसी अन्य व्यक्ति की तुलना में वह बौना हो सकता है। इसलिए वह क्या है- वह एक बौना है अथवा एक लम्बा व्यक्ति है? नहीं ये दो चीजें सापेक्षताएं हैं। वह स्वयं में क्या है- लम्बा अथवा बौना? वह स्वयं में न लम्बा है और न बौना है। इसी कारण बुद्ध कहते हैं- "अच्छा भी अस्तित्व में नहीं है और बुरा भी अस्तित्व में नहीं है।"
कौन पापी है और कौन एक संत है? समझो!- यदि संसार में वहां केवल संत हों,
तो क्या वहां कोई संत होगा? यदि संसार में सभी लोग पापी हों तो क्या वहां पापी होंगे? संत के कारण ही पापी अस्तित्व में है। और पापियों के कारण ही संत अस्तित्व में है- वे परस्पर संबंधित हैं। इसलिए यदि तुम एक संत होना चाहते हो तो तुम एक पापी को सृजित करोगे, बिना पापियों के हुए तुम वहां एक संत नहीं हो सकते। इसलिए सजग बनो, एक संत मत बनो, क्येंकि यदि तुम एक संत बन जाते हो तो इसका अर्थ है कि कहीं दूसरी ध्रुवता को भी अस्तित्व में आना होगा।
संत होना मिथ्या है, पापी होना भी मिथ्या है। तुम स्वयं अपने में क्या हो? यदि तुम अकेले हो, क्या तुम एक पापी अथवा एक संत हो? तब तुम कोई भी नहीं हो। इस वास्तविकता में देखो, कोई भी अन्य चीज से असंबंधित तुम कौन हो?- बिना संबंध में स्वयं के अंदर देखो- तभी तुम परिपूर्ण सत्य तक आओगे, अन्यथा प्रत्येक चीज केवल एक सापेक्ष सीमा है। सापेक्षताएं और संबंध ही सपने हैं।
सत्य एक सापेक्षता नहीं है, वह एक परिपूर्णता है। तुम कौन हो?
यदि तुम अपने अंदर जाते हो और तुम कहते हो कि मैं प्रकाश हूं, तो फिर तुम सपना देख रहे हो, क्येंकि बिना अंधकार के प्रकाश का क्या अर्थ हो सकता है? प्रकाश को वहां बने रहने को अंधकार की आवश्यकता होती है। यदि तुम कहते हो कि मैं अपने अंदर आनंदित हूं, तो पुनः तुम सपना देख रहे हो, क्योंकि वहां आनंद को होने के लिए दुःख की जरूरत होती है। तुम किसी भी शब्द का व्यवहार नहीं कर सकते हो, क्योंकि सभी शब्द व्यवहारिक सापेक्षताएं हैं। इसी कारण बुद्ध कहते हैं कि हम किसी शब्द व्यवहार का प्रयोग नहीं कर सकते क्योंकि अंदर वहां शून्यता है। यह शून्यता भी भरेपन के विरुद्ध है, यह ठीक इस तरह कहने की भांति है कि सभी शब्द व्यवहार शून्य है। परिपूर्ण सत्य में कोई भी शब्द व्यवहार लागू नहीं होता है और तुम कोई भी बात नहीं कह सकते हो। बुद्ध हिंदुओं के साथ यह कहने में सहमत न होते कि सत्य "सत चित्-आनंद" है, क्योंकि वह कहते है। सत, असत के कारण अस्तित्व में है; चित, अचित के कारण अस्तित्व में है और आनंद, दुःख के कारण अस्तित्व में है। संत, अस्तित्व है। परमात्मा को अस्तित्वगत नहीं कहा जा सकता, क्योंकि तब अनास्तित्व की जरूरत होगी और अनिस्तत्व कहां रहेगा? परमात्मा को चैतन्य अथवा चेतना भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि तब अचेतन की ज़रूरत होगी और अचेतन कहां अस्तित्व में होगा? परमात्मा को परमानंद भी नहीं कहा जा सकता, क्येंकि तब दुःख की भी ज़रूरत होगी।
बुद्ध कहते हैं कि तुम जो कोई भी शब्द प्रयोग करते हो, वह व्यर्थ है, क्येंकि उसका विरोधी जरूरी होगा। स्वयं अपने अंदर देखो, तब तुम भाषा का प्रयोग नहीं कर सकते क्योंकि वहां केवल मौन रह जाता है। केवल मौन के द्वारा ही सत्य की ओर संकेत किया जा सकता है। और जब वह कहते हैं: "सारे शब्द व्यवहार शून्य हैं, सारे शब्द शून्य हैं, सभी वस्तुएं शून्य हैं, सभी विचार शून्य हैं," तो उनके कहने का अर्थ है- वे सापेक्ष हैं और सापेक्षता एक सपना है।
वहां न कुद अच्छा है, वहां न कुछ भी बुरा है

वहां न कोई सद्गुरु है और न कोई भी छात्र है
वहां न कोई कुछ दे रहा है और वहां न कोई कुछ ले रहा है
जो कुछ भी हम सोचते हैं, हम देखते हैं और अनुभव करते हे।, वे सत्य नहीं
है।
यह प्रतीत होने वाली कोई भी चीजें, वास्तव में अस्तित्व में नहीं हैं।
बुद्ध की सिखावनों में यह सबसे अधिक गहन और गूढ है। इसलिए एक बात का स्मरण रखना है कि तुम सर्वाधिक गूढ़ शब्दों को कभी भी दोहरा सकते हो और तुम फिर भी एक मूर्ख और निर्बुद्धि बने रहोगें यह यामूका मूर्ख है। वह बुद्ध के समान ठीक उन्हीं शब्दों को दोहरा रहा है।
शब्द तुम्हारी आत्माको वहन करते हैं। जब वहीं शब्द बुद्ध कहते है, तो उनके पास एक भिन्न शक्ति और एक भिन्न सुवास होती है। शब्द बुद्ध की और उनकी आत्मा की भी कुछ चीज उनके अंतरस्थ अस्तित्व को उसके स्वाद और सूक्ष्म गुणों को भी वहन करते हैं। उन शब्दों के द्वारा उनकी अंतरस्थ एकलयता का संगीत भी वहन किया जाता है। जब याकूमा उन्हें दोहराता है, तो वे शब्द बासी और मृत हैं और वे कोई भी सुवास साथ लेकर नहीं चलते।
याद रहे, केवल गीता को दोहराने के द्वारा यह मत सोचो कि कुछ भी चीज होने जा रही है, यद्यपि वे शब्द समान हैं और कृष्ण ने जिन शब्दों को कहा था, तुम उन्हें ही दोहरा रहे हो। पूरे विश्व भर में हजारों ईसाई मिशनरी उन्हीं शब्दों को दोहराये चले जाते हैं जिन्हें जीसस ने कहा था। वे शब्द मृत हैं। अच्छा यही है कि उनको न दोहराया जाए, क्योंकि तुम जितना अधिक दोहराते हो, वे उतने ही अधिक पुराने और बासी हो जाते हैं अच्छा यही है कि उनका स्पर्श ही न किया जाए, क्येंकि तुम्हारा स्पर्श ही ज़हरीला है। अच्छा यही है कि प्रतीक्षा की जाये। तब तुम एक क्राइस्ट चेतना अथवा एक कृष्ण चेतना अथवा एक बुद्ध चेतना को उपलब्ध होते हो, तब तुम्हारी खिलावट होना शुरू हो जायेगी, तब तुमसे निकल कर बाहर चीजें आना शुरू हो जायेगी- पर इससे पूर्व कभी भी नहीं। एक ग्रामोफोन रिकार्ड मत बनो... क्येंकि तब तुम केवल दोहरा सकते हो लेकिन उसकी किसी बात का कोई अर्थ नहीं है।
डोक्यूंन खामोशी से बैठा हुआ अपने पाइप से धूम्रपान करता रहा--...
वह एक बहुत आकर्षक व्यक्ति है... वह कभी कोई फिक्र ही नहीं करता। उसने
उसे टोंका नहीं और उसने समान्य रूप से अपने पाइप से धूम्रपान करना जारी रखा।
स्मरण रहे, केवल ज़ेन सद्गुरु ही धूम्रमान कर सकते हैं क्येंकि वे दावेदार नहीं बनते, वे छल कपट नहीं करते। तुम उनके बारे में क्या सोचते हो, वे उसकी फिक्र नहीं करते। वे स्वयं के साथ चैन और विश्राम में रहने वाले लोग हैं। तुम एक जैन मुनि के बारे में एक पाइप से धूम्रपान करने की बात सोच भी नहींसकते, अथवा न एक हिन्दू संयासी द्वारा भी- यह असंभव है। ये लोग नियमों और विधानों का पालन करने वाले लोग हैं और उन्हांने स्वयं अपने को बलपूर्वक अनुशासित किया हुआ है। यदि तुम धूम्रपान नहीं करना चाहते हो तो उसकी कोई भी आवश्यकता नहीं है, लेकिन यदि तुम करना चाहते हो तो स्वयं अपने को किसी मृत चीज़ के लिए बाध्य मत करो, क्योंकि वह कामना कहीं छिपी रहेगी ओर वह कामना ही बाध्य बनेगी। और क्यों? यदि तुम एक पाइप से धूम्रपान करना चाहते हो, तो उसे क्यों न करो? उसमें गलत क्या है? जितने तुम मिथ्या हो, उतना ही धूम्रपान करना भी मिथ्या है और पाइप और धूम्रपान करना वैसा ही सत्य है जैसे कि तुम हो।
लेकिन ऐसा क्यें नहीं? अंदर गहरे में तुम असाधारण बनना चाहते हो, और साधारण नहीं रहना चाहते। पाइप से धूम्रपान करना तुम्हें बहुत सामान्य बना देगा। यही है वे कार्य, जो सामान्य लोग कर रहे हैं- पाइप से धूम्रपान करना, चाय अथवा कॉफी पीना, हंसना, हास-परिहास करना- यह सभी कुछ कार्य सामान्य लोग भी कर रहे हैं। तुम एक महान संत हो- तुम सामान्य चीज़ें समान्य रूप से कैसे कर सकते हो? तुम एक महान संत हो- तुम असाधारण हो।
असाधारणता का आवरण ओढ़ने में तुम अनेक चीजों को छोड़ते हो। यदि तुम उन्हें पसंद नहीं करते हो तो उन्हें छोड़ने में कुछ भी बुरा नहीं है, वह ठीक है। केवल यह कहने के लिए कि तुम सामान्य हो, स्वयं अपने को पाइप से

धूम्रपान करने के लिए बाध्य बनाने की कोई भी आवश्यकता नहीं है क्योंकि मन ऐसे ही कार्य किए चले जाता है। किसी भी उस कार्य को करने की आवश्यकता नहीं है जिसे तुम नहीं करना चाहते हो, लेकिन यदि तुम चाहते हो तो "पोज़" मत करो और गंभीरता का मुखौटा ओढ़ने का प्रयास मत करो। तब सहज सामान्य बनो। कुछ भी गलत नहीं है यदि तुम सहज और सरल हो तो कोई भी चीज़ गलत नहीं है? तुम यदि सरल नहीं हो तो प्रत्येक चीज़ गलत है।
यह व्यक्ति डोक्यूंन अनिवार्य रूप से सहज सरल रहा होगा।
डोक्यूंन खामोशी से बैठा हुआ अपने पाइप से धूम्रपान करता रहा।
बहुत ध्यानपूर्ण होकर वह केवल विश्राम करते हुए उस दावेदारी की बातें सुन रहा था।
और वह कुछ भी नहीं कह रहा था
अचानक उसने अपना डंडा उठाया
और यामूका पर उससे प्रहार करते हुए
उसने उसकी बुरी तरह धुनाई कर दी।
डोक्यूनं ने कहा: जब इनमें से कोई भी चीज़ें
वास्तव में अस्तित्व में नहीं हैं और सभी कुछ एक शून्यता है
तो तुम्हारा यह क्रोध कहां से आ रहा है?
इस बारे में विचार करना।
डोक्यूंन ने एक स्थिति सृजित की और केवल स्थितियां ही गुप्त रहस्य को प्रकट करती हैं। वह कह सकता था-"जोकुछ भी तुम कह रहे हो, वह केवल उधार ज्ञान की सूचना मात्र है।" उससे बहुत अधिक अंतर नहीं पड़ता क्योंकि जो व्यक्ति उसके सामने बैठा हुआ था वह गहरी नींद में सोया था। केवल बात कहने से वह उससे बाहर न आता, हो सकता है कि वह नींद में अधिक देर तक बने रहने में उसकी सहायता करता और वह तर्क-वितर्क भी करना प्रारंभ कर सकता था। वस्तुतः कुछ कहने की अपेक्षा डोक्यूंन ने अपने डंडे से उस पर कठोर प्रहार करते हुए ठीक कार्य ही किया क्योंकि यामूका उसके लिए तैयार नहीं था, बिना आशा के अचानक वह प्रहार हुआ वह इतना अधिक अचानक किया गया था कि वह उसके अनुसार अपने चरित्र को व्यवस्थित न कर सका और न वह ढोंग रचते हुए उसे व्यवस्थित कर सका। वह चोट इतनी अधिक अचानक थी कि उसका मुखौटा हट गया और असली चेहरा प्रकट हो गया। केवल बातचीत करने से वह संभव न हुआ होता। डोक्यूंन अनिवार्य रूप से बहुत करुणावान रहा होगा।
केवल एक क्षण-भर के लिए क्रोध उभरकर बाहर आ गया और उसका असली चेहरा प्रकट हो गया क्योंकि यदि प्रत्येक चीज़ शून्य है तो तुम कैसे क्रोधित हो सकते हो? फिर क्रोध कहां से आ सकता है? कौन क्रोधित होगा, यदि वहां एक बुद्ध नहीं है और तुम वह नहीं हो। वहां कुछ भी नहीं है, केवल शून्यता ही विद्यमान है? शून्यता में क्रोध कैसे संभव है?
डोक्यूंन जोकुछ कर रहा है, वह इस याकूदा को उधार जानकारी से उसे सारभूत तत्व तक लाने को कह रहा है और वह उसे कठोर चोट पहुंचाने के द्वारा कर रहा है। एक स्थिति की आवश्यकता है, क्योंकि एक स्थिति में अचानक तुम वास्तविक रूप से वही बन जाते हो जो भी तुम हो। यदि शब्द स्वीकार किए जाते, यदि डोक्यूंन बातचीत करते हुए उससे कहता-"यह गलत है और यह ठीक है" तो मन की निरंतरता में सहायता करता है। तब वहां एक संवाद होगा लेकिन उसका कोई भी उपयोग नहीं होगा। वह एक आघात देता है, वह तुम्हें तुम्हारी वास्तविकता तक वापस लाता है। अचानक सभी विचार विलुप्त हो जाते हैं। यामूका, यामूका है, वह एक बुद्ध नहीं है। वह एक बुद्ध के समान बात कर रहा है और केवल एक चोट से ही बुद्ध विलुप्त हो जाता है और अंदर से क्रोधित यामूका बाहर आ जाता है। डोक्यूंन ने कहा: जब इनमें से कोई भी चीज़ें-
वास्तव में अस्तित्व में नहीं हैं और सभी कुछ एक शून्यता है
तो तुम्हारा यह क्रोध कहां से आ रहा है?
इस बारे में विचार करना।
बुद्ध के बारे में बात मत करो, सत्य के बारे में बात मत करो और वास्तविकता के बारे में बात मत करो, इस क्रोध के बारे में विचार करोकि यह कहां से आता है?

यदि तुम वास्तव में क्रोध के बारे में सोच रहे हो कि वह कहां से आता है
तो तुम शून्यता तक पहुंच जाओगे।
अगली बार जब तुम क्रोध का अनुभव करो अथवा यदि नहीं कर सकते तो मेरे पास आना। मैं तुम पर एक कठोर चोट करूंगा। मैं उसे दिए चले जाता हूं लेकिन डोक्यूंन की अपेक्षा मेरी चोटें कहीं अधिक सूक्ष्म हैं। मैं एक असली डंडे का प्रयोग नहीं करता, वह आवश्यक नहीं है; तुम इतने अधिक नकली हो कि एक असली डंडे की कोई भी आवश्यकता नहीं है। मुझे तुम्हें भौतिक रूप से चोट देने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन आत्मिक रूप से मैं उसे दिए चले जाता हूं। मैं ऐसी स्थितियां सृजित किए चले जाता हूं, जिनमें मैं तुम्हारे बुद्धत्व के मुखौटे से तुम्हें तुम्हारे यामूकापन में वापस लाने का प्रयास करता हूं, क्योंकि तुम्हारे अंदर वह यामूका ही वास्तविक है और बुद्ध होना केवल एक मुखौटा है। स्मरण रहे मुखौटे को नहीं यामूका को ही रहना है। मुखौटे को नहीं यामूका को ही श्वास लेनी है और मुखौटे को नहीं यामूका को ही भोजन पचाना है। मुखौटा नहीं यामूका ही प्रेम में पड़ेगा, यामूका ही क्रोधित होगा और यामूका को ही मरना भी है इसलिए अच्छा यही है कि तुम मुखौटे से मुक्त होकर अपने यामूकापन में ही वापस लौट आओ।
स्मरण रहे, बुद्ध एक मुखौटा नहीं बन सकता। यदि यामूका स्वयं ही अपने अंदर गहराई में चलता चला जाता है तो वहां बुद्ध को पालेगा और स्वयं के अंदर में कैसे जाना है? कोई भी संवेग जो अंदर से आता है, उसका अनुसरण करो और पीछा करते हुए वापस पीछे लौटो। क्या क्रोध आया है? अपनी आंखें बंद कर लो; यह एक सुंदर क्षण है क्योंकि क्रोध अपने अंदर से ही आया है, वह तुम्हारे अस्तित्व के प्रामाणिक केंद्र से आता है इसलिए ठीक अपने पीछे की ओर देखो, गतिशील होकर केवल देखो कि वह कहां से आ रहा है?
तुम सामान्य रूप से क्या करते? और यह यामूका क्या कर सका? उसने यदि विचार किया होता कि यह क्रोध इस डोक्यूंन के कारण ही उत्पन्न हुआ है क्योंकि उसने तुम्हें कठोरता से पीटा और इसी कारण क्रोध उत्पन्न हुआ था। तुमने डोक्यूंन की ओर एक स्रोत की भांति देखा होता। पर डोक्यूंन स्रोत नहीं है, यह हो सकता है कि उसने तुम पर कठोर प्रहार किया हो लेकिन वह स्रोत नहीं है, यदि उसने बुद्ध पर प्रहार किया था तो क्रोध नहीं आता, वह तो यामूका है।
लौटकर पीछे जाओ, स्रोत के लिए बाहर की ओर मत देखो, अन्यथा क्रोध का यह सुंदर क्षण खो जाएगा और तुम्हारा जीवन इतना अधिक नकली बन गया है कि एक क्षण के अंदर तुम फिर से अपने मुखौटे को पहन लोगे, तुम मुस्कराओगे और तुम कहोगे-"जी हां! प्यारे सद्गुरु! आपने बहुत अच्छा कार्य किया।
नकली शीघ्र ही अंदर से आएगा, इसलिए उस क्षण से चूको मत। जब क्रोध आ गया
है तो इससे पूर्व कि नकली आता है वह ठीक एक क्षणांश होता है। क्रोध सत्य है, वह जोकुछ तुम कह रहे हो, उसके अपेक्षा वह कहीं अधिक सत्य है और तुम्हारे मुंह से बुद्ध के कहे गए शब्द मिथ्या हैं। तुम्हारा क्रोध सत्य है क्योंकि वह तुमसे संबंध रखता है, वह सभी कुछ जो तुम्हारा अपना ही है, वह सत्य है। इसलिए इस क्रोध के स्रोत की ख्ल्लाज करो कि वह कहां से आ रहा है। अपनी आंखें बंदकर अपने अंतरस्थ की ओर गतिशील हो जाओ, वह खो जाए, इससे पूर्व पीछे लौटकर स्रोत तक जाओ और तुम शून्यता पर पहुंचोगे। अधिक पीछे लौटकर और अधिक अपने अंतरस्थ तथा अधिक अपनी गहराई में जाओ और एक क्षण आता है जब वहां कोई भी क्रोध नहीं होता है। अंदर केंद्र पर वहां कोई भी क्रोध नहीं है। अब बुद्ध एक चेहरा नहीं होगा और एक मुखौटा नहीं होगा। अब कोई वास्तविक चीज़ अंदर प्रविष्ट हो गई है।
यह क्रोध कहां से आता है? वह तुम्हारे केंद्र से कभी नहीं आता है, वह अहंकार से आता है और अहंकार एक मिथ्या सत्ता है। यदि तुम और गहराई में जाते हो तो तुम पाओगे कि वह केंद्र से न आकर परिधि से आता है। केंद्र पर परिपूर्ण शून्यता है इसलिए वह केंद्र से नहीं आ सकता है, वह अहंकार से आता है और अहंकार समाज के द्वारा निर्मित एक झूठी सत्ता है, वह एक पहचान और एक सापेक्षता है। अचानक तुम पर कठोर चोट होती है और अहंकार आघात लगने का अनुभव करता है और वहां क्रोध आता है। यदि तुम किसी व्यक्ति की सहायता करते हो, किसी व्यक्ति को देखकर मुस्कराते हो और नीचे झुककर किसी व्यक्ति को

सम्मान देते हो अथवा उसकी चापलूसी करते हो, यदि तुम एक स्त्री से कहते हो-"आप कितनी अधिक सुंदर हैं" और वह मुस्कराती है तो वह मुस्कान अहंकार से आ रही है क्योंकि केंद्र पर वहां न तो सुंदरता है और न कुरूपता है, केंद्र पर वहां परिपूर्ण शून्यता है, वहां कोई आत्मा भी नहीं है, अनत्ता है और उस केंद्र को ही पाना है।
एक बार तुम उसे जान लेते हो तो तुम एक अनस्तित्व की भांति गतिशील होते हो। तुम्हें कोई भी व्यक्ति क्रोधित नहीं बना सकता और तुम्हें कोई भी व्यक्ति प्रसन्न, अप्रसन्न और दुखी नहीं बना सकता। नहीं, उस शून्यता में सभी द्वैतताएं, प्रसन्नता-अप्रसन्नता, दुखी और आनंदित होना सभी मिट जाते हैं। यही बुद्धत्व है। यही है वह जो बोधि-वृक्ष के नीचे गौतम सिद्धार्थ को घटित हुआ था। वह शून्यता पर पहुंच गए थे। तब प्रत्येक चीज़ मौन हो जाती है। तुम विरोधों के पार चले जाते हो।
एक सद्गुरु तुम्हें तुम्हारे अंतरस्थ की शून्यता की ओर जाने में तुम्हारी सहायता करने के लिए होता है और सद्गुरु को उन विधियों की योजना बनानी होती है जो तुम्हें तुम्हारे अंतरस्थ के तीर्थ और मौन तक ले जाए। केवल ज़ेन सद्गुरु ही डंडे से पीटते हैं और कभी-कभी वे एक शिष्य को खिड़की के बाहर भी पेंफक देते हैं अथवा वे उस पर कूद पड़ते हैं क्योंकि तुम इतने अधिक नकली बन गए हो कि ऐसी तीव्र और प्रभावी विधियों की आवश्यकता होती है और विशेष रूप से जापान में क्योंकि जापान में सभी कुछ बहुत अधिक बनावटी और नकली है।
जापान में एक मुस्कान भी बनावटी है। प्रत्येक व्यक्ति मुस्कराता है,
वह केवल एक आदत है और जहां तक समाज का संबंध है, वह एक सुंदर आदत है क्योंकि जापान में यदि तुम कार चलाते हुए टोकियो की सड़क पर एक व्यक्ति को टक्कर मारकर चोटिल कर देते हो तोकुछ ऐसी घटना घटित होगी जो अन्य कहीं और घटित नहीं हो सकती है: चोट खाने वाला व्यक्ति मुस्कराएगा और झुककर तुम्हें धन्यवाद देगा। अन्य कहीं भी न होकर ऐसा केवल जापान में ही हो सकता है। वह व्यक्ति कहेगा-"यह मेरी ही गलती है" और तुम कहोगे-"नहीं, यह मेरी गलती है।" यदि तुम दोनों जापानी हो तो दोनों ही कहेंगे-"यह मेरी ही गलती है और दोनों ही एक-दूसरे के सामने झुकेंगे, मुस्कराएंगे और अपने रास्तों पर आगे चले जाएंगे। एक तरफ से यह अच्छा है क्योंकि एक-दूसरे पर नाराज होने और चीखने- चिल्लाने तथा भीड़ एकत्र कर लेने का क्या लाभ और उपयोग है?
प्रारंभिक बचपन से ही जापानियों को हमेशा मुस्कराते रहने का अनुशासन सिखाया जाता है और यही कारण है कि पश्चिम में उन लोगों के बारे में यह सोचा जाता है कि वे लोग बहुत धूर्त और चालाक हैं और तुम उन पर विश्वास नहीं कर सकते क्योंकि तुम नहीं जानते कि वे लोग क्या अनुभव कर रहे हैं। तुम यह नहीं जानसकते कि एक जापानी क्या अनुभव करता है क्योंकि वह कभी भी किसी भी चीज़ को बाहर आने की अनुमति नहीं देता है।
यह एक पराकाष्ठा है कि प्रत्येक चीज़ नकली और झूठी है, उस पर रंग-रोगन लगाया गया है। इसलिए ज़ेन सद्गुरुओं को इन तीव्र और कठोर विधियों की योजना बनानी पड़ी क्योंकि केवल इनके द्वारा ही जापानी मुखौटे नीचे गिरते अन्यथा वे स्थाई रूपसे लगभग उनकी त्वचा बन गए हैं, जैसे मानो त्वचा के अंदर उनकी कलम लगा दी गई हो।
केवल जापान में ही नहीं, अब ऐसा ही पूरे संसार-भर में घटित हो रहा है। केवल डिग्रीज़ अर्थात मात्रा और तापमान का अंतर हो सकता है लेकिन अब पूरा संसार ही इसी तरह का है। प्रत्येक व्यक्ति हंसता है, मुस्कराता है, पर न तो हंसी असली है और न मुस्कान। प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे के बारे में अच्छी- अच्छी बातें कहता है पर कोई भी व्यक्ति उन पर विश्वास नहीं करता और न कोई भी व्यक्ति उस तरह से अनुभव करता है, वह एक सामाजिक शिष्टाचार बनकर रह गया है।
तुम्हारा व्यक्तित्व एक सामाजिक घटना है। तुम्हारी आत्मा, इस व्यक्तित्व के नीचे गहराई में दप़्ाफन है। तुम्हें एक चोट अथवा धक्के की आवश्यकता है जिससे तुम्हारे व्यक्तित्व को बाहर पेंफक दिया जाए अथवा कुछ क्षणों के लिए तुम उसके साथ और अधिक तादात्म्य न बना सको और अपने केंद्र पर पहुंच जाओ, जहां प्रत्येक चीज़ में शून्यता है।

ध्यान की पूरी कला ही यह है कि कैसे सरलता से व्यक्तित्व को छोड़कर केंद्र की ओर गतिशील हुआ जाए और एक व्यक्ति बनकर न रहा जाए। ध्यान की पूरी कला और अंतरस्थ के परमानंद की पूरी कला ही यही है कि एक व्यक्ति बनकर मत रहो और केवल होना भर रह जाओ।

और फूलों की बरसात हुई
तीसरा प्रवचन

उत्तेजना से भरा स्वभाव

एक ज़ेन (ध्यान) सीखने वाला शिष्य सद्गुरु बांके के पास आया और उसने कहा-"सद्गुरु! मेरे पास एक उच्छृंखल और उत्तेजित स्वभाव है मैं कैसे उसे ठीक कर सकता हूं?"
बांके ने कहा-"इस उत्तेजना को मुझे दिखलाओ, सजगता के मंत्र से वह ठीक
हो जाती है।
उस शिष्य ने कहा-"ठीक अभी तो वह मेरे पास नहीं है इसलिए मैं उसे आपको दिखला नहीं सकता।"
बांके ने कहा-"तब ठीक है। जब वह तुम्हारे पास हो तो उसे मेरे पास ले आना।"
उस शिष्य ने प्रतिरोध करते हुए कहा-"लेकिन मैं उसे आपके पास नहीं ला सकता क्योंकि जब मुझे वह घटित होता है तभी वह मेरे पास होता है। वह अनायास उत्पन्न होता है और मैं उसे आपके पास ला सवूंफ, उससे पूर्व ही निश्चित रूप से मैं उसे खो दूंगा।"
सद्गुरु बांके ने कहा-"उस स्थिति में वह तुम्हारे सच्चे स्वभाव का भाग नहीं हो सकता। यदि वह होता तो तुम उसे किसी भी समय मुझे दिखा सकते थे, जब तुम्हारा जन्म हुआ था वह तुम्हारे पास नहीं था और तुम्हारे माता-पिता ने भी उसे तुम्हें नहीं दिया था-

इसलिए वह तुम्हारे अंदर अनिवार्य रूप से बाहर से ही आना चाहिए।
मैं तुम्हें सुझाव देता हूं-
वह जब कभी भी तुम्हारे अंदर आता है
तुम एक डंडे से स्वयं अपने को तब तक पीटते रहो
जब तक कि वह स्थिर खड़ा न रह सके
और स्वयं ही भाग न जाए।"

प्रामाणिक और सच्चा स्वभाव ही तुम्हारा शाश्वत स्वभाव है। तुम उसे प्राप्त नहीं कर सकते और वह प्राप्त होता भी नहीं। वह कुछ ऐसी चीज़ नहीं है जो आती है और जाती है, वह तुम हो। वह कैसे आ और जा सकता है? वह तुम्हारी आत्मा है। वह तुम्हारी प्रामाणिक आधारशिला है। वह पास कभी भी नहीं हो सकती है और कदाचित वह अभी न हो, पर वह हमेशा ही वहां होती है।
इसलिए एक सत्य, स्वभाव अथवा ताओ के खोजी के लिए यह मापदंड होना चाहिए
कि हमें अपनी आत्मा में उस स्थिति तक आना है जो हमेशा-हमेशा बनी रहती है, तुम्हारे जन्म से पूर्व भी वह वहां थी और जब तुम मर जाओगे वह तब भी वहां बनी रहेगी। वह केंद्र है। परिधि बदलती है पर केंद्र पूर्ण रूप से शाश्वत बना रहता है और वह समय के पार है। कोई भी चीज़ उसे प्रभावित नहीं कर सकती है, कोई भी चीज़ उसमें परिवर्तन नहीं कर सकती और वास्तव में कोई भी चीज़ कभी उसका स्पर्श तक नहीं करती है और वह बाहर के संसार की सभी तरह की पहुंच के पार बनी रहती है।
सागर के निकट जाओ और उसका निरीक्षण करो। वहां लाखों लहरें हैं लेकिन नीचे उसकी गहराई में सागर शांत और मौन होकर गहन ध्यान में बना रहता है, सारा शोर केवल सतह पर है। वह केवल उस सतह पर है जहां सागर बाहर के संसार और हवाओं से मिलता है। अन्यथा स्वयं में वह हमेशा समान बना रहता है और कोई भी चीज़, यहां तक कि एक लहर भी उसे नहीं बदलती।
ठीक ऐसा ही तुम्हारे भी साथ है। ठीक परिधि पर जहां तुम दूसरों से मिलते हो, ठीक बाहर की सतह पर जहां हवाएं आती हैं और तुम्हारा स्पर्श करती हैं, वहां उपद्रव है, व्यग्रता है, क्रोध, आसक्ति, लोभ और लालसा है। और यदि तुम परिधि पर ही बने रहते हो तो तुम इस बदलते हुए घटनाक्रम को परिवर्तित नहीं कर सकते हो और वह वहां बना ही रहेगा।

अनेक लोग उसे वहां परिधि पर बदलने का प्रयास करते हैं। वे उसके साथ लड़ते हैं और प्रयास करते हैं कि एक भी तरंग उत्पन्न न हो और उनके संघर्ष के द्वारा और अधिक तरंगें उत्पन्न होती हैं क्योंकि जब सागर हवा के साथ लड़ता है तो वहां और अधिक विप्लव होगा: अब उसमें न केवल हवा सहायता करेगी, सागर भी उसमें सहायता करेगा और वहां परिधि पर तीव्र उपद्रव और अव्यवस्था होगी (सभी नैतिकतावादी, मनुष्य को परिधि पर बदलने का प्रयास करते हैं। परिधि ही तुम्हारा चरित्र है, तुम संसार में कोई चरित्र साथ लेकर नहीं आते, तुम पूर्ण रूप से बिना किसी चरित्र के एक कोरे कागज की भांति आते हो और वह सभी कुछ जिसे तुम चरित्र के नाम से पुकारते हो, दूसरों के द्वारा लिखा गया है। तुम्हारे मात-पिता, समाज, शिक्षक और उनकी नीति, नियम और अनुशासन की शिक्षाएं, वे सभी तुम्हारी "कनडीशनिंग" हैं। तुम एक कोरे कागज के समान आते हो और जोकुछ तुम पर लिखा गया है वह दूसरों से आता है इसलिए जब तक तुम फिर से एक कोरे कागज न बन जाओ, तुम नहीं जानोगे कि स्वभाव अथवा प्रवृफति क्या होती है, तुम नहीं जानोगे कि ब्रह्म क्या है और क्या होता है "ताओ"।
इसलिए समस्या यह नहीं है कि कैसे तुम्हारे पास एक सुदृढ़ चरित्र हो, समस्या यह नहीं है कि तुम कैसे अक्रोध को उपलब्ध हो और कैसे अव्यवस्थित न बनो- नहीं, समस्या यह भी नहीं है। समस्या यह है कि तुम अपनी चेतना को कैसे परिधि से बदलकर केंद्र पर ले जाओ। तब अचानक तुम देखते हो कि तुम्हारे पास सदा से शांति ही रही है। तब तुम परिधि को एक दूरी से देख सकते हो और वह फासला इतना अधिक विराट और अनंत है कि तुम उसका यों निरीक्षण कर सकते हो, जैसे मानो वह तुम्हें घटित नहीं हो रहा है। वास्तव में वह तुम्हें कभी भी नहीं घटता है। जब तुम उसमें पूरी तरह खो भी जाते हो, वह तुम्हें कभी भी नहीं होता है और तुम्हारे अंदर कुछ चीज़ शांत व स्थिर बनी रहती है, कुछ चीज़ उस पार की एक साक्षी की भांति बनी रहती है।
इसलिए एक खोजी के लिए पूरी समस्या यह है कि वह कैसे अपने ध्यान को परिधि से केंद्र पर ले जाए, कैसे उसका विलय उसके साथ हो जाए जो अपरिवर्तनशील है और कैसे उसके साथ तादात्म्य न जोड़ा जाए, जो केवल एक सीमा रेखा है। सीमा रेखा पर दूसरे लोग बहुत प्रभावशाली हैं क्योंकि सीमा पर परिवर्तन होना स्वाभाविक है। परिधि बदलती चली जाएगी और एक बुद्ध की भी परिधि बदलती है।
एक बुद्ध और तुम्हारे मध्य अंतर चरित्र का अंतर नहीं है, इसे स्मरण रखो कि वह अंतर न नैतिकता का है, न वह अंतर सदाचार अथवा दुराचार का है, वह अंतर वहां है जहां तुम आधार से जुड़े हो।
तुम परिधि पर स्थापित हो और एक बुद्ध केंद्र में स्थापित है। वह अपनी
ही परिधि को एक दूरी से देख सकता है, जब तुम उस पर चोट करते हो तो वह उसे यों देख सकता है जैसे मानो तुमने किसी अन्य व्यक्ति पर चोट की हो क्योंकि केंद्र, परिधि से बहुत दूर है। यह इस तरह है जैसे मानो वह एक पहाड़ी पर एक निरीक्षणकर्ता की भांति बैठा हो और नीचे घाटियों में कुछ चीज़ घटित हो रही हो और वह उसे देख सकता है। यही वह पहली बात है जिसे समझना है।
दूसरी बात: नियंत्रित करना तो बहुत सरल है पर रूपांतरित करना बहुत कठिन है। नियंत्रित करना बहुत सरल है। तुम अपने क्रोध को नियंत्रित कर सकते हो, लेकिन तुम करोगे क्या?- तुम उसका दमन करोगे और जब तुम एक विशिष्ट चीज़ का दमन करते हो तो होता क्या है? उसके गतिशील होने की दिशा बदल जाती है : वह बाहर जा रही थी और यदि तुम उसका दमन करते हो तो वह अंदर की ओर जाना शुरू कर देती है और केवल उसकी दिशा बदल जाती है।
क्रोध का बाहर जाना अच्छा था, क्योंकि विष को बाहर पेंफक देने की आवश्यकता होती है। क्रोध का अपने ही अंदर गतिशील हो जाना बुरा है क्योंकि इसका अर्थ है कि तुम्हारे मन और शरीर का पूरा ढांचा उसके द्वारा विषाक्त हो जाएगा और तब यदि तुम उसे एक लंबी अवधि तक किए चले जाते हो- जैसे कि प्रत्येक व्यक्ति करता आ रहा है क्योंकि समाज तुम्हें रूपांतरण करना नहीं, नियंत्रण करना सिखाता है। समाज कहता है-"स्वयं पर नियंत्रण रखो और नियंत्रण करने के द्वारा सभी नकारात्मक चीज़ें अचेतन के गहरे से गहरे तल में पेंफक दी गई हैं और तब वे तुम्हारे अंदर निरंतर बने रहने वाली चीज़ें बन जाती हैं। तब यह प्रश्न तुम्हारे कभी क्रोधित होने और कभी क्रोधित न

होने का नहीं रह जाता- तुम पूरी तरह से क्रोधित होते हो। जब कभी तुममें विस्फोट जैसा हो जाता है और कभी नहीं होता है क्योंकि वहां कोई भी क्षमा देना नहीं है अथवा तुम्हें एक बहाना खोजना होता है। स्मरण रहे कि तुम कहीं भी एक बहाना खोज सकते हो।
मेरे मित्रों में से एक व्यक्ति अपनी पत्नी को तलाक देना चाहता था इसलिए वह विवाह के मामलों में एक विशेषज्ञ वकील के पास गया और उसने वकील से पूछा-"मैं किस आधार पर अपनी पत्नी को तलाक दे सकता हूं?"
वकील ने उसकी ओर देखा और पूछा-"क्या आप विवाहित हैं?"
उस व्यक्ति ने कहा-"निश्चित रूप से हूं।"
वकील ने कहा-"विवाहित होना ही पर्याप्त आधार है। इस बारे में अन्य आधारों को खोजने की आवश्यकता ही नहीं है। यदि तुम तलाक चाहते हो तब केवल विवाह ही ऐसी चीज़ है जो आवश्यक होती है क्योंकि यदि तुम विवाहित नहीं हो तो एक स्त्री को तलाक देना असंभव होगा। यदि तुम विवाहित हो तो यह पर्याप्त है।"
ठीक यही स्थिति है। तुम क्रोधित हो क्योंकि तुमने क्रोध का बहुत अधिक दमन किया है, अब वहां ऐसे क्षण नहीं होते हैं जब तुम क्रोधित न हो, अधिक-से- अधिक कभी-कभी तुम कम और कभी अधिक क्रोधित होते हो। दमन के द्वारा तुम्हारा पूरा अस्तित्व विषैला हो गया है। तुम क्रोध के साथ ही भोजन करते हो और जब एक व्यक्ति बिना क्रोध के भोजन करता है तो उसके पास एक भिन्न गुण होता है। उसका निरीक्षण करना बहुत आकर्षक होता है क्योंकि वह अहिंसक रूप से भोजन करता है। हो सकता है कि वह मांसाहार कर रहा हो लेकिन वह अहिंसक रूप से भोजन करता है। तुम हो सकता है केवल फल और सब्जियां खा रहे हो लेकिन यदि तुमने क्रोध का दमन किया है तो तुम हिंसक रूप से उन्हें खाते हो।
केवल खाने के द्वारा ही, तुम्हारे दांत, तुम्हारा मुंह क्रोध को बाहर निकालते हैं। तुम भोजन को यों पीसते हुए चबाते हो जैसे मानो वह शत्रु हो। स्मरण रहे जब कभी जानवर क्रोधित होते हैं तो वे क्या करेंगे? केवल दो चीज़ें ही संभव हैं जो वे कर सकते हैं क्योंकि उनके पास न तो अस्त्र-शस्त्र होते हैं और न अणु बम होते हैं, फिर वे क्या कर सकते हैं? वे या तो अपने नाखूनों से अथवा अपने दांतों से तुम पर अपनी हिंसा निकालेंगे।
नाखून और दांत- ये ही उनके शरीर के प्रावृफतिक हथियार हैं। अपने नाखूनों के साथ तुम्हारे लिए कुछ भी कार्य करना बहुत कठिन है हालांकि लोग कहेंगे-"क्या तुम एक जानवर हो?" इसलिए तुम्हारे पास केवल एक ही चीज़ बचती है जिसके द्वारा तुम सरलता से अपने क्रोध और अपनी हिंसा को प्रकट कर सकते हो और वह तुम्हारा मुंह है और किसी व्यक्ति को काटने में भी तुम उसका प्रयोग नहीं कर सकते हो। इसी कारण हम कहते हैं- एक रोटी का दांतों से काटना, भोजन कोकुतरते हुए खाना अथवा काटकर थोड़े से टुकडे़ करना।
तुम हिंसक रूप से भोजन करते हो, जैसे मानो भोजन ही शत्रु है। स्मरण रहे जब तुम भोजन को शत्रु मानते हो तो वह वास्तव में तुम्हारा पोषण नहीं करता है, वह उसी सभी को पोषित करता है जो तुम्हारे अंदर रुग्ण है। वे लोग जो क्रोध का गहराई तक दमन करते हैं वे अधिक भोजन करते हैं और वे अपने शरीर में अनावश्यक चर्बी को एकत्रित किए चले जाते हैं। क्या तुमने यह निरीक्षण किया है कि मोटे लोग लगभग हमेशा मुस्कराते रहते हैं। यदि वहां हंसने या मुस्कराने का कोई भी कारण न हो तब भी मोटे व्यक्ति अनावश्यक रूप से हमेशा मुस्कराये चले जाते हैं। क्यों? यह चेहरा ही उनका मुखौटा है, वे लोग अपने क्रोध और अपनी हिंसा से इतने अधिक डरे हुए हैं कि वे अधिक भोजन किए चले जाते हैं और उन्हें अपने चेहरे पर निरंतर एक मुस्कान बनाए रखनी होती है। क्रोध और हिंसा अधिक होने से लोग अधिक भोजन करते हैं। तब यह प्रत्येक मार्ग में, तुम्हारे जीवन की प्रत्येक गतिविधि और कार्य में गतिशील होगी। तुम प्रेम करोगे लेकिन वह प्रेम की अपेक्षा हिंसा के समान अधिक होगी और उसमें कहीं अधिक आक्रामकता होगी क्योंकि तुम यह कभी नहीं देखते कि जैसे तुम नहीं, कोई अन्य व्यक्ति प्रेम कर रहा है और तुम नहीं जानते कि क्या हो रहा है और तुम जान भी नहीं सकते कि तुमको क्या हो रहा है क्योंकि तुम हमेशा लगभग इतने अधिक आक्रामक होते हो।

यही कारण है कि प्रेम के द्वारा संभोग सर्वोच्च शिखर की गहनता असंभव
बन जाती है क्योंकि तुम नीचे गहराई में भयभीत होते हो कि यदि तुम बिना नियंत्रण पूर्ण रूप से गतिशील होते हो तो तुम अपनी पत्नी अथवा प्रेमिका को मार भी सकते हो अथवा पत्नी अपने पति अथवा प्रेमी को जान से भी मार सकती है। तुम अपने ही क्रोध से इतने अधिक भयभीत हो जाते हो।
अगली बार जब तुम प्रेम करो तोनिरीक्षण करना, तुम वैसी ही गतिविधियां
कर रहे होगे जैसी तुम तब करते हो जब तुम आक्रामक होते हो। अपने चारों ओर दर्पण रख देना जिससे तुम देख सकते हो कि तुम्हारे चेहरे पर क्या भाव प्रकट हो रहे हैं। क्रोध और आक्रामकता के सभी तरह के बिगड़े रूप वहां होंगे। भोजन लेते समय तुम क्रोध में बने रहते हो: जरा भोजन करते हुए एक व्यक्ति का निरीक्षण करो। प्रेम करते हुए एक व्यक्ति की ओर देखो उसके अंदर क्रोध इतनी अधिक गहराई तक चला गया है कि क्रोध के पूर्ण रूप से विपरीत, सक्रियता भी विषैली बन गई है और पूर्ण रूप से तटस्थ सक्रियता भी जहरीली बन गई है। तब तुम केवल द्वार खोलते हो और वहां क्रोध होता है। तुम मेज पर एक पुस्तक रखते हो और वहां क्रोध होता है, तुम अपने जूते उतारते हो और वहां क्रोध होता है, तुम किसी से हाथ मिलाते हो और वहां क्रोध होता है क्योंकि अब तुम्हारे क्रोध ने वह रूप धारण कर लिया है।
दमन के द्वारा मन विभाजित हो जाता है। जिस भाग को तुम स्वीकार करते हो
वह चेतन बन जाता है और जिस भाग की तुम निंदा अथवा तिरस्कार करते हो, वह अचेतन बन जाता है। यह विभाजन प्रावृफतिक नहीं है, यह विभाजन दमन के कारण होता है। समाज जिसको अस्वीकार करता है तुम उस सभी कूड़े-करकट को अपने अचेतन में पेंफकते चलते जाते हो लेकिन स्मरण रहे तुम जोकुछ भी वहां अपने अंदर पेंफकते हो वह तुम्हारा अधिक-से-अधिक भाग बन जाता है, वह तुम्हारे हाथों में, तुम्हारी अस्थियों में, तुम्हारे रक्त में और तुम्हारे हृदय की धड़कनों में चला जाता है। अब मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि लगभग अस्सी प्रतिशत बीमारियां दमित मनोभावों के कारण ही होती हैं: इतने हृदयघातों के होने का अर्थ है कि इतने अधिक क्रोध और घृणा का दमन किया गया था कि हृदय विषैला बन गया।
क्यों? आखिर मनुष्य क्यों इतना अधिक दमन करता है कि वह अस्वस्थ हो जाता है क्योंकि समाज सिखाता है कि मनोवेगों का रूपांतरण नहीं उनका दमन करो और रूपांतरण करने का मार्ग पूर्ण रूप से भिन्न है। एक चीज़ के लिए वह किसी भी प्रकार से नियंत्रण करने का मार्ग नहीं है और वह ठीक उसके विपरीत है।
पहली बात: नियंत्रण करने में तुम दमन करते हो और रूपांतरण में तुम उसे अभिव्यक्त करते हो लेकिन किसी अन्य व्यक्ति पर अभिव्यक्त करने की वहां कोई भी आवश्यकता नहीं है क्योंकि अन्य दूसरा व्यक्ति केवल असंगत है। अगली बार तुम क्रोध का अनुभव करो तो घर के बाहर जाकर उसके चारों ओर सात चक्करों में दौड़ों और इसके बाद एक वृक्ष के नीचे बैठकर निरीक्षण करो कि क्रोध कहां चला गया। तुमने उसका दमन नहीं किया है, तुमने उसका नियंत्रण नहीं किया है, तुमने उसे किसी अन्य व्यक्ति पर नहीं पेंफका है क्योंकि यदि तुम उसे किसी अन्य व्यक्ति पर पेंफकते हो तो एक श्रृंखला सृजित हो जाती है क्योंकि दूसरा व्यक्ति वैसा ही मूर्ख है जैसे तुम हो और वह उतना ही अचेतन है जैसे तुम हो। यदि तुम उसे दूसरे व्यक्ति पर पेंफकते हो और वह दूसरा व्यक्ति बुद्धत्व को उपलब्ध है तो वहां कोई भी कठिनाई नहीं होगी और वह तुम्हें उसे रेचन के द्वारा बाहर पेंफकने और उससे मुक्त होने में तुम्हारी सहायता करेगा लेकिन दूसरा व्यक्ति भी उतना ही अज्ञानी है जैसे तुम हो यदि तुम उस पर क्रोध पेंफकते हो तो वह प्रतिक्रिया करेगा। वह उतना ही अधिक दमित है जैसे तुम हो और वह तुम पर और अधिक क्रोध उलीचेगा। तब वहां एक श्रृंखला बन जाती है तुम उस पर पेंफकते हो और वह तुम पर पेंफकता है तथा तुम दोनों शत्रु बन जाते हो।
उसे किसी भी अन्य व्यक्ति पर मत पेंफको। यह ठीक उसी के समान है कि जब तुम उल्टी करने जैसा अनुभव करते हो तो तुम बाहर जाकर किसी अन्य व्यक्ति पर उल्टी नहीं करते हो। क्रोध को एक उल्टी करने की आवश्यकता है। तुम बाथरूम में जाते हो और उल्टी कर देते हो। उससे पूरा शरीर साफ शुद्ध और हल्का हो

जाता है और यदि तुम उल्टी को रोकते हो तो वह खतरनाक होगा तथा जब तुम उल्टी कर देते हो तो तुम ताजगी का तथा भारमुक्त होने का अनुभव करते हो, तुम अच्छा होने, हल्का और स्वस्थ होने का अनुभव करते हो। जो भोजन तुमने लिया उसमें कुछ चीज़ गलत थी और शरीर उसे अस्वीकार करता है। उसे अंदर जाने को विवश मत करो।
क्रोध केवल एक मानसिक वमन है। कुछ गलत चीज़ है जो तुमने अपने अंदर ले
ली है और तुम्हारा पूरा मानसिक अस्तित्व उसे बाहर पेंफकना चाहता है लेकिन उसे बाहर किसी भी व्यक्ति पर पेंफकने की कोई भी आवश्यकता नहीं है क्योंकि लोग उसे दूसरों पर पेंफकते हैं और समाज उन्हें नियंत्रित करने के लिए कहता है।
इस बारे में अपने क्रोध को किसी अन्य व्यक्ति पर पेंफकने की कोई भी आवश्यकता नहीं है। तुम अपने बाथरूम में जा सकते हो, तुम एक लंबी अवधि तक दूर तक टहलने जा सकते हो, इसका अर्थ है कि तुम्हारे अंदर कुछ ऐसी चीज़ थी जिसे तीव्र क्रियाशीलता की आवश्यकता है जिससे उसे बाहर छोड़ा जा सके। केवल थोड़ी देर तक जॉगिंग करो और तुम अनुभव करोगे कि वह मुक्त हो गई है अथवा एक तकिया लेकर उसको पीटना शुरू कर दो, तकिये के साथ लड़ो, तकिये काटो, नोचों जब तक तुम्हारे हाथ और दांत विश्राममय न हो जाएं। पांच मिनट के रेचन से तुम भार मुक्त होने का अनुभव करोगे और एक बार तुम इसे जान लेते हो फिर तुम अपने क्रोध को कभी भी किसी व्यक्ति पर नहीं पेंफकोगे क्योंकि वह पूर्ण रूप से एक मूर्खता है।
पहली चीज़ है रूपांतरण, तब है क्रोध को अस्वीकार करना लेकिन किसी अन्य व्यक्ति पर नहीं क्योंकि यदि तुम उसे किसी अन्य व्यक्ति पर अभिव्यक्त करते हो तो तुम उसे पूरी तरह से अभिव्यक्त नहीं कर सकते। हो सकता है कि तुम उसे जान से मार देना चाहते हो, हो सकता है कि तुम उसे दांतों से काटना चाहते हो लेकिन ऐसा करना संभव नहीं है। लेकिन ऐसा एक तकिये के साथ किया जा सकता है। एक तकिये का अर्थ है जो पहले ही बुद्धत्व को उपलब्ध हो चुका है, तकिया बोध का उपलब्ध हुआ एक बुद्ध है। तकिया कोई भी प्रतिक्रिया नहीं करेगा और न तकिया शिकायत करने कोर्ट-कचहरी जाएगा और न तकिया तुम्हारे विरुद्ध कोई शत्रुता लाएगा और न कोई अन्य कार्य करेगा। तकिया प्रसन्न होगा और तकिया तुम पर हंसेगा।
दूसरी बात जो स्मरण रखना है: सजग बने रहो। नियंत्रण करने में किसी सचेतनता की आवश्यकता नहीं है, तुम उसे पूरी तरह से यंत्रवत एक रोबोट के समान करते हो। क्रोध आता है और इस बारे में एक यांत्रिकत्व है, अचानक तुम्हारा पूरा अस्तित्व सिकुड़कर बंद हो जाता है। यदि तुम सावधान हो तो नियंत्रण इतना अधिक सरल नहीं हो सकता है।
समाज तुम्हें कभी भी सावधान होकर निरीक्षण करने की शिक्षा नहीं देता
है क्योंकि जब कोई व्यक्ति सावधानी से निरीक्षण करता है तो वह पर्याप्त खुला हुआ होता है। वह सचेतनता का एक भाग है कि कोई एक खुला हुआ है और यदि तुम किसी चीज़ का दमन करना चाहते हो और तुम खुले हुए हो तो यह एक विरोधाभास है, वह चीज़ बाहर आ सकती है। समाज तुम्हें सिखाता है कि तुम कैसे स्वयं को अंदर से बंद कर लो, कैसे तुम स्वयं के अंदर गुफा बनाकर छिपा लो और किसी भी चीज़ को बाहर जाने के लिए एक छोटी-सी खिड़की तक को खुलने की अनुमति न दो। लेकिन याद रखो: जब कोई भी चीज़ न अंदर आती है और न बाहर जाती है तथा जब तुम्हारे बंद होने से क्रोध भी बाहर नहीं जा सकता है। यदि तुम एक सुंदर चट्टान का स्पर्श करते हो तो अंदर कुछ भी नहीं जाता, तुम एक सुंदर पुष्प की ओर देखते हो, अंदर कुछ भी नहीं जाता है क्योंकि तुम्हारी आंखें बंद और मुर्दा हैं। तुम एक व्यक्ति का चुंबन लेते हो- अंदर कुछ भी नहीं जाता है क्योंकि तुम बंद हो। तुम एक असंवेदनशील जीवन जी रहे हो।
सचेतनता के साथ ही संवेदनशीलता विकसित होती है। नियंत्रण करने के द्वारा तुम मंद और मृत हो, जो नियंत्रण करने के यांत्रिकत्व का एक भाग है। यदि तुम मंद और मृत हो तुम्हें कुछ भी प्रभावित नहीं करेगा, जैसे मानो तुम्हारा शरीर सुरक्षा का एक किला बन गया है। तब तुम्हें कुछ भी प्रभावित नहीं करेगा, न तो अपमान और न प्रेम।

लेकिन इस नियंत्रण करने की एक बहुत बड़ी व अनावश्यक कीमत होती है और तब
वह जीवन में एक प्रयास बन जाता है कि स्वयं पर कैसे नियंत्रण रखा जाए और तब मर जाया जाए। नियंत्रण रखने का पूरा प्रयास तुम्हारी सारी ऊर्जा ले लेता है और तब तुम पूरी तरह से मर जाते हो। जीवन एक मंद, सुस्त और मृत प्रायः चीज बनकर रह जाता है तथा तुम किसी तरह से उसे ढोते हो।
समाज तुम्हें नियंत्रण करना और तिरस्कार करना सिखाता है क्योंकि एक बच्चा केवल तभी नियंत्रण करेगा जब वह अनुभव करता है कि कुछ चीज़ तिरस्वृफत है। क्रोध बुरा है, सेक्स बुरा है और प्रत्येक वह चीज जिसका नियंत्रण करना होता है और उसे ऐसा बनाना होता कि वह बच्चे को एक पाप करने के समान तथा एक बुराई करने के समान दिखाई दे।
मुल्ला नसरुद्दीन का बेटा बड़ा हो रहा था। वह दस वर्ष का था और इसीलिए मुल्ला ने सोचा कि अब यही समय है और चूंकि वह पर्याप्त बड़ा हो गया है कि जीवन के गुप्त रहस्यों को उसके सामने प्रकट कर देना चाहिए। इसलिए उसने उसे अपने अध्ययन कक्ष में बुलाया और उसे पक्षियों तथा मधुमक्खियों के मध्य सेक्स के होने वाले घटिया कार्य व्यापार के बारे में बताया और तब अंत में उसने कहा-"जब तुम यह अनुभव करो कि तुम्हारा छोटा भाई भी पर्याप्त व्यस्क हो गया है तो उसे भी इस पूरी चीज़ के बारे में बतलाना है।"
ठीक कुछ ही मिनटों के बाद जब वह बच्चों के कमरों के पास से होकर गुजर रहा था तो उसने सुना कि बड़ा दस वर्ष का लड़का पहले ही से कार्य में जुटा हुआ था। वह छोटे वाले को बता रहा था कि देखो, तुम जानते ही हो जब लोग एक बच्चे को पाना चाहते हैं तो वे लोग किस तरह के घटिया दर्जे का कार्य करते हैं। पापा, पक्षियों और मधुमक्खियों के बारे में बता रहे थे कि वे भी ऐसे ही सुई डोरे से रफू करने का कार्य करते हैं।
वह सभी कुछ जो जीवंत है, उसके बारे में एक गहन निंदा और तिरस्कार का भाव प्रविष्ट हो जाता है। सेक्स सबसे अधिक जीवंत चीज़ है और उसे होना ही है। वह स्रोत है। क्रोध भी सबसे अधिक जीवंत विषय है क्योंकि वह सुरक्षात्मक शक्ति है। यदि एक बच्चा बिल्कुल भी क्रोधित नहीं हो सकता तो जीवित बने रहने में समर्थ नहीं होगा। विशिष्ट क्षणों में तुम्हें क्रोधित होना ही होगा। बच्चे को अपना अस्तित्व प्रदर्शित करना ही होगा, उसे विशिष्ट क्षणों में अपने आधार पर खड़ा होना ही होगा अन्यथा उसके पास कोई आधार स्तम्भ न होगा।
क्रोध सुंदर है, सेक्स भी सुंदर है, पर सुंदर विषय भी कुरूप हो सकते हैं। यह तुम पर निर्भर करता है। यदि तुम उनका तिरस्कार करते हो तो वे कुरूप बन जाते हैं और तुम उनका रूपांतरण करते हो तो वे दिव्य बन जाते हैं। रूपांतरित हुआ क्रोध ही करुणा बन जाता है क्योंकि ऊर्जा समान है। एक बुद्ध करुणावान होता है: उसकी करुणा कहां से आती है? यह वही समान ऊर्जा है जो क्रोध में गतिशील हो रही थी और अब वह क्रोध मे गतिशील नहीं हो रही है और वही समान ऊर्जा करुणा में रूपांतरित हो गई है। प्रेम कहां से आता है? एक बुद्ध प्रेमपूर्ण हैं, एक जीसस तो प्रेम ही हैं। वही समान ऊर्जा जो सेक्स में गतिशील होती है, प्रेम बन जाती है।
इसलिए स्मरण रहे, यदि तुम एक प्रावृफतिक और स्वाभाविक घटना का तिरस्कार और निंदा करते हो तो वह विषैली बन जाती है वह विध्वंसक और आत्मघाती बन जाती है तथा तुम्हें नष्ट कर देती है। यदि तुम उसे रूपांतरित करते हो तो वह दिव्य बन जाती है, वह परमात्मा की शक्ति बन जाती है, वह अमृत बन जाती है तथा तुम उसके द्वारा मृत्युहीन आत्मा और शाश्वतता को उपलब्ध होते हो लेकिन उसका रूपांतरित होना आवश्यक है।
रूपांतरण में तुम कभी भी नियंत्रण नहीं करते हो, तुम पूरी तरह से कहीं अधिक सजग बने रहते हो। क्रोध घटित हो रहा है तो तुम्हें सजग रहना होगा कि क्रोध घटित हो रहा है, उसका निरीक्षण करो। वह एक सुंदर घटना है तुम्हारे अंदर ऊर्जा उत्तप्त होकर गतिशील हो रही है।
यह ठीक बादलों में कौंधने वाली विद्युत के समान है। लोग आकाशीय विद्युत से सदा भयभीत रहते थे। पुराने बीते दिनों में वे लोग अज्ञानी थे तो ऐसा सोचते थे कि यह विद्युत परमात्मा के क्रोधित होने के कारण थी, वह उन्हें धमकी देते हुए दंड देने का प्रयास कर रही थी, वह उनके अंदर भय

उत्पन्न कर रही थी जिससे लोग उसकी पूजा और आराधना करें, जिससे लोग यह अनुभव करें कि वहां परमात्मा था और वह उन्हें दंड दे सकता था।
लेकिन अब हमने परमात्मा की उस शक्ति को पालतू बना लिया है। अब परमात्मा की वह शक्ति तुम्हारे पंख के द्वारा दौड़ती है, तुम्हारी वातानुकूलित व्यवस्था और फ्रिज के द्वारा गतिशील होकर जोकुछ भी तुम्हारे लिए जरूरी है, परमात्मा की वह शक्ति उस कार्य को पूरा करती है। परमात्मा की वह शक्ति गृह उपयोग की शक्ति बन गई है और अब वह और अधिक धमकाने वाला परमात्मा का क्रोध नहीं रह गया है। विज्ञान के द्वारा एक बाहर की शक्ति रूपांतरित होकर एक मित्र बन गई है।
धर्म के द्वारा अंतरस्थ शक्तियों के लिए भी ऐसा ही होता है। तुम्हारे शरीर में क्रोध ठीक एक विद्युत के समान है और तुम नहीं जानते कि उसके साथ क्या करना है। या तो उससे तुम स्वयं अपने को मारते हो अथवा किसी अन्य व्यक्ति की हत्या करते हो। समाज कहता है कि तुम स्वयं को मारते हो तो वह ठीक है, वह तुम्हारी अपनी रुचि है, लेकिन अन्य किसी व्यक्ति को मत मारो और जहां तक समाज कहता है वह ठीक है। इसलिए या तो तुम आक्रामक बनो अथवा तुम नियंत्रण में बने रहो।
धर्म कहता है कि दोनों ही गलत हैं। मौलिक विषय जिसकी जरूरत है वह है सजग बनना और इस क्रोध की ऊर्जा का जो अंतरस्थ की विद्युत है उसके रहस्यों को जानना। वह विद्युत ही है क्योंकि जब तुम क्रोधित होते हो तो उत्तप्त हो जाते हो और तुम्हारा तापक्रम गर्म हो जाता है और तुम एक बुद्ध की शीतलता को नहीं समझसकते क्योंकि जब क्रोध करुणा में रूपांतरित हो जाता है तो प्रत्येक चीज़ शीतल हो जाती है। एक गहन शीतलता घटित होती है। बुद्ध कभी भी गर्म नहीं होते, वह हमेशा शीतल और केंद्रित बने रहते हैं, क्योंकि अब वह जानते हैं कि इस अंतरस्थ विद्युत का उपयोग कैसे किया जाए। विद्युत गर्म है और वह वातानुकूलित व्यवस्था का स्रोत बन जाती है। क्रोध भी गर्म होता है और वह करुणा का स्रोत बनता है।
करुणा अंतरस्थ की वातानुकूलित स्थिति है। अचानक प्रत्येक चीज़ शीतल
और सुंदर हो जाती है और तुम्हें कोई भी चीज़ व्याकुल और क्षुब्ध नहीं कर सकती तथा पूरा अस्तित्व रूपांतरित होकर एक मित्र बन जाता है। अब वहां और कोई भी शत्रु नहीं रह जाते क्योंकि जब तुम क्रोध की आंखों के द्वारा देखते हो तो कोई भी व्यक्ति शत्रु बन जाता है और जब तुम करुणा भरे नेत्रों के द्वारा निहारते हो तो प्रत्येक व्यक्ति एक मित्र और पड़ोसी है। जब तुम प्रेम करते हो तो प्रत्येक स्थान पर परमात्मा होता है तथा जब तुम घृणा करते हो तो प्रत्येक स्थान पर शैतान होता है। यह तुम्हारा ही दृष्टिकोण है जो तुम वास्तविकता पर प्रक्षेपित करते हो।
निंदा और तिरस्कार नहीं, सजगता की आवश्यकता है तथा सजगता के द्वारा
ही सहज और स्वाभाविक रूप से रूपांतरण होता है। यदि तुम अपने क्रोध के प्रति सचेत हो जाते हो तो समझ प्रविष्ट होती है। केवल बिना किसी निर्णय के साथ, न अच्छा कहते हुए और न बुरा कहते हुए निरीक्षण करते हुए तुम अपने अंर्ताकाश में सावधानी से निरीक्षण करते रहो। वहां क्रोध की विद्युत चमकेगी, तुम गर्म होने का अनुभव करोगे, तुम्हारा पूरा नाड़ी-यंत्र कंपने और थरथराने लगेगा, तुम अपने पूरे शरीर में कंपन और थरथराहट का अनुभव करोगे क्योंकि जब ऊर्जा कार्य करती है तो वह एक सुंदर क्षण होता है तथा तुम सरलता से उसका निरीक्षण कर सकते हो और जब वह कार्य नहीं कर रही है तो तुम उसका निरीक्षण भी नहीं कर सकते हो।
अपनी आंखें बंद कर लो और उस पर ध्यान करो। उससे लड़ो मत, केवल देखते रहो
कि क्या हो रहा है- पूरा आकाश विद्युत के साथ इतना अधिक चमक उठा है और वह बहुत अधिक सुंदर है- केवल नीचे भूमि पर लेट जाओ और आकाश की ओर देखते हुए निरीक्षण करते रहो। तब ऐसा ही अपने अंर्ताकाश में भी करो।
वहां बादल भी हैं क्योंकि बिना बादलों के वहां विद्युत नहीं हो सकती, वहां घने काले बादल हैं, वे विचारों के बादल हैं। किसी व्यक्ति ने तुम्हारा अपमान किया है, किसी व्यक्ति ने तुम्हारा उपहास किया है, किसी व्यक्ति ने यह अथवा वह कहा है- वहां तुम्हारे अंर्ताकाश में अनेक घने काले बादल हैं और विद्युत भी बहुत अधिक चमक रही है। सावधानी से निरीक्षण करते

रहो- बहुत सुंदर दृश्य है पर साथ में भयानक भी है क्योंकि तुम उसे नहीं समझते हो। वह रहस्यमय है और यदि रहस्य को समझा नहीं जाता तो वह भयानक बन जाता है तथा तुम भयभीत हो जाते हो। और जब कभी एक रहस्य को समझ लिया जाता है, वह एक अनुग्रह और उपहार बन जाता है क्योंकि अब तुम्हारे पास उसकी वुंफजियां हैं और वुंफजियों के साथ तुम उसके स्वामी हो।
तुम उसको नियंत्रित नहीं करते; और जब तुम सजग होते हो तुम सामान्य रूप
से उसके स्वामी बन जाते हो। और तुम जितने अधिक सचेत होते हो तुम उतना ही अधिक अपने अंतरस्थ में प्रवेश करते हो क्योंकि सचेतनता अंतरस्थ में ही जा रही है वह हमेशा अंतरस्थ में ही जाती है। तुम जितने अधिक सचेत होते हो तुम उतने ही अधिक अंदर जाते हो और यदि पूर्ण रूप से सचेत होते हो तो पूर्ण रूप से अंदर होते हो और तुम जितने कम सजग होते हो उतने ही अधिक बाहर होते हो। पूर्ण रूप से अपने घर के बाहर होकर उसके चारों ओर घूमते रहते हो।
अचेतनता बाहर भटकते रहना है और चेतना है अपने अंदर गहराई में जाना। इसलिए देखो और जब क्रोध नहीं है तो देखना कठिन होगा, आखिर किसकी ओर देखा जाए? आकाश इतना अधिक खाली और शून्य है और तुम अभी तक शून्यता की ओर देखने में समर्थ नहीं हुए हो। जब वहां क्रोध होता है तब देखो और सावधानी से निरीक्षण करो और शीघ्र ही तुम एक परिवर्तन देखोगे। जिस क्षण निरीक्षणकर्ता अंदर आता है क्रोध पहले ही से शीतल होना शुरू हो जाता है और उसकी गर्मी खो जाती है। तब तुम समझ सकते हो कि गर्मी तुम्हारे द्वारा ही दी गई है, तुम्हारा उसके साथ तादात्म्य जोड़ना ही उसे गर्म बना देता है और जिस क्षण तुम अनुभव करते हो कि वह गर्म नहीं है और भय चला गया है तो तुम अनुभव करते हो कि उसके साथ तादात्म्य टूट गया है, तुम भिन्न हो और एक दूरी हो गई है। वह वहां है, तुम्हारे चारों ओर उसकी चमक तथा कौंध भी है लेकिन तुम वह नहीं हो। एक पहाड़ी ऊपर उठना शुरू हो जाती है। तुम एक निरीक्षणकर्ता बन जाते हो, नीचे घाटी में काफी अधिक बिजली कौंध रही है- दूरी अधिक से अधिक बढ़ती चली जाती है और एक क्षण ऐसा आता है जब अचानक तुम उससे बिल्कुल भी जुड़े हुए नहीं होते हो। तादात्म्य टूट जाता है और जिस क्षण तादात्म्य टूटता है तो तुरंत ही गर्म होने की पूरी प्रक्रिया, एक शीतल प्रक्रिया बन जाती है और क्रोध करुणा बन जाता है।
सेक्स भी एक गर्म अथवा उत्तप्त करने वाली प्रक्रिया है, पर प्रेम नहीं है। लेकिन पूरे संसार-भर में लोग हमेशा ऊष्म प्रेम के बारे में बात करते हैं। प्रेम गर्म अथवा ऊष्म नहीं होता है, प्रेम पूर्ण रूप से शीतल होता है लेकिन वह ठंडा नहीं होता है- वह ठंडा इसलिए नहीं होता है क्योंकि वह मृत नहीं है। ठीक शीतल वायु के समान वह शीतल है। लेकिन वह गर्म अथवा ऊष्मायुक्त नहीं है। सेक्स के साथ तादात्म्य जुड़ जाने के कारण मन में यह धारणा आ गई है कि प्रेम को ऊष्म अथवा गर्म होना चाहिए।
सेक्स गर्म या उत्तप्त होता है। वह एक विद्युत है और तुम उसके साथ तादात्म्य जोड़ लेते हो, जितना अधिक प्रेम होता है उतनी अधिक शीतलता होती है- तुम शीतल प्रेम का भी ठंडे होने की भांति अनुभव कर सकते हो, जो तुम्हारी नासमझी अथवा गलतफहमी है क्योंकि तुम अनुभव करते हो कि प्रेम को गर्म होना है। वह वैसा नहीं हो सकता, वही समान ऊर्जा, जब उसके साथ तादात्म्य नहीं जुड़ता है, शीतल बन जाती है। करुणा शीतल होती है और यदि तुम्हारी करुणा में अभी भी गर्मी है तो समझना कि वह करुणा नहीं है।
इस स्थान में ऐसे भी लोग हैं जो बहुत अधिक गर्म और उत्तप्त हैं, ओर वे सोचते हैं कि उनके पास बहुत अधिक करुणा है। वे लोग समाज को बदलना चाहते हैं, वे उसका पूरा ढांचा बदल देना चाहते हैं, वे लोग यह अथवा वह कार्य करना चाहते हैं, वे संसार में एक आदर्श सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था लाना चाहते हैं। क्रांतिकारी, साम्यवादी और आदर्शवादी- ये सभी बहुत गर्म होते हैं। वे लोग सोचते हैं कि उनके पास करुणा है- नहीं, उनके पास केवल क्रोध है। विषय वस्तु बदल गई है। अब उनके क्रोध के पास एक नया विषय है- एक बहुत अव्यक्तिगत विषय वस्तु के समान, पूरा सामाजिक ढांचा, राज्य और स्थिति। वे लोग बहुत गर्म हैं। लेनिन अथवा स्टालिन अथवा ट्राटस्की- वे गर्म लोग हैं, लेकिन वे विशेष रूप से किसी व्यक्ति के विरुद्ध नहीं हैं, वे लोग पूरे ढांचे के विरुद्ध हैं। गांधी भी ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध एक गर्म

व्यक्ति हैं। विषय अव्यक्तिगत अथवा सामान्य है, इसी कारण तुम यह अनुभव नहीं कर सकते कि वह क्रोधित है लेकिन वे नाराज हैं। वह बाहर के संसार में कुछ चीज़ बदलना चाहते हैं और वह उसे इतनी अधिक शीघ्रता से बदलना चाहते हैं कि वह संघर्ष करते हुए अधीर हैं। साधन के रूप में उनकी लड़ाई अहिंसा चुन सकती है लेकिन लड़ना अथवा संघर्ष करना एक हिंसा है। लड़ना अपने आप में एक हिंसा है। तुम लड़ने के अहिंसक साधन चुन सकते हो- स्त्रियां हमेशा यही साधन चुनती हैं। गांधी ने पूरी तरह से स्त्रियों की इसी चाल का प्रयोग किया है और उन्होंने अन्य कुछ भी नहीं किया है।
यदि एक पति लड़ना चाहता है तो वह अपनी पत्नी को पीट देगा और यदि स्त्री पति से लड़ना चहाती है तो वह स्वयं अपने को ही पीटेगी। श्ह उतना ही अधिक पुराना है जितनी कि स्त्री है और पुरुष की अपेक्षा स्त्री अधिक पुरानी है। वह स्वयं को ही पीटना शुरू कर देगी और यही उसके लड़ने का ढंग है। वह हिंसक है, स्वयं अपने ही विरुद्ध हिंसक है। स्मरण रहे कि एक स्त्री को पीटने से तुम अपराधी होने का अनुभव करोगे और देर अथवा सवेर तुम्हें नीचे झुकना हागा तथा एक समझौता करना होगा लेकिन स्वयं को पीटकर वह कभी भी अपराधी होने का अनुभव नहीं करती है। इसलिए या तो तुम एक स्त्री को पीटो और तुम अपराधी होने का अनुभव करो, अथवा वह स्वयं को पीटती है और तब भी तुम अपराधी होने का अनुभव करते हो कि तुमने ही एक ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी जिससे वह स्वयं को पीट रही है। दोनों ही स्थितियों में विजय उसकी होती है। ब्रिटिश साम्राज्य इसीलिए पराजित हुआ क्योंकि वह एक पुरुष की आक्रामक शक्ति की भांति था और ब्रिटिश साम्राज्य गांधी की स्त्री की भांति की लड़ाई को नहीं समझ सका: वह मृत्यु होने तक उपवास करेंगे और तब पूरा ब्रिटिश मन अपराधी होने का अनुभव करेगा। अब तुम इस व्यक्ति को नहीं मार सकते क्योंकि वह किसी भी ढंग से तुम्हारे साथ नहीं लड़ रहा है, वह पूरी तरह से अपनी ही आत्मा का शुद्धिकरण कर रहा है- यह वही पुरानी स्त्रियों वाली लीला है लेकिन उसने कार्य किया। इस बारे में गांधी को हराने का केवल एक ही तरीका था और वह असंभव था। वह था चर्चिल के लिए आमरण उपवास करना और वह असंभव था।
या तो तुम विशेष रूप से किसी व्यक्ति के विरुद्ध गर्म अथवा उग्र हो अथवा सामान्य रूप से केवल किसी ढांचे के विरुद्ध हो लेकिन गर्मी अर्थात उग्रता बनी रहती है।
एक लेनिन करुण नहीं है, हो भी नहीं सकता है। बुद्ध करुणावान है। वह किसी भी प्रकार से किसी भी चीज़ के साथ नहीं लड़ रहे हैं, वे अपने से ही आगे बढ़ रहे हैं। समाज अपने से बदल रहे हैं, इस बारे में उन्हें बदलने की कोई भी आवश्यकता नहीं है, वे यों बदलते हैं ज्यों मौसम आने पर वृक्ष बदलते हैं। समाज स्वयं अपने से बदलते हैं- पुराने समाज स्वयं अपने से मरते हैं और इस बारे में उन्हें नष्ट करने की कोई भी आवश्यकता नहीं है। ठीक नए बच्चों के समान नए समाजों का जन्म होता है। नए बच्चे अपने से स्वयं जन्मते हैं। इस बारे में गर्भपात के लिए बल प्रयोग करने की कोई भी आवश्यकता नहीं है। वह स्वतः अपने आप होता चला जाता है।
व्यक्ति गतिशील होते हैं और बदलते हैं। यह एक विरोधाभास है कि वे गतिशील होते चले जाते हैं और बदले चले जाते हैं तथा तब भी एक अर्थ में वे समान बने रहते हैं- क्योंकि वहां ऐसे लोग होंगे जो निर्धन हैं, वहां ऐसे भी लोग होंगे जो धनी हैं, वहां ऐसे लोग होंगे जो असहाय और शक्तिहीन हैं और वहां ऐसे लोग भी होंगे जिनके पास प्रभुत्व करने की सत्ता है। वर्ग विलुप्त नहीं हो सकते वह व्यक्तियों और वस्तुओं का स्वभाव नहीं है। मनुष्यों के समाज कभी भी वर्गहीन नहीं हो सकते हैं।
वर्ग बदल सकते हैं। अब रूस में, वहां न तो निर्धन हैं और न धनी हैं, अब वहां लोग या तो शासक हैं अथवा शासित लोग हैं, जिन पर कि शासन किया जा रहा है। अब एक नया वर्ग-विभाजन उत्पन्न हो गया है: शासक या अधिकारी लोग तथा सामान्य लोग, प्रबंधक और जिन लोगों के लिए प्रबंध व व्यवस्था की जा रही है वे लोग, सभी समान हैं और इससे कोई भी फर्क नहीं पड़ता। यदि अब तैमूरलंग का जन्म रूस में हुआ होता तो वह प्रधानमंत्री बन जाता। यदि फोर्ड का जन्म

सोवियत रूस में हुआ होता तो वह साम्यवादी दल का महासचिव बन जाता और वह वहां से ही प्रबंध ओर व्यवस्था करता।
स्थितियां बदलती चली जाती हैं लेकिन एक सूक्ष्म अर्थ में वे लोग समान स्थिति में बने रहते हैं। व्यवस्थापक लोग और जिनके लिए व्यवस्था की जा रही है, वे लोग शासक और शीतल लोग, धनी और निर्धन लोग वे बने ही रहते हैं। तुम इसे नहीं बदल सकते क्योंकि समाज विरोधों के द्वारा ही अस्तित्व में बना रहता है। एक सच्चा करुणावान व्यक्ति शीतल होगा और वह वास्तव में एक क्रांतिकारी नहीं हो सकता है क्योंकि क्रांति को आवश्यकता होती है एक बहुत गर्म मिजाज के व्यक्ति की, जिसका शरीर, मन और हृदय भी गर्म हो।
न कोई नियंत्रण, न दूसरों पर कोई अभिव्यक्ति तथा और अधिक सजगता- और तभी चेतना परिधि से केंद्र की ओर जाती है।
अब इस सुंदर प्रसंग को समझने का प्रयास करें।
एक ज़ेन (ध्यान) सीखने वाला शिष्य सद्गुरु बांके के पास आया और उसने कहा-"सद्गुरु! मेरे पास एक बहुत उच्छृंखल और अनियमित स्वभाव है, मैं उसे कैसे ठीक कर सकता हूं?"
उसने एक बात स्वीकार की कि उसका स्वभाव बहुत उच्छृंखल है जिसे वह अपने काबू में नहीं रख पाता है और अब वह उसका उपचार करना चाहता है। जब कभी भी वहां एक बीमारी होती है तो पहले तो उसे खोजने का प्रयास करो कि वहां वास्तव में एक बीमारी है अथवा वह एक गलतफहमी है क्योंकि यदि वहां असली बीमारी है तभी उसका उपचार किया जा सकता है लेकिन यदि वह सत्य में एक बीमारी नहीं है और केवल एक गलतफहमी है तब कोई भी दवा सहायता नहीं करेगी। वस्तुतः इसके विपरीत प्रत्येक दवा जो तुम्हें दी जाती है वह हानिकारक होगी। इसलिए पहले तो बीमारी के बारे में पूरी तरह से यह स्पष्ट होना है कि वह वहां है अथवा नहीं है अथवा क्या तुम पूरी तरह से उसकी कल्पना कर रहे हो अथवा तुम पूरी तरह से यह सोच रहे हो कि वह वहां है। हो सकता है वह वहां बिल्कुल हो ही नहीं और हो सकता है कि वह पूरी तरह से एक गलतफहमी ही हो। और जिस ढंग से मनुष्य भ्रमित हो जाता है उसकी अनेक बीमारियां वहां बिल्कुल होती ही नहीं हैं और वह पूर्ण रूप से यह विश्वास करता है कि वे वहां हैं। तुम लोग भी समान नाव में सवार हो इसलिए इस कहानी को बहुत गहराई से समझने का प्रयास करो। वह तुम्हारे लिए बहुत सहायक हो सकती है।
ध्यान सीखने वाले उस नए शिष्य ने कहा-"सद्गुरु! मेरा स्वभाव बहुत उच्छृंखल और अनियमित है। मैं उसे कैसे ठीक कर सकता हूं?
बीमारी स्वीकार की गई है, उसे उसमें जरा भी संदेह नहीं है, वह उसके उपचार के लिए पूछ रहा है। कभी भी उसके उपचार के लिए मत पूछो। पहले तो उसे खोजने का प्रयास करो कि बीमारी अस्तित्व में है अथवा नहीं है। पहले बीमारी के अंदर जाओ और रोग का निदान करो, उसके लक्षणों से अर्थ निकालने का प्रया करो, उसकी सूक्ष्मता से छानबीन करो और रोग का उपचार बताने से पूर्व उस रोग में गहराई तक प्रवेश करो। केवल परिधि पर ही किसी भी बीमारी को स्वीकार मत करो क्योंकि परिधि वह स्थान है जहां दूसरे लोग तुमसे मिलते हैं, परिधि वह है जहां दूसरे तुम्हारे अंदर प्रतिबिंबित होते हैं और परिधि वह है जहां दूसरे तुमसे बहाना बनाते हैं अथवा अपने को छिपाते हैं। हो सकता है कि वह किसी भी प्रकार से कोई बीमारी न हो और वह केवल दूसरों की निंदा और तिरस्कार का परिणाम हो।
वह ठीक एक शांत झील के समान है और तुम अपनी नारंगी गाउन पहने हुए झील
के किनारे खड़े हुए हो और तुम्हें निकट का जल प्रतिबिंबित करते हए नारंगी रंग का प्रतीत होता है। उससे कैसे छुटकारा पाया जाए? कहां उसका उपचार खोजा जाए? और किससे पूछा जाए?
तुरंत ही विशेषज्ञों के पास मत जाओ। पहले यह खोजने का प्रयास करो कि क्या वह वास्तव में एक बीमारी है अथवा केवल वह एक प्रतिबिंब है। केवल सजग बने रहने से ही बहुत कुछ होगा और तुम्हारी अनेक बीमारियां बिना किसी उपचार के पूरी तरह से विलुप्त हो जाएंगी और किसी दवा की भी आवश्यकता नहीं होगी।
बांके ने कहा-"अपने इस स्वभाव को मुझे दिखलाओ।
सजगता के जादू अथवा मंत्र से वह ठीक हो जाता है।

एक बांके जैसे व्यक्ति उपचार पर नहीं, तुरंत ही बीमारी पर कार्य करना प्रारंभ कर देता है। वह कोई मनोविश्लेषक नहीं है, एक मनोविश्लेषक उपचार के लिए कार्य करना प्रारंभ करता है और उनमें यही अंतर है। अब मानसिक रोगों के उपचार के लिए नई प्रवृत्तियां सामने आ रही हैं जो उपचार पर नहीं, बिमारी पर कार्य करना प्रारंभ करती हैं। नई प्रवृत्तियां विकसित हो रही हैं जो वास्तविकता के निकट हैं जो ज़ेन के निकटतम हैं और जो धर्म के भी निकटतम हैं। इसी सदी के अंदर मानसिक रोगों का उपचार और अधिक धार्मिक आवृफति ले लेगा, और तब वह केवल एक उपचार नहीं होगा और वह वास्तव में निरोगी बनाने की एक शक्ति बन जाएगा क्योंकि मनोचिकित्सा उपचार के बारे में सोचती है और निरोगी बनाने की शक्ति तुम्हारी चेतना को बीमारी तक लाती है।
सौ में से निन्यानवें बीमारियां तुम्हारी चेतना को पूरी तरह से उन तक
ले जाने में ही मिट जाएंगी। वे झूठी बीमारियां हैं, वे इसलिए मौजूद हैं क्योंकि तुम उनकी ओर से पीठ फेरे हुए खड़े हुए हो। उनका आमना-सामना करो, वे चली जाती हैं और वे मिट जाती हैं। आमने-सामने मुठभेड़ करने, लड़ने-झगड़ने, वाद-विवाद करने का ही अर्थ है एनकाउंटर करना और इसमें "एनकाउंटर थैरेपी ग्रुप्स" सहायता कर सकते हैं, क्योंकि उनका पूरा संदेश यही है कि व्यक्ति और विषय जैसे भी वे हैं, वैसे उनका आमना-सामना किया जाए। उपचार के बारे में मत सोचो, दवा के बारे में मत सोचो और यह भी मत सोचो कि क्या करना है, असली चीज़ पहले यह जानना है कि वहां है क्या।
मन ने तुम्हें इतने अधिक तरीकों से धोखा दिया है कि एक बीमारी जो बाहर परिधि पर प्रतीत होती है लेकिन नीचे गहराई में वहां कोई भी बीमारी होती ही नहीं; अथवा एक रोग जो परिधि पर होना प्रतीत होता है लेकिन जब तुम अपने अंदर जाते हो, तो और तुम पाते हो कि वहां दूसरी अन्य बीमारियां हैं और वह केवल तुम्हें धोखा देने की एक चाल थी तथा वह असली बीमारी नहीं थी।
एक व्यक्ति मेरे पास आया और उसने कहा: मेरा मन बहुत अधिक क्षुब्ध और व्याकुल है। मैं निरंतर तनाव में रहता हूं और वहां व्यग्रता बनी रहती है। मैं सो भी नहीं सकता। इसलिए मुझे ध्यान की कोई ऐसी विधि दीजिए कि जिससे मैं शांत बनकर शांति से रह सवूंफ।
मैंने उससे पूछा-"वास्तव में समस्या क्या है? क्या आप वास्तव में स्वयं के साथ शांत होकर रहना चाहते हैं?"
उसने कहा-"जी हां! मैं एक खोजी हूं, मैं श्री ओरोविंदो के आश्रम में रहा हूं, मैं श्री रमण के आश्रम में भी रहा हूं और मैं प्रत्येक ऐसे स्थानों में रहा हूं, पर कहीं भी कोई सहायता नहीं मिली।"
इसलिए मैंने उससे पूछा-"क्या आपने कभी भी इस बारे में विचार किया है
कि जब कहीं से कोई भी सहायता नहीं मिलती है तो हो सकता है कि आपकी बीमारी झूठी हो? अथवा आपने उस पर झूठा लेबल लगा दिया हो? अथवा सामग्री रखे जाने वाली बोतल में कुछ अन्य चीज़ रखी हो जिस पर उसका नाम न लिखा हो? आप सरलता से स्वीकार करते हैं कि श्री ओरोविंदो असफल हो गए, श्री रमण असफल हो गए और आप चारों ओर ऐसे सभी स्थानों पर जा चुके हैं और वह बहुत बड़े विजेता होने का अनुभव कर रहे थे कि प्रत्येक व्यक्ति असफल हो गया और कोई भी व्यक्ति उनकी सहायता करने में सफल नहीं हुआ और प्रत्येक व्यक्ति झूठा था।
और तब मैंने उनसे कहा-"देर अथवा सवेर आप जाकर मेरे बारे में भी समान बातें कहेंगे क्योंकि मैं नहीं समझता कि आप सत्य के एक खोजी हैं और मैं यह नहीं देखता कि वास्तव में आपकी दिलचस्पी स्वयं के साथ शांत होने की है। मुझे ठीक-ठीक बतालए कि आपकी व्यग्रता का कारण क्या है? आपका क्या तनाव है? बस मुझे बताते चले जाएं कि आपके अंदर निरंतर किस तरह के विचार आते हैं और आप क्यों उनके बारे में सोचते चले जाते हैं?"
उसने कहा-"अनेक नहीं, केवल एक विचार। मेरा एक बेटा था। वह अभी भी जीवित है। मैंने उसे घर से बाहर निकाल दिया। मैं एक धनी व्यक्ति हूं और वह एक ऐसी लड़की के साथ प्रेम में पड़ गया जो मेरी जाति की नहीं थी और आर्थिक दृष्टि से भी मेरे स्तर से काप्फी नीचे थी और वह अशिक्षित भी थी। और मैंने अपने पुत्र से कहा-"यदि तुम इस लड़की से विवाह करना चाहते हो तो इस घर में कभी वापस नहीं लौटना और वह लौटकर कभी नहीं आया। और अब मैं वृद्ध होता जा रहा हूं। वह लड़का उसी लड़की के साथ निर्धनता में जी रहा है और मैं निरंतर लड़के

के बारे में सोचता रहता हूं और यही मेरी मुसीबत है। आप मुझे ध्यान की कोई विधि दीजिए।"
मैंने कहा-"ध्यान की वह विधि आपकी कैसे सहायता करेगी?- क्योंकि ध्यान
की विधि लड़के को घर में वापस नहीं ला पायेगी। और यह एक ऐसी सरल-सी बात है जिसके बारे में ओरोविंद के पास जाने की अथवा श्री रमण के पास जाने की अथवा मेरे पास आने की कोई भी आवश्यकता नहीं है। आपकी समस्या के लिए एक तलवार की आवश्यकता नहीं है, एक सुई ही कार्य करेगी। आप तलवारों की ओर देख रहे हैं और तब तलवारें असफल सिद्ध होती हैं क्योंकि आपको केवल एक सुई की आवश्यकता है। यह कोई भी आध्यात्मिक समस्या नहीं है, केवल अहंकार ही समस्या है। एक व्यक्ति को एक ऐसी लड़की के साथ प्रेम में क्यों नहीं पड़ना चाहिए जो आर्थिक दृष्टि से आपसे नीचे की स्तर की हो। क्या प्रेम में कुछ बात आर्थिक होती है? किसी ऐसी वस्तु के बारे में सोचना जिसमें धन, संपत्ति, वित्त, अर्थशास्त्र अथवा किसी स्तर की कोई शर्त अथवा सीमा हो, व्यर्थ है।
तब मैंने उसे एक कहानी सुनाई। एक विवाह तय कराने वाला एजेंट एक युवा व्यक्ति के पास आया और उससे कहा-"मेरे पास एक बहुत सुंदर लड़की है जो ठीक तुम्हारे लिए ही उपयुक्त है।"
लड़के ने कहा-"मुझे परेशान मत कीजिए। मेरी इसमें कोई भी दिलचस्पी नहीं है।"
वैवाहिक एजेंट ने कहा-"मैं जानता हूं लेकिन फिक्र मत कीजिए, मेरे पास
एक अन्य लड़की भी है जो दहेज में पांच हजार रुपए लाएगी।"
उस युवक ने कहा-"व्यर्थ की बातें करना बंद कीजिए। मेरी धन में भी दिलचस्पी नहीं है। आप बस तशरीफ ले जाइए।"
उस व्यक्ति ने कहा-"मैं जानता हूं। आप परेशान न हों। यदि पांच हजार रुपए पर्याप्त नहीं हैं तो मेरे पास एक और दूसरी लड़की है जो दहेज में पच्चीस हजार रुपया लाएगी।"
लड़के ने कहा-"आप मेरे कमरे से पूरी तरह बाहर निकल जाइए, क्योंकि यदि कभी मैंने विवाह किया तो इस बारे में मैं स्वयं सोचूंगा, एक एजेंट के लिए व्यवस्था करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। आप मुझे क्रोध न दिलाइए।" एजेंट ने कहा-"ठीक है। अब मैं समझ गया। आपकी सुंदरता में कोई रुचि नहीं है, आपकी दिलचस्पी धन में भी नहीं है। पर मेरे पास एक ऐसी लड़की है जो एक बहुत प्रसिद्ध और एक लंबी समृद्ध परंपरा के परिवार से है और उनके बारे में प्रत्येक व्यक्ति जानता है और अतीत में उस परिवार से चार प्रधानमंत्री आए हैं। इसलिए आपकी दिलचस्पी इस परिवार से है। मैं ठीक हूं न?"
अब इस समय तक वह लड़का बहुत अधिक क्रोधित हो गया और उसने शारीरिक रूप
से उस व्यक्ति को कमरे से बाहर पेंफक देना चाहा और जब वह उसे शारीरिक रूप से दरवाजे के बाहर धकेल रहा था तब उसने कहा-"यदि मैंने कभी विवाह किया भी तो वह अन्य किसी वस्तु के लिए न होकर केवल प्रेम के लिए होगा।"
एजेंट ने कहा-"तब पहले ही आपने मुझे बताया क्यों नहीं? मेरे पास उस तरह की भी लड़कियां हैं।"
मैंने उस व्यक्ति को यह कहानी सुनाई।
प्रेम ऐसा नहीं होता कि उसकी व्यवस्था की जाए। वह पूरी तरह से कुछ ऐसी चीज़ होती है जो घटित होती है और जिस क्षण तुम उसकी व्यवस्था करने का प्रयास करते हो तो प्रत्येक चीज़ असफल हो जाती है और तुम चूक जाते हो। इसलिए मैंने उस व्यक्ति से कहा-"बस आप जाइए और अपने पुत्र से क्षमा मांगिए- यही है वह चीज़ जिसकी आवश्यकता है। ध्यान की कोई भी विधि न ओरोबिंदो, न रमण, न ओशो, कोई भी व्यक्ति इसमें आपकी सहायता नहीं कर सकता। सामान्य रूप से अपने लड़के के पास जाइए और उससे क्षमा मांगिए- यही है वह जो करना आवश्यक है। उसको स्वीकार कीजिए और उसे घर वापस लाकर उसका स्वागत कीजिए। यह केवल अहंकार ही है जो आपकी कठिनाई बना हुआ है। यदि अहंकार मुसीबत खड़ी कर रहा है तब आपकी बीमारी भिन्न है। आप ध्यान में खोज रहे हैं और आप सोचते हैं कि ध्यान के द्वारा शांति मिलना संभव होगी? नहीं।"
ध्यान केवल उस व्यक्ति के लिए सहायक हो सकता है, जिसे अपने अंदर की बीमारियों के साथ ठीक समझ आ गई हो, जब उसकी समझ में यह आ जाता है कि कौन-सी

बीमारी झूठी है, किस बीमारी के साथ उसने गलत तादात्म्य जोड़ लिया है और कौन-सी बीमारी वहां बिल्कुल है ही नहीं तथा इनको धारण करने वाला शरीर का बर्तन खाली है...
जब कोई एक इस समझ तक आ गया है, जब सभी बीमारियों के साथ उस एक व्यक्ति में गहन समझ आ गई है तो निन्यानवें प्रतिशत बीमारियां मिट जाती हैं क्योंकि तुम कुछ कार्य कर सकते हो और वे विलुप्त हो जाती हैं। तब केवल एक विषय रह जाता है और वह चीज़ है आत्मिक खोज- एक गहन वेदना, जो इस संसार से संबंधित नहीं है जो संसार की किसी भी वस्तु अथवा व्यक्ति से संबंधित नहीं है, वह पिता, पुत्र, धन, प्रतिष्ठा और सत्ता से अथवा किसी भी चीज़ से संबंधित नहीं है। वह उनसे संबधित नहीं है, वह पूरी तरह से अस्तित्वगत है। नीचे गहराई में यदि तुम उसके सूक्ष्मतम बिंदु तक पहुंच सकते हो तो वह है- कैसे स्वयं अपनी आत्मा को जाना जाए कि मैं कौन हूं? तब यह वेदना या पीड़ा ही खोज बन जाती है। तब ध्यान सहायता कर सकता है लेकिन कभी भी इससे पूर्व नहीं। इससे पहले दूसरी चीज़ें आवश्यक होती हैं, सुई कार्य करेगी, फिर अनावश्यक रूप से एक तलवार क्यों ढोते हो? और जहां सुई कार्य करेंगी, तलवारें असफल होंगी। यह वह है जो विश्व-भर में चारों ओर लाखों लोगों के साथ हो रहा है। यह बांके एक सद्गुरु है। उसने कार्य करने का वह सूक्ष्म बिंदु तुरंत
पा लिया है।
उसने कहा-"अपनी उस उत्तेजना को मुझे दिखलाओ
सजग बने रहने के मंत्र से वह ठीक हो जाता है।
यह वास्तव में जादू-टोना अथवा मंत्र से वश में करके ठीक हो सकती है।
यह बांके उसे अपने वश में करने की बात क्यों कहता है? क्योंकि पूरी चीज़ ही मिथ्या है। इस नए शिष्य ने कभी भी अपने अंदर देखा ही नहीं। वह एक विधि की खोज कर रहा है और उसने रोग का निदान नहीं किया है कि उसकी बीमारी क्या है। उस नए शिष्य ने कहा-"ठीक अभी तोवह मेरे पास नहीं है,
इसलिए मैं उसे आपको नहीं दिखला सकता।"
तुम क्रोध के बारे में उसे लाने की व्यवस्था नहीं कर सकते, अथवा कर सकते हो? यदि मैं तुमसे कहूं-"ठीक अभी क्रोधित हो जाओ" तो तुम क्या करोगे? यदि तुम अभिनय भी करते हो और यदि तुम किसी भी तरह बहाना बनाने की व्यवस्था भी करते हो तो वह एक क्रोध न होगा क्योंकि नीचे गहराई में तुम अभिनय करते हुए शीतल बने रहोगे। ऐसा होता है। इसका अर्थ क्या है- "यह होता है"। "यह होता है" का अर्थ होता है कि जब तुम केवल मूर्च्छित होते हो और यदि तुम उसे लाने का प्रयास करते हो तो तुम सचेत हो जाते हो। यदि तुम चेतन हो तो वैसा नहीं हो सकता, वैसा केवल तभी होता है जब तुम अचेतन होते हो। अचेतनता अथवा मूर्च्छा होना ही चाहिए- बिना उसके तुम क्रोधित नहीं हो सकते।
लेकिन तब भी उस लड़के ने कहा-"ठीक अभी तो वह मेरे पास नहीं है
इसलिए मैं उसे आपको नहीं दिखला सकता।"
"तब ठीक है", बांके ने कहा-"जब वह तुम्हारे पास हो, उसे मेरे पास ले आना।"
उस नए शिष्य ने प्रतिरोध करते हुए कहा-"लेकिन मैं उसे आपके पास नहीं
ला सकता
क्योंकि जब वह घटित होती है, तभी वह मेरे पास होती है
वह अचानक उत्पन्न होती है और मैं उसे आपके पास ला सवूंफ
इससे पूर्व ही निश्चित रूप से मैं उसे खो दूंगा।"
अब बांके ने उसे ठीक मार्ग पर स्थापित कर दिया है। वह पहले ही से उसके साथ गतिशील हो चुका है, वह पहले ही से लक्ष्य के निकट आ रहा है क्योंकि अब वह उन विषयों और वस्तुओं के प्रति सचेत बन रहा है, जिनके प्रति वह कभी भी सचेत नहीं था। पहली बात वह जिसके प्रति सचेत बनता है, वह है कि वह अपने संवेग को ठीक अभी प्रस्तुत नहीं कर सकता है। वह प्रस्तुत किया ही नहीं जा सकता, जब वह होता है तब वह होता है, वह एक अचेतन शक्ति है। तुम उसे सचेत होकर उसके आसपास नहीं ला सकते हो। इसका अर्थ है कि यदि वह आगे की ओर जाता है तो अगला कदम होगा कि वह सचेत बना रहता है और तुम सचेत बने रहते हो तो वह घटित नहीं हो सकता है।

जब कभी क्रोध घटित हो रहा हो और यदि तुम अचानक सजग हो जाते हो तो वह चला जाता है। इसे आजमाओ। क्रोध के ठीक मध्य में जब तुम बहुत अधिक गर्म हो रहे हो और किसी की हत्या कर देना चाहते हो, अचानक सजग और सचेत हो जाओ, तब तुम अनुभव करोगे कि तुम्हारे अंदर एक "गियर" और कुछ चीज़ बदल गई है और तुम एक खटके का अनुभव कर सकते हो। कुछ चीज़ बदल गई है, अब वह समान चीज़ और अधिक नहीं रह गई है। तुम्हारा आंतरिक अस्तित्व: विश्राममय हो गया है। तुम्हारे बाह्य तल को विश्राममय होने में कुछ समय लग सकता है लेकिन तुम्हारा आंतरिक अस्तित्व पहले ही विश्राममय और शिथिल हो गया है। सहयोग टूट गया है और तुम्हारा उससे कोई भी तादात्म्य नहीं रह गया है।
गुरु जिएफ अपने शिष्यों के साथ एक बहुत सुंदर खेल खेला करता था। तुम यहां बैठे हुए हो और वह एक स्थिति सृजित करेगा; वह तुमसे कहेगा: कोई व्यक्ति "अ" आ रहा है और जब वह आता है तो मैं उसके साथ बहुत रूक्षता और कठोरता से व्यवहार करूंगा तथा तुम सभी को मेरी सहायता करना है।
तब "अ" आता है, गुरु जिएफ उसका उपहास उड़ाता हुआ उससे कहता है-"तुम एक पूर्ण बेवकूफ दिखाई दे रहे हो" और प्रत्येक व्यक्ति उसकी ओर देखता है तथा उसको यह प्रदर्शित करता है कि प्रत्येक व्यक्ति उससे सहमत है। तब गुरु जिएफ इस व्यक्ति के बारे में गंदी और आपत्तिजनक बातें कहेगा और प्रत्येक व्यक्ति उससे सहमति प्रकट करते हुए अपना सिर झुकाते हैं। वह व्यक्ति क्रोधित और क्रोधित होता चला जाता है तथा गुरु जिएफ उसी तरह की बातें कहे चला जाएगा और प्रत्येक व्यक्ति सिर झुकाता है जैसे मानो पूर्ण सहमति हो वहां तथा वह व्यक्ति गर्म और उत्त्प्त होता चला जाता है और तब वह फट पड़ता है जैसे एक विस्फोट होता है। जब उसमें विस्फोट होता है, अचानक गुरु जिएफ कहता है-"रुक जाओ और निरीक्षण करो।"
अंदर कुछ चीज़ शिथिल हो जाती है। वह व्यक्ति तुरंत समझ जाता है कि उसे
एक स्थिति में धकेलकर उकसाया गया है और वह क्रोधित हो गया और जिस क्षण वह अनुभव करता है कि यह एक स्थिति है और गुरु जिएफ ने एक खेल खेला है, उसका "गियर" बदल जाता है और वह सजग तथा सचेत हो जाता है। शरीर ठंडा होने में कुछ समय लगेगा और गहरे केंद्र में वहां प्रत्येक चीज़ शीतल है तथा अब वह स्वयं उसकी ओर देख सकता है।
वह ध्यान सीखने वाला शिष्य पहले ही से रास्ते पर है- बांके ने तुरंत
ही उसे पथ पर स्थापित कर दिया। पहली चीज़ वह जिसके प्रति सजग बना, वह है-"मैं ठीक अभी उसे आपको दिखला नहीं सकता क्योंकि वह यहां नहीं है।"
तब ठीक है, उसे मेरे पास ले आना, जब वह तुम्हारे पास हो।
दूसरा कदम ले लिया गया है।
उस शिष्य ने प्रतिरोध करते हुए कहा-"लेकिन मैं उसे आपके पास नहीं ला सकता
क्योंकि जब वह मुझे घटित होती है तभी वह मेरे पास होती है।
वह अनायास ही उत्पन्न होती है।

"मैं नहीं जानता कि कब वह उदित होता है। हो सकता है तब मैं आपसे बहुत अधिक दूर हूं। हो सकता है कि आप मुझे उपलब्ध न हो सकें और उसके परे भी यदि मैं उसे आपके पास लाता हूं तो जिस समय मैं आपके पास पहुंचूं, वह वहां नहीं होगा।" वह पहले ही से एक गहरी समझ तक पहुंच गया है।
तुम अपने क्रोध को मेरे पास नहीं ला सकते, क्या तुम उसे ला सकते हो? क्योंकि उसके लाने के वास्तविक प्रयास करने में ही, तुम सजग हो जाओगे। यदि तुम सचेत हो तो तुम्हारी पकड़ खो जाएगी, वह शांत होकर लुप्त होना शुरू हो जाती है। जिस समय तुम मेरे पास पहुंचते हो वह फिर और होगी ही नहीं।
बांके के पास पहुंचना कहीं अधिक सरल था, पर मेरे पास पहुंचना अधिक कठिन है और तुम्हें मुक्ता से होकर गुजरना होगा। जिस समय तक तुम्हें मुझसे भेंट करने का समय दिया जाएगा और तुम मेरे पास पहुंचोगे वह वहां नहीं होगा क्योंकि मिलने का समय लेना होता है अन्यथा तुम अनावश्यक समस्याएं लेकर आओगे। वे स्वतः अपने आप ही गिर जाती हैं और यदि वे बनी रहती हैं तब वे मेरे पास लाने योग्य हैं।

जिस समय तक तुम मेरे पास आते हो तुम उनसे होकर पहले ही गुजर चुके होगे
और यदि तुम समझ जाते हो तो इसका अर्थ है कि विषय आते हैं और चले जाते हैं तथा वे ध्यान देने योग्य नहीं हैं, वे आते-जाते रहते हैं। वे आते हैं और चले जाते हैं तथा तुम हमेशा बने रहते हो। तुम्हें ही वह व्यक्ति होना है जो उनके बारे में अधिक सावधान रहे, न कि वे विषय जो आते हैं और चले जाते हैं। वे मौसमों के समान हैं, जलवायु बदलती रहती है: सुबह वह भिन्न थी, शाम को वह पुनः बदलती है। वह बदलती ही रहती है। उसे खोजो, जो कभी नहीं बदलता है।
वह ध्यान सीखने वाला नया शिष्य पहले ही एक सुंदर समझ तक पहुंच चुका हैं वह कहता है-
"वह अनायास ही उत्पन्न होती है और मैं उसे आपके पास ला सवूंफ-
इससे पूर्व ही मैं उसे निश्चित रूप से खो दूंगा।
सद्गुरु बांके ने कहा: उस स्थिति में वह तुम्हारे
सच्चे स्वभाव का भाग नहीं हो सकती।
...... क्योंकि सच्चा अथवा वास्तविक स्वभाव हमेशा वहां बना रहता है। वह
न कभी उदित होता है और न कभी अस्त होता है, वह हमेशा वहां बना रहता है। क्रोध उठता है और चला जाता है, घृणा उत्पन्न होती है और मिट जाती है, तुम्हारा तथाकथित प्रेम उत्पन्न होता है और मिट जाता है। तुम्हारा सच्चा स्वभाव हमेशा ही वहां रहता है।
इसलिए जो आता है और चला जाता है, उस सभी के साथ न तो तुम बहुत अधिक फिक्र करो और न उससे संबंध रखो अन्यथा वर्ष और वर्षों और जन्म-जन्मों तक तुम उसके साथ संबंध बनाए रख सकते हो तथा तुम कभी भी उस स्थिति तक नहीं आ पाओगे।
इसी कारण फ्रॉयड धारा के मनोचिकित्सक कभी भी अधिक अभिप्राय की पूर्ति नहीं करते। वे मरीज को अपने साथ वर्षों तक तीन, चार और पांच वर्षों तक काउच पर लिटाए रखते हैं और उन विचारों तथा विषयों के बारे में बातचीत और बातचीत किए चले जाते हैं, जो उन लोगों के मन में आते जाते रहते हैं। स्मरण रहे कि पूरे फ्रायडिन मनोविश्लेषक का संबंध उन विचारों के साथ है जो आते हैं और चले जाते हैं, तुम्हारे बचपन मे क्या हुआ, तुम्हारी युवावस्था में क्या हुआ, तुम्हारे सेक्स जीवन में क्या हुआ- और यह चलता ही चला जाता है। इसका संबंध "क्या हुआ" के साथ होता है न कि "किसको हुआ" उसके साथ- और बांके और फ्रॉयड में यही अंतर है।
यदि तुम्हारी दिलचस्पी "क्या हुआ" के साथ है तब बहुत कुछ हो चुका है। चौबीस घंटों में भी बहुत कुछ होता है और यदि तुम उससे जुड़े हुए हो तो वह वर्षों लेगा तथा तुम उससे जुड़ते चले जाते हो। यह तुम्हारे पूरे जीवन में आने वाले मौसमों के बारे में ठीक बातचीत करने के समान होगा कि वह कैसा रहा है, कभी बहुत गर्म, कभी बहुत बादलों से घिरा हुआ, कभी बरसात, कभी यह और कभी वह। लेकिन इस सभी का प्रयोजन क्या है?
और क्या होता है? एक मनोविश्लेषक एक मनोरोगी की कैसे सहायता करता है?
वह बहुत थोड़ी सहायता करता है। वह पूरी तरह से उसे समय देता है, बस सभी कुछ इतना ही होता है। दो वर्षों तक तुम निरंतर उन विषयों और चीज़ों के बारे में बातचीत करते रहते हो। ये दो वर्ष अथवा एक और वर्ष तथा इससे भी अधिक, केवल तुम्हें समय देता है, घाव अपने आप ठीक हो जाते हैं, तुम फिर से समायोजित हो जाते हो। निश्चित रूप से एक विशिष्ट समझ भी उत्पन्न होती है जब तुम अपनी स्मृति में एक जुलाहे की ढरकी के समान गतिशील होते हुए पीछे लौटते हो और फिर आगे आते हो क्योंकि तुम्हें अपनी स्मृतियों का निरीक्षण करना होता है तो एक विशिष्ट समझ उत्पन्न होती है। इस निरीक्षण करने के कारण लेकिन वह मुख्य बात नहीं है।
तुम्हारे साक्षी होने के साथ फ्रॉयड की कोई भी दिलचस्पी नहीं है। वह सोचता है कि तुम्हारे द्वारा अपना अतीत बताने से उसे शब्दों द्वारा मौखिक रूप से बाहर लाने के द्वारा और उनमें केवल संबंध जोड़ने से गहरे में कुछ चीज़ बदल रही है। गहरे में कुछ भी नहीं बदल रहा है। थोड़ा-सा अंदर का कूड़ा- करकट बाहर निकल जाता है। तुम्हें कोई भी नहीं सुनता है और फ्रॉयड तथा उसके मनोविश्लेषक तुम्हें इतना अधिक ध्यान से सुनने का अभिनय करते हैं।

वास्तव में तुम्हें उसके लिए धन देना होता है। वे लोग व्यवसायिक रूप से सुनने वाले हैं। वे एक तरफ से तुम्हारी सहायता करते हैं क्योंकि तुम किसी व्यक्ति से घनिष्ठता से बात करना चाहते थे- यह भी सहायता करता है। इसी कारण लोग अपने दुखों के बारे में बात करके थोड़े से विश्राममय हो जाते हैं कि किसी व्यक्ति ने तो इतने धैर्य और करुणा से उनकी बात सुनी। लेकिन अब कोई भी व्यक्ति नहीं सुनता है, किसी भी व्यक्ति के पास इतना समय नहीं है। बर्टेंड रसेल ने एक छोटी-सी कहानी लिखी है: कि आने वाली इक्कसवीं सदी में वहां व्यवसायिक रूप से सुनने वालों का बहुत बड़ा व्यवसाय होगा। प्रत्येक चार-पांच घरों के बाद पास-पड़ोस में वहां एक ऐसा घर होगा, जिस पर "व्यवसायिक श्रोता" का एक बोर्ड लगा होगा क्योंकि यही है वह मनोविश्लेषण-क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति एक ऐसी शीघ्रता में होगा कि किसी भी व्यक्ति के पास कोई समय ही न होगा। पति, पत्नी से बात करने में समर्थ न होगी, पति पत्नी से बात करने में समर्थ न होगा, लोग फोन के द्वारा ही प्रेम करेंगे अथवा एक-दूसरे को टेलीविजन स्क्रीन पर ही देखेंगे। जब तुम एक मित्र को टेलीविजन स्क्रीन पर ही देख सकते हो और वह तुम्हें देख सकता है, फिर उससे जाकर मिलने का क्या उपयोग होगा और ऐसा ही होने जा रहा है। टेलीफोन के पास स्क्रीन भी होंगे जिससे तुम उसे देख सके हो और उससे बातचीत भी कर सकते हो तथा वह भी तुम्हें देखते हुए बातचीत कर सकता है, इसलिए मिलने का फिर प्रयोजन क्या है? क्योंकि एक कमरे में एक-दूसरे के सामने बैठे हुए तुम आखिर करोगे क्या? यह पहले ही से हो रहा है और दूसरी टेलीफोन और टेलीविजन द्वारा मिट चुकी है। संपर्क खो जाएंगे इसीलिए व्यवसायिक श्रोताओं की आवश्यकता होगी।
तुम मनोविश्लेषक के पास जाते हो और वे तुम्हें एक मित्र के समान सुनते हैं। निश्चित रूप से तुम्हें उसकी फीस अदा करनी होती है और अब संसार में मनोविश्लेषक सबसे अधिक महंगे व्यक्ति बन गए हैं और केवल बहुत धनी व्यक्ति ही उनका खर्च उठा सकते हैं। लोग इसके बारे में शेखी हांकते हैं-"मैं पांच वर्षों तक मनोविश्लेषण कराता रहा हूं। आप उसमें कितनी वर्षों तक रहे? गरीब लोग उसका खर्च गवारा नहीं कर सकते।
लेकिन पूरब की ध्यान की विधियों का एक भिन्न दृष्टिकोण है: उनका संबंध इससे नहीं है कि तुम्हारे साथ क्या हुआ, उनकी दिलचस्पी उस व्यक्ति में है, जिसे घटना घटी है। उसे खोजो: वह कौन है?
एक फ्रॉयडियन कोच पर नीचे लेटे हुए तुम्हारी दिलचस्पी मन की विषय-वस्तुओं के साथ होती है। एक ज़ेन मठ में बैठे हुए तुम्हारा संबंध उस व्यक्ति के साथ होता है जिसे यह घटना घटी, तुम्हारी दिलचस्पी विषय-वस्तु में न होकर व्यक्ति में होती है।
सद्गुरु बांके ने कहा: उस स्थिति में वह तुम्हारे वास्तविक स्वभाव
का भाग नहीं हो सकती,
यदि वह होती तो तुम मुझे किसी भी समय दिखा सकते थे।
जब तुम्हारा जन्म हुआ था वह तुम्हारे पास नहीं थी
और तुम्हारे माता-पिता ने भी उसे तुम्हें नहीं दिया था
इसलिए अनिवार्य रूप से वह तुम्हारे अंदर बाहर से ही आना चाहिए।
मैं तुम्हें सुझाव देता हूं:
वह जब कभी भी तुम्हारे अंदर आती है
तुम एक डंडे से स्वयं अपने को तब तक पीटते रहो
जब तक कि वह स्थिर होकर खड़ी न रह सके
और स्वयं ही भाग न जाए।
वह केवल मजाक कर रहा है- उसे करना शुरू मत कर देना। शब्दानुसार लाठी लेने की आवश्यकता नहीं है।
ज़ेन में सचतेनता को लाठी कहा जाता है जिससे तुम स्वयं अपने को पीट सकते हो। इस बारे में स्वयं को पीटने का कोई अन्य उपाय नहीं है, क्योंकि यदि तुम एक डंडा उठाते हो तो शरीर ही पीटा जाएगा, पर तुमको नहीं। तुम अपने को नहीं केवल शरीर को मार सकते हो। डंडे से शरीर को पीटने का अर्थ है कि जब तुम क्रोध का अनुभव करते हो, निरंतर सजग बने रहो, उस तक सचेतनता को लाओ, सजग और होशपूर्ण बने रहो, सचेतना के डंडे से अंदर निरंतर चोट करते रहो, जब तक कि वह आवेग स्थिर होकर रुके और भाग जाए। केवल एक ही चीज़ है जिससे उत्तेजना

भरा स्वभाव खड़ा नहीं रह सकता और वह सचेतनता है। केवल अपने शरीर को पीटने से काम नहीं चलेगा। यही है वह चीज़ जो लोग करते हैं, दूसरों के शरीर को अथवा अपने ही शरीर को पीटते रहे हैं। बांके का यह अर्थ नहीं है। वह उपहास कर रहा है और वह उस प्रतीक की ओर संकेत कर रहा है, ज़ेन के लोग शब्द व्यवहार में जिस सचेतनता के लिए कहते हैं: यही वह घड़ी है जिससे किसी एक के स्वयं को घटित होता है।
ज़ेन परंपरा में जब एक सद्गुरु मरता है तो वह अपना डंडा अथवा छड़ी अपने
उस प्रधान शिष्य को सौंपता है जिसे वह अपने उत्तराधिकारी के रूप में चुनता है और वह ही उसका स्थान लेने जा रहा है। जिस डंडे अथवा छड़ी को वह अपने साथ पूरे जीवन-भर रखता रहा है, वह उसे वही छडी़ देता है। इसका अर्थ है कि उसने जिसको भी यह छड़ी अथवा डंडा दिया है वह अंदर स्थिरता को उपलब्ध हो गया है और पूर्ण सचेत है। सद्गुरु का डंडा अथवा छड़ी को प्राप्त करना महानतम उपहार है क्योंकि वह उसके द्वारा स्वीकार किया जाता है, वह उससे सहमत है और वह यह पहचानता है कि अब उसके अंतरस्थ में डंडे जैसी स्थिरता और सचेतनता जन्म ले चुकी है, वह सचेत हो गया है कि तुमको क्या कुछ घटित होता है और वह किसको घटित होता है। यह अंतर वहां है। एक अंतराल आ गया है, वहां एक शून्यता है, अब परिधि का तुम्हारे केंद्र से तादात्म्य नहीं जुड़ा है। बांके ने कहा: "मैं तुम्हें सुझाव देता हूं कि जब कभी तुम्हारे अंदर उत्तेजना आती है तो यह क्रोध अनिवार्य रूप से बाहर से ही आ रहा है। जब तुम्हारा जन्म हुआ था तब वह तुम्हारे पास नहीं था, न उसे तुम्हारे माता- पिता अथवा दूसरे किसी व्यक्ति ने उपहार की भांति दिया है इसलिए वह कहां से आ रहा है? वह अनिवार्य रूप से बाहर ही से आ रहा है, तुम्हारी परिधि अनिवार्य रूप से दूसरी परिधियों का स्पर्श कर रही है। तुम्हें वहां से ही यह तरंगें और लहरें मिलना चाहिए। इसलिए सचेत बनो क्योंकि जिस क्षण तुम सचेत होते हो तुम अचानक केंद्र पर पेंफक दिए जाते हो।
अचेत बनने से तुम परिधि पर ही रहते हो
सचेत बनते ही तुम केंद्र पर पेंफक दिए जाते हो।
और केंद्र से तुम देख सकते हो कि परिधि पर क्या हो रहा है। तब यदि दो व्यक्ति परिधि पर स्पर्श करते हैं, तब दो व्यक्ति परिधि पर कठिनाई उत्पन्न करेंगे लेकिन तुम्हारे लिए वह कोई भी कठिनाई नहीं होगी। तुम हंस सकते हो, तुम उसका आनंद ले सकते हो और तुम कह सकते हो: यह सजग बने रहना एक जादू जैसा लगता है।
एक बार ऐसा हुआ कि बुद्ध एक कस्बे के निकट से गुजर रहे थे कि कुछ लोग
आए और उन लोगों ने उन्हें बुरी तरह से गालियां देते हुए अभद्र शब्दों का प्रयोग करते हुए उत्तेजना दिलाने वाले कार्य किए और वह केवल वहां शांत खड़े रहे। वे लोग थोड़ी-सी उलझन में पड़े क्योंकि वह प्रतिक्रिया नहीं कर रहे थे, तब उस समूह में से किसी व्यक्ति ने उनसे पूछा-"आप शांत क्यों हैं? जोकुछ हम लोग कह रहे हैं आप उसका उत्तर दीजिए।"
बुद्ध ने कहा-"तुम लोग थोड़ी देर से आए। तुम लोगों को दस वर्ष पूर्व आना चाहिए था क्योंकि तब मैं प्रतिक्रिया कर सकता था लेकिन अब मैं यहां हूं ही नहीं, जहां से तुम मेरे साथ ये कार्य कर रहो, अब एक दूरी उत्पन्न हो गई है। अब मैं केंद्र पर चला गया हूं जहां तुम मुझे स्पर्श नहीं कर सकते। तुम लोग कुछ देर से आए। मुझे तुम लोगों के लिए खेद है लेकिन मैं इसका आनंद लेता हूं। अभी में शीघ्रता मैं हूं क्योंकि जिस दूसरे कस्बे में मैं जा रहा हूं वहां लोग मेरी प्रतीक्षा करेंगे। यदि तुम लोगों की बात अभी भी समाप्त नहीं हुई है, तब मैं इसी रास्ते से लौटते हुए गुजरूंगा। तुम लोग फिर आ सकते हो। यह सजग बने रहना एक जादू अथवा मंत्र जैसा लगता है।"
वे लोग परेशान हो गए। ऐसे व्यक्ति के साथ क्या किया जाए? उस समूह में
से एक दूसरे व्यक्ति ने कहा-"क्या वास्तव में आप कोई भी अन्य बात कहने नहीं जा रहे हैं?
बुद्ध ने कहा-"उस कस्बे से, जहां से मैं ठीक अभी आ रहा हूं लोग बहुत-सी मिठाइयां भेंट करने के लिए लाए, लेकिन मैं केवल तभी कुछ लेता हूं जब मैं भूखा होता हूं और मैं उस समय भूखा नहीं था इसलिए मैंने उन्हें मिठाइयां वापस दे दीं। मैं तुम लोगों से पूछता हूं, वे लोग उनका क्या करेंगे?"

इस पर उस व्यक्ति ने कहा-"निश्चित रूप से वे कस्बे में जाएंगे और उन मिठाइयों को लोगों में प्रसाद की तरह बांट देंगे।"
इस पर बुद्ध ने हंसना शुरू कर दिया और कहा-"तुम लोग वास्तव में कठिनाई
और झंझट में पड़ गए हो, अब तुम लोग क्या करोगे? "तुम लोग मेरे लिए ये गंदे और भद्दे शब्द लेकर आए- इसलिए अब इन्हें वापस ले जाओ। और मैं तुम्हारे गांव वालों के लिए दुःख प्रकट कर रहा हूं क्योंकि अब वहां के लोगों को प्रसाद में यह गंदे और भद्दे शब्द मिलेंगे।"
जब तुम केंद्र पर होते हो तो सजग बने रहना एक जादू और मंत्र जैसा लगता
है, तुम उसका आनंद ले सकते हो। जब तुम शीतल होते हो तो तुम पूरे संसार का आनंद ले सकते हो। जब तुम गर्म और उत्तेजित होते हो, तुम उसका आनंद नहीं ले सकते, क्योंकि तुम उसके अंदर इतना अधिक पाते हो कि तुम उससे तादात्म्य जोड़कर उसमें खो जाते हो। तुम उसके अंदर इतने अधिक अव्यवस्थित हो जाते हो कि तुम कैसे उसका आनंद ले सकते हो?
यह विरोधाभासी लग सकता है लेकिन मैं तुमसे कहता हूं कि एक बुद्ध ही इस संसार का आनंद ले सकता है, तब प्रत्येक चीज़ एक जादू से भरी हुई ठीक प्रतीत होती है।

और फूलों की बरसात हुई
चौथा प्रवचन

मार्ग क्या है?

एक सद्गुरु जो एक पर्वत पर
अकेला ही रहता था
उससे एक भिक्षु ने पूछा:
(सत्य को पाने का) मार्ग क्या है?
उत्तर देते हुए सद्गुरु ने कहा:
"यह पहाड़ कितना अधिक सुंदर है?"

भिक्षु ने कहा: मैं पहाड़ के बारे में
न पूछकर, मार्ग के बारे में पूछ रहा हूं।
सद्गुरु ने उत्तर दिया: "मेरे पुत्र!
जिस समय तक तुम उस पहाड़
के पार न जा सको-
तुम मार्ग तक नहीं पहुंच सकते।

मार्ग सरल है लेकिन तुम ही पहाड़ हो और तुम्हारे पार ही मार्ग दृष्टिगोचर होता है। तुम्हारा स्वयं के पार जाना ही बहुत कठिन है। एक बार तुम मार्ग पर होते हो तो वहां कोई समस्या नहीं होती लेकिन तुमसे मार्ग बहुत अधिक दूर है।
और तुम विरोधाभासों की एक ऐसी भीड़ हो कि तुम्हारा एक खंड पूरब की ओर जाता है और दूसरा पश्चिम की ओर- तुम एक ही दिशा में गतिशील नहीं हो। तुम जैसे हो वैसे ही गतिशील नहीं हो सकते, क्योंकि एक दिशा में गतिशील होने के लिए तुम्हें एक आंतरिक एकता और बिखरी और तरल चेतना को एकीवृफत कर रखे जैसे ठोस अस्तित्व की आवश्यक है। तुम जैसे हो एक भीड़ हो और अनेक व्यक्तियों के साथ बिना किसी एकता के हो।
अधिक-से-अधिक तुम कुछ व्यवस्था कर सके हो जैसी कि प्रत्येक व्यक्ति
को करनी होती है और यदि तुम स्वयं अपने को नियंत्रित कर सकते हो और एक भीड़ न होकर अधिक-से-अधिक तुम एक लोकसभा जैसे बन सकते हो और तब भी तुम एक ब्रिटिश लोकसभा का सदस्य न बनकर एक भारतीय लोकसभा का ही सदस्य बनोगे: अधिक-से-अधिक तुम्हारे खंड अधिकतम संख्या में एक ही दिशा में गतिशील हो सकते हैं लेकिन कुछ खंड अल्प संख्या में वहां हमेशा बने रहेंगे जो किसी अन्य दिशा में जा रहे हैं।
इसलिए एक बहुत नियंत्रित, अनुशासित, चरित्रवान और एक विचारमान व्यक्ति भी कभी मार्ग तक नहीं पहुंचता है। वह समाज को समायोजित करने में समर्थ हो सकता है लेकिन वह भी उस मार्ग तक पहुंचने में असमर्थ है, जहां से परमात्मा की ओर द्वार खुलता है।
तुम वास्तव में एक पहाड़ हो।
पहली बात जो समझ लेने जैसी है कि भीड़ को विदा हो जाना चाहिए। बहुदेववाद के अस्तित्व से एक ही परमात्मा का अस्तित्व रह जाना चाहिए और तुम्हें अनिवार्य रूप से एक होना होगा। इसका अर्थ है तुम्हें निर्विचार हो जाना चाहिए क्योंकि विचार एक भीड़ जैसे हैं। वे तुम्हें विभाजित कर देते हैं और प्रत्येक विचार तुम्हें अलग-अलग खींचता है। वे तुम्हारे अंदर एक उपद्रव सृजित करते हैं और वे हमेशा विरोधाभासी होते हैं। जब भी तुम निर्णय लेते हो, तो वह निर्णय हमेशा तुम्हारे अंदर के किसी भाग के विरुद्ध होता है और वह कभी भी पूर्ण नहीं होता।
मैंने सुना है कि ऐसा हुआ कि मुल्ला नसरुद्दीन बहुत बीमार पड़ गया, वह तनावग्रस्त होने के साथ मानसिक रूप से रुग्ण था और बीमारी ऐसी थी कि धीमे- धीमे वह कोई भी निर्णय लेने में पूर्ण रूप से असमर्थ हो गया। बड़े-बड़े निर्णय ही नहीं बल्कि वह छोटे-छोटे निर्णय भी: जैसे स्नान करना चाहिए अथवा नहीं, इस टाई को पहनना चाहिए अथवा उसे क्या ऑफिस टैक्सी से जाना

चाहिए अथवा कार ड्राइव करते हुए आदि लेने में असमर्थ हो गया, इसलिए उसे मानसिक रोगों के अस्पताल में रखा गया।
छह महीनों के उपचार के बाद जब प्रत्येक चीज़ व्यवस्थित हो गई और डॉक्टरों ने अनुभव किया कि अब वह बिल्कुल ठीक हो गया है तो एक दिन उन लोगों ने मुल्ला से कहा-"मि. नसरुद्दीन! अब आप पूरी तरह से ठीक हैं। आप अपने संसार में वापस लौटकर अपना व्यवसाय और कार्य करना शुरू कर सकते हैं। हम लोग पूर्ण रूप से संतुष्ट हैं कि अब वहां कुछ भी गलत नहीं है।" लेकिन नसरुद्दीन की ओर थोड़ी-सी झिझक तथा अनिणर्य की स्थिति को देखते हुए डॉक्टर ने पूछा-"क्या आप यह अनुभव नहीं करते कि अब आप संसार में जाकर अपने कार्य को करने के लिए तैयार हैं?"
नसरुद्दीन ने कहा-"हां और नहीं।"
लेकिन स्थिति यही है। प्रश्न यह नहीं है कि तुम रुग्ण हो अथवा स्वस्थ
हो, अंतर केवल डिग्री का है लेकिन हां और नहीं दोनों की ही समस्या अंदर गहरे में बनी ही रहती है।
क्या तुम एक व्यक्ति से प्रेम करते हो? " हां, और नीचे गहराई में नहीं
भी दिया हुआ है। देर अथवा सबेर जब तुम हां के साथ थककर उब जाओगे। नहीं ऊपर आएगा और तुम उसी व्यक्ति से घृणा करने लगोगे जिससे कि तुम प्रेम करते हो। तुम किसी वस्तु अथवा व्यक्ति को पसंद करते हो लेकिन नापसंदगी भी अंदर छिपी रहती है और देर अथवा सवेर तुम उसी वस्तु अथवा व्यक्ति को पसंद नहीं करोगे।
जब तुम प्रेम करते थे और किसी को चाहते थे तो तुम पागल थे और जब तुम किसी को न चाहकर उससे घृणा करोगे तब भी तुम पागल होगे। जैसे तुम हो- तुम हां और नहीं दोनों ही हो- फिर तुम कैसे परमात्मा अथवा दिव्यता की ओर गतिशील हो सकते हो? परमात्मा को पूर्ण प्रतिबद्धता की आवश्यकता है, इससे कुछ भी कम में काम नहीं चलेगा। लेकिन पूर्ण प्रतिबद्धता कैसे हो? तुम एक पूर्ण अस्तित्व नहीं हो। यही पहाड़ है।
मार्ग सरल है लेकिन तुम मार्ग पर नहीं हो और संसार में सभी विधियां उनकी कलापटुता और सभी सद्गुरु तुम्हें ठीक से वह मार्ग नहीं देते हैं और मार्ग पहले से मौजूद है। उनकी विधियां और कलापटुता तुम्हें सामान्य रूप से मार्ग की ओर ले जाती है, पर वे मार्ग नहीं हैं। वे पर्वत पर छोटी पगडंडियां बनाते हैं जिससे तुम उसके पार जा सको क्योंकि वही मार्ग है। इस बारे में मार्ग बनाने की कोई आवश्यकता नहीं है, वह पहले ही से मौजूद है। लेकिन तुम एक जंगल में भटक गए हो। तुम्हें मार्ग पर ले आना होगा।
इसलिए पहली बात तो यह है कि तुम जितने अधिक विभाजित हो, तुम मार्ग से उतनी ही अधिक दूर होगे और जितने अधिक अविभाजित होगे उतने ही मार्ग के निकट होगे।
विचार विभाजत कर देते हैं क्योंकि वे हमेशा अपने अंदर विरोध को साथ लिए हुए चलते हैं, प्रेम घृणा को लिए हुए चलता है, मित्रता शत्रुता को साथ लिए हुए और पसंदगी नापसंदगी को साथ-साथ लिए हुए चलती है। सोसान ठीक है, जब वह कहता है: "चाह और अचाह के मध्य थोड़ा-सा भी अंतर, तुम्हारे अस्तित्व में चाह और अचाह की छोटी-सी भी गतिविधि होती है कि जमीन और आसमान जैसा फर्क हो जाता है, कोई भी भेद नहीं है और तुम पहुचं गए हो क्योंकि बिना किसी भेद के साथ तुम एक हो।
इसलिए पहली बात तो यह स्मरण रखनी है कि कैसे विचारो को छोड़कर निर्विचार बना जाए, निर्विचार लेकिन सजग, क्योंकि गहरी नींद में भी तुम निर्विकार हो जाते हो और वह कार्य नहीं करेगा। यह शरीर के लिए अच्छा है क्योंकि इसी कारण गहरी नींद के बाद तुम्हारा शरीर फिर से युवा हो जाता है। लेकिन मन सुबह भी थका बना रहता है क्योंकि मन निरंतर अपनी गतिविधि जारी रखता है। शरीर विश्राम करता है, यद्यपि मन के कारण वह पूर्ण रूप से विश्राम भी नहीं कर सकता लेकिन तब भी वह विश्राम करता है। इसलिए सुबह शरीर तो ठीक होता है, कम-से-कम कार्य करने के लिए तो ठीक होता है लेकिन मन सुबह भी थकावट का अनुभव करता है। तुम बिस्तर पर थके हुए सोने जाते हो और सुबह भी तुम अधिक थके हुए उठते हो क्योंकि मन निरंतर सपनों, सोचने, योजना बनाने और कामनाओं पर कार्य कर रहा था।

गहन निद्रा में कुछ क्षणों के लिए जब तुम पूर्ण रूप से अचेतन होते हो तुम एक हो जाते हों यही एकता एक सजग और सचेत मन के साथ भी आवश्यक है। जैसे कि तुम गहन निद्रा अथवा सुषुप्ति में होते हो, तो कोई विचार नहीं होते, अच्छे और बुरे में, स्वर्ग और नर्क में, परमात्मा और शैतान में किसी भी तरह का कोई भेद नहीं होता है और तुम पूरी तरह से होते हो- लेकिन अचेतन, जब तुम सजग और सचेत हो तो इसी स्थिति को उपलब्ध होना है। समाधि, सर्वोच्च ध्यान अंतिम रूप से और कुछ भी न होकर सचेतनता से भरी गहन निद्रा ही है।
गहन निद्रा में तुम उसे प्राप्त करते हो इसलिए केवल एक ही चीज़ को उपलब्ध होना है और वह है अधिक-से-अधिक सचेतनता। यदि तुम अपनी गहन निद्रा में और अधिक सचेतनता सम्मलित कर सकते हो तो तुम बुद्धत्व को उपलब्ध हो जाओगे। पर्वत के तुम पार चले जाते हो और मार्ग खुल जाता है- यह दोनों एक ही चीज़ हैं।
दूसरी बात: तुम अपने अंदर साथ में अतीत लिए हुए चलते हो और वह एक बहुलता सृजित करता है। तुम एक बच्चे थे, वह बच्चा अभी भी तुम्हारे अंदर छिपा हुआ है और कभी-कभी तुम अभी भी उस बच्चे किक मारते हुए उस बच्चे का अनुभव करते हो; कुछ विशिष्ट क्षणों में तुम पीछे लौटते हो और फिर से एक बच्चे बन जाते हो। एक बार तुम युवा थे, अब तुम एक वृद्ध हो, वह युवा व्यक्ति वहां छिपा हुआ है और कभी-कभी एक बूढ़ा व्यक्ति एक युवा व्यक्ति जैसा ही बेवकूफ बनना शुरू हो जाता है।
तुम अपना पूरा अतीत उसके प्रत्येक क्षण साथ लिए हुए चलते हो और तुम अनेक व्यक्ति बनकर रहते रहे हो। गर्भ से अभी तक तुम लाखों व्यक्ति बनकर रहते रहे हो और वे सभी परत-दर-परत तुम अपने अंदर साथ लिए हुए चल रहे हो। तुम अब बड़े हो गए हो लेकिन अतीत अभी विलुप्त नहीं हुआ है, वह छिपा हुआ हो सकता है लेकिन वह वहां है और वह न केवल मन में है, वह शरीर में भी है। जब तुम एक छोटे बच्चे थे और यदि तुम क्रोधित हुए थे और किसी व्यक्ति ने कहा था-"रुक जाओ, क्रोध मत करो" और तुम रुक गए थे, वह क्रोध में अभी तक तुम्हारा उस समय उठा हाथ उसे ढोए चला जा रहा है। ऐसा होना ही है क्योंकि ऊर्जा अविनाशी है और यदि तुम हाथ को शिथिल नहीं करते तो वह वहां बनी रहेगी।
पचास अथवा साठ वर्ष पूर्व एक विशिष्ट क्षण में वह ऊर्जा जो तब क्रोध
बन गई थी, जब तक कि सचेतन रूप से तुम कुछ कार्य ऐसा नहीं करते कि उस ऊर्जा का वह वर्तुल पूरा हो जाए, तब तक तुम्हारा हाथ शिथिल न होगा। तुम उसे अपने अंदर साथ लिए हुए चलोगे और वह तुम्हारे सभी कार्यों को एक आवृफति देती रहेगा।
तुम किसी व्यक्ति को स्पर्श कर सकते हो लेकिन उस स्पर्श में शुचिता नहीं होगी क्योंकि वह हाथ पूरे अतीत को साथ लिए हुए चल रहा है और सभी दबाया हुआ क्रोध और दमित घृणा वहां मौजूद है। यदि प्रेम में भी तुम एक व्यक्ति का स्पर्श करते हो तो तुम्हारा स्पर्श शुद्ध और पावन न होगा और उसमें प्रेम भी नहीं हो सकता क्योंकि वह क्रोध कहां जाएगा जिसे वह हाथ के द्वारा ढोए चला जा रहा है।
विलियम रैक ने इस शारीरिक दमन पर बहुत अधिक कार्य किया है। शरीर अतीत
के साथ लिए हुए चल रहा है, मन अतीत को साथ लिए हुए चल रहा है और इस बोझ भरी स्थिति में तुम यहीं और अभी में नहीं हो सकते हो। तुम्हें अपने अतीत के साथ उसकी सीमाओं में आना होगा।
इसलिए ध्यान केवल कुछ कार्य यहीं और अभी करने का प्रश्न नहीं है, इससे पूर्व वह संभव हो तुम्हें अपने अतीत के साथ उसकी सीमाओं तक आना होगा और तुम्हें अतीत के उन सभी अनुभवों और विचारों को जो व्यवहारिक नहीं रह गए हैं विलुप्त करना होगा और उनमें वहां लाखों हैं।
जब कोई व्यक्ति वृद्ध होता है, वह एक बच्चा और एक युवा भी होता है और
वह सभी कुछ जो उसके पास कभी भी रहा है, वहां बना रहता है क्योंकि तुम नहीं जानते हो कि प्रत्येक क्षण कैसे मरा जाए।
क्षण-प्रति-क्षण मर जाना, यही जीवन की पूरी कला है, जिससे वहां उस क्षण
के अनुभव और विचार जो व्यवहारिक नहीं है विलुप्त हो जाएं।
एक जोड़ा गया संबंध समाप्त हो गया है, तुम उसे साथ लिए हुए नहीं चल रहे हो, तुम उसके प्रति पूरी तरह से मर जाते हों तुम क्या कर सकते हो? कुछ चीज़

जो घटित हो रही थी और अब वह नहीं हो रही है। तुम उसे स्वीकार करो और उसके प्रति मर जाओ- तुम पूरी सचेतनता के साथ उसे सामान्य रूप से छोड़ दो और तब एक नए क्षण में तुम्हारा नवीनीकरण हो जाता है। अब तुम अतीत को साथ लिए हुए नहीं चल रहे हो।
तुम अब और एक बच्चे नहीं रह गए हो लेकिन स्वयं अपना निरीक्षण करो और तुम अनुभव करोगे कि वहां एक बच्चा है और वह बच्चा ही कठिनाई उत्पन्न करता है। यदि तुम वास्तव में एक बच्चे थे तो वहां कोई भी कठिनाई नहीं होती लेकिन तुम युवा अथवा बूढ़े थे...
मैंने सुना है: मुल्ला नसरुद्दीन को अस्पताल में भर्ती किया गया। वह अस्सी वर्ष का था और तब उसका जन्मदिन आया और वह अपने तीनों पुत्रों की प्रतीक्षा कर रहा था कि वे उसके लिए कुछ उपहार लेकर आएंगे। वे लोग निश्चित रूप से आए लेकिन वे कोई भी वस्तु लेकर नहीं आए क्योंकि वह अस्सी वर्ष का बूढ़ा था। एक बच्चा एक उपहार के साथ प्रसन्नता का अनुभव करता है लेकिन एक बूढ़ा व्यक्ति? वह भी अस्सी वर्ष का बूढ़ा। उसका सबसे बड़ा बेटा साठ वर्ष का था इसलिए उन लोगों ने इस बारे में बिल्कुल सोचा ही नहीं लेकिन जब वे लोग आए और मुल्ला ने देखा कि वे खाली हाथ आए हैं तो उसने निराशा के साथ क्रोध का अनुभव किया और उसने कहा-"क्या तुम लोग अपने बूढ़े बाप को भूल गए, तुम बेचारे बूढ़े बाप के जन्मदिन को भूल गए? यह मेरा जन्म दिवस है।"
उस क्षण यदि तुम उसकी आंखों में देख सकते तो वहां एक बच्चा छिपा था और वहां अस्सी वर्ष का एक बूढ़ा व्यक्ति नहीं था तथा केवल एक बच्चा कुछ खिलौनों की प्रतीक्षा कर रहा था।
एक पुत्र ने कहा-"क्षमा कीजिए, हम लोग यह बात पूरी तरह भूल ही गए।"
मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा-"मैं मानता हूं कि यह भूल जाने की बीमारी लगता है कि हमारे पूरे परिवार में चली आ रही हैं वास्तव में मैं तुम लोगों की मां से विवाह करना ही भूल गया था।" वह वास्तव में नाराज था।
इसलिए उन तीनों ने एक स्वर में चीखते हुए कहा-"क्या? क्या आपके कहने
का यह अर्थ है कि हम लोग... ?
उसने कहा-"हां!" प्रत्येक का यह वही घटिया कमीनापन है।
तुम्हारे अंदर कहीं वह बच्चा अभी तक मौजूद है। जब तुम रोते हो तुम उसे खोज सकते हो, जब तुम हंसते हो तब तुम उसे पा सकते हो, जब कोई व्यक्ति तुम्हें उपहार देता है तुम उसे पा सकते हो, जब कोई व्यक्ति तुम्हें भुला देता है तुम उसे पा सकते हो और जब कोई व्यक्ति तुम्हारी निंदा अथवा तिरस्कार करता है, तुम उसे पा सकते हो। वास्तव में परिपक्व बनना बहुत कठिन है। कोई भी व्यक्ति कभी भी तब तक परिपक्व नहीं बन सकता जब तक कि तुम्हारे अंदर का बच्चा पूरी तरह नहीं मरता है और वह तुम्हारा एक भाग नहीं रहता है अन्यथा वह तुम्हारे कार्यों और संबंधों को प्रभावित किए चले जाएगा।
और यह केवल बच्चे के लिए ही सत्य नहीं है, अतीत का प्रत्येक क्षण वहां
है और तुम्हारे वर्तमान को प्रभावित कर रहा है और तुम्हारा वर्तमान बहुत अधिक बोझिल है। शरीर तथा मन से लाखों आवाजें तुम्हें नियंत्रित किए चली जाती हैं, तुम कैसे मार्ग पर पहुंच सकते हो?
तुम ही एक पहाड़ हो। इस पहाड़ को पिघलना होगा। करना क्या है? वह सचेत रहते हुए ही पिघल सकता है- एक ही कार्य करना है तुम्हें फिर से अतीत को सचेतनता से जीना है।
चेतना की यही कला कुशलता है, तुम जब भी किसी विषय को सचेतनता और सजगता
से जीते हो तो वह कभी भी तुम पर एक भार नहीं बनती है। इसे समझने का प्रयास करो। यदि तुम उसे होशपूर्ण होकर जीते हो तो वह कभी भी तुम पर एक बोझ नहीं बनती है।
यदि तुम किसी वस्तु को खरीदने बाजार जाते हो, तुम होशपूर्वक गतिशील होकर वहां होशपूर्वक घूमते हो, होशपूर्ण होकर ही पूरी याददाश्त के साथ चीज़ें खरीदते हो और सावधान बने रहते हुए घर लौटते हो तो यह कभी भी तुम्हारी स्मृति का एक भाग नहीं बनेगा। मेरे कहने का यह अर्थ नहीं है कि तुम उसे भूल जाओगे- वह एक बोझ नहीं बनेगा। यदि तुम उसे याद करना चाहते हो तो तुम उसे याद कर सकते हो लेकिन वह निरंतर तुम्हारे ध्यान को अपनी ओर खींचने में बाध्य नहीं करेगा और वह एक बोझिल चीज़ नहीं बनेगा।

तुम जोकुछ भी होशपूर्ण करते हुए उसके द्वारा जीते हो वह फिर और अतीत
के अव्यवहारिक अनुभव तथा विचार नहीं बने रहते हैं। जोकुछ भी तुम अचेतन रूप से जीते हो वे अनुभव और अव्यवहारिक विचार अंदर बने ही रहते हैं क्योंकि तुम कभी भी उसे पूर्णता से नहीं जीते हो और कुछ चीज़ अधूरी बनी रहती है। जब कुछ चीज़ अधूरी रह जाती है तो उसे साथ ढोना होता है और वह पूरा होने की प्रतीक्षा करती है।
तुम एक बच्चे थे और किसी व्यक्ति ने तुम्हारा खिलौना तोड़ दिया था और तुम रो रहे थे तथा तुम्हारी मां ने तुम्हारा ध्यान कहीं और मोड़ने के लिए तुम्हें सांत्वना दी थी, तुम्हें कुछ मिठाइयां दी थीं, किसी अन्य विषय के बारे में बातें की थीं, तुम्हारा ध्यान उस ओर से हटाने के लिए एक कहानी सुनाई थी, जिससे तुम उस बात को भूल जाओ और तुम रोते तथा चीखते चले जा रहे थे। वह बात वहां अधूरी रह गई। वह वहां है और जब भी कोई व्यक्ति तुमसे कुछ चीज़ छीनता है, वह एक खिलौना हो सकता है, वह एक प्रेमिका भी हो सकती है और कोई व्यक्ति उसे तुमसे अलग कर देता है- तो तुम रोना और चीखना शुरू कर देते हो। तुम उसी बच्चे को वहां आधा-अधूरा पा सकते हो। वह एक पद भी हो सकता है: तुम नगर के मेयर हो और कोई व्यक्ति तुमसे तुम्हारा पद जो खिलौने की भांति है, छीनता है और तुम फिर से रोना-चीखना शुरू कर देते हो।
अपने अतीत में लौटकर जाओ, उसे खोजो, उससे फिर से होकर गुजरो, क्योंकि
इस बारे में अब कोई दूसरा उपाय नहीं है; अतीत अब वहां और अधिक नहीं है, इसलिए यदि कोई भी बात स्मृति में अटकी हुई है तो मन में से उसे मुक्त करने का केवल यही उपाय है कि लौटकर पीछे की ओर गतिशील हो जाओ।
प्रत्येक रात यह लक्ष्य बना लो कि पूर्ण सजग होकर एक घंटे के लिए पीछे लौटकर यों जाना है, जैसे मानो तुम उस पूरे विषय को फिर से जी रहे हो। बहुत-सी चीज़ें बुलबुलों की भांति ऊपर आएंगी, बहुत-सी चीज़ें तुम्हारे ध्यान को आवाजें देंगी इसलिए जल्दी मत करना और किसी भी चीज़ पर आधा-अधूरा ध्यान मत देना और तब फिर गतिशील होना क्योंकि वह फिर अधूरापन उत्पन्न करेगा। जोकुछ भी आता है उसकी ओर पूर्ण ध्यान देना। उसे फिर से जीना और जब मैं कहता हूं उसे फिर से जीना तो मेरा अर्थ केवल उसे याद करने से न होकर उसे फिर से जीने पर है क्योंकि जब तुम एक बात का स्मरण करते हो तो तुम एक अनासक्त निरीक्षणकर्ता होते हो, उससे सहायता नहीं मिलेगी। उसे फिर से जियो।
तुम फिर से एक बच्चे हो। यों मत देखो जैसे मानो तुम पृथक खड़े हुए हो और
एक बच्चे की ओर देख रहे हो जैसे उससे उसका खिलौना छीना जा रहा है। नहीं, एक बच्चा ही बन जाओ। बाहर से नहीं, अंदर से भी फिर से एक बच्चा बन जाओ। उस क्षण को फिर से जियो: कोई व्यक्ति तुमसे खिलौना छीनता है, कोई व्यक्ति उसे तोड़ता है और तुम रोना शुरू कर देते हो और रोने लगो। तुम्हारी मां तुम्हें सांत्वना देने का प्रयास कर रही है- पूरी चीज़ से फिर से होकर गुजर जाओ, लेकिन अब किसी भी चीज़ की ओर ध्यान मत मोड़ो। पूरी प्रक्रिया को पूरी होने दो। जब वह पूरी हो जाती है तो अचानक तुम अनुभव करोगे कि तुम्हारे हृदय पर भार कम हो गया है और कुछ चीज़ नीचे गिर गई है।
तुम अपने पिता से कुछ बात कहना चाहते थे, पर अब वह मर गए हैं और अब उनसे कहने का कोई भी उपाय नहीं है। अथवा तुम एक विशिष्ट कार्य के लिए जो तुमने किया था जिसे वह नहीं चाहते थे तुम क्षमा मांगना चाहते हो लेकिन तब तुम्हारे अंदर अहंकार आ गया था और तुम क्षमा नहीं मांग सके थे और अब चूंकि वह मर चुके हैं इसलिए कुछ भी नहीं किया जा सकता है। क्या किया जाए और वह अपराध भाव वहां है। वह चलता चला जाएगा और वह तुम्हारे सभी संबंधों को नष्ट कर देता है।
मैं उसके बारे में बहुत अधिक सचेत हूं क्योंकि एक सद्गुरु होना एक विशिष्ट अर्थ में एक पिता होने जैसा है- वह अनेक व्यक्तियों के होने जैसा है लेकिन एक विशिष्ट अर्थ में एक पिता होने जैसा बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। जब लोग मेरे पास आते हैं और यदि वे अपने पिता के साथ संबंध को लेकर बहुत बोझिल हैं तब मुझसे संबंध जोड़ना बहुत कठिन हो जाता है क्योंकि मैं हमेशा अनुभव करता हूं कि उनके पिता अंदर आ जाते हैं। यदि उन्होंने अपने पिता से घृणा की है तो वे मुझसे भी घृणा करेंगे, यदि वे अपने पिता के साथ लड़ना चाहते थे तो वे मुझसे भी लड़ेंगे और यदि वे अपने पिता से प्रेम करते

हैं तो वे मुझसे प्रेम करेंगे, यदि उन्होंने अपने पिता का सम्मान किया है तो वे मेरा सम्मान करेंगे और यदि उन्होंने केवल उथले ढंग से सम्मान करने का दिखावा किया है और अपने अंदर गहराई में उनके पास असम्मान का भाव है तो वे मेरे साथ भी वैसा ही करेंगे और पूरी चीज़ व्यर्थ करना शुरू कर देती है। यदि तुम सचेत हो तो तुम निरीक्षण कर सकते हो। वापस पीछे लौटो। तुम्हारे पिता अब और नहीं हैं लेकिन स्मृति की आंखों के लिए वह अभी भी वहां हैं। अपनी आंखें बंद करो, फिर से एक बच्चे बन जाओ, जिसने कुछ कार्य गलत किया है, पिता की आज्ञा के विरुद्ध किया है, वह क्षमा मांगना चाहता है, लेकिन वह साहस नहीं जुटा सकता-अब तुम साहस कर सकते हो। जोकुछ उस समय तुम कहना चाहते थे, अब तुम कह सकते हो, तुम फिर उनके चरण स्पर्श कर सकते हो, अथवा तुम क्रोधित होकर उनको चोट कर सकते हो लेकिन उसे समाप्त हो जाने दो। पूरी प्रक्रिया को पूर्ण हो जाने दो।
एक मौलिक नियम का स्मरण रखो: कोई भी चीज़ जो पूरी हो जाती है, छूट जाती
है क्योंकि तब वहां उसे साथ ले जाने का कोई भी अर्थ नहीं होते हैं और जो चीज़ अधूरी रह जाती है वह बंधी रहती है और अपने पूरे हो जाने की प्रतीक्षा करती है।
और यह अस्तित्व वास्तव में हमेशा पूरे होने के बाद ही होता है। पूरे अस्तित्व की एक मूल प्रवृत्ति प्रत्येक कार्य को पूरा करने की होती है। वह अधूरे कार्य पसंद नहीं करता- वे लटके रहते हैं, वे प्रतीक्षा करते हैं और इस बारे में अस्तित्व को कोई भी शीघ्रता नहीं होती है, वे लाखों वर्षों तक प्रतीक्षा कर सकते हैं।
प्रत्येक रात्रि जब तुम सोने के लिए जाते हो तो एक घंटे के लिए पीछे
की ओर गतिशील हो जाओ, अपने अतीत में जाकर उसे फिर से जियो। धीमे-धीमे अनेक स्मृतियां भूमि से बाहर निकलेंगी। तुम्हें आश्चर्य होगा कि अनेक स्मृतियों के साथ तुम सचेत नहीं थे कि वे चीज़ें भी वहां हैं और वे इतनी अधिक जीवन स्फूर्ति और ताजगी के साथ हैं, जैसे मानो वे ठीक अभी घटित हुई थीं। तुम फिर से एक बच्चे, फिर से एक युवा प्रेमी बन जाओगे और अनेक व्यक्ति, विषय और वस्तुएं आएंगी। धीमे-धीमे गतिशील होते जाओ जिससे प्रत्येक चीज़ पूर्ण हो जाए। तुम्हारा पर्वत छोटे से छोटा होता जाएगा, तुम्हारे ऊपर भार ही एक पर्वत है। और वह जितना अधिक छोटा हो जाता है, उतना ही तुम स्वतंत्र होने का अनुभव करोगे। तुम्हारे पास एक विशिष्ट गुण की स्वतंत्रता और ताजगी आएगी और अपने अंदर तुम अनुभव करोगे कि तुमने जैसे जीवन के स्रोत का स्पर्श कर लिया है।
तुम हमेशा एक स्फूर्ति से भरे रहोगे, दूसरे लोग भी यह अनुभव करेंगे कि
जब तुम चलते हो तुम्हारे कदमों की चाल बदल गई है, उसके पास नृत्य करने जैसे लक्षण हैं। जब तुम स्पर्श करते हो तो तुम्हारा स्पर्श बदल गया है- वह अब एक मृत हाथ नहीं है और वह फिर से जीवंत हो गया है। अब उनमें जीवन प्रवाहित हो रहा है क्योंकि अवरोध हट गए हैं, अब हाथ में वहां कोई भी क्रोध नहीं है, वह विषैला न होकर शुद्ध है और उसमें प्रेम सरलता से प्रवाहित हो सकता है। तुम और अधिक संवेदनशील, खुले हुए और सहनशील बन जाओगे।
यदि तुम अतीत के साथ सीमाओं में बंध गए हो तो अचानक तुम यहीं और अभी वर्तमान में होगे, क्योंकि तब वहां बार-बार गतिशील होने की आवश्यकता नहीं है।
प्रत्येक रात्रि अतीत में गतिशील होते रहो। धीमे-धीमे स्मृतियां तुम्हारी आंखों के सामने आएंगी और वे पूरी हो जाएंगी। उनको फिर से जियो, अधूरेपन को पूरा करो तो अचानक तुम अनुभव करोगे कि वे छूट जाती हैं। अब वहां कुछ और अधिक करने को नहीं है, बात ही समाप्त हो गई है। जैसे समय गुजरता है कम-से-कम स्मृतियां आएंगी। वहां अंतराल होंगे, अब कुछ भी नहीं आ रहा है। तुम जीना पसंद करोगे और वे अंतराल सुंदर हैं। तब एक दिन आएगा जब तुम पीछे की ओर अतीत में गतिशील होने में समर्थ न होगे क्योंकि प्रत्येक चीज़ पूरी है। जब तुम पीछे की ओर गतिशील नहीं हो सकते, केवल तभी तुम आगे की ओर गतिशील होते हो।

इस बारे में कोई दूसरा उपाय नहीं है और आगे की ओर बढ़ना मार्ग पर पहुंचना है: प्रत्येक क्षण पूरी चेतना आगे की ओर अज्ञात में गतिशील हो रही है।
लेकिन अतीत के द्वारा तुम्हारे पैरों को निरंतर पीछे खींचा जा रहा है, अतीत तुम पर भारी है, फिर तुम भविष्य में कैसे गतिशील हो सकते हो और कैसे तुम वर्तमान में बने रह सकते हो? पर्वत वास्तव में बहुत बड़ा है, वह अज्ञात है और बिना कोई नक्शे का है, कोई भी नहीं जानता कि उससे होकर कैसे गुजरा जाए और प्रत्येक व्यक्ति ऐसा ही एक भिन्न हिमालय है कि तुम कभी भी उसका नक्शा बना ही नहीं सकते क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति व्यक्ति के साथ वह भिन्न है। तुम्हें अपना हिमालय ढोना है और दूसरों को अपने हिमालय ढोने हैं तथा इन पर्वतों के साथ जब तुम लोगों से मिलते हो तो वहां केवल झगड़े और संघर्ष होते हैं।
पूरा जीवन केवल एक संघर्ष बन जाता है, एक हिंसक संघर्ष और प्रत्येक स्थान पर तुम उस झगड़े तथा टकराव को देख और सुन सकते हो तथा उसका अनुभव कर सकत हो। जब कभी भी कोई व्यक्ति निकट आता है तुम तनावग्रस्त हो जाते हो तथा दूसरा भी तनाव से भर जाता है क्योंकि दोनों अपने तनावों के हिमालय को साथ लिए हुए चल रहे हैं और देर अथवा सवेर टकराएंगे ही। तुम इसे प्रेम कह सकते हो: लेकिन वे लोग जो जानते हैं वे उसे एक टकराव अथवा मुठभेड़ कहते हैं। अब वहां दुःख होने जा रहा है।
अतीत के साथ समाप्त हो जाओ। जैसे ही तुम अतीत से कहीं अधिक मुक्त होते
हो वह पर्वत विलुप्त होने लगता है। तब तुम एक समस्वरता को उपलब्ध होगे और तुम धीमे-धीमे एक हो जाओगे।
अब इस नीति कथा को समझने का प्रयास करो। मार्ग क्या है?
एक सद्गुरु जो एक पर्वत पर अकेला ही रहता था
उससे एक भिक्षु ने पूछा-"(सत्य को पाने का) मार्ग क्या है?
प्रत्येक शब्द को समझ बनाना होगा क्योंकि प्रत्येक शब्द अपने साथ अर्थ लिए हुए है।
एक सद्गुरु जो एक पर्वत पर अकेला ही रहता है...
ऐसा हमेशा से होता रहा है कि एक बुद्ध पर्वतों पर जाता है, एक जीसस भी पर्वतों पर जाते हैं, एक महावीर भी पर्वतों में जाते हैं। वे लोग पहाड़ों पर क्यों जाते हैं? क्या अकेलेपन के लिए जाते हैं? क्यों वे एकांतवासी बनते हैं? केवल अपने अंदर स्थित पर्वतों का तुरंत और सीधे आमना-सामना करने के लिए। समाज में रहते हुए यह कठिन है, क्योंकि पूरी ऊर्जा दिन-प्रतिदिन के कार्यों, दिनचर्या और संबंधों में व्यर्थ नष्ट हो जाती है तथा तुम्हारे पास स्वयं से आमना-सामना करने के लिए न तो पर्याप्त समय होता है और न पर्याप्त ऊर्जा ही बचती है, तुम दूसरों का ही आमना-सामना करने में चूक जाते हो। तुम बहुत अधिक व्यस्त रहते हो और स्वयं का साक्षात्कार करने के लिए एक ऐसा जीवन जरूरी है जो जरा भी व्यस्त न हो क्योंकि स्वयं का साक्षात्कार करना एक महान भयंकर घटना है। तुम्हें अपनी सभी ऊर्जाओं की आवश्यकता होगी। यह एक ऐसा तल्लीनता का कार्य है कि यह आधे-अधूरे हृदय से नहीं हो सकता।
खोजी हमेशा से ही केवल अपना आमना-सामना करने के लिए ही प्रवृफति में एकांतवास के लिए जाते रहे हैं। केवल स्वयं का साक्षात्कार करने के लिए और स्वयं अपने को सहज-सरल बनाने के लिए क्योंकि संबंध जोड़ने में वह जटिल हो जाता है क्योंकि दूसरे लोग अपने दुखों और पर्वतों को साथ लाते हैं। जब कभी वे प्रवृफति में एकांतवास के लिए जाते हैं। तुम पहले ही से बोझिल हो और तब दूसरा भी आता है। तब तुम्हारा टकराव होता है, तब चीज़ें अधिक जटिल हो जाती हैं। तब वहां दो बीमारियों का मिलना होता है और उससे एक बहुत जटिल बीमारी उत्पन्न होती है। प्रत्येक चीज़ लिपट जाती है और वह एक पहेली बन जाती है। तुम पहले ही से एक पहेली हो, उसको पहले ही सुलझा लेना अच्छा है और तब संबंधों में जाओ, क्योंकि यदि तुम एक पर्वत नहीं हो तभी तुम किसी अन्य व्यक्ति की सहायता कर सकते हो।
स्मरण रहे, एक ध्वनि उत्पन्न करने के लिए दो हाथों की आवश्यकता होती
है और एक टकराव के लिए दो पहाड़ आवश्यक होते हैं। यदि तुम अब और एक पर्वत

नहीं हो तो अब तुम किसी से संबंध बनाने में समर्थ हो। अब दूसरा एक टकराव उत्पन्न करने का प्रयास कर सकता है लेकिन वह उत्पन्न नहीं हो सकता है क्योंकि एक हाथ के साथ ध्वनि सृजित करने की वहां कोई भी संभावना नहीं है। दूसरा व्यक्ति मूर्ख होने का अनुभव करने लगेगा और वही प्रज्ञा का प्रभात होता है।
यदि तुम बिना किसी भार के हो तो तुम सहायता कर सकते हो और यदि तुम भारमुक्त नहीं हो तो तुम सहायता नहीं कर सकते हो। तुम एक पति हो सकते हो, तुम एक पिता अथवा माता हो सकत हो और तुम अपने बोझ के साथ दूसरों को भी बोझिल बनाओगे। छोटे-छोटे बच्चे भी तुम्हारे पर्वतों कोढो रहे हैं और वे तुम्हारे नीचे कुचले जा रहे हैं- ऐसा होना ही है क्योंकि तुम कभी भी संबंध बनाने से पूर्व अपने अस्तित्व को साफ-सुथरा रखने के बारे में कभी भी फिक्र करते ही नहीं।
प्रत्येक सजग प्राणी का यह मौलिक उत्तरदायित्व होना चाहिए कि किसी से
भी संबंध जोड़ने के लिए गतिशील होने से पूर्व मुझे भारमुक्त होना चाहिए। मुझे अतीत के अव्यवहारिक अनुभवों और विचारों को साथ लेकर नहीं चलना चाहिए, केवल तभी मैं दूसरों को विकसित होने में सहायता कर सकता हूं अन्यथा मैं उसका शोषण करूंगा और दूसरा मेरा शोषण करेगा, अन्यथा मैं दूसरे को प्रभुत्व में रखने का प्रयास करूंगा और दूसरा मुझ पर हावी होने का प्रयास करेगा। वह एक रिश्तेदारी नहीं होगी, वह प्रेम नहीं हो सकता, वह एक सूक्ष्म राजनीति बन जाएगी।
तुम्हारा विवाह संबंध प्रभुत्व करने की एक सूक्ष्म राजनीति है। तुम्हारा पितृत्व अथवा मातृत्व एक सूक्ष्म राजनीति है। माताओं की ओर देखो केवल सामान्य रूप से उनका निरीक्षण करो- और तुम अनुभव करोगे कि वे अपने छोटे बच्चों पर प्रभुत्व करने का प्रयास कर रही हैं। अपनी आक्रामकता और अपना क्रोध वे उन पर पेंफक रही हैं, वे जैसे रेचन की वस्तुएु बन गए हैं और इसके द्वारा वे पहले ही से बोझिल हैं। वे लोग बिल्कुल प्रारंभ ही से इन पर्वतों को लेकर जीवन में गतिशील होंगे और यह कभी नहीं जानेंगे कि बिना इतने अधिक बोझिल सिरों को साथ ले जाने के बिना भी जीवन जीना संभव है और वे कभी उस स्वतंत्रता को भी नहीं जानेंगे जो एक भारमुक्त अस्तित्व के साथ आती है। वे कभी नहीं जानेंगे कि जब तुम बोझिल नहीं होते हो तो तुम्हारे पास अज्ञात आकाश में उड़ने के लिए पंख हो सकते हैं।
परमात्मा केवल तभी उपलब्ध है जब तुम बिना बोझ के हो, लेकिन वे उसे कभी नहीं जानेंगे। वे मंदिर के द्वारों को खटखटाएंगे, लेकिन वे कभी नहीं जानेंगे कि वास्तविक मंदिर कहां मौजूद है। वास्तविक मंदिर तो स्वतंत्रता है: क्षण-प्रति-क्षण अतीत के प्रति मरना और वर्तमान में जीना है। गतिशील होने की स्वतंत्रता, अंधकार में और अज्ञात में गतिशील होना वही परमात्मा तक जाने का द्वार है।
एक सद्गुरु जो एक पर्वत पर अकेला ही रहता था- निपट अकेला।
तुम्हें अनिवार्य रूप से इन दो शब्दों: एकाकी और अकेलेपन के मध्य एक अंतर बना लेना है। शब्दकोश में दोनों के समान अर्थ हैं लेकिन वे लोग जो ध्यान करते रहे हैं, वे इस अंतर को जानते हैं। वे समान नहीं हैं जितना संभव हैं वे उतने ही भिन्न हैं। एकाकीपन एक गंदी चीज़ है, एकाकीपन एक निराशाजनक वस्तु है, वह दूसरे व्यक्ति की अनुपस्थिति और एक उदासी है। एकाकीपन दूसरे की अनुपस्थिति है, तुम चाहते थे कि दूसरा भी वहां हुआ होता लेकिन दूसरा वहां नहीं है और तुम उसे अनुभव करते हो और तुम उनसे नहीं मिल पाते हो। एकाकीपन में तुम वहां नहीं हो तथा वहां दूसरे व्यक्ति की अनुपस्थिति है। अकेलापन- यह पूर्ण रूप से भिन्न है। तुम वहां हो, वहां तुम्हारी उपस्थिति एक विधायक चीज़ है। तुम दूसरे की अनुपस्थिति को महसूस नहीं करते, तुम स्वयं से ही मिलते हो। तब तुम अकेले हो, एक शिखर के समान अकेले हो, आश्चर्यजनक रूप से सुंदर हो। कभी-कभी तुम एक भय का भी अनुभव करते हो लेकिन उसमें भी एक सौंदर्य है। पर मूल चीज़ है उपस्थिति, तुम स्वयं के लिए उपस्थित हो। तुम एकाकी नहीं हो, तुम स्वयं अपने ही साथ हो। अकेले होकर भी तुम एकाकी नहीं हो, तुम स्वयं के साथ हो। एकाकी होकर तुम पूरी तरह एकाकी हो, वहां कोई भी व्यक्ति नहीं है। तुम स्वयं अपने भी साथ नहीं हो और तुम दूसरे व्यक्ति से

चूक रहे हो। एकाकीपन नकारात्मक है, वह एक अनुपस्थिति है और अकेलापन विधायक है, वह एक उपस्थिति है।
यदि तुम अकेले हो तो तुम विकसित होते हो क्योंकि वहां विकसित होने के लिए अंतराल है, तुम्हें बाधा डालने को अन्य कोई भी नहीं है, कोई भी अन्य व्यक्ति तुम्हें रोकने वाला नहीं है तथा न कोई भी व्यक्ति और अधिक जटिल समस्याएं उत्पन्न करने के लिए है। अकेलेपन में तुम विकसित होते हो, तुम जितना अधिक विकसित होना चाहते हो, तुम विकसित हो सकते हो क्योंकि इस बारे में कोई सीमा नहीं है और तुम स्वयं अपने साथ बने रहते हुए प्रसन्न हो, एक परमानंद उत्पन्न होता है। वहां कोई भी मुकाबला नहीं है क्योंकि दूसरा वहां नहीं है, इसलिए न तुम सुंदर हो और न कुरूप, न तुम धनी हो और न तुम निर्धन हो, न तुम सफेद हो ओर न काले हो, न तो तुम पुरुष हो और न तुम स्त्री हो, न तुम "यह" हो और न तुम "वह" हो। अकेले तुम कैसे एक स्त्री अथवा एक पुरुष हो सकते हो एकाकीपन में तुम एक स्त्री हो अथवा पुरुष हो क्योंकि दूसरा अनुपस्थिति है। अकेलेपन में तुम कोई भी नहीं हो, दूसरे से पूरी तरह खाली हो, शून्य हो।
स्मरण रहे, जब दूसरा नहीं होता है तो अहंकार भी नहीं रहता है। वह दूसरे के साथ ही मौजूद होता है। अहंकार के लिए दूसरा व्यक्ति आवश्यक है या तो वह उपस्थित हो अथवा अनुपस्थित हो। "मैं" का अनुभव करने के लिए दूसरा आवश्यक है, दूसरे की एक चहारदीवारी आवश्यक है। पड़ोसियों से घिरे हुए मैं; "मैं" का अनुभव करता हूं। जब वहां कोई भी पड़ोसी नहीं है, वहां चारों ओर कोई भी नहीं है, फिर तुम कैसे "मैं" का अनुभव कर सकते हो? तुम वहां होगे लेकिन बिना किसी अहंकार के, अहंकार एक रिश्ता है और वह केवल संबंधों में ही मौजूद होता है।
वह सद्गुरु अकेला ही रहता था- एक बैरागी अथवा तपस्वी का अर्थ है " अकेला, वह एक पर्वत पर स्वयं का ही आमना-सामना करते हुए प्रत्येक ओर से स्वयं अपने से ही मिलता था। वह जहां कहीं भी जाता है, स्वयं अपने से ही साक्षात्कार करता है, इसलिए भलीभांति यह जानते हुए कि वह क्या है और वह कौन है, वह दूसरों के साथ बोझिल नहीं है।
यदि तुम अकेले बने रह सकते हो तो सभी विषय और वस्तुएं, यहां तक कि पागलपन जैसी वस्तु भी स्वयं अपने से सुलझना शुरू हो जाती है। ठीक कल रात ही मैं कुछ मित्रों के साथ बात कर रहा था। पश्चिम में यदि एक व्यक्ति सनकी, पागल, नासमझ और मानसिक रोगी हो जाता है तो उसे बहुत अधिक उपचार दिया जाता है, वास्तव में वह बहुत अधिक और वर्षों तक दिया जाता है तथा परिणाम लगभग कुछ भी नहीं होता है। वह व्यक्ति वैसा ही बना रहता है।
मैंने सुना है कि एक बार ऐसा हुआ कि एक मनोचिकित्सक एक स्त्री का उपचार कर रहा था, जिसके पास एक ही आवेश था, उस आवेश को "क्लेप्टोपीनिया" कहते हैं, वह वस्तुओं को चुरा लेने का था। वह बहुत धनी स्त्री थी और उसे किसी भी चीज़ की कमी नहीं थी, वह केवल मनोवैज्ञानिक रूप से आवेशित हो जाती थी। वह कोई भी चीज़ न चुराए, यह उसके लिए असंभव था और जहां कहीं भी उसे अवसर मिलता, वह चीज़ें चुरा लेती, यहां तक कि सुई और बटन जैसी मूल्यहीन वस्तुएं भी। उसका वर्षों तक उपचार किया गया।
पांच वर्षों के लंबे उपचार के बाद, जिसके लिए हजारों डॉलर्स जैसे नीचे नाली में बहा दिए गए, उन फ्रॉयड्रियन मनोचिकित्सकों ने जो उसका उपचार कर रहे थे, पांच वर्षों बाद उससे कहा-"अब आप सामान्य प्रतीत होती हैं और अब उपचार को जारी रखने की कोई भी आवश्यकता नहीं है तथा आप इसे छोड़ सकती हैं। अब आप कैसा अनुभव कर रही हैं?"
उसने कहा-"मैं पूर्ण रूप से ठीक होने का अनुभव कर रही हूं। प्रत्येक चीज़ बढ़िया और अच्छी है। जबसे आपने मेरा उपचार करना शुरू किया उससे पूर्व में हमेशा वस्तुएं चुराने के बाद अपराध बोध का अनुभव करती थी- अब मैं चीज़ें चुराती हूं लेकिन कभी भी मैं अपराध बोध का अनुभव नहीं करती हूं। बहुत उम्दा है यह। प्रत्येक चीज़ अच्छी है। इसे वास्तव में आपने ही किया है। आप लोगों ने मेरी बहुत सहायता की है।"
यही वह सभी कुछ है जो होता है। तुम पूरी तरह से अभ्यस्त बन जाते हो और सभी कुछ इतना ही होता है कि तुम अपनी बीमारी के साथ लयबद्ध हो जाते हो।

पूरब में, विशेष रूप से जापान में क्योंकि वहां ज़ेन है, वहां कम-से-कम
एक हजार वर्षों से एक पूर्ण रूप से भिन्न प्रकार का उपचार विद्यमान है। ज़ेन मठों में और वे किसी भी तरह से चिकित्सालय नहीं है और न रुग्ण लोगों से उनका कोई भी मतलब है, लेकिन यदि उस गांव में एक ज़ेन मठ विद्यमान है और यदि कोई भी व्यक्ति मानसिक रूप से रुग्ण अथवा पागल हो जाता है तो केवल वही एक ऐसा स्थान है जहां उसे ले जाया जाता है अन्यथा उसे वे लोग और कहां ले जाएं? पूरब में वे लोग हमेशा से मानसिक रोगियों को एक सद्गुरु के पास ले जाते हैं क्योंकि यदि वह सामान्य लोगों का उपचार कर सकता है तो मानसिक रोगियों का क्यों नहीं कर सकता? अंतर केवल डिग्रिस का है।
इसलिए वे लोग मानसिक रोगियों को एक ज़ेन मठ में सद्गुरु के पास ले जाएंगे और कहेंगे-"अब क्या किया जाए? आप इसे अपनी शरण में ले लीजिए।" और वह उसे अपने मठ में रख लेगा।
उपचार वास्तव में अविश्वसनीय है। उपचार यही है कि किसी भी प्रकार से उसका कोई भी उपचार किया ही नहीं जाता। उस व्यक्ति को मठ में पीछे की ओर एक कोने में एकांत कोठरी दे दी जाती है और उस मानसिक रोगी को वहीं रहना होता है। उसे भोजन के साथ अन्य प्रत्येक सुविधा दी जाएगी और उसे अकेले में स्वयं अपने ही साथ रहना होगा। तीन सप्ताह में, केवल तीन हफ्तों में बिना किसी उपचार के मानसिक रोग विलुप्त हो जाता है।
अब पश्चिम के अनेक मनोचिकित्सक इसे एक चमत्कार की भांति लेते हुए इसका अध्ययन कर रहे हैं, पर यह कोई चमत्कार नहीं है। सामान्य रूप से उस व्यक्ति को थोड़ा-सा अंतराल स्वयं के साथ व्यवहार करने के लिए दिया जा रहा है क्योंकि कुछ दिनों पूर्व वह सामान्य था। वह फिर से सामान्य हो सकता है: कोई व्यक्ति अथवा कोई बात उस पर एक बोझ बन गई है और केवल कुल इतनी-सी ही बात है कि वह एक अंतराल चाहता है। और वे लोग उसकी ओर अधिक ध्यान नहीं देंगे क्योंकि यदि तुम एक मानसिक रोगी की ओर बहुत अधिक ध्यान देते हो जैसा कि पश्चिम में दिया जा रहा है तो वह फिर वापस लौटकर सामान्य होने नहीं जा रहा है क्योंकि इससे पूर्व किसी भी व्यक्ति ने उसकी ओर इतना अधिक ध्यान नहीं दिया था। वह कभी भी वापस लौटकर वैसा ही समान बनने नहीं जा रहा है क्योंकि तब किसी भी व्यक्ति ने उसके बारे में फिक्र नहीं की और अब महान मनोचिकित्सक, विश्व प्रसिद्ध नामी महान डॉक्टर उसकी फिक्र कर रहे हैं, वे उससे बातचीत कर रहे हैं, वह रोगी बना काउच पर शरीर को शिथिल कर लेटा हुआ है, नामी-गिरामी मनोचिकित्सक ठीक उसके पीछे बैठे हुए, वह जोकुछ भी कर रहा है, उसके प्रत्येक शब्द को बहुत ध्यान और सावधानी से सुन रहे हैं। इतना अधिक ध्यान देना। मानसिक रोग एक पूंजी बन जाता है क्योंकि लोगों को दूसरों का ध्यान पाने की बहुत आवश्यकता है।
कुछ लोग बेवकूफी से भरा हुआ व्यवहार करना शुरू कर देते हैं क्योंकि
तब समाज उनकी ओर ध्यान देता है। प्रत्येक पुराने कस्बे अथवा प्रत्येक गांव में तुम एक गांव का शेख चिल्ली अथवा एक बेवकूफ व्यक्ति पाओगे और वह एक सामान्य व्यक्ति न होकर बहुत बुद्धिमान व्यक्ति होता है। मूर्ख लोग प्रायः ही बुद्धिमान होते हैं। उन लोगों ने यह चाल सीख ली है कि मूर्ख बनने पर लोग उनकी ओर ध्यान देते हैं, वे उन्हें भोजन देते हैं, प्रत्येक व्यक्ति उन्हें जानता है और बिना कोई पद प्राप्त किए हुए भी वे पहले ही से प्रसिद्ध हो जाते हैं- पूरा गांव उनकी देखभाल करता है, जब कभी वे रास्ते से गुजरते हैं, वे महान नेताओं जैसे होते हैं एक भीड़ उनका अनुसरण करती है, बच्चे कूदते और उछलते हुए उनकी ओर छोटी-मोटी चीज़ें पेंफकते हैं और वे लोग उसका आनंद लेते हैं। वे शहर के लिए एक अजूबे होते हैं और वे जानते हैं कि मूर्ख बने रहना एक अच्छी-खासी पूंजी है और गांव उनकी देखभाल करता है, उन्हें भली भांति भोजन तथा वस्त्र देता है और उन लोगों ने यह बाजीगरी अच्छी तरह सीख ली है। कोई भी कार्य करने की कुछ आवश्यकता ही नहीं है- केवल एक मूर्ख बने रहना ही पर्याप्त है।
यदि एक मानसिक रोग से ग्रस्त व्यक्ति और स्मरण रहे कि अहंकार ही वह मानसिक रोग है और अहंकार को लोगों का ध्यान पाने की आवश्यकता होती है तथा अहंकार को यह अच्छा लगता है। अनेक लोगों की हत्या समाचार-पत्रों का ध्यान पाने के लिए ही सामान्य रूप से कर दी गई क्योंकि जब वे हत्या करते हैं तभी

वे समाचार-पत्रों की सुर्खियों में आ सकते हैं। अचानक वे लोग बहुत महत्वपूर्ण हो जाते हैं, उनके चित्र और उनके नाम जीवनवृत्त के साथ प्रकाशित किए जाते हैं और अचानक वे लोग कोई नहीं, कुछ नहीं से कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति बन जाते हैं।
मानसिक रोग, ध्यान पाने की एक गहन लालसा है और यदि तुम उसकी ओर ध्यान देते हो तो तुम उसे भोजन देते हो और इसी कारण मनोविश्लेषण पूर्ण रूप से असफल होकर रह गया है।
ज़ेन मठों में वे लोग एक मानसिक रोगी का तीन सप्ताहों में उपचार कर देते हैं और फ्रॉयडियन मनोविश्लेषण द्वारा वे लोग तीस वर्षों मे भी उपचार नहीं कर सकते क्योंकि वे वास्तविक अभिप्राय से चूक जाते हैं, लेकिन ज़ेन मठों में मानसिक रोग से ग्रस्त व्यक्ति की ओर कोई भी ध्यान नहीं दिया जाता, कोई भी व्यक्ति यह नहीं सोचता है कि वह कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति है- वे लोग उसे पूरी तरह से अकेला छोड़ देते हैं और केवल यही उसका उपचार है। उसे अपने विषय-वस्तु क्रमबद्ध लगाकर स्वयं अपनी समस्याओं को हल करना होता है और कोई भी व्यक्ति उसकी फिक्र नहीं करता है। तीन सप्ताह में पूर्ण रूप से सामान्य होकर वह बाहर आ जाता है।
अकेलेपन के पास एक उपचारक शक्ति और प्रभाव होता है। जब कभी भी तुम यह अनुभव करते हो कि झंझट में पड़कर अव्यवस्थित हो रहे तो वहीं उसे हल करने का प्रयास मत करो। कुछ दिनों को समाज से हटकर कम-से-कम तीन सप्ताह के लिए कहीं दूर अकेलेपन में चले जाओ और केवल शांत बने रहकर स्वयं अपना ही निरीक्षण करो, केवल स्वयं के साथ बने रहकर स्वयं को अनुभव करो और तुम्हारे पास एक अद्भुत शक्ति उपलब्ध होगी जो तुम्हारा उपचार करती हैं इसीलिए पूरब में ऐसे लोग पहाड़ों अथवा जंगलों में कहीं अकेलेपन मे चले जाते हैं, जहां उन्हें चिंता में डालने के लिए अन्य कोई भी व्यक्ति न हो। केवल स्वयं के साथ जिससे वह व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से स्वयं का अनुभव कर सके और तुम देख सकते हो कि उसके अंदर क्या परिवर्तन हो रहा है।
तुम्हारे स्वयं के सिवाय कोई अन्य व्यक्ति तुम्हारे लिए जिम्मेदार नहीं है ओर तुम्हें ही यह छांटना है कि तुम्हारा ही किया गया कर्म है। यही है वह जिसे हिंदू कहते हैं- तुम्हारा कर्म। इसका अर्थ बहुत गहरा है। यह एक सिद्धांत नहीं है। वे कहते हैं कि तुम जोकुछ भी हो वे तुम्हारे अपने ही कर्म है इसलिए उन्हें छांटकर क्रमबद्ध कर लो। तुम्हारे लिए कोई अन्य व्यक्ति जिम्मेदार नहीं है और केवल तुम ही जिम्मेदार हो।
इसलिए अपने विषय-वस्तुओं को छांटकर क्रमबद्ध करते हुए अपने अकेले को बंदीघर में बंद कर अपनी समस्याओं और अपनी आत्मा पर ध्यान करो। यही इसका सौंदर्य है कि यदि तुम केवल शांत और मौन होकर कुछ दिनों तक स्वयं अपने साथ ही जीते हो तो सभी विषय और वस्तुएं स्वयं अपने आप व्यवस्थित हो जाती हैं क्योंकि अव्यवस्थित और अशांत स्थिति स्वाभाविक नहीं है और तुम लंबी अवधि तक उसे नहीं बढ़ा सकते हो। सामान्य रूप से विश्राममय हो जाओ और सभी विषय वस्तुओं को होने दो और निरीक्षण करो। स्मरण रहे कि किसी भी चीज़ को बदलने का कोई भी प्रयास मत करो, यदि तुम कोई परिवर्तन करने का प्रयास करते हो तो तुम उसी स्थिति को वैसा ही रखना जारी रखोगे क्योंकि कोई वास्तविक प्रयास विषय वस्तुओं को अव्यवस्थित करना जारी रखेगा।
यह ठीक एक नदी के किनारे बैठने के समान है, नदी बहे चलती जाती है। मिट्टी और कीचड़ तली में बैठ जाता है, सूखे पत्ते सागर की ओर बह जाते हैं और धीमे-धीमे पूर्ण रूप से शुद्ध और निर्मल हो जाती है। तुम्हें जाकर उसे साफ करने की आवश्यकता नहीं है- यदि तुम जाते हो तो तुम उसे और अधिक अस्त-व्यस्त कर दोगे। पूरी तरह से निरीक्षण करो और चीज़ों को होने दो। यही है वह जिसे कर्म का सिद्धांत कहते हैं कि तुमने स्वयं अपने को अव्यवस्थित कर रखा है, अब अकेले ही चलो। इसलिए तुम्हें अपनी समस्याओं को दूसरों पर पेंफकने की आवश्यकता नहीं है, तुम्हें अपनी बीमारियां दूसरों पर फैलाने की आवश्यकता नहीं है- तुम पूरी तरह से अकेले ही गतिशील होते जाओ, उन्हें मौन और शांति से प्रभावित होने दो तथा उनका निरीक्षण करते रहो। ठीक मन की नदी के किनारे बैठे रहो। चीज़ों को व्यवस्थित और स्थिर होने दो। जब चीज़ें स्थिर और व्यवस्थित हो जाती हैं तो तुम्हारे पास एक स्पष्टता और समझ होती है। यदि

तुम वैसा अनुभव करते हो तो संसार में वापस लौट जाओ। वह भी अनिवार्य नहीं है, उसे भी एक बाधा नहीं बनना चाहिए। कुछ भी बाधा नहीं बनना चाहिए, न तो संसार और न पर्वत।
जोकुछ भी तुम अनुभव करते हो, वह स्वाभाविक है और जोकुछ तुम अनुभव करते
हो वही अच्छा है और वह तुम्हारा उपचार करता है जोकुछ भी तुम अनुभव करते हो। तुम उसमें विभाजित न होकर पूर्ण रूप से हो "- और वही मार्ग है पर्वत को तुमने पार कर लिया है और तुम मार्ग पर पहुंच गए हो अब उसमें बहो और उसका अनुसरण करो।
पर्वत का होना ही समस्या है। जब तुमने पर्वत को पार कर लिया है तो मार्ग उपलब्ध है और तुमने इस पर्वत को अनेक जन्मों में इकट्ठा कर बनाया है जोकुछ भी तुमने किया है, तुम्हारे कर्मों से ही यह पर्वत बना है और अब यह तुम पर एक बोझ है।
एक सद्गुरु जो एक पर्वत पर अकेला रहता था।
उससे एक भिक्षु ने पूछा-"(सत्य को पाने का) मार्ग क्या है?"
उत्तर देते हुए सद्गुरु ने कहा-"यह पहाड़ कितना अधिक सुंदर है?"
यह असंगत प्रतीत होता है क्योंकि वह व्यक्ति मार्ग के बारे में पूछ रहा है और सद्गुरु किसी पर्वत जैसी चीज़ के बारे में कह रहा है। यह पूर्ण रूप से बुद्धिहीन और अशिष्ट उत्तर प्रतीत होता है क्योंकि उस व्यक्ति ने पहाड़ के बारे में कोई भी बात नहीं पूछी है।
स्मरण रहे, यह एक स्थिति है। तुम "अ" के बारे में पूछते हो, मैं "ब" के बारे में बताता हूं, तुम मार्ग के बारे में पूछते हो और मैं पर्वत के बारे में बात करता हूं। यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो, केवल तभी तुम्हें अनुभूति हो सकती है और यदि तुम मुझे सामान्य रूप से सुनते हो तो मैं असंगत और मूर्ख हूं तो मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता हूं। मैं मूर्ख हूं क्योंकि मैं प्रासंगिक बात नहीं कर रहा हूं। यदि मैं संगत बात करता हूं तो मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता हूं और यही समस्या है। यदि मैं कुछ बात कहता हूं जो तुम्हें संगत प्रतीत होती है तो वह अधिक सहायता नहीं करेगी क्योंकि समस्या तुम ही हो और यदि मैं संगत बात करता हूं तो इसका अर्थ है कि मैं तुम्हें समायोजित करता हूं। फिर भी यदि मैं तुम्हें संगत दिखता हूं तो इसका अर्थ कि कुछ चीज़ गलत हो गई हैं स्वयं उस घटना की प्रवृफति के द्वारा मुझे असंगत होना होगा।
मैं मूर्ख और बुद्धिहीन दिखाई दूंगा और प्रश्न तथा उत्तर के मध्य इस अंतराल पर केवल तभी सेतु बन सकता है, यदि तुम्हारे पास आस्था है अन्यथा सेतु नहीं बन सकता। उस पर कैसे सेतु बने? खोजी और सद्गुरु के मध्य शिष्य और सद्गुरु के मध्य तथा प्रश्न और उत्तर के मध्य कैसे उस सेतु को बनाया जाए क्योंकि तुम मार्ग के बारे में प्रश्न करते हो और उत्तर पर्वत के बारे में दिया जाता है।
इसीलिए श्रद्धा बहुत महत्वपूर्ण बन जाती है। ज्ञान नहीं, तर्क नहीं, तर्क-वितर्क की क्षमता नहीं, बल्कि वह एक गहन श्रद्धा ही है जो असंगत उत्तर का सेतु बन सकती है जो अप्रासंगितता के द्वारा गहराई से देख सकती है और अनुरूपता की एक झलक को पकड़ सकती है।
उत्तर देते हुए सद्गुरु ने कहा-
"यह पहाड़ कितना अधिक सुंदर है?"
भिक्षु ने कहा-
"मैं पहाड़ के बारे में न पूछकर मार्ग के बारे में पूछ रहा हूं।"
वह अपने प्रश्न से चिपका रहता है। यदि तुम उससे चिपके रहते हो तो तुम चूक जाओगे क्योंकि तुम गलत हो और तुम्हारा प्रश्न भी ठीक नहीं हो सकता, ऐसा होना असंभव है। तुम एक ठीक प्रश्न कैसे पूछ सकते हो? यदि तुम एक ठीक प्रश्न पूछ सकते हो तो उत्तर भी बहुत अधिक दूर नहीं है, वह वहीं छिपा हुआ है। यदि तुम एक ठीक प्रश्न पूछ सकते हो तो पहले ही से ठीक हो। एक मन के साथ जो पहले ही से ठीक हो, उत्तर कैसे छिपा हुआ रह सकता है? नहीं, तुम जोकुछ भी पूछते हो, तुम जोकुछ भी कहते हो वह तुम्हें भी साथ लिए हुए चलता है।

ऐसा हुआ: मुल्ला नसरुद्दीन मोटा-से-मोटा और स्थूल-से-स्थूल शरीर का होता जा रहा था। डॉक्टर ने उसे पथ्य के रूप में बहुत संतुलित भोजन लेने का परामर्श दिया।
दो माह बाद मुल्ला डॉक्टर से मिलने गया। डॉक्टर ने कहा-"माई गॉड! यह
एक चमत्कार है। तुम पहले की अपेक्षा और अधिक मोटे हो गए हो- मैं अपनी आंखों पर विश्वास ही नहीं कर सकता। पथ्य के रूप में मैंने तुम्हें जो संतुलित भोजन लेने को कहा था क्या तुम निष्ठापूर्वक उसका अनुसरण कर रहे हो?" क्या तुम मेरे तज्बीज़ किए गए भोजन के अलावा अन्य कुछ और तो नहीं खा रहे हो?" नसरुद्दीन ने कहा-"मैं पहले जितना लेता था उसके अलावा कुछ भी नहीं ले रहा हूं, पर साथ ही मैं उस पथ्य का भी अनुसरण कर रहा हूं।"
डॉक्टर विश्वास ही न कर सका। उसने पूछा-"नसरुद्दीन मुझे ठीक-ठीक बताओ। "जितना लेता था, उसके अलावा कुछ भी नहीं" का क्या मतलब है?" नसरुद्दीन ने कहा-"वास्तव में अपने नियमित भोजन के अलावा नियमित भोजन लेने के बाद मैं आपके द्वारा निर्धारित किया गया पथ्य भी लेता रहा हूं।" लेकिन इसे ऐसा होना ही है। जोकुछ तुम करते हो, मन उसी में गतिशील होता है- वह प्रत्येक चीज़ को एक आवृफति दे देता है। तुम एक ठीक प्रश्न पूछ ही नहीं सकते। यदि तुम एक ठीक प्रश्न पूछ सकते हो तो इस बारे में पूछने की कोई आवश्यकता है ही नहीं, क्योंकि ठीक तो वह व्यक्ति होता है, न प्रश्न होता है और न उत्तर। यदि तुम ठीक हो तो तुम ठीक प्रश्न पूछते हो और अचानक वहां ठीक उत्तर होता है। यदि तुम एक ठीक प्रश्न पूछ सकते हो तो तुम्हें सामान्य रूप से कहीं भी और जाने की आवश्यकता नहीं है; केवल अपनी आंखें बंद करो तथा ठीक प्रश्न पूछो और तुम पाओगे कि ठीक उत्तर वहां मौजूद है।
समस्या ठीक उत्तर के साथ नहीं है, समस्या मार्ग के साथ भी नहीं है, समस्या है वह पर्वत, समस्या है मन और समस्या हो तुम।
उत्तर देते हुए सद्गुरु ने कहा-"यह पहाड़ कितना अधिक सुंदर है?"
भिक्षु ने कहा-"मैं पहाड़ के बारे में न पूछकर, मार्ग के बारे में पूछ रहा हूं।"
सद्गुरु ने उत्तर दिया-"मेरे पुत्र! जब तक तुम पहाड़ के पार न जा सको, तुम मार्ग तक नहीं पहुंच सकते।"
अचानक यह "मेरे पुत्र" का संबोधन क्यों? अभी तक सद्गुरु ने एक भी प्रेमपूर्ण शब्द का प्रयोग नहीं किया है, अचानक यह "मेरे पुत्र" का संबेधन क्यों? क्योंकि अब श्रद्धा की आवश्यकता होगी और तुम केवल कोई भी बात कहते हुए एक व्यक्ति में श्रद्धा उत्पन्न नहीं कर सकते हो, चाहे वह पूर्ण सत्य ही क्यों न हो। श्रद्धा केवल तभी उत्पन्न की जा सकती है यदि सद्गुरु प्रेमपूर्ण हो क्योंकि केवल प्रेम ही श्रद्धा उत्पन्न करता है। शिष्य की ओर से एक श्रद्धा आवश्यक होती है, एक गहन आस्था की आवश्यकता होती है लेकिन आस्था केवल तभी उगमी है जब सद्गुरु कहता है- "मेरे पुत्र"।
अब विषय भिन्न दिशा में घूम रहा है। यह एक बुद्धिगत संबंध नहीं है, यह
एक हृदय का संबंध बन रहा है। अब सद्गुरु, एक सद्गुरु की अपेक्षा एक पिता अधिक बन रहा है, अब सद्गुरु हृदय की ओर जा रहा है। अब वह एक हृदय का संबंध बना रहा है।
यदि तुम बुद्धिगत प्रश्नों को पूछते हो और सद्गुरु उनका उत्तर दिए चला जाता है तो वह उसके सामने बाह्य रूप से एक संवाद हो सकता है लेकिन वह एक सच्चा संवाद नहीं हो सकता है। तुम उस मार्ग पर आड़े-तिरछे होकर तो निकल सकते हो लेकिन कभी भी मिल नहीं सकते। यह एक संवाद नहीं है। वे दोनों स्वयं में जड़ें जमाए स्थिर बने रहते हैं, वे दूसरे तक पहुंचने का कभी कोई प्रयास ही नहीं करते। "मेरे पुत्र" कहना, सद्गुरु की ओर से उस भिक्षु तक पहुंचने का एक प्रयास है। वह शिष्य के श्रद्धा करने के लिए मार्ग तैयार कर रहा है। लेकिन तब फिर एक समस्या उत्पन्न होती है क्योंकि शिष्य यह सोच सकता है-"यह बहुत अधिक है, मैं यहां प्रेम की खोज में नहीं आया हूं, मैं तो यहां ज्ञान की खोज में आया हूं।" लेकिन एक सद्गुरु तुम्हें ज्ञान नहीं दे सकता है। वह तुम्हें प्रज्ञा दे सकता है और प्रज्ञा केवल प्रेम के वाहन द्वारा ही आती है। इसलिए अचानक ही सद्गुरु कहता है-
"मेरे पुत्र! जब तक तुम पहाड़ के पार न जा सको

तुम मार्ग तक नहीं पहुंच सकते।"
एक बात वह और कहता है-"यह पहाड़ कितना अधिक सुंदर है?"
एक बुद्धत्व को उपलब्ध व्यक्ति का पागलपन भी सुंदर और आकर्षक होता है। जो व्यक्ति बोध को उपलब्ध नहीं है उसके लिए बुद्धत्व भी आकर्षक नहीं होता। पूरी स्थिति बदल जाती है। वह कहता है-"कितना सुंदर पर्वत है यह?" बुद्धत्व को उपलब्ध व्यक्ति के लिए तुम्हारी मानसिक रुग्णता भी सुंदर चीज़ है, वह उसे भी स्वीकार करता है, उसे नष्ट नहीं करना है बल्कि उसके भी पार जाना है। किसी एक को उसके पार जाना है लेकिन जब तक उसका अंत नहीं आ जाता, वह सुंदर है। किसी एक को कहीं अन्य स्थान पर भी पहुंचना होता है लेकिन विषय लक्ष्य नहीं है, विषय है, प्रत्येक क्षण लक्ष्य को यहीं और अभी जीना।
बुद्धत्व को उपलब्ध व्यक्ति के लिए प्रत्येक वस्तु अथवा व्यक्ति सुंदर है और जो व्यक्ति बोध को उपलब्ध नहीं है उसके लिए प्रत्येक वस्तु कुरूप और भद्दी है। अनुपलब्ध व्यक्ति के लिए वहां श्रेणियों हैं- कलम कुरूप और अधिक कुरूप। उसके लिए सौंदर्य का कोई अस्तित्व ही नहीं है। जब कभी भी तुम एक व्यक्ति से कहते हो-"तुम सुंदर हो" तो वास्तव में तुम कह रहे हो कि तुम कम कुरूप हो। जब तुम इसे पुनः कहो तो निरीक्षण करना और तब खोजना कि वास्तव में तुम्हारे कहने का क्या अर्थ है? क्या वास्तव में तुम्हारा अर्थ सुंदर होने से है? क्योंकि तुम्हारे मन के लिए यह असंभव है। तुम्हारा मन सुंदरता को देख ही नहीं सकता क्योंकि तुम उतने अधिक संवेदनशील नहीं हो। अधिक-से-अधिक तुम यह कहने की व्यवस्था कर सकते हो कि यह व्यक्ति दूसरों की अपेक्षा कम कुरूप है और कम कुरूप व्यक्ति किसी भी क्षण अधिक कुरूप बन सकता है और केवल चित्त वृत्ति बदलने के साथ ही ऐसा हो जाता है। तुम्हारा मित्र और कुछ भी नहीं है, बल्कि वह व्यक्ति तुम्हारी ओर कम शत्रुतापूर्ण है। तुम्हें उसी ढंग का होना है क्योंकि तुम्हारा मन बहुत अधिक अव्यवस्थित है, वह इतना अधिक उलझन और भ्रम में है कि प्रत्येक चीज़ एक गड़बड़झाला और धुंधली दिखाई देती है और तुम प्रत्यक्ष रूप से कुछ भी नहीं देख सकते हो। तुम्हारी आंखों पर लाखों परतें चढ़ी हुई हैं और वास्तव में यह एक चमत्कार है कि तुम कैसे देखने की व्यवस्था कर लेते हो क्योंकि तुम पूरी तरह से अंधे हो।
तुम सुन नहीं सकते, तुम देख नहीं सकते, तुम स्पर्श नहीं कर सकते, तुम सूंघ नहीं सकते। तुम जोकुछ भी करते हो, वह अशुद्ध है और उसके अंदर अनेक चीज़ें आ जाती है। तुम प्रेम करते हो और वहां उसके साथ ही लाखों चीज़ें होती हैं, तुम तुरंत ही सभी कुछ अपने अधिकार में करना शुरू कर देते हो और तुम यह कभी नहीं जानते कि स्वामित्व, घृणा का एक भाग है, वह प्रेम का भाग नहीं है। प्रेम कभी भी अधिकार नहीं जमाता। प्रेम है दूसरे को स्वतंत्रता देना। प्रेम एक बेशर्त उपहार है और वह एक सौदा नहीं है लेकिन तुम्हारे मन के लिए प्रेम और कुछ भी न होकर कम घृणा है। अधिक-से-अधिक तुम यह सोच सकते हो- "मैं इस व्यक्ति को बर्दाश्त कर सकता हूं और मैं उस व्यक्ति को बर्दाश्त नहीं कर सकता इसीलिए मैं उससे प्रेम भी नहीं कर सकता। इस व्यक्ति को मैं बर्दाश्त कर सकता" लेकिन मूल्यांकन नकारात्मक बना रहता है।
जब तुम बुद्धत्व को उपलब्ध हो जाते हो तो मूल्यांकन विधायक बन जाता है। तब प्रत्येक चीज़ सुंदर होती है, तुम्हारे अंदर का पर्वत और तुम्हारी मानसिक रुग्णता भी सुंदर होती है- यहां तक कि एक पागल व्यक्ति में भी कुछ बात सुंदर होती है। हो सकता है कि परमात्मा थोड़ा-सा भटककर पाप में चला गया हो लेकिन वह फिर भी परमात्मा है।
इसलिए एक बुद्धत्व को उपलब्ध व्यक्ति के लिए कोई भी चीज़ गलत नहीं हो सकती है। प्रत्येक चीज़ ठीक है, कम ठीक अथवा अधिक ठीक। परमात्मा और शैतान के मध्य कोई भी अंतर नहीं है, अंतर केवल कम और अधिक का है। परमात्मा और शैतान दो विपरीत धु्रव और शत्रु नहीं हैं।
हिंदुओं के पास सुंदर शब्द है। शब्दों के बारे में किसी भी अन्य देश
के पास इतनी अधिक समझ नहीं है। संस्वृफत में वास्तव में कुछ ऐसी चीज़ है जो अन्य कहीं भी मौजूद नहीं है। वे बहुत समझदार लोग हैं। अंग्रेजी शब्द कमअपस उसी मूल शब्द "देव" से आता है, देव का अर्थ है- परमात्मा। कमअपस

(शैतान) और देव (परमात्मा) समान मूल "देव" से आते हैं। देव का अर्थ है- प्रकाश। इसी देव शब्द से कमअपदम आता है और इसी "देव" शब्द से दैवा देवता और दिव्य आते हैं। कमअपस (दिव्य) और कमअपस (शैतान) संस्वृफत का मूल शब्द "देव" से ही आते हैं; यह है एक ही चीज़। तुम्हारे देखने में अंतर हो सकता है, तुम्हारा दृष्टिकोण भिन्न हो सकता है। लेकिन यह वही एक चीज़ है। एक बुद्धत्व को उपलब्ध व्यक्ति शैतान के लिए भी कहेगा: यह कितना सुंदर है? कितना दिव्य है, कितना अद्भुत है?
ऐसा हुआ: एक मुसलमान सूफी रहस्यदर्शनी स्त्री राबिया-मन-अदालिया ने अपने कुरान में कई पंक्तियां बदल दीं। जहां कहीं भी यह लिखा था-"शैतान से घृणा करो", उसने उसे काट दिया। तब एक बार एक दूसरा रहस्यदर्शी हसन जो यात्रा करते हुए राबिया के यहां ठहरा हुआ था, वह अपनी कुरान की प्रति कहीं भूल आया था और सुबह की नमाज के लिए उसे उसकी आवश्यकता पड़ी इसलिए उसने राबिया से उसकी प्रति मांगी। राबिया ने उसे वह दे दी। प्रारंभ में ही उसे देखकर थोड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि कुरान के प्रति के ऊपर बहुत अधिक धूल जमी हुई थी- जिसका अर्थ था कि प्रतिदिन उसका उपयोग नहीं किया जाता था। ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे कई महीनों से उसका उपयोग ही नहीं किया गया था- लेकिन उसने सोचा इस बारे में कोई भी बात कहना अशिष्टता होगी इसलिए उसने कुरान खोली और अपनी सुबह की नमाज पढ़ना प्रारंभ कर दी।
तब उसे और अधिक आश्चर्य हुआ, यहां तक कि एक आघात-सा लगा क्योंकि कोई भी व्यक्ति कुरान में कोई भी सुधार नहीं कर सकता था और वहां अनेक स्थानों पर सुधार किया गया था। जहां कहीं भी यह कहा गया था-"शैतान से घृणा करो" राबिया ने उस कथन को अस्वीकार करते हुए उसे काट दिया था।
वह इतना अधिक अव्यवस्थित हो गया कि वह ठीक से प्रार्थना ही न कर सका
और सोचने लगा कि क्या यह राबिया काफिर हो गई है अथवा वह नास्तिक बन गई है अथवा हुआ क्या है? ... क्योंकि एक मुसलमान के लिए यह सोचना भी असंभव है कि तुम कुरान में सुधार कर सकते हो। वह परमात्मा के शब्द हैं, उन्हें कोई भी व्यक्ति सुधार नहीं सकता। इसी कारण वे कहते हैं कि अब और अधिक पैगंबर नहीं आएंगे क्योंकि यदि एक पैगम्बर पुनः आता है और वह कुछ ऐसी बात कहता है जोकुरान में नहीं है तो उससे कठिनाई उत्पन्न होगी। इसीलिए मुहम्मद के बाद द्वार बंद कर दिए गए हैं- वह अंतिम पैगंबर है।
और वे लोग बहुत चतुर हैं। वे कहते हैं कि वहां अतीत में अन्य दूसरे पैगंबर भी हुए हैं और वह प्रथम नहीं हैं, बल्कि वह अंतिम हैं। और अब परमात्मा से और अधिक संदेश नहीं आएंगे और उसने मुहम्मद को अंतिम संदेश दे दिया है इसलिए इस स्त्री राबिया ने कैसे यह साहस किया। वह कुरान में सुधार कर रही है। वह इतना अधिक परेशान हो गया कि वह ठीक से प्रार्थना भी न कर सका। किसी तरह से उसने उसे पूरा किया और राबिया के पास गया।
राबिया एक बुद्धत्व को उपलब्ध स्त्री थी। पूरे संसार-भर में बहुत थोड़ी-सी स्त्रियां ही बुद्धत्व को उपलब्ध हुई हैं और राबिया उनमें से एक है। हसन की ओर देखते हुए उसने कहा-"ऐसा प्रतीत होता है कि तुम अपनी प्रार्थना ठीक से न कर सके। ऐसा लगता है कि कुरान पर जमी धूल ने तुम्हें परेशान कर दिया। इसीलिए तुम अभी भी धूल जैसी चीज़ों से बंधे हुए हो? और ऐसा प्रतीत होता है कि कुरान में मेरे द्वारा किए गए सुधारों से तुम्हें अनिवार्य रूप से बहुत अधिक आघात लगा है।"
हसन ने कहा-"कैसे? आप इस बात को कैसे जान सकीं?"
राबिया ने कहा-"लेकिन पहले मेरी इस कठिनाई की ओर देखिए- जिस क्षण मुझे "वह" अनुभव हुआ जिस क्षण मेरा परमात्मा से साक्षात्कार हुआ, उसके बाद प्रत्येक चहेरे में उसी चेहरे को देख सकी। कोई अन्य दूसरा चेहरा देखना संभव ही नहीं है। चाहे शैतान भी मेरे सामने आकर खड़ा हो जाता है मैं वैसा ही समान चेहरा देखती हूं। इसलिए अब मैं शैतान से घृणा कैसे कर सकती हूं क्योंकि मैंने परमात्मा के सर्वव्यापी रूप का अनुभव कर लिया है और यह मेरी समझ में आ गया है कि अब प्रत्येक चेहरा उसका ही चेहरा है। मुझे कुरान में सुधार करना पड़ा और यदि मैं कभी मुहम्मद से मिली तो मुझे स्पष्ट रूप से उनसे यह कहना होगा कि ये शब्द ठीक नहीं हैं। वे अज्ञानी लोगों के लिए ठीक

हो सकते हैं क्योंकि वे लोग विभाजित होते हैं लेकिन वे उन लोगों के लिए ठीक नहीं हैं जो जानते हैं क्योंकि वे विभाजित नहीं हो सकते।"
इसीलिए सद्गुरु कहता है:
यह पर्वत कितना अधिक सुंदर है?
उस व्यक्ति के लिए प्रत्येक चीज़ सुंदर और दिव्य है, जो जानता है।
भिक्षु ने कहा: मैं पहाड़ के बारे में न पूछकर
मार्ग के बारे में पूछ रहा हूं।
क्या तुमने कभी यह निरीक्षण किया है कि तुम स्वयं अपने बारे में, अपने पर्वत के बारे में कभी भी कोई प्रश्न नहीं पूछते और तुम हमेशा मार्ग के बारे में पूछते हो? लोग मेरे पास आते हैं और वे पूछते हैं-"हमें क्या करना होगा?" कैसे परमात्मा तक पहुंचा जाए? कैसे बुद्धत्व को उपलब्ध हुआ जाए? वे यह कभी नहीं पूछते कि कैसे हुआ जाए? वे स्वयं अपने बारे में कभी भी कोई भी बात नहीं पूछते, जैसे मानो वे लोग पूर्ण रूप से ठीक हैं और केवल मार्ग से चूक रहे हैं, जिससे कोई व्यक्ति यह बता सके-"ठीक सीधे चले जाओ और तब बाईं ओर मुड़ जाना और तुम मार्ग पर होगे।"
यह इतना अधिक सरल नहीं है। मार्ग ठीक तुम्हारे सामने ही है। तुम मार्ग से जरा भी नहीं चूक रहे हो। तुमने कभी उसे खोया नहीं है, कोई भी उसे खो नहीं सकता है लेकिन तुम उसकी ओर देख नहीं सकते क्योंकि तुम एक पर्वत हो।
यह प्रश्न मार्ग खोजने का नहीं है, यह प्रश्न है स्वयं को ही खोजने का
कि तुम कौन हो। जब तुम स्वयं को जानते हो तो मार्ग वही है और जब तुम स्वयं को नहीं जानते हो तो मार्ग वहां नहीं है।
लोग मार्ग के बारे में पूछे चले जाते हैं और इस बारे में लाखों मार्ग सुझाए गए लेकिन इस बारे में वह नहीं हो सकता है। इस बारे में केवल एक ही मार्ग है। वही समान मार्ग बुद्ध की आंखों के सामने से भी गुजरता है और वही समान मार्ग लाओत्स के सामने से भी होकर गुजरता है और वही मार्ग जीसस के सामने से भी होकर गुजरता है। यात्री लाखों हैं लेकिन मार्ग एक ही है और वह समान है। वह ताओ है, धम्म है, वह हेराकृईटस का भी प्रतीक चिह्न है और वह एक ही है।
यात्री लाखों हैं पर मार्ग केवल एक है। इस बारे में लाखों मार्ग नहीं हैं और तुम उससे विफल नहीं हो रहे हो लेकिन तुम हमेशा मार्ग के बारे में ही पूछते हो और तुम हमेशा मार्गों के जाल में में फंस जाते हो क्योंकि जब तुम और तुम जैसे मूर्ख लोग पूछते हैं तो वहां उत्तर देने के लिए और अधिक मूर्ख लोग होते हैं। यदि तुम पूछते हो और उत्तर पाने के लिए आग्रह करते हो तो, किसी व्यक्ति को तो उसकी आपूर्ति करनी ही होती है क्योंकि अर्थशास्त्र का यही नियम है। तुम मांग करते हो और वहां उसकी आपूर्ति होगी। तुम एक मूर्खतापूर्ण प्रश्न पूछते हो और एक मूर्खतापूर्ण उत्तर ही दिया जाएगा क्योंकि यह मत सोचो कि तुम ही सबसे बड़े मूर्ख हो- वहां उससे भी बड़े और बेहतर मूर्ख हैं। उनमें जो लोग छोटे होते हैं वे शिष्य बन जाते हैं और जो उनसे अधिक बेहतर होते हैं वे सद्गुरु बन जाते हैं। तुम पूछते हो और वे उत्तर देकर उसकी मांग पूरी करते हैं।
और तब इस बारे में लाखों मार्ग हैं और वे हमेशा एक संघर्ष में हैं। एक मुसलमान कह रहा है: तुम उस मार्ग के द्वारा नहीं पहुंच सकते क्योंकि वह कहीं भी नहीं ले जाता है और एक अंधी और बंद गली तक ही जाता है। तुम हमारे ही मार्ग पर आओ और यदि तुम हमारी बात नहीं सुनते हो तो हम तुम्हारी हत्या कर देंगे। ईसाई लोग भी फुसला रहे हैं: तुम हमारे मार्ग पर आओ। वे लोग मुसलमानों की अपेक्षा कहीं अधिक चतुर और चालाक हैं। वे वास्तव में किसी की हत्या नहीं करते, वे लोग फुसलाते हैं, वे लोग तुम्हें भोजन देने की, दवा और अस्पताल उपलब्ध कराने की रिश्वत देते हैं और वे कहते हैं: तुम कहां जा रहे हो? तुम हमारे मार्ग पर आओ। वे लोग व्यापारी हैं और वे जानते हैं कि कैसे रिश्वत देकर लोगों को लुभाया जाता है और उन्होंने केवल उनको वस्तुएं देने के द्वारा ही लाखों लोगों का धर्मांतरण कर लिया। वहां हिंदू हैं, वे कहे चले जाते हैं: पूर्ण सत्य तो हमारे ही अधिकार में है और स्मरण रहे कि वे इतने अधिक अहंकारी हैं कि वे किसी भी व्यक्ति का धर्मांतरण तक कराने की

फिक्र नहीं करते और कहते हैं-"तुम लोग मूर्ख हो, तुम्हारा धर्मांतरण करने की कोई आवश्यकता नहीं है।" वे लोग इतने अधिक अहंकारी हैं कि वे सोचते हैं: हम लोग मार्ग को जानते हैं। यदि तुम चाहते हो तो तुम आ सकते हो। हम लोग तुम्हें रिश्वत देने अथवा तुम्हें मारने नहीं जा रहे हैं- तुम इतने अधिक महत्वपूर्ण नहीं हों यदि तुम चाहते हो तो तुम आ सकते हो लेकिन हम लोग कोई भी प्रयास करने नहीं जा रहे हैं।
तब संसार में वहां तीन सौ धर्म हैं और प्रत्येक धर्म का सोचना है: केवल यही वह मार्ग है, अकेला मार्ग और अन्य दूसरे मार्ग झूठे हैं।
लेकिन प्रश्न यह नहीं है, प्रश्न मार्ग का है ही नहीं कि कौन-सा मार्ग सत्य है? प्रश्न तो यह है कि क्या तुमने पर्वत को पार कर लिया है? प्रश्न है: क्या तुम स्वयं को पार चले गए हो? प्रश्न है: क्या तुम एक निरीक्षणकर्ता की भांति दूरी से स्वयं को देख सकते हो? तब ही एक मार्ग है। मुहम्मद और महावीर, वृफष्ण और क्राइस्ट- वे सभी समान मार्ग पर चले। मुहम्मद, महावीर से भिन्न हैं; वृफष्ण, क्राइस्ट से भिन्न हैं लेकिन वे एक ही मार्ग पर गतिशील हुए क्योंकि मार्ग अनेक नहीं हो सकते: अनेक मार्ग कैसे एक लक्ष्य का दर्शन करा सकते हैं? केवल एक मार्ग ही तुम्हें एक मंजिल तक ले जा सकता है।
इसलिए मार्ग के बारे में मत पूछो और न कार्यविधि अथवा पद्धति के बारे में पूछो। दवा के बारे में मत पूछो। पहले बीमारी के बारे में पूछो, जो तुम हो। पहले एक गहन निदान की आवश्यकता है और तुम्हारे लिए कोई भी व्यक्ति उसका निदान नहीं कर सकता है। तुमने ही उसे सृजित किया है और केवल सृष्टा ही उसके कोने-कोने को जानता है। तुमने ही उसे उत्पन्न किया है इसलिए केवल तुम ही जानते हो कि यह जटिलताएं कैसे उत्पन्न हुईं और केवल तुम ही उन्हें हल कर सकते हो।
एक प्रामाणिक सद्गुरु सामान्य रूप से तुम्हें स्वयं तक आने में तुम्हारी सहायता करता है। एक बार तुम वहां होते हो तो मार्ग खुल जाता है। मार्ग दिया नहीं जा सकता लेकिन तुम्हें स्वयं पर पेंफका जा सकता है और तब वास्तविक परिवर्तन घटित होता है: न तो एक हिंदू एक ईसाई बन रहा है और न एक ईसाई एक हिंदू बन रहा है बल्कि एक बाहर की ओर गतिशील होती हुई ऊर्जा, अंतरस्थ की ओर गतिशील होती हुई ऊर्जा बनती है- और यही धर्मांतरण है। तुम्हारी दृष्टि अंतरस्थ की ओर हो जाती हैं पूरा ध्यान अंतरस्थ की ओर गतिशील हो जाता है और तुम पूरी जटिलता को और पर्वत को देख सकते हो। यदि तुम पूरी तरह से उसका निरीक्षण करते हो तो वह पिघलने और मिटने लगता है। प्रारंभ में तो वह एक पर्वत जैसा दिखाई देता है पर अंत में तुम अनुभव करोगे कि वह केवल एक तिल का पहाड़ बनाना था लेकिन तुमने कभी उसकी ओर देखा ही नहीं था क्योंकि वह तुम्हारे पीछे था और वह इतना अधिक बड़ा हो गया था। जब तुम उसका सामना करते हो वह तुरंत ही कम होने लगता है, तुम जानते हो कि तुमने एक तिल का पहाड़ बना लिया था और तुम उस बारे में हंस सकते हो। तब यह और अधिक एक भार नहीं रह जाता। तुम आनंद भी मना सकते हो और कभी-कभी तुम उसके अंदर प्रातःकाल घूमने के लिए जा सकते हो।

और फूलों की बरसात हुई
पांचवां प्रवचन

क्या वह मर गया है?

मठ के एक ध्यानी की मृत्यु होने पर
सद्गुरु डोगो अपने शिष्य ज़ेनगेन के साथ
मृत व्यक्ति के परिवार से मिलने गया। सहानुभूति और संवेदना का एक शब्द
भी अभिव्यक्त करने का समय लिए बिना,
ज़ेनगेन ताबूत तक गया और उसे ठकठकाते हुए उसने सद्गुरु डोगो से पूछा:
"क्या वह वास्तव में मर गया है?"
डोगो ने कहा-"मैं वुफछ भी नहीं कहूंगा।"
ज़ेनगेन ने हठ करते हुए कहा-"यह तो ठीक है, पर...
डोगो ने कहा-"मैं वुफछ भी नहीं कह रहा हूं
और यही अंतिम (शब्द) है।"
मठ की ओर वापस लौटते हुए रास्ते में ही
क्रोधित ज़ेनगेन, डोगो की ओर मुड़ा और उसे धमकी देते हुए कहा-"परमात्मा
की शपथ;
यदि आप मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं देते हैं तो मैं आपको पीटूंगा।
डोगो ने कहा-"ठीक है, फिर आगे बढ़ो
अपनी शपथ के प्रति प्रतिबद्ध, ज़ेनगेन ने अपने सद्गुरु के गाल पर ज़ोरदार तमाचा मारा।
वुफछ समय बाद डोगो मर गया और ज़ेनगेन अभी भी अपने प्रश्न का उत्तर पाने
की इच्छा लिए हुए, सद्गुरु सेकीसो के पास गया और जो वुफछ भी हुआ था उसके सबंध में बताने के बाद, उसने फिर उसी प्रश्न को पूछा। सेकीसो ने कोई भी उत्तर नहीं दिया, जैसे मानो मृत डोगो के साथ उसकी वुफछ सांठगांठ रही हो। ज़ेनगेन चीखता हुआ बोला-"बाई गॉड! तो आप भी... ?"
सेकीसो ने कहा-"मैं वुफछ भी नहीं कर रहा हूं
और यही बात अंतिम है।"
तुरंत उसी वास्तविक क्षण में
ज़ेनगेन को जागरण का अनुभव हुआ।

जीवन को जाना जा सकता है और मृत्यु को भी, लेकिन उनके बारे में वुफछ भी कहा नहीं जा सकता। कोई भी उत्तर सत्य न होगा, व्यक्तियों और वस्तुओं के वास्तविक स्वभाव के अनुसार वह हो भी नहीं सकता। जीवन और मृत्यु गहनतम रहस्य हैं। यह कहना अधिक अच्छा होगा कि वे दो रहस्य नहीं हैं बल्कि समान रहस्य के दो पहलू हैं, एक ही गुप्त स्थान के दो द्वार हैं। लेकिन उनके बारे में वुफछ भी नहीं कहा जा सकता है। जो वुफछ भी तुम कहते हो, तुम लक्ष्य से चूक जाओगे।
जीवन को जिया जा सकता है, मृत्ये में भी रहा जा सकता है। वे दो अनुभव हैं- किसी एक को उनसे होकर गुजरना होगा और उन्हें जानना होगा। कोई भी व्यक्ति तुम्हारे प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता। जीवन का अथवा मृत्यु का उत्तर कैसे दिया जा सकता है? जब तक तुम जीते नहीं, जब तक तुम मरते नहीं, उत्तर देने कौन जा रहा है?
लेकिन अनेक उत्तर दिए गए हैं और स्मरण रहे सभी उत्तर मिथ्या हैं। वहां चुनने के लिए वुफछ भी नहीं है। ऐसा नहीं है कि एक उत्तर ठीक है और दूसरे उत्तर गलत हैं। सभी उत्तर गलत हैं। वहां चुनने को वुफछ भी नहीं है। उत्तर नहीं, अनुभव ही उत्तर दे सकता है।
इसलिए स्मरण बने रहने की पहली बात यह है कि जब तुम एक वास्तविक रहस्य
के निकट होते हो तो वह मनुष्य के द्वारा सृजित एक पहेली नहीं है। यदि वह मनुष्य द्वारा सृजित एक पहेली है तो उसका उत्तर दिया जा सकता है क्योंकि तब वह एक खेल है, एक बुद्धि का खेल है- तुम ही प्रश्न सृजित करते हो और तुम

ही उत्तर सृजित करते हो। लेकिन यदि तुम किसी ऐसी चीज़ का सामना कर रहे हो जो तुमने सृजित नहीं की है तो तुम कैसे उसका उत्तर दे सकते हो, मनुष्य की बुद्धि अथवा मन कैसे उसका उत्तर दे सकती है? मनुष्य की बुद्धि के लिए वह अगम्य। खंड, पूर्ण को नहीं समझ सकता। पूर्ण को पूर्ण बनकर ही समझा जा सकता है। तुम उसके अंदर कूद सकते हो और उसमें खो सकते हो और तब वहां उत्तर होगा। मैं तुम्हें एक प्रसंग के बारे में बताउंफगा, जिसे रामवृफष्ण बहुत प्रेम से सुनाते थे। वह कहा करते थे: एक बार ऐसा हुआ कि वहां समुद्र के निकट उसके तट पर एक महान उत्सव हो रहा था। वहां हजारों लोग एकत्रित हुए थे और अचानक वे सभी एक प्रश्न में तल्लीन हो गए- क्या सागर की गहराई मापी जा सकती है। अथवा वह अमाप है, क्या वहां उसका कोई तल है अथवा नहीं है, क्या उसकी थाह ली जा सकती है अथवा वह अथाह है? संयोग से एक मनुष्य जो पूर्ण रूप से नमक से बना हुआ था, वहां मौजूद था। उसने कहा-"आप लोग चर्चा करते हुए प्रतीक्षा कीजिए और मैं समुद्र के अंदर जाउंफगा और उसकी खोज करूंगा क्योंकि कोई एक उसे कैसे जान सकता है, जब तक कि कोई एक उसके अंदर नहीं जाता है।"
इसलिए नमक का बना हुआ मनुष्य सागर में कूद पड़ा। घंटों गुजर गए, दिन गुजर गए और तब महीनों गुजर गए और लोगों ने अपने-अपने घर जाना शुरू कर दिया। उन लोगों ने एक लंबी अवधि तक उसकी पर्याप्त प्रतीक्षा की और नमक का मनुष्य वापस नहीं लौट रहा था।
नमक के मनुष्य ने जिस क्षण सागर में प्रवेश किया, वह पिघलना शुरू हो गया और जिस समय वह उसके तल तक पहुंचा, वह वहां था ही नहीं। वह उसे जान पाया लेकिन वह वापस न लौट सका। और वे लोग जिन्होंने नहीं जाना था वे लोग एक लंबे समय तक चर्चा करते रहे। वे लोग हो सकता है किसी निष्कर्ष तक पहुंचे हों क्योंकि बुद्धि निष्कर्ष तक पहुंचने से प्रेम करती है।
एक बार वह एक निष्कर्ष पर पहुंच जाता है, बुद्धि को चैन मिल जाता है, इसलिए इतने अधिक दार्शनिक विद्यमान हैं। सभी दार्शनिक एक ही आवश्यकता को पूरा करने के लिए मौजूद हैं: बुद्धि पूछती है और बुद्धि प्रश्न के साथ नहीं रह सकती, प्रश्न के साथ बने रहने में बेचैन और असुविधा का अनुभव होता है। एक उत्तर की आवश्यकता है- चाहे वह झूठा ही क्यों न हो, उससे काम चलेगा और बुद्धि को आराम मिल जाता है।
जाना और सागर में एक छलांग लगा जाना खतरनाक है। स्मरण रहे- रामवृफष्ण सत्य कहते हैं: जहां तक सागर का संबंध है हम सभी मनुष्य नमक के ही पुतले हैं क्योंकि यह सागर जीवन और मृत्यु का है। हम सभी लोग नमक के पुतले हैं, हम उसके अंदर पिघल जाएंगे क्योंकि हम उसी से आए हैं। हम सभी उसके द्वारा उससे ही बने हुए हैं। हम पिघल जाएंगे।
इसलिए मन हमेशा सागर के अंदर जाने से भयभीत है, वह नमक से ही बना हुआ है, उसका घुल जाना सुनिश्चित है। वह भयभीत है इसलिए वह ऊपर ही बना रहता है, अनेक बातों की चर्चा-परिचर्चा, वाद-विवाद और तर्क-वितर्क करता हुआ सिद्धांत गढ़ता रहता है। वे सभी मिथ्या होते हैं क्योंकि वे भय पर आधारित हैं। एक साहसी मनुष्य ही छलांग लगाएगा और वह किसी भी ऐसे उत्तर को स्वीकार करने से प्रतिरोध करेगा जो स्वयं उसके द्वारा न जानी गई हो।
हम कायर हैं और इसी वजह से हम किसी भी व्यक्ति के उत्तर को स्वीकार कर लेते हैं। उनके उत्तर हमारे उत्तर नहीं हो सकते। किसी भी अन्य व्यक्ति का ज्ञान तुम्हारा नहीं हो सकता-उन्होंने जाना हो सकता है लेकिन उनका ज्ञान तुम्हारे लिए केवल एक सूचना है। तुम्हें ही जानना होगा। केवल जब वह तुम्हारा अपना होता है, वह ज्ञान होता है अन्यथा वह तुम्हें पंख नहीं देगा। इसके विपरीत, वह तुम्हारी गर्दन पर पत्थरों के समान लटका रहेगा और तुम उसके एक गुलाम बन जाओगे। तुम मुक्ति को उपलब्ध नहीं होगे और तुम उसके द्वारा स्वतंत्र नहीं होगे।
जीसस कहते हैं-"सत्य मुक्त करता है।" क्या तुमने किसी व्यक्ति को सिद्धांतों के द्वारा मुक्त होते हुए देखा है? अनुभव मुक्त करता है, हां, लेकिन प्रत्येक अनुभव के बारे में सिद्धांत, नहीं, वे कभी मुक्त नहीं करते। लेकिन मन छलांग लगाने से डरता है क्योंकि मन भी उसी समान सामग्री से

बना हुआ है जिससे कि पूरा विश्व; इसलिए यदि तुम छलांग लगाते हो तो तुम खो जाओगे। तुम जान तो पाओगे लेकिन तुम केवल तभी जानोगे जब तुम नहीं होते हो। नमक के पुतले ने जाना। उसने वास्तविक तल का स्पर्श किया। वह प्रामाणिक केंद्र पर पहुंच गया, लेकिन वह वापस न लौट सका। यदि वह लौटकर आ भी सकता तो वह कैसे सभी से संबंध जोड़ता... ? यदि वह आता भी है तो उसकी भाषा केंद्र और गहराई की होगी और तुम्हारी भाषा सागरतट और परिधि की है।
इस बारे में किसी भी संवाद की कोई संभावना नहीं है। वह कोई भी अर्थपूर्ण बात नहीं कह सकता, वह केवल अर्थपूर्ण और गौरवपूर्ण ढंग केवल मौन ही बना रह सकता है। यदि वह वुफछ कहता है तो वह स्वयं ही अपराधी होने का अनुभव करेगा क्योंकि वह तुरंत ही यह जान लेगा कि वह जो वुफछ भी जानता है उसे शब्दों के द्वारा स्थानांतरित नहीं किया जा सकता और उसका अनुभव पीछे छूट जाता है। तुम तक केवल शब्द ही पहुंचेंगे जो मृत, बासी और खाली होंगे। शब्दों से सूचना भेजी जा सकती है लेकिन सत्य नहीं। उससे केवल संकेत दिए जा सकते हैं।
नमक का मनुष्य तुमसे कह सकता है-"तुम भी आ जाओ, वह तुम्हें निमंत्रण दे सकता है कि मेरे साथ तुम भी सागर में छलांग लगाओ।"
लेकिन तुम बहुत चालाक हो। तुम कहोगे, पहले मेरे प्रश्न का उत्तर दो अन्यथा मैं कैसे जान सकता हूं कि तुम ठीक हो? पहले मुझे विचार करने दो, सोचने दो और चिंतन करने दो तब मैं अनुसरण करूंगा। जब मेरा मन आश्वस्त और कायल हो जाता है, तभी मैं छलाग लगाउंफगा।"
लेकिन मन कभी भी कायल नहीं होता, वह कायल हो भी नहीं सकता हैं मन और वुफछ भी नहीं है बल्कि वह संदेह करने की प्रक्रिया है। वह कभी भी कायल नहीं हो सकता, वह अनंत समय तक तर्क-वितर्क किए चले जा सकता है क्योंकि तुम जो वुफछ भी कहते हो वह उसके चारों ओर एक दलील उत्पन्न कर सकता है।
मैं एक बार मुल्ला नसरुद्दीन के साथ यात्रा कर रहा था। एक स्टेशन पर गाड़ी रुकने पर एक नया व्यक्ति डिब्बे में आया और हो सकता है कि नसरुद्दीन को वह जानता हो। उसने कहा- "हलो।" दोनों ने ही एक-दूसरे का अभिवादन किया और तब उसने पूछा-"नसरुद्दीन! तुम्हारे कैसे हाल-चाल हैं?" नसरुद्दीन ने कहा-"बढ़िया! पूरी तरह से ठीक-ठाक"
तब उस व्यक्ति ने पूछा-"और तुम्हारी पत्नी के कैसे हाल-चाल हैं? नसरुद्दीन ने कहा-"वह भी मजे से है। धन्यवाद।"
- "और तुम्हारे बच्चे कैसे हैं?"
नसरुद्दीन ने कहा-"वे सभी अच्छी तरह से हैं। धन्यवाद।"
मुझे आश्चर्य हुआ। जब वह व्यक्ति अगले स्टेशन पर उतर गया तो मैंने नसरुद्दीन से पूछा-"आखिर यह मामला क्या है? क्योंकि मैं भलीभांति जानता हूं कि तुम्हारे पास न तो कोई पत्नी है और न बच्चे हैं।"
नसरुद्दीन ने कहा-"यह मैं भी जानता हूं लेकिन विवाद क्यों उत्पन्न किया जाए?"
कई बार बुद्धों ने केवल विवाद उत्पन्न न हो इसलिए अपने सिर नीचे झुका दिए हैं। कोई भी विवाद उत्पन्न न हो इसीलिए वे मौन बने रहे। उन्होंने अधिक नहीं कहा लेकिन उन्होंने जो वुफछ भी कहा उसके ही चारों ओर पर्याप्त तर्ग और विवाद उत्पन्न हो गए। तुम उसी तरह के हो। तुम सिद्धांत बुनोगे और तत्वज्ञान काटोगे और तुम उसमें इतने अधिक तल्लीन हो जाओगे कि तुम यह पूरी तरह भूल जाओगे कि सागर तुम्हारे बहुत निकट है। तुम पूरी तरह से भूल जाओगे कि सागर भी अस्तित्व में है।
दार्शनिक पूरी तरह से भूल जाते हैं कि जीवन क्या है। वे विचार और विचार और विचार किए चले जाते हैं और भटककर दूर निकल जाते हैं, क्योंकि सत्य से मन एक दूरी पर रहता है। तुम जितने अधिक मन के अंदर होते हो, सत्य से तुम उतनी ही अधिक दूर होते हो और तुम मन से जितने कम होते हो, तुम सत्य के उतने ही निकट होते हो। यदि एक क्षण के लिए वहां मन नहीं है तब तुमने छलांग लगा ली है और तब तुम सागर के साथ एक हो गए हो।
इसलिए पहली बात तो यह है कि जिसका स्मरण रखना है कि यदि वह प्रश्न तुम्हारे द्वारा उत्पन्न किया गया है और वह विश्व के अस्तित्वगत रहस्य से संबंधित नहीं है, तब उसका उत्तर दिया जा सकता है। वास्तव में केवल गणतीय

प्रश्नों का उत्तर दिया जा सकता है। यही कारण है कि गणित एक ऐसा स्पष्ट विज्ञान है क्योंकि पूरा विषय मनुष्य द्वारा सृजित किया गया है। ब्रह्मांड में गणित का कोई भी अस्तित्व नहीं है, इसलिए गणित विशुद्धतम विज्ञान है तुम उसके बारे में निश्चित हो सकते हो क्योंकि तुमने ही पूरे खेल का सृजन किया है।
वहां वृक्ष हैं, लेकिन एक, दो, तीन अथवा चार वृक्ष ही नहीं हैं वहां संख्याओं का अस्तित्व ही नहीं हैं तुम संख्याएं सृजित करते हो, तुम उसका वास्तविक आधार सृजित करते हो और तब तुम पूछते हो-"कितने हुए? यदि दो में दो जोड़े जाते हैं तो परिणाम क्या होता है, नतीजा क्या निकलता है?" तुम उत्तर दे सकते हो- "चार" और वह उत्तर सत्य होगा, क्योंकि वह पूरा खेल तुमने ही बनाया है, तुमने ही सारे नियम बनाए हैं: दो और दो जुड़ने पर चार ही होते हैं। लेकिन अस्तित्व में यह सत्य नहीं है क्योंकि अस्तित्व में गणित विद्यमान ही नहीं है- यह गणित का पूरा कार्य-व्यापार मनुष्य के द्वारा निर्मित है। इसलिए तुम आगे बढ़ने जाते हो और तुम जितनी अधिक गणित और जितनी अधिक अंकगणित चाहो, उतनी अधिक सृजित कर सकते हो।
एक बार लोगों ने सोचा था कि वहां केवल एक ही गणित है, पर अब वे जानते हैं कि वहां अनेक हो सकते हैं क्योंकि मनुष्य उनका सृजन कर सकता है। एक बार लोग जानते थे कि वहां केवल एक ही ज्योमित अथवा यूक्लिड की ज्योमित है। अब वे जानते हैं कि तुम जितनी ज्योतितियां चाहो, उनका सृजन कर सकते हो। इसलिए अब वहां यूक्लीडियन ज्योमित और दूसरी ज्योमित भी है जो यूकिलड की नहीं है।
अनेक गणितों में संख्याओं के साथ खेल खेला गया हैं लाइबिनीज ने तीन अंकों के साथ कार्य किया: एक, दो और तीन। लाइबिनीज की गणित में दो धन दो (2 धन 2) चार नहीं होते क्योंकि चार का अंक अस्तित्व में है ही नहीं और वहां केवल एक, दो और तीन, केवल तीन अंक ही विद्यमान हैं। इसलिए लाइबिनीज के गणित में दो धन दो, दस हो हैं क्योंकि तीन के बाद दस आता है और चार का अस्तित्व ही नहीं है। आइंसटीन ने केवल दोअंकों के साथ कार्य किया: एक और दो, इसलिए आइंसटीन की गणित में दो धन दो ग्यारह होंगे और वे सभी लोग ठीक हैं, क्योंकि पूरा खेल मनुष्य के द्वारा निर्मित है। अब यह सभी वुफछ तुम पर निर्भर करता है।
इस बारे में नौ अथवा दस अंकों में विश्वास करना कोई आंतरिक आवश्यकता नहीं है, सिवाय इसके कि चूंकि मनुष्य के पास दस उंगलियां होती हैं, इसलिए लोगों ने उंगलियों पर गिनना शुरू कर दिया। इसी कारण पूरे विश्व-भर में दस मौलिक इकाई बनीं, अन्यथा वहां उसकी कोई भी आवश्यकता नहीं है।
गणित एक विचारों की उपज अथवा परिणम है: तुम एक प्रश्न पूछ सकते हो और तुम्हें एक ठीक उत्तर दिया जा सकता है लेकिन सिवाय गणित के प्रत्येक चीज़ रहस्यमय ढंग से गतिशील होती है। यदि वह जीवन से संबंधित है तो कोई भी उत्तर नहीं दिया जा सकता। तुम जो वुफछ भी कहोगे वह विनाशकारी होगा क्योंकि पूर्ण को कहा नहीं जा सकता। शब्द इतने अधिक सुरंग की तरह तंग हैं कि तुम आकाश को उनमें जाने के लिए बलात विवश नहीं कर सकते और यह असंभव है। दूसरी बात जो स्मरण रखने की है: जब तुम एक सद्गुरु से कोई बात पूछते
हो तो एक सद्गुरु- एक दार्शनिक अथवा एक विचारक नहीं होता, वह उसे जानता है, वह एक दृष्टा होता है, इसलिए जब तुम एक सद्गुरु से कोई बात पूछो तो उसके उत्तर के लिए न तो आशा या अपेक्षा करो और न उसकी प्रतीक्षा करो क्योंकि वह उत्तर ही है। जब तुम उससे कोई प्रश्न पूछते हो तो उत्तर की ओर सतर्क और सावधान न होकर सद्गुरु की ओर सावधानी से देखो क्योंकि वह ही उत्तर है। वह कोई उत्तर देने नहीं जा रहा है और उसकी उपस्थिति ही उत्तर है। लेकिन इस बारे में हम चूक जाते हैं।
तुम जाते हो और एक प्रश्न पूछते हो तो तुम्हारा पूरा मन अपने प्रश्न
और उसकी प्रतीक्षा में आने वाले उत्तर के प्रति सावधान और सतर्क रहता है लेकिन सद्गुरु और उसका पूरा अस्तित्व तथा उसकी उपस्थिति ही उत्तर है। यदि तुम उसकी ओर देखो, यदि तुम उसका निरीक्षण करो, यदि तुम उसका मौन, उस क्षण में जिस तरह से वह तुम्हारी ओर देखता है, जिस तरह से वह चलता है, जिस तरह से वह व्यवहार करता है और जिस तरह से या तो मौन बना रहता है अथवा बातचीत करता

है तो तुम उसके इशारे को प्राप्त कर लोगे। सद्गुरु स्वयं ही एक उत्तर है क्योंकि वह एक संकेत में दृष्टिगोचर होता है। सद्गुरु तुम्हें सत्य को दिग्दर्शित कर सकता है लेकिन उसे कह नहीं सकता। और तुम्हारा मन हमेशा उत्तर के साथ आवेशित बना रहता है: कि वह क्या कहने जा रहा है?
यदि तुम एक सद्गुरु के पास जाते हो तो उसकी उपस्थिति की ओर ध्यानपूर्ण बनना सीखो, बहुत अधिक बुद्धि की ओर उन्मुख मत रहो और न उत्तर पाने का आग्रह करो क्योंकि प्रत्येक उत्तर केवल तभी दिया जा सकता है जब समय प्रभावी होता है। आग्रह मत करो क्योंकि यह प्रश्न तुम्हारे हठ का नहीं है, ठीक और उचित चीज़ केवल तभी दी जा सकती है जब तुम परिपक्व होकर तैयार होते हो। इसलिए जब तुम एक सद्गुरु के निकट होते हो तो एक प्रश्न पूछ सकते हो- लेकिन तब प्रतीक्षा करना। तुमने पूछा है, तब वह जानता है। यदि तुमने नहीं पूछा है तो भी वह जानता है कि तुम्हारे अंदर ऐसा क्या है जो कठिनाई खड़ा कर रहा है। लेकिन ठीक अभी वह तुम्हें वुफछ भी नहीं दे सकता है, तुम तैयार नहीं हो सकते हो और यदि तुम तैयार नहीं हो तथा तुम्हें वुफछ चीज़ दी जाती है तो वह तुम तक नहीं पहुंचेगी क्योंकि केवल एक विशिष्ट तत्परता में ही विशिष्ट चीज़ें तुम्हारे अंदर प्रवेश कर सकती हैं। जब तुम परिपक्व हो जाते हो तो तुम समझ सकते हो। जब तुम तैयार होते हो तुम खुले हुए और ग्राह्यशील होते हो तो उत्तर दिया जाएगा, लेकिन शब्दों में नहीं और सद्गुरु उसे अनेक तरीकों से प्रकट करेगा। वह ऐसा कर सकता है। उसका संकेत देने के लिए वह अनेक विधियां या उपाय दे सकता है लेकिन तब तुम्हें उनके लिए तैयार होना होगा।
केवल क्योंकि तुमने प्रश्न पूछा है, इसका यह अर्थ नहीं है कि तुम क्या हो। तुम एक प्रश्न पूछ सकते हो, बच्चे भी ऐसे रहस्यमय प्रश्न खड़े कर देते हैं कि एक बुद्ध भी उनका उत्तर देने में असमर्थ होगा। लेकिन क्योंकि ठीक अभी तुमने प्रश्न पूछा है क्योंकि तुम एक प्रश्न को बनाकर काफी स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकते हो पर इसका यह अर्थ नहीं है कि तुम तैयार हो क्योंकि प्रश्न अनेकानेक स्रोतों से आते हैं। कभी-कभी तुम सामान्य रूप से उत्सुक होते हो। एक सद्गुरु वहां तुम्हारी उत्सुकताओं का पूरा करने के लिए नहीं होता है, क्योंकि उनमें बचपना होता है। कभी-कभी वास्तव में तुम्हारा वह अर्थ कभी नहीं होता। केवल यों ही तुम पूछ लेते हो, तुम दिखलाते हो कि तुम्हारी उसमें कोई भी दिलचस्पी नहीं थी और तुम किसी भी तरह से उस उत्तर का उपयोग करने नहीं जा रहे हो। कोई व्यक्ति मर गया है और तुम सामान्य रूप से प्रश्न पूछते हो-"मृत्यु क्या होती है?" और अगले ही क्षण तुम उसे भूल जाते हो।
उत्सुकता एक चीज़ है। यह एक बचकानापन है और कोई भी सद्गुरु तुम्हारी उत्सुकताओं पर अपने जीवन को व्यर्थ नष्ट करने नहीं जा रहा है। जब तुम एक विशिष्ट बात पूछते हो तो वह केवल बुद्धिगत अथवा दार्शनिक हो सकती हैं; तुम्हारी उसमें दिलचस्पी है लेकिन बुद्धिगत- तुम अपनी अधिक जानकारी बढ़ाने के लिए उसका उत्तर चाहते हो, लेकिन तुम्हारी आत्मा उससे अप्रभावित बनी रहेगी। तब एक सद्गुरु की उसमें कोई भी अभिरुचि नहीं होती है क्योंकि उसकी अभिरुचि केवल तुम्हारी आत्मा में हैं जब तुम एक प्रश्न इस तरह का पूछते हो जैसे मानो तुम्हारा जीवन और मरण उस पर ही निर्भर हो, यदि तुम उसका उत्तर नहीं पाते हो तो तुम जैसे विफल हो जाओगे, तुम्हारा अस्तित्व उसके लिए क्षुदित बना रहेगा जैसे तुम प्यासे हो और तुम्हारा पूरा अस्तित्व उसे प्राप्त करने को तैयार है और यदि उत्तर दिया जाता है तो तुम उसे पचा लोगे और वह तुम्हारी अस्थियां और रक्त बन जाएगा और वह तुम्हारे हृदय की वास्तविक धड़कन में गतिशील होगा, केवल तभी एक सद्गुरु तुम्हें उत्तर देने को तैयार होगा।
तुम एक प्रश्न पूछते हो... तब सद्गुरु तुम्हें उत्तर को प्राप्त करने
के लिए तैयार बनाने में तुम्हारी सहायता करने का प्रयास करेगा। तुम्हारे प्रश्न और सद्गुरु के उत्तर के मध्य वहां एक बड़ा अंतराल हो सकता है। तुम प्रश्न आज पूछते हो और हो सकता है कि वह उसका उत्तर बारह वर्षों बाद दें क्योंकि तुम्हें उसे प्राप्त करने के लिए तैयार होना होगा। तुम्हें बंद न

बने रहकर अपने हृदय के द्वार को खोलना होगा और तुम्हें उसे अपने अस्तित्व की प्रामाणिक गहराई तक अवशोषित करने के लिए तैयार होना होगा।
अब इस बोध-कथा को समझने का प्रयास करो।
मठ के एक ध्यानी की मृत्य होने पर
सद्गुरु डोगो अपने शिष्य ज़ेनगेन के साथ
मृत व्यक्ति के परिवार से मिलने गया।
सहानुभूति और संवेदना का एक शब्द भी
अभिव्यक्त करने का समय लिए बिना ही,
ज़ेनगेन ताबूत तक गया और उसे ठकठकाते हुए
उसने सद्गुरु डोगो से पूछा:
"क्या वह वास्तव में मर गया है?"
पहली बात: जहां मृत्यु हुई हो, वहां तुम्हें बहुत सम्मानपूर्ण होना है, क्योंकि मृत्यु कोई सामान्य घटना नहीं है, वह संसार में सबसे अधिक असाधारण घटना है। मृत्यु की अपेक्षा वुफछ और अधिक रहस्यमय नहीं है। मृत्यु अस्तित्व के वास्तविक केंद्र तक पहुंचती है और जब एक व्यक्ति मर गया है तो तुम एक पावन भूमि पर जा रहे होऔर जितना भी संभव हो सकता है वह क्षण उतना ही अधिक धार्मिक हो। नहीं, किसी को भी सामान्य उत्सुकताओं को प्रकट करने की अनुमति नहीं दी जा सकती। वे असम्मानजनक हैं।
विशेष रूप से पूरब में, मृत्यु जीवन की अपेक्षा कहीं अधिक सम्मानपूर्ण है और इस निष्कर्ष तक पहुंचने में पूरब ने बहुत लंबी अवधि तक जीवन को जीआ है। पश्चिम में मृत्यु की अपेक्षा जीवन कहीं अधिक सम्मानित है इसीलिए वहां इतना अधिक तनाव, इतनी अधिक चिंता, इतनी अधिक वेदना और इतना अधिक पागलपन है। क्यों? यदि तुम जीवन को अधिक सम्मान देते हो तो तुम मृत्यु से भयभीत रहोगे, तब मृत्यु एक विरोधी शत्रु की भांति दिखाई देगी और यदि मृत्यु एक शत्रु है तो तुम अपने पूरे जीवन-भर तनावग्रस्त रहोगे क्योंकि मृत्यु किसी भी क्षण घटित हो सकती है। तुम उसे स्वीकार न कर अस्वीकार करते हो लेकिन तुम उसे मिटा नहीं सकते। मृत्यु को नष्ट नहीं किया जा सकता। तुम उसे अस्वीकार कर सकते हो, तुम उससे इंकार कर सकते हो, तुम उससे भयभीत हो सकते हो, लेकिन वह वहां है, ठीक कोने में ही छिपी है और तुम्हारे साथ हमेशा एक छाया के समान रहती है। तुम उससे पूरे जीवन-भर कांपते रहोगे और तुम अभी भी कांप रहे हो। और भय में, सभी तरह के भयों में यदि गहनता से खोज की जाए तो तुम मृत्यु का ही भय पाओगे।
जब कभी भी तुम भयभीत होते हो तो जैसे किसी चीज़ ने तुम्हें मृत्यु का
एक संकेत दिया है। यदि तुम्हारा बैंक दिवालिया हो जाता है और तुम भय से भरकर कांपते हुए व्यग्र हो जाते हो- वह भी मृत्यु के बारे में ही होने वाली व्यग्रता है क्योंकि तुम्हारी बैंक में जमा धनराशि और वुफछ भी न होकर मृत्यु के विरुद्ध एक सुरक्षा थी। अब तुम अधिक खुले हुए असुरक्षित हो और तुम्हें सरलता से आघात पहुंचाया जा सकता है। अब यदि मृत्यु तुम्हारा द्वार खटखटाती है तो कौन तुम्हारी सुरक्षा करेगा। यदि तुम रुग्ण हो जाते हो, यदि तुम वृद्ध हो जाते हो तो कौन तुम्हारी देखभाल करने जा रहा है? गारंटी तो वहां बैंक में थी और बैंक दिवालिया हो गया है।
तुम पद, प्रतिष्ठा और सत्ता से चिपके हुए हो क्योंकि जब तुम्हारे पास
एक पद और एक अच्छी स्थिति होती है तो तुम इतने अधिक महत्वपूर्ण होते हो कि लोगों के द्वारा तुम अधिक सुरक्षित होते हो। जब तुम सत्ता में नहीं होते हो तो तुम इतने अधिक शक्तिहीन बन जाते हो कि कोई भी व्यक्ति किसी भी तरह से तुम्हारी फिक्र नहीं करता कि तुम कौन हो। जब तुम सत्ता में होते हो तो तुम्हारे पास मित्र, परिवार और अनुसरणकर्ता होते हैं और जब तुम सत्ता में नहीं होते हो तो प्रत्येक व्यक्ति तुम्हें छोड़ देता हैं वहां एक सुरक्षा थी, वहां तुम्हारी देखभाल करने के लिए कोई व्यक्ति था और अब कोई भी व्यक्ति देखभाल नहीं करता है। जिस किसी भी चीज़ से तुम भयभीत हो, यदि तुम गहनता से खोज करो तो तुम हमेशा कहीं-न-कहीं मृत्यु की छाया को पाओगे।
तुम एक पति से लिपटी हुई हो, तुम भयभीत हो कि वह तुम्हें छोड़ सकता है अथवा तुम एक पत्नी से चिपके हुए हो और डरते हो कि वह तुम्हें छोड़ सकती है। भय क्या है? यह क्या वास्तव में तलाक का डर है अथवा यह भय मृत्यु का है? यह

भय मृत्यु का है... क्योंकि तलाक में तुम अकेले ही जाते हो। दूसरा व्यक्ति तुम्हें एक सुरक्षा देता है, एक अनुभूति देता है कि तुम अकेले नहीं हो और कोई अन्य व्यक्ति भी तुम्हारे साथ है। उन क्षणों में जब किसी अन्य व्यक्ति की आवश्यकता पड़ेगी तो तुम्हारे पास तुम्हारी देखभाल करने वाला कोई व्यक्ति होगा। लेकिन पत्नी ने तुम्हें छोड़ दिया अथवा पति ने तुम्हें छोड़ दिया और अब तुम अकेले एक अजनबी की भांति रह गए हो। कौन तुम्हारी सुरक्षा करेगा? जब तुम बीमार होते हो तो कौन तुम्हारी देखभाल करेगा।
जब लोग युवा होते हैं, उन्हें पति और पत्नी की उतनी अधिक आवश्यकता नहीं होती, लेकिन जब वे वृद्ध होते हैं तो उनकी आवश्यकता अधिक होती है। जब तुम युवा हो तो वह एक कामवासना का संबंध है। तुम जितने अधिक वृद्ध होते हो वह उतना ही अधिक एक जीवन का संबंध बन जाता है क्योंकि अब यदि दूसरा तुम्हें छोड़ता है तो तुरंत वहां मृत्यु होती हैं जहां कहीं भी तुम भयभीत होते हो तो खोजने का प्रयास करो और तुम मृत्यु को कहीं पीछे छिपा हुआ पाओगे। सारा भय मृत्यु का है। केवल मृत्यु ही भय का स्रोत हैं।
पश्चिम में लोग बहुत अधिक डरे हुए, चिंतित और उद्विग्न हैं क्योंकि तुम्हें निरंतर मृत्यु के विरुद्ध लड़ना है। तुम जीवन से प्रेम करते हो, तुम जीवन का सम्मान करते हो- इसी कारण पश्चिम में वृद्ध लोगों का सम्मान नहीं किया जाता है। युवा लोगों का सम्मान किया जाता है क्योंकि वृद्ध लोग तुम्हारी अपेक्षा मृत्यु की ओर आगे बढ़ गए हैं और वे लोग पहले ही से उसकी पकड़ में हैं। पश्चिम में युवावस्था का सम्मान किया जाता है और युवावस्था एक होने वाले परिवर्तन अथवा संक्रमण की घटना है जो पहले ही तुम्हारे हाथों से गुजर रही हैं
पूरब में वृद्ध लोगों का सम्मान किया जाता है क्योंकि पूरब में मृत्यु का सम्मान किया जाता है और क्योंकि पूरब में मृत्यु का सम्मान किया जाता है, वहां मृत्यु के बारे में कोई भी भय नहीं है। जीवन केवल एक भाग है और मृत्यु है उसकी चरम सीमा। जीवन केवल एक प्रक्रिया है और मृत्यु है उसके स्वर का उत्कर्ष। जीवन केवल एक चलना है और मृत्यु है मंजिल पर पहुंचना। और दोनों एक ही हैं, इसलिए तुम किसको अधिक सम्मान दोगे, मार्ग को अथवा मंजिल को? प्रक्रिया को अथवा खिलावट को?
मृत्यु एक पुष्प है, और जीवन और वुफछ भी नहीं बल्कि एक वृक्ष है। वहां वृक्ष है- फूल देने के लिए, वहां फूल वृक्ष के लिए नहीं है। जब फूल आते हैं तो वृक्ष को प्रसन्न होना चाहिए और उसे नृत्य करना चाहिए।
इसलिए पूरब में मृत्यु को स्वीकार किया गया है, न केवल स्वीकार किया गया है, उसका स्वागत किया गया हैं वह एक दिव्य अतिथि है। जब वह द्वार खटखटाता है तो उसका अर्थ है कि त्रिभुवन, तुम्हारे वापस लौटकर आने का स्वागत करने को तैयार है।
पूरब में हम मृत्यु का स्वागत करते हैं और यह युवक ज़ेनगेन सहानुभूति अथवा सम्मान का एक शब्द भी अभिव्यक्त किए बिना ही अंदर आया। वह पूरी तरह से उत्सुक हो उठा। इतना ही नहीं उसका व्यवहार बहुत असम्मानपूर्ण भी था- उसने ताबूत को ठकठकाया और डोगो से पूछा-"क्या वह वास्तव में मर गया है?" उसका प्रश्न सुंदर है लेकिन उचित क्षण में नहीं किया गया है। प्रश्न तो ठीक है लेकिन उसके पूछने का जो क्षण उसने चुना है वह गलत है। मृत्यु के सम्मुख उत्सुकता प्रकट करना बचपना है; प्रत्येक व्यक्ति को सम्मानपूर्ण और मौन बने रहना है। उस घटना के साथ संबंध बनाने का केवल वही एक उपाय है। जब कोई व्यक्ति मरता है तब वास्तव में वह एक बहुत गहन घटना जैसी वुफछ चीज़ होती है। यदि तुम वहां बैठे रहकर केवल ध्यान कर सकते हो तो तुम पर अनेक चीज़ें प्रकट होंगी। वहां प्रश्न पूछना मूर्खता है। जब वहां मृत्यु है तो तुम ध्यान क्यों नहीं करते? प्रश्न करना उस बात से बचने की एक चालबाजी है, वह केवल एक सुरक्षा की खातिर भी हो सकता है, जिससे तुम्हें मृत्यु में प्रत्यक्ष रूप से न देखना पड़े।
मैंने निरीक्षण किया है कि जब लोग किसी मुर्दे को जलाने अथवा दफन करने जाते हैं, वे वहां बहुत अधिक बातचीत करना प्रारंभ कर देते हैं। शमशानघाट पर वे अनेक दार्शनिक विषयों पर चर्चा-परिचर्चा करते हैं। बचपन में मैं प्रत्येक अर्थी का अनुसरण करने से बहुत प्रेम करता था। जो कोई भी

व्यक्ति मरता, मैं वहां होता था। मेरे माता-पिता भी इससे बहुत अधिक डरते थे और कहते थे-"तुम वहां क्यों जाते हो? हम लोग उस व्यक्ति को जानते भी नहीं। वहां जाने की कोई भी आवश्यकता नहीं है।"
मैं कहता-"प्रयोजन वह नहीं है। उस व्यक्ति में मेरी दिलचस्पी न होकर मृत्यु में है। वह एक ऐसी आकर्षक और सबसे अधिक रहस्यमय घटनाओं में से एक है। प्रत्येक व्यक्ति को उससे नहीं चूकना चाहिए।" इसलिए जिस क्षण मैं सुनता था कि कोई व्यक्ति मर गया है तो मैं वहां होता और जो वुफछ हो रहा होता था मैं हमेशा साक्षी बना निरीक्षण करता और प्रतीक्षा करता।
और मैं निरीक्षण करता था कि लोग अनेक दार्शनिक विषयों और समस्याओं पर चर्चा-परिचर्चा कर रहे हैं, जैसे कि-"मृत्यु क्या है? और कोई व्यक्ति कहता : कोई भी व्यक्ति नहीं मरता है। अंतरस्थ में स्थित आत्मा अमर है। वे लोग गीता ओर उपनिषदों पर चर्चा करते और वे अधिवृफत लोगों के वचनों को उद्धृत करते। मैं अनुभव करने लगा कि वे लोग बच रहे हैं। केवल चर्चा में व्यस्त बने रहकर वे उस बात को टाल रहे हैं जो घटित हो रही है। वे लोग मृत व्यक्ति की ओर नहीं देख रहे हैं और वह व्यक्ति वहां है। मृत्यु वहां है और तुम उसकी चर्चा कर रहे हो। कितने मूर्ख हैं लोग?"
तुम्हें मौन बने रहना है। जब वहां मृत्यु है और तुम मौन बने रह सकते
हो तो अचानक तुम चीज़ें देखोगे क्योंकि मृत्यु केवल एक व्यक्ति की सांस का रुक जाना नहीं है। बहुत-सी चीज़ें घटित हो रही हैं। जब एक व्यक्ति मरता है उसका आभामंडल लुप्त होना शुरू हो जाता है। यदि तुम मौन हो तो तुम उसका अनुभव कर सकते हो। एक ऊर्जा शक्ति, एक प्राण-ऊर्जा क्षेत्र लुप्त होकर केंद्र पर वापस लौट रहा होता है।
जब एक बच्चा जन्म लेता है तो ठीक इसके विपरीत घटित होता है। जब एक जन्म लेता है तो एक आभामंडल नाभि के निकट से फैलाना शुरू होता है। ठीक जैसे कि जब तुम एक पत्थर कोझील में पेंफकते हो तो लहरें फैलकर किनारे की ओर जाने लगती हैं। जब एक बच्चा श्वास लेता है तोझील में पत्थर पेंफकने के समान ही होता है। और बच्चे की श्वास लेने से उसकी नाभि के केंद्र पर चोट लगती है। शांत झील में पहला पत्थर पेंफक दिया गया है और लहरें फैलती चली जाती हैं।
अपने पूरे जीवन-भर तुम फैलते चले जाते हो। लगभग पैंतीस वर्ष की आयु में तुम्हारा आभामंडल पूरा होकर अपने शिखर पर होता है। तब वह लुप्त होना शुरू हो जाता है। जब एक व्यक्ति मरता है वह लौटकर नाभि में वापस चला जाता है। जब वह नाभि पर पहुंचता है, वह एक केंद्रित ऊर्जा और केंद्रित प्रकाश बन जाता हैं यदि तुम मौन रहते हो तो तुम उसका अनुभव कर सकते हो, तुम एक खिंचाव का अनुभव करोगे। यदि तुम एक मृत व्यक्ति के निकट बैठते हो तो तुम अनुभव करोगे, जैसे मानो मृत व्यक्ति की ओर एक सूक्ष्म हवा का झोंका बह रहा है और तुम उसके द्वारा खींचे जा रहे हो। मृत व्यक्ति अपने पूरे जीवन को और पूरे ऊर्जा क्षेत्र को जो उसके पास था सिकोड़ रहा है।
एक मृत व्यक्ति के चारों ओर अनेक चीज़ें घटित हो रही हैं। यदि उसने एक व्यक्ति से बहुत गहन प्रेम किया है तो इसका अर्थ है कि उसने अपनी जीवन-ऊर्जा का एक भाग उसे दिया था और जब एक व्यक्ति मरता है तो तुरंत ही वह भाग जो उसने दूसरे व्यक्ति को दिया था, उस व्यक्ति को छोड़कर मृत व्यक्ति की ओर चला जाता है। यदि तुम यहां मरते हो और तुम्हारा प्रेमी हांगकांग में रहता है तो तुरंत ही तुम्हारा प्रेमी वुफछ चीज़ छोड़ेगा क्योंकि तुमने अपने जीवन का जो एक भाग उसे दिया था वह तुम तक वापस लौटकर आ जाएगा। इसी कारण जब कोई अपना प्रिय मरता है तुम अनुभव करते हो कि वुफछ चीज़ तुम्हें भी छोड़कर चली गई है और तुम्हारे अंदर भी वुफछ चीज़ मर गई है। अब एक गहरा घाव और एक गहन अंतराल मौजूद रहेगा।
जब भी एक प्रेमी मरता है उसकी प्रेमिका में भी वुफछ चीज़ मर जाती है क्योंकि वे लोग एक-दूसरे के साथ गहनता से जुड़े हुए थे। यदि तुमने अनेकानेक लोगों से प्रेम किया है- उदाहरण के लिए यदि डोगो के अथवा एक बुद्ध के समान एक व्यक्ति मरता है तो पूरे त्रिभुवन भर से सारी ऊर्जा, केंद्र को वापस लौटती है। यह एक विश्वजनीन घटना है क्योंकि वह अनेकानेक जीवनों और लाखों जन्मों से संयुक्त रहा है और हर कहीं से उसकी ऊर्जा वापस लौटेगी। जो

वंफपनें उसने अनेक लोगों की दी हैं, वे मुक्त होंगी, वे मूल स्रोत की ओर गतिशील होंगी और वे पुनः नाभि के निकट केंद्रित हो जाएंगी।
यदि तुम निरीक्षण करते हो तो तुम उलटे क्रम में वापस लौटती हुई तरंगों का अनुभव करोगे और जब वे नाभि में पूर्ण रूप से केंद्रित हो जाती हैं तो तुम एक विशाल ऊर्जा और एक आश्चर्यजनक प्रकाशपुंज को देख सकते हो। और तब वह केंद्र शरीर को छोड़ता है। जब एक व्यक्ति मरता है तो वह सामान्य रूप से श्वास का रुक जाना होता है और तुम सोचते हो कि वह मर गया है। वह अभी मरा नहीं है, उसमें समय लगता है। जब कभी यदि कोई व्यक्ति लाखों जन्मों से जुड़ा रहा है तो उसे मरने में कई दिन लग जाते हैं- इसी कारण विशेष रूप से पूरब में ऋषियों और संतों के शरीरों को हम कभी नहीं जलाते। केवल संतों को नहीं जाया जाता, अन्यथा प्रत्येक व्यक्ति को जलाया जाता है क्योंकि वे दूसरों के साथ इतने अधिक संबद्ध नहीं होते हैं मिनटों में ऊर्जा एकत्रित हो जाती है और वे फिर और इस अस्तित्व का भाग नहीं रह जाते।
लेकिन संतों के साथ ऊर्जा समय लेती है। कभी-कभी वह चलती चली जाती है। इसी कारण यदि तुम शिरडी अर्थात साईं बाबा के नगर में जाओ, तुम अब भी अनुभव करोगे कि वुफछ चीज़ हो रही है, अभी भी ऊर्जा आती चली जाती है। वह अनेक लोगों के साथ इतने अधिक संबद्ध हो गए थे कि वह अभी भी जीवित हैं। साईं बाबा का मकबरा मृत नहीं है और वह अभी भी जीवंत है। लेकिन यही चीज़ तुम अनेक कब्रों के निकट अनुभव न करोगे- वे मृत हैं। मृत होने से मेरा अर्थ है कि उन्होंने सभी लोगों की संबद्धताओं को इकट्ठा कर लिया है और वे विलुप्त हो गए।
जब मैं मर जाउंफ तो मेरे शरीर को दफनाना मत, उसे जलाना मत क्योंकि मैं तुम्हारे अंदर और तुममें से अनेक लोगों के अंदर घिरा रहूंगा। यदि तुम अनुभव कर सकते हो, तब एक ऋषि अनेक वर्षों के लिए और जब कभी हजारों वर्षों तक जीवित बना रह सकता है क्योंकि जीवन केवल शरीर का ही नहीं हैं जीवन एक ऊर्जा की चीज़ है। यह संबद्धता पर निर्भर करता है, वह कितने अधिक लोगों के अंदर मिलकर एक हो गए थे और एक बुद्ध के समान व्यक्ति केवल व्यक्तियों के ही साथ ही संबद्ध नहीं होता है, वह वृक्षों, पक्षियों और जानवरों के साथ भी संबद्ध होता है। उसकी संबद्धता इतनी अधिक गहन होती है कि यदि वह मर जाता है तो उसकी मृत्यु कम-से-कम पांच सौ वर्ष लेगी।
मिली सूचनाओं के आधार पर बुद्ध ने कहा था- मेरे धर्म में केवल पांच सौ वर्षों तक ही जीविन-शक्ति रहेगी और यहां उसका अर्थ यही है कि उनके पास पांच सौ वर्षों की जीवन-शक्ति होगी। सभी संबद्धताओं से पूर्ण रूप से बाहर आने के लिए उन्हें पांच सौ वर्ष लगेंगें
जब मृत्यु होती है, मौन बने रहो। निरीक्षण करो। पूरे विश्व-भर में जब
भी एक मृत व्यक्ति को श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है, तुम मौन हो जाते हो। तुम बिना जाने क्यों दो मिनट के लिए मौन बने रहते हो। पूरे विश्व-भर में यह परंपरा निरंतर बनी रही है। मौन ही क्यों?
यह परंपरा अर्थपूर्ण है। हो सकता है कि तुम नहीं जानते हो कि ऐसा क्यों होता है? तुम सचेत बने रह सकते हो और तुम्हारे मौन में होेसकता है मन के अदंर चलने वाली चटर-पटर भरी हो अथवा हो सकता है कि तुम इसे एक कर्मकांड के समान करते हो।
सहानुभूति और संवेदना का एक शब्द भी
अभिव्यक्त करने का समय लिए बिना ही,
ज़ेनगेन ताबूत तक गया, और उसे ठकठकाते हुए
उसने सद्गुरु डोगो से पूछा- क्या वह वास्तव में मर गया है?
उसका प्रश्न ठीक हे लेकिन पूछने का समय ठीक नहीं है। उसने गलत अवसर का चुनाव किया है। यह क्षण इस बारे में बात करने का नहीं है, यह क्षण उसके साथ बने रहने का है। और जो व्यक्ति मरा है उसे अनिवार्य रूप से बहुत गहन होना चाहिए अन्यथा डोगो उसके प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए नहीं गया होता। डोगो एक बुद्धत्व को उपलब्ध व्यक्ति है। वह शिष्य जो मरा है उसमें अनिवार्य रूप से वुफछ बात होनी ही चाहिए और डोगो उसके लिए वुफछ और अधिक कार्य करने के लिए वहां गया था। जब तुम जीवित हो तब सद्गुरु तुम्हारी सहायता कर सकता है लेकिन एक सद्गुरु तब भी तुम्हारी और अधिक सहायता कर सकता है जब तुम मर गए हो- क्योंकि मृत्यु में एक गहन समर्पण घटित होता हैं

जीवन में तुम अपने सद्गुरु के भी साथ हमेशा प्रतिरोध करते हो, लड़ते हो, उसे समर्पण नहीं करते अथवा अधूरे हृदय से समर्पण करते हो- जिसका वुफछ भी अर्थ नहीं है लेकिन जब तुम मर रहे हो तो समर्पण करना सरल होता है क्योंकि मृत्यु और समर्पण समान प्रक्रियाएं हैं। जब पूरा शरीर मर रहा है तुम सरलता से समर्पण कर सकते हो। लड़ना कठिन है, प्रतिरोध करना भी कठिन है। तुम्हारा शरीर एक परम विश्राम और स्वीकार भाव में जा रहा है और तुम्हारा अवरोध पहले ही टूट चुका है, यही है वह जिसे मृत्यु कहा जाता है।
वहां डोगो वुफछ विशेष बात के लिए गया था और इस शिष्य ने एक प्रश्न पूछ लिया। प्रश्न ठीक है लेकिन समय ठीक नहीं है।
डोगो ने कहा-"मैं वुफछ भी नहीं कहूंगा।"
ज़ेनगेन ने हठ करते हुए कहा-"ठीक है- तब... ?"
डोगो ने कहा-"मैं वुफछ भी नहीं कह रहा हूं
और यही अंतिम (शब्द) है।
पहली बात: मृत्यु के बारे में क्या कहा जा सकता है? तुम मृत्यु के बारे में कोई बात कैसे कह सकते हो? किसी भी शब्द के लिए मृत्यु का अर्थ वहन करना संभव ही नहीं है। इस मृत्यु शब्द का अर्थ क्या है? वास्तव में इसका अर्थ वुफछ भी नहीं है। तुम्हारे कहने का क्या अर्थ होता है, जब तुम मृत्यु का प्रयोग करते हो। वह सामान्य रूप से उस पार का एक द्वार है जिसे हम नहीं जानते कि वहां क्या होता है। हम एक व्यक्ति को द्वार के अंदर विलुप्त होते हुए देखते हैं। हम द्वार तक तो देख सकते हैं और तब वह व्यक्ति पूरी तरह से लुप्त हो जाता है। तुम्हारा शब्द मृत्यु द्वार का अर्थ दे सकता है लेकिन वास्तव में द्वार के पार क्या होता है? क्योंकि द्वार वस्तु नहीं है। द्वार है, उससे होकर गुजरने के लिए। तब उस एक के साथ क्या होता है जो द्वार से गुजरकर लुप्त हो जाता है क्योंकि उस पार हम देख नहीं सकते कि उसके साथ क्या होता है? और यह द्वार क्या है? क्या केवल श्वास का रुक जाना? क्या श्वास ही जीवन की पूर्णता है?
क्या श्वास की अपेक्षा तुम्हारे पास कोई और अधिक चीज नहीं है? श्वास रुक जाती है--... शरीर नष्ट होने लगता है--... यदि तुम अकेले शरीर और श्वास ही हो, तब वहाँ कोई भी समस्या नहीं है। तब मृत्यु कुछ भी नहीं है। वह किसी भी चीज का द्वार नहीं है। वह बिल्कुल होना नहीं, पूर्ण रुप से श्वास का रुक जाना है। वह ठीक एक घड़ी के समान है
घड़ी टिक-टिक करती हुई कार्य कर रही है, तब वह रुक जाती है, तुम यह नहीं पूंछते, वह टिक-टिक करना कहाँ चला गया- वह पूँछना अर्थहीन होगा। वह कहीं भी नहीं गया है। वह बिल्कुल ही नहीं चला गया है, वह सामान्य रूप से रुक गया है; वह एक यांत्रिकत्व था और उसके यांत्रिकत्व में कुछ चीज गलत हो गई है- तुम उस यंत्र की मरम्मत कर सकते हो, तब वह फिर से टिक-टिक करने लगेगी। क्या मृत्यु ठीक एक घड़ी के रुकने के समान है? क्या वह ठीक उसी के समान है? यदि ऐसा है, तो यह वास्तव में कुछ भी रहस्य नहीं है। लेकिन जीवन इतनी आसानी से कैसे विलुप्त हो सकता है? जीवन एक यंत्र नहीं है। जीवन है सचेतनता और सजगता। घड़ी सचेत नहीं है- तुम टिक-टिक की ध्वनि सुन सकते हो, पर घड़ी ने उसे कभी भी नहीं सुना। तुम अपने हृदय की धड़कनों को सुन सकते हो, पर घड़ी ने उसे कभी भी नहीं सुना। तुम अपने हृदय की धड़कनों को सुन सकते हो। यह सुनने वाला कौन है? यदि केवल हृदय की धड़कन ही जीवन है, तो यह सुनने वाला कौन है? यदि केवल श्वास ही जीवन है, तो तुम श्वास के प्रति सचेत कैसे हो सकते हो? यही कारण है कि ध्यान की सभी पूरबी विधियाँ, एक सूक्ष्म साधन की भाँति श्वास के प्रति सचेत होने का प्रयोग करती है- क्योंकि यदि तुम श्वास के प्रति सचेत हो जाते हो, तब यह सचेत होता कौन है? उसे श्वास के पार का कोई व्यक्ति होना चाहिए, क्योंकि तुम उसकी ओर देख सकते हो और देखने वाला विषय अथवा वस्तु नहीं हो सकती तुम उसके साक्षी हो सकते हो तुम अपनी आंखे बंद कर सकते हो और तुम अपनी श्वास को अंदर जाते और बाहर जाते देख सकते हो। यह देखने वाला और साक्षी होने वाला कौन है? उसे पृथक शक्ति होना चाहिए, जो श्वास पर निर्भर नहीं है। जब श्वास विलुप्त हो जाती है तो वह घड़ी का रूक जाना है, लेकिन वह सचेतना कहां चली जाती है? यह सचेतनता कहां गतिशील हो जाती है?

मृत्यु एक द्वार है, वह एक रूक जाना नहीं है सचेतनता आगे जाती है लेकिन तुम्हारा शरीर द्वार पर ही पड़ा रह जाता है- ठीक वैसे ही जैसे कि तुम यहां आए हो और अपने जूतों को द्वार पर ही छोड़ दिया है शरीर मंदिर के बाहर ही छोड़ दिया जाता है और तुम्हारी चेतना मंदिर में प्रवेश करती है यह सबसे अधिक सूक्ष्म घटना है जीवन इसके सामने कुछ भी नहीं है। मूल रूप से मरने के लिए जीवन केवल एक तैयारी है, और केवल वे ही लोग बुद्विमान हैं, जो अपने जीवन में यह सीखते हैं कि कैसे मरा जाए। यदि तुम यह नहीं जानते हो कि कैसे मरा जाए तो तुम जीवन के पूरे अर्थ से ही चूक गए हो: यह एक तैयारी है, यह एक प्रशिक्षण है और यह एक अनुशासन है।
जीवन एक अंत नहीं है, यह मरने की कला सीखने का केवल एक अनुशासन है। लेकिन तुम डरे हुए हो, तुम भाग रहे हो और मृत्यु के वास्तविक शब्द से ही तुम कापने लगते हो। इसका अर्थ है कि तुमने अभी तक जीवन को हीं नहीं जाना है, क्योंकि जीवन कभी नहीं मरता है जीवन मर ही नहीं सकता।
कहीं तुम शरीर के साथ, उसके यांत्रिकत्व के साथ पहिचान बना लेते हो। उसके यांत्रिकत्व को मरना है, यांत्रिकत्व शाश्वत नहीं हो सकता, क्योंकि यांत्रिकत्व अनेक चीजों पर निर्भर होता है, और वह एक बाह्य परीस्थितियों पर आश्रित चीज है। चेतना बेशर्त है और वह किसी चीज पर आश्रित नहीं है वह आकाश में एक बादल के समान तैर सकती है।
उसकी कोई जड़े नही होती। उसका कोई कारण नहीं है उसका कभी जन्म नहीं होता इसलिए वह कभी मर भी नहीं सकती।
जब कोई व्यक्ति मरता है तुम्हें उसके निकट ध्यानपूर्ण बने रहना है क्योंकि एक मंदिर बस निकट ही है और वह एक धार्मिक भूमि है बचपना मत करो, अपनी उत्सुकताओं मत लाओ और मौन बने रहो, जिससे तुम देख सको और निरिक्षण कर सको कि कोई बहुत-बहुत अर्थपूर्ण चीज घटित हो रही है- उस क्षण से चूको मत और जब मृत्यु वहां है, तो उसके बारे में क्यों पूछते हो? उसकी ओर देखते क्यों नहीं? उसका निरिक्षण क्यों नही करते? उसके साथ थोड़े से कदम चलते क्यों नहीं?
जेनगेन ने हठ करते हुए कहा: यह तो ठीक है पर...
डोगो ने कहा " मैं कुछ नहीं कह रहा हूं और यहीं अंतिम (शब्द) है।
मठ की ओर वापस लौटते हुए रास्ते में ही।
क्रोधित, जेन गेन, डोगोकी ओर मुड़ा।
और उसे धमकी देते हुए कहा: परमात्मा की शपथ!
यदि आप मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं देते, तो मैं आपको पीटूंगा"
यह "ज़ेन" में ही संभव है, कि एक शिष्य भी सद्गुरू को पीट सकता है, क्योंकि ज़ेन जीवन के प्रति बहुत सच्चा और बहुत प्रामाणिक है। एक ज़ेन सदगुरू अपने चारो और एक ऐसी दृश्यसत्ता सृजित नहीं करता कि मैं तुम्हारी अपेक्षा कहीं अधिक धार्मिक हूँ। वह यह नहीं कहता मैं बहुत श्रेष्ठ और उच्च हूँ। एक व्यक्ति जो बोध उपलब्ध हुआ हो, को यह कैसे कह सकता है। मैं तुमसे श्रेष्ठ और उच्च हूं और तुम मुझसे निम्न और हीन हो। शिष्य ऐसा सोच सकता है कि वह श्रेष्ठ है, लेकिन सद्गुरू किसी भी श्रेष्ठता का दावा नही कर सकता, क्योंकि श्रेष्ठता का दावा केवल हीनता के द्वारा ही किया जा सकता है श्रेष्ठता का दावा केवल अंहंकार के द्वारा ही किया जा सकता है जो शक्तिहीन और निम्न स्तर का है केवल निर्बलता के द्वारा ही शक्ति होने का दावा किया जाता है जब तुम अनिश्चित होते हो तुम निश्चितता का दावा करते हो, जब तुम रूग्ण होते हो, तुम स्वस्थ्य होने का दावा करते हो, और जब तुम नहीं जानते हो तो ज्ञानी होने का दावा करते हो। तुम्हारे दावे सत्य को पूरी तरह से छिपाने के लिए होते है। एक सद्गुरू कुछ भी दावा नहीं करता। वह ये नहीं कह सकता कि मैं श्रेष्ठ हूं। यह मूर्खता है एक बुद्विमान व्यक्ति यह कैसे कह सकता है कि मैं श्रेष्ठ हूं।
इसलिए एक जेन सद्गुरू इसकी भी अनुमति देता है कि शिष्य उस पर चोट कर सकता है और पूरी चीज का आनंद ले सकता है। संसार में किसी अन्य व्यक्ति ने ऐसा नहीं किया है: इसी कारण ज़ेन सदगुरू बेजेड़ है- तुम उनकी अपेक्षा ऐसे दुर्लभ पुष्प नहीं खोज सकते। सद्गुरू वास्तव में इतना अधिक श्रेष्ठ है कि वह तुम्हें अपने पर चोट तक करने की अनुमति देता है इसके द्वारा उसकी

श्रेष्ठता को चुनौती नहीं दी जा सकती। तुम किसी भी ढंग से उसे चुनौती नहीं दे सकते और न तुम किसी भी तरह से उसे नीचे ही ला सकते हो। वह वहां और अधिक है ही नहीं। वह एक खाली घर के समान है। और वह जानता है कि एक शिष्य केवल एक मुर्ख ही हो सकता है। कुछ अन्य चीज की आशा नहीं की जा सकती क्योंकि एक शिष्य अज्ञानी है।
करूणा की जरूरत है, और एक शिष्य का अज्ञान में ऐसे कार्य करते चले जाना, जो उचित नहीं है, सुनिश्चित है और एक अयोग्य व्यक्ति कैसे उचित कार्य कर सकता है? और यदि तुम एक अयोग्य व्यक्ति को उचित और संगत कार्य करने को बाध्य करते हो तो वह अपंग हो जायेगा और उसकी स्वतंत्रता मिट जायेगी। और एक सद्गुरू तुम्हें स्वतंत्र होने में सहायता करने के लिए है इसलिए चोट करने की अनुमति है। वास्तव में अश्रद्वा नहीं है, वास्तव में शिष्य भी सद्गुरू को बहुत अधिक घनिष्टता से प्रेम करता है कि वह उसके बहुत अधिक निकट आ सकता है। एक व्यक्ति को पीटना भी एक तरह की घनिष्ठता है- तुम किसी भी व्यक्ति की यों ही चोट नहीं कर सकते।
कभी-कभी ऐसा होता है कि एक बच्चा भी अपने पिता को मारता है अथवा एक बच्चा अपनी मां को तमाचा मार सकता है। इसका अर्थ विरोध करना नहीं है, ऐसा केवल इसलिए है क्योंकि बच्चा मां को अधिक गहनता और इतनी अधिक घनिष्ठता से स्वीकार करता है कि वह यह अनुभव नहीं करता कि कोई भी कार्य अनुचित है। और बच्चा जानता है कि उसे क्षमा कर दिया जाएगा इसलिए वहां कोई भी भय नहीं है। एक सद्गुरू की क्षमा असीम और बेशर्त है।
शिष्य बहुत क्रोधित था क्योंकि उसने एक बहुत अर्थपूर्ण प्रश्न पूछा
था उसके लिए तो वह बहुत अर्थपूर्ण था वह सोच भी नही सकता था कि डोगो को इस तरह का अड़ियल व्यवहार करते हुए नहीं, नहीं कहना चाहिए था- और केवल इतना ही नहीं, उसने कहा यह अंतिम है और मैं और अधिक कुछ भी कहने नहीं जा रहा हूं। जब तुम एक प्रश्न पूछते हो तो तुम अपने अंहकार के कारण लगा था उसका अंहकार क्षुब्ध हो गया था और वह विश्वास ही न कर सका था। और ऐसा अनिवार्य रूप से अनेक लोगों के सामने हुआ था वे अकेले नहीं थे वहां दूसरे अनेक लोग थे और वहां निश्चित रूप से अनेक लोगों को होना ही चाहिए था- क्योंकि जब कोई व्यक्ति मरता है तो वहां अनेक लोग एकत्रित होते है। और उन लोगों के सामने सद्गुरू ने कहा- "नहीं और यह बात अंतिम है। और मैं कोई अन्य बात करने नहीं जा रहा हूं। उन सभी लोगों ने अनिवार्य रूप से सोचा होगा- यह शिष्य केवल एक मूर्ख है, जो असंगत प्रश्न पूंछ रहा है।
जेनगेन को क्रोधित होना ही चाहिए था, उसे अनिवार्य रूप से अंदर से खौलना ही चाहिए था। जब मठ की ओर वापस लौटते हुए उसने स्वंय को सद्गुरू के साथ अकेला पाया तो उसने कहा:
परमात्मा की शपथ खाता हूँः "यदि आप मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं देते है
तो मै आपको पीटूंगा, डोगो ने कहा: ठीक है पिफर आगें बढ़ो और मुझे पीट दो।" ... और इसके साथ बात समाप्त कर दो। यदि तुम क्रोधित हो तो ऐसा करने के
बाद उसके साथ ही अंत कर दो। एक सद्गुरू हमेशा जो कुछ तुम्हारे अंदर है, यदि वह तुम्हारी नकारात्मकता भी है तो उसे बाहर लाने को तैयार रहता है यदि तुम उसे पीटने भी जा रहे हो, तो वह तुम्हें वैसा करने की अनुमति देगा। कौन जानता है सद्गुरू पर चोट करने से तुम अपनी नकारात्मकता के प्रति सचेत हो सकते हो। तुम अपनी रूग्ण्ता अपनी बीमारी और अपने पागलपन के प्रति सजग बन सकते हो। सद्गुरू पर चोट करने से हो सकता है कि वह अचानक बुद्वत्व को उपलब्ध हो जाए- कौन जानता है और एक सद्गुरू प्रत्येक ढंग से तुम्हारी सहायता करता है। इसलिए डोगों ने कहा:
ठीक है, पिफर आगे बढ़ो- और मुझे पीट दो।
अपनी शपथ के प्रति प्रतिबद्ध जेनगेन ने अपने सद्गुरू के गाल पर जोरदार तमाचा मारा।
कुछ समय बाद डोगो मर गया, और जेनगेन अभी भी अपने प्रश्न का उत्तर पाने
की इच्छा के लिए सद्गुरू सेकीसो के पास गया। जो कुछ भी हुआ था, उसे बताने के बाद उसने पिफर उसी प्रश्न को पूंछा। सीकोसो ने कोई भी उत्तर नहीं दिया, जैसे मानो मृत डोगो के साथ उसकी कोई साठ-गांठ रही हो।

सभी सद्गुरूओं के मध्य सदा से ही एक गुप्त सांठगांठ रहती है यदि वे पूर्ण रूप से सद्गुरू हैं, वे हमेशा एक साथ होते हैं यदि वे एक दूसरे का विरोध भी करते है तो वह भी उसी साजिश का एक भाग होता है यदि जब कभी वे कहते कि दूसरा गलत है तो भी वे उसी साजिश में ऐसा कहते है।
बुद्व और महावीर समकालीन थे और वे दोनों एक ही प्रांत में ही बिहरते करते थे उन लोगों के कारण ही वह भाग बिहार के नाम से जाना जाता है। बिहार का अर्थ है उनके भ्रमण करने का अथवा बिहरने का क्षेत्र वे उस भाग में सभी स्थानों पर गये। कभी-कभी वे एक ही गांव अथवा नगर में होते थे।
एक बार ऐसा हुआ कि वे दोनों सड़क के किनारे एक ही धर्मशाला में ठहरे
हुए थे। आधे भाग में बुद्व के लिए व्यवस्था थी और आधे में महावीर के लिए लेकिन वे कभी भी एक दूसरे से नही मिले और निंरतर एक दूसरे कोझुठा ठहराते हुए एक-दूसरे का खण्डन करते रहे। शिष्य लोग एक सद्गुरू से दूसरे के पास जाया करते थे वह एक समस्या बनी रही- क्यों? बुद्ध उन पर हंसा करते, वह महावीर का उपहास उड़ाते। वह कहते-"वह व्यक्ति जो यह दावा करता है कि वह बुद्धत्व को उपलब्धी है और वह दावा करता है कि वह सर्वज्ञ है और वह सभी कुछ जानता है लेकिन मैनें सुना है कि एक बार भिक्षा मांगने उसने एक घर का द्वार खटखटाया और उसमें वहां कोई भी व्यक्ति नहीं था और मैनें सुना है कि वह पिफर भी वह यह दावा करता है कि वह सर्वज्ञ है, और वह इतना भी नही जानता था कि वह घर खाली था।
वह उपहास किए चले जाते है। वह कहते हैं: एक बार महावीर भ्रमण कर रहे
थे ओैर उन्होने कुत्ते की पूंछ पर पैर रख दिया। केवल जब कुत्ता उछल वफूंद कर भौंकने लगा तभी उन्होंने जाना कि वहां कुत्ता था क्योंकि उस समय सुबह का धुंधल का था और वह व्यक्ति कहता है कि वह सभी कुछ जानता है और वह उनका उपहास किए चले जाते हैं वह महावीर के विरूद्ध अनेक मजाक और व्यंग्य करते हैं और वे आकर्षक है।
बुद्ध और महावीर उन दोनों के मध्य एक साठगांठ है, एक साजिश है, पर इसे
ना तो जैनों के द्वारा और न बौद्वों के द्वारा ही समझा गया- और वे लोक उनके पूरे प्रयोजन से ही चूक गए। वे सोचते है कि वे एक दूसरे के विरूद्ध हैं और इन दो हजार वर्षो में जैन और बौद्ध एक दूसरे के विरूद्ध बने रहे।
वे एक दूसरे के विरूद्व नहीं है वे लोगों की सहायता करने का प्रयास कर रहे हैं और इसके लिए वे खेल खेलते हुए अभिनय कर रहे है। व दो भिन्न-भिन्न मार्गो के व्यक्ति हैं। किसी व्यक्ति की महावीर के द्वारा सहायता की जा सकती थी और किसी अन्य व्यक्ति की बुद्व के द्वारा सहायता की जा सकती थी जिस व्यक्ति की बुद्व के द्वारा सहायता की जा सकती थी, उसकी महावीर के द्वारा सहायता नहीं की जा सकती थी। और उस व्यक्ति को महावीर से हटाकर दूर जाना होता था और जिस व्यक्ति की महावीर के द्वारा सहायता की जा सकती थी, उसे बुद्व के द्वारा सहायता नहीं मिल सकती थी और उस व्यक्ति को बुद्व से हटाकर दूर जाना होता था। इसी कारण वे एक- दूसरे के विरूद्व बातचीत करते थे यह एक साजिश अथवा एक साठगांठ थी। और प्रत्येक व्यक्ति को सहायता मिलनी ही चाहिए, और वे दोनों भिन्न आदर्शो ओैर भिन्न टाइप के हैं, पूर्ण रूप से भिन्न मार्गो के। वे एक दूसरे के विरूद्व कैसे हो सकते थे? कोई भी व्यक्ति जो कभी भी बुद्वत्व को उपलब्ध हुआ है, किसी दूसरे बुद्वत्व को उपलब्ध व्यक्ति के विरूद्व हो ही नहीं सकता। वह इस तरह बातचीत कर सकता है। जैसे मानो वह ऐसा ही है, क्योंकि वह जानता है कि दूसरा उसे समझेगा। मिली सूचना के अनुसार महाबीर ने बुद्व के उन मजाकों और चुटकुलों के बारे में में कभी भी कुछ नही कहा, जिन्हें बुद्व यहां और वहां कहा करते थे। वह पूर्ण रूप से मौन रहे। यही उनका ढंग था। मौन बने रहकर, उनके तर्को को गलत सिद्व करके वह जैसे कह रहे थे- उस मूर्ख को स्वंय पर ही छोड़ दो। वह पूर्ण रूप से मौन बने हुए कुछ भी नहीं कह रहे थे।
प्रतिदिन सूचनाएं आती, लोग आते और वे कहते- उन्होनें यह कहा, और महावीर इस बारे में बात ही न करते। और वह उचित भी था, क्योंकि वह बहुत वृद्ध थे। वह बुद्व की अपेक्षा आयु में तीस वर्ष बड़े थे। यह उनके लिए ठीक नहीं था कि वह नीचे आकर एक युवा व्यक्ति से झगड़ा करते। युवा मुर्ख ऐसे ही होते है। लेकिन बुद्व दूसरे उपदेशकों के विरूद्व भी जो आयु में उनसे बड़े

थे। समान रूप से उनके विरूद्व उनके बारे में तर्क देते हुए बातचीत करते थे।
उन लोगों के मध्य जैसे एक सांठगांठ थी- और उसे होना ही था पर तुम उसे नहीं समझ सकते। उन्हें मार्गो में विभाजन करना पड़ा क्योंकि तुम नहीं समझ सकते कि जीवन विरोधों के द्वारा ही अस्तितव में है। उन्हें विरोधों को चुनना पड़ा। उनमें से प्रत्येक को एकी ही बात पर स्थिर बने रहकर तुमसे यह कहना पड़ा। स्मरण रहे, वे सभी दूसरे लोग गलत है- क्योंकि यदि वे कहते कि हममें से प्रत्येक व्यक्ति ठीक है तो तुम और अधिक उलझन में पड़कर भ्रमित होते। तुम पहले ही से पर्याप्त भ्रमित हो। यदि वे कहते- हां, मैं ठीक हूं महावीर भी ठीक है, बुद्व भी ठीक है और प्रत्येक व्यक्ति (उपदेशक) ठीक है, वो तुम तुरंत ही उन्हे छोड़ दोगें और सोचोगें- यह व्यक्ति सहायता नहीं कर सकता है, क्योंकि हम लोग पहले ही से उलझन में है। हम नहीं जानते कि क्या ठीक है क्या गलत है और हम लोग इस व्यक्ति के पास ठीक प्रकार से यही जानने के लिए आए है कि कौन- सा मार्ग ठीक है और कौन सा मार्ग गलत है।
इसलिए सद्गुरू किसी चीज पर दृढ़ और स्थिर बने रहते है और वे कहते है यह ठीक है और प्रत्येक मार्ग गलत है उस सभी के साथ यह जानते हुए भी कि मार्ग तक पहुंचने के लाखों ढंग है, इसके ही साथ यह भी जानते हुए कि वहां लाखों मार्ग है जो अंतिम मार्ग अथवा लक्ष्य तक पहुंचते है। लेकिन यदि वे कहते है कि लाखों मार्ग पहुंचा देते है तो तुम पुरी तरह से उलझन में पड़ जाओगे।
यह शिष्य जेनगेन मुश्किल में पड़ गया क्योंकि डोगो मर गया। उसने कभी
यह आशा नही की थी कि यह इतनी शीघ्र होने जा रहा है जब सद्गुरू मर जाता है तो शिष्य हमेशा बहुत अधिक कठिनाई का अनुभव करते है जब सद्गुरू वहां होते है वे मूर्ख चारों और घुमते हुए व्यर्थ ही समय को नष्ट करते है। जब सद्गुरू मर जाते है तो वे वास्तविक दुविधा और कठिनाई में पड़ जाते है- अब क्या किया जाए? इसलिए पेनगेन का प्रश्न बना ही रहा, समस्या नहीं बनी रही, वह पहेली जैसे वह पहले थी अभी भी बनी रही। वह शिष्य अभी तक यह नहीं जान पाया था कि मृत्यु क्या होती है और डोगो मर गया।
सद्गुरू सेकीसो ने जैसे मानो मृत डोगो के साथ
कुछ साठगांठ कर रखी थी, कि वह उत्तर नहीं देगा।
जेनगेन चीखता हुआ बोला: "बाई गॉड। तो आप भी... "?
सेकीसो ने कहा मैं कुछ भी नही कह रहा हूं
और यही बात अन्तिम है।
कुछ कार्य कर रहे है वे एक परिस्थिति सृजित कर रहे हं।ै वे कह रहे है मृत्यु के सम्मुख मौन बने रहो। प्रश्न मत पूछो क्योंकि जब तुम पूछते हो, तो तुम बाहर परिधि पर आ जाते हो, तुम उथले बन जाते हो। ये प्रश्न वे प्रश्न नहीं है जिन्हें पूछा जाए। इन प्रश्नों को अंदर प्रविष्ट हो जाना है इन्हें जीना है और उन पर ध्यान करना है तुम्हें उनके अंदर गतिशील होना है यदि तुम मृत्यु को जानना चाहते हो तो मर जाओ। उसे जानने का केवल यही उपाय है यदि तुम जीवन को जानना चाहते हो तो उसे जीओ।
तुम जीवित हो लेकिन उसे जी नहीं रहे हो और तुम मर जाओगे, और तुम नहीं मरोगे... क्योंकि तुम्हारे अंदर प्रत्येक चीज कुनकुनी है। तुम जी रहे हो। ठीक उसी तरह से नहीं तुम केवल घसीट रहे हो। किसी तरह किसी भी तरह तुम स्वंय को उसके साथ खींच रहे हो।
जितनी सघनता और समग्रता से संभव हो सके- जीओ। अपने जीवन की मोमबत्ती
को दोनों सिरो से जलने दो। उसे इतनी अधिक तीव्रता से जलने दो... यदि वह एक क्षण में समाप्त हो जाती है, तो वह ठीक है, लेकिन कम-से-कम तुम यह तो जान लोगों की वह क्या है। केवल तीव्रता और प्रचण्डता और से जलना ही अंदर प्रविष्ट हो जाता है और यदि तुम तीव्रता से जीवन जी सकते हो तो तुम्हारे पास मृत्यु का एक भिन्न गुण होगा, क्योंकि तुम तीव्रता से मरोगे। जैसा जीवन है, वैसी मृत्यु होगी। यदि तुम घिसटते हुए जीते हो, तो तुम घिसटते हुए ही मरोगे। तुम जीवन से चूकोगे और तुम मृत्यु से भी चूकोगे। जितना संभव हो सके जीवन को तीव्र बनाओ। प्रत्येक चीज को दांव पर लगा दो। फ्फिक्र क्यों करते हो? भविष्य के बारे में चिंतित क्यों होते हो? यह क्षण वहां है। अपने समग्र अस्तित्व को उसमें ले आओ। तीव्रता समग्रता और पूर्णता से जीओ और यह

क्षण एक दिव्य प्रेरणा बन जायेगा। और यदि तुम जीवन को जानते हो तो तम मृत्यु को भी जानोगे।
यही गुप्त कुंजी है कि यदि तुम जीवन को जानते हो तो तुम मृत्यु को भी जानोगे। यदि तुम पूछते हो कि मृत्यु क्या है तो इसका अर्थ है कि तुमने जीवन को जीआ ही नहीं- क्योंकि नीचे गहराई में वे एक ही हैं। जीवन का रहस्य क्या है जीवन का रहस्य है मृत्यु। यदि तुम प्रेम करते हो तो प्रेम का रहस्य क्या है मृत्यु यदि तुम ध्यान करते हो तो ध्यान का रहस्य क्या है? मृत्यु।
जो कुछ भी होता है वह सुंदर और तीव्र है और वह हमेशा मृत्यु के द्वारा
ही होता है। तुम मर जाते हो। तुम सामान्य रूप से स्वंय अपने की उसमें पूर्णतया से लाते ही और प्रत्येक अन्य वस्तु अथवा व्यक्ति के लिए भी मर जाते हो। तुम इतने अधिक तीव्र होते हो, कि तुम वहां होते ही नहीं हो, क्योंकि यदि तुम वहां हो तो तब तीव्रता पूर्ण नहीं हो सकती, तब वहां दो होते हैं, यदि तुम प्रेम करते हो और प्रेमी वहां है, तब प्रेम तीव्र नही हो सकता प्रेम इतना अधिक गहन है, वह इतना अधिक पूर्ण हैं कि प्रेमी विलुप्त हो जाता है तब तुम केवल एक गतिशील ऊर्जा होते हो। तब तुम प्रेम को जानोगे, तुम जीवन को जानोगे और मृत्यु को भी जानागे।
ये तीन शब्द बहुत अधिक अर्थपूर्ण है: प्रेम, जीवन और मृत्यु। उनका रहस्य समान है और यदि तुम उनको समझते हो तो इस बारे में कोई ध्यान करने की जरूरत ही नहीं है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि तुम उन्हें नहीं समझते हो कि ध्यान की जरूरत है। ध्यान केवल फालतू पहिया है यदि तुम वास्तव में प्रेम करते हो तो वह ध्यान बन जाता है यदि तुम प्रेम नहीं करते हो, तब तुम्हें ध्यान करना पड़ेगा। यदि वास्तव में जीते हो, तो वह ध्यान बन जाता है यदि तुम नहीं जीते हो तो तुम्हें ध्यान करना होगा, और तब उसमें कुछ अन्य चीज भी जोड़नी होगी।
लेकिन यही समस्या है यदि तुम गहनता से प्रेम नही कर सकते तो तुम गहनता
से ध्यान कैसे कर सकते हो? यदि तुम गहनता से जी नहीं सकते तो तुम गहनता से ध्यान कैसे कर सकते हो? क्योंकि समस्या न तो प्रेम है, न ध्यान है और न मृत्यु है, समस्या है कि कैसे गहराई तक गतिशील हुआ जाए? प्रश्न है गहराई का।
यदि तुम किसी भी चीज की गहराई में गतिशील होते हो तो जीवन तो परिधि पर होगा और मृत्यु केन्द्र में होगी। यदि तुम प्रत्येक चीज को भूलकर एक पफूल का समग्रता से निरीक्षण करते हो तो फूल का निरीक्षण करने में तुम फूल में ही मर जाओगे, तुम्हें पिघलने और एक विलय हो जाने का अनुभव होगा। अचानक तुम अनुभव करोगे कि तुम नहीं हो और केवल पफूल ही हैं।
प्रत्येक क्षण को यों जियो, जैसे मानो यह अंतिम क्षण हो और कोई भी नहीं जानता वह अंतिम ही हो सकता है।
दोनों ही सद्गुरू जेनगेन में एक सचेतना लाने का प्रयास कर रहे थे।
जब सेकीसो ने शिक्षा द्वारा बताई गई पूरी कहानी को सुना तो उसने कहा: "मैं कुछ भी नहीं कह रहा हूं और यह बात अंतिम है" उसने उन्हीं शब्दों
को दोहरा दिया जो डोगो ने कहे थे। पहली बार तो शिष्य चूक गया था, लेकिन दूसरी बार नहीं।
तुरन्त उसी वास्तविक क्षण में
जेनगेन को जागरण का अनुभव हुआ।
अचानक बिजली कौंधी....-- वह सचेत हुआ...एक सटोरी घटित हुई पहली बार वह चूक गया था ऐसा लगभग हमेशा होता है पहली बार तुम चूक जाओगे, क्योंकि तुम नहीं जानते कि क्या घटित हो रहा है। पहली बार, मन की पुरानी आदतें तुम्हें देखने और समझने की अनुमति नहीं देगी, इसी कारण दूसरे सद्गुरू सकीसो ने, पुरी तरह से डोगो के ही शब्दों को दोहरा दिया। उसने उन्हें पूरी तरह से दोहरा दिया। उसने एक भी शब्द का परिवर्तन नहीं किया। वह वास्तविक पंक्ति समान है।
उसने कहा: "मैं कुछ भी कह रहा हूं और यह बात अंतिम है।"
उसने पुनः समान स्थिति सृजित कर दी।

डोगो के साथ लड़ना सरल था, पर सेकीसो से लड़ना सरल नहीं है। वह ज़ेनगेन का सद्गुरू नहीं है। डोगों पर प्रहार करना सरल था पर सेकीसो पर प्रहार करना संभव नहीं होगा। इतना ही पर्याप्त है कि वह उत्तर दे रहा है यह उसकी करूणा है, पर वह उत्तर देने के लिए बाध्य नहीं है।
डोगो और इस शिष्य के मध्य वहां एक घनिष्ठता थी और कभी-कभी ऐसा होता है
कि जब तुम बहुत अंतरंग होते हो तो तुम चूक सकते हो, क्योंकि तुम सभी चीजों को सच्चा मानकर चलते हो। कभी- कभी एक दूरी की जरूरत होती है, और यह उस व्यक्ति पर निर्भर करता है।
कुछ लोग केवल तभी सीख सकते है जब वहां एक दूरी होती है और कुछ लोग केवल तभी सीख सकते है जब वहां दूरी नही होती है। वहां दो तरह के लोग होते है वे लोग जो एक दूरी से सीख सकते है वे एक सद्गुरू से चूक जायेगें वे अपने ही सद्गुरू से चूक जायेंगे लेकिन वह उन्हें तैयार करता है तुममें से अनेक लोग यहां है जिन्होनें अनेक जन्मों में अनेक दूसरे सद्गुरूओं के साथ कार्य किया है। तुम उनसे चूक गए हो, लेकिन उन्होनें तुम्हें मुझ तक पहुंचने के लिए तैयार किया है। तुममें से अनेक मुझसे चूक जायेगें। लेकिन किसी अन्य सद्गुरू तक पहुंचाने के लिए मुझे तुम्हें तैयार करना होगा। इसलिए कुछ भी खोता नहीं है और न कोई भी प्रयास व्यर्थ जाता है।
डोगो ने स्थिति सृजित की, सेकीसो ने उसे परिपूर्ण किया।
तुरन्त उसी वास्तविक क्षण में
जेनगेन को जागरण का अनुभव हुआ।
हुआ क्या़? समान शब्दों को पिफर से सुनने पर क्या वहां एक विशिष्ट सांठगांठ है? फिर से समान शब्द ही क्यों? अचानक वह सचेत हुआ। मेरा प्रश्न अंसंगत है। मैं कुछ ऐसी बात पूछ रहा हूँ जिसका उत्तर नहीं दिया जा सकता। वह सद्गुरू नहीं है जो उत्तर देने से इन्कार कर रहे है यह मेरा वास्तविक प्रश्न ही ऐसी प्रकृति का है।
मृत्यु के पूर्व, जीवन से पूर्व, और प्रेम के पूर्व एक मौन जरूरत होती
है यदि तुम एक व्यक्ति से प्रेम करते हो, तो उस व्यक्ति के साथ मौन बैठे रहो। तुम व्यर्थ की बातें नहीं करना चाहोगे। तुम उस क्षण में केवल एक दूसरे का हाथ थामे हुए मौन बने रहकर जीना चाहोगे, यदि तुम बक-बक करते हो तो इसका अर्थ है कि तुम उस व्यक्ति से बच रहे हो और वहां वास्तव में प्रेम नहीं है। यदि तुम्हें जीवन से प्रेम है तो चटर-पटर छूट जाएगी, क्योंकि प्रत्येक क्षण जीवन के साथ इतना अधिक भरा हुआ है कि वहां बक बक करने के लिए ना तो कोई रास्ता है और न कोई अंतराल है। प्रत्येक क्षण जीवन इतनी अधिक प्राणशक्ति और स्पफूर्ति की बाढ़ से उभड़ रहा है कि गपशप और बक बक करने का समय ही कहां है प्रत्येक क्षण तुम पूर्णता से जीते हो कि मन शांत और मौन हो जाता है भोजन करो, और इतनी समग्रता से खाओ- क्योंकिभोजन के द्वारा ही तुम्हारे अंदर जीवन प्रविष्ट हो रहा है- कि मन शांत और मौन हो जाता है पानी पीओ और इतनी अधिक समग्रता से पीओ, क्योंकि पानी के द्वारा ही अंदर जीवन प्रविष्ट हो रहा है वह तुम्हारी प्यास बुझा देगा। वह जैसे ही तुम्हारी प्यास का स्पर्श करता है और जैसे ही प्यास लुप्त होती है उसके साथ गतिशील हो जाओ। मौन हो जाओ और निरीक्षण करो। जब तुम एक कप चाय पी रहे हो तो तुम बक-बक कैसे कर सकते हो। तुम्हारे अंदर एक उष्ण जीवन प्रवाहित हो रहा है उसके साथ ऊपर तक भर जाओ। सम्मानपूर्ण बने रहो।
इसलिए, जापान में चाय- समारोह अस्तित्व में है। और प्रत्येक घर जो एक
घर कहे जाने योग्य है उसके पास ठीक एक मंदिर के समान एक चाय पीने का कमरा होता है चाय, जो एक बहुत सामान्य चीज है- और उन लोगों ने उसे एक बहुत पावन स्तर तक ऊँचा उठा दिया है जब वे लोग चाय के कमरे में प्रवेश करते हैं तो वे परिपूर्ण मौन में प्रवेश करते है जैसे मानों वह एक मंदिर हो। वे लोग चाय के कमरे में मौन बैठते हैं तब चाय की केटली में पानी के खौलने का संगीत प्रत्येक व्यक्ति शांतिपूर्वक यों सुनता है जैसे समान मौन में तुम मुझे सुनते हो, और केटली लाखों गीत, वास्तविक जीवन-मंत्र ओंकार की ध्वनि गुनगुनाती चली जाती है और वे उसे शांतिपूर्वक सुनते है और तब चाय प्यालों में उड़ेली जाती है।

वे अपने प्याले और तश्तरी को छूते है और कृतज्ञता का अनुभव करते है कि
यह क्षण उन्हें पिफर से दिया गया। कौन जानता है कि पिफर से आना हो अथवा न हो तब वे चाय की सुंदर मधुर सुगंध को सुघंते हुए कृतज्ञता और अहोभाव से भर जाते है तब वे उसको सिप करना शुरू करते है और उसका स्वाद... उसकी गर्माहट और अपने अंदर उसका प्रवाह और उनकी अपनी ऊर्जा का चाय की ऊर्जा के साथ विलय हो जाता है
... वह एक ध्यान बन जाता है।
प्रत्येक चीज ध्यान बन सकती है, यदि तुम उसे समग्रता और तीव्रता के साथ जीते हो। और तब तुम्हारा जीवन पूर्ण हो जाता है।
अचानक, पुनः उन्हीं समान शब्दों को सुनते हुए जेनगेन को यह बोध हुआ,
मैं गलत था और सद्गुरू ठीक थे मैं गलत था क्योंकि मैनें सोचा: वह उत्तर नहीं दे रहे है वह मेरे प्रश्न की ओर ध्यान नहीं दे रहे है वह मेरे बारे में और मेरे पूछने के बारे में जरा भी पिफक्र नहीं कर रहे है मेरा अहंकार आहत हुआ था। लेकिन मैं गलत था। वह मेरे अहंकार पर चोट नहीं कर रहे थे बिल्कुल था ही नहीं। मृत्यु का वास्तविक स्वभाव ही ऐसा है... अचानक उसका जागरण हो गया।
इसे सटोरी कहा जाता है यह एक विशिष्ट प्रकार का बुद्वत्व है। किसी भी दूसरी भाषा में सटोरी के समतुल्य एक भी शब्द विद्यमान नहीं है। यह विशेष रूप से जेन की ही एक चीज है यह समाधि नहीं हैं और एक समाधि जैसी है भी। यह समाधि नहीं है, क्योंकि यह बहुत समान्य क्षणों में घटित हो सकती है जैसे चाय पीते हुए, टहलते हुए, एक पफुल की ओर देखते हुए ओैर तालाब मेंढक के तालाब में उछलने से उत्पन्न छपाकं की ध्वनि को सुनते हुए। यह चूंकि बहुत सामान्य क्षणों में घटित हो सकती है इसलिए यह समाधि की भांति नहीं है जिसके बारे में पंतजलि करते है।
पंतजलि इस पर पूरी तरह से आश्चर्य करते कि तालाब में एक मेंढक उछलता
है और उससे होने वाली छपाकं की ध्वनि सुनकर कोई व्यक्ति बुद्धत्व को उपलब्ध हो जाता है पंतजलि यह विश्वास करने में समर्थ ही न होते कि एक सूखा पत्ता वृक्ष से टेढ़े-मेढ़े ढंग से थोड़ा बहुत हवा में उड़ते हुए नीचे गिरता है और गहरे विश्राम में चला जाता है और उसी वृक्ष के नीचे बैठा हुआ एक व्यक्ति इसे देखकर ही बुद्वत्व को उपलब्ध हो जाता है। नहीं, पंतजलि इस पर विश्वास करने पर सहमत होते ही नहीं, वह कहेंगें यह अंसभव है, क्योंकि समाधि कुछ ऐसी विशिष्ट चीज है जो लाखों जन्मों के बहुत अधिक किये गए प्रयास के बाद ही आती है एक विशिष्ट दशा में घटित होती है।
सटोरी समाधि है और पिफर भी वह समाधि नहीं है। वह एक झलक है असाधारण की
वह एक बहुत साधारण झलक है, और वह सामान्य क्षणों में घटने वाली समाधि है। वह क्रमिक नहीं है, तुम डिग्रीज में गतिशील नहीं होते हो और वह आकस्मिक चीज भी है। वह ठीक पानी के सौ डिग्री तक खौलने वाले बिन्दु तक आने के समान है और तब एक छलांग लगती है और पानी भाप बन जाता है, वह आकाश में विलीन हो जाता है और तुम पीछा करके यह नहीं जान सकते कि वह कहां चला गया। निन्यानवे डिग्री तक वह खौल रहा है, उबल रहा है, लेकिन भाप नहीं बन रहा
है निन्यानवें डिग्री वापस लौटकर वह नीचे भी आ सकता है क्योंकि वह केवल गर्म था। लेकिन यदि वह सौ डिग्री से गुजर जाता है तब वहां अचानक एक छलांग होती है।
इस कहानी में भी ऐसी ही समान स्थिति है। डोगो के साथ जेनगेन क्रोध से उत्तप्तन्न हो गया लेकिन भाप न बन सका। वह पर्याप्त नहीं था उसे एक अन्य अधिक स्थिति की आवश्यकता थी, अथवा उसे बहुत अधिक स्थितियों की जरूरत थी तब सेवफीसो के साथ- समान स्थिति में अचानक कुछ चीज उस पर चोट करती है अचानक केन्द्र बिन्दु और गेस्टाल्ट बदल जाता है इस स्थिति तक वह सोचता रहा था कि वह उसका ही प्रश्न ही था, जिसका डोगो ने उत्तर नहीं दिया था। वह अंहकार केन्द्रीत हो गया था वह सोचता रहा था यह मैं हूं जिसकी सद्गुरू के द्वारा उपेक्षा की गई, उसकी उपेक्षा की गई। वह मेरे बारे में और मेरी जांच पड़ताल के बारे में पर्याप्त पिफक्र नहीं कर रहे थे उन्होंने मेरी और मेरी जिज्ञासा की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया।

अचानक वह अनुभव करता है वह में नहीं था जिसकी उपेक्षा की गई, अथवा सद्गुरू तटस्थ था अथवा उसने मेरी ओर ध्यान नहीं दिया। नहीं, वह मैं नहीं था- वह तो स्वयं प्रश्न ही ऐसा है, जिसका कि उत्तर नहीं दिया जा सकता है। जीवन और मृत्यु के रहस्यों के सामने प्रत्येक को मौन होता है गेस्टाक्स बदलता है। वह पूरी चीज को देख सकता है इसलिए वह एक झलक पाता है।
जब कभी भी गेस्टाल्ट बदलता है तुम एक झलक पाते हो। वह झलक ही सटोरी है। वह अंतिम नहीं है तुम उसे पिफर से खो दोगे। सटोरी के द्वारा तुम एक बुद्व नहीं हो जाओगे, इसी कारण मैं कहता हूँ कि वह एक समाधि है, और तब भी वह एक समाधि नहीं है। वह एक चाय के प्याले में एक सागर है। सागर, हां और तब भी वह एक सागर नहीं है वह एक बीजकोश में समाधि है वह तुम्हें एक झलक देती है एक खुलापन देती है जैसे मानो तुम एक अंधेरी रात में जंगल में भटक गए हो तुम नहीं जानते कि तुम कहां जा रहे हो तुम ठीक दिशा में जा रहे हो अथवा नहीं और तभी अचानक बिजली कौधती है। उस क्षण में तुम प्रत्येक चीज को देख सकते हो। तब प्रकाश लुप्त हो जाता हैं तुम उस बिजली की कौंध में पढ़ नहीं सकते क्योंकि वह एक क्षण में समाप्त हो जाती हैं। तुम आकाश के नीचे बैठकर बिजली की कौंध में पढ़ना शुरू नहीं कर सकते। नहीं वह एक निंरतर प्रवाह नहीं होता है।
समाधि कुछ ऐसी होती है कि तुम उसके प्रकाश में पढ़ सकते हो।
सटोरी बिजली की कोंध के समान होती है तुम उस पूर्ण की वह सभी कुछ जो वहां है एक झलक देख सकते हो, और तब वह लुप्त हो जाती है लेकिन पिफर तुम वैसे ही नहीं बने रहोगे। यह अंतिम रूप से बुद्वत्व नहीं है, लेकिन उसकी ओर बढ़ाया गया एक असाधारण कदम है। अब तुम जानते हो। तुम्हारे पास एक झलक थी अब तुम उसके लिए और अधिक खोज कर सकते हो। तुमने उसका स्वाद लिया है।
अब सभी बुद्व अर्थपूर्ण बन जायेंगे।
अब यदि जेनगेन डोगो से पिफर मिलता है तो वह उस पर प्रहार नहीं करेगा।
वह उसके चरणों पर गिर पड़ेगा और अपने किए की क्षमा मांगेगा। अब वह आंसू बहाते हुए रोयेगा। क्योंकि अब वह कहेगा, डोगो के पास कितनी अधिक करूणा थी, जो उसने मुझे अपने पर प्रहार करने की अनुमति देते हुए कहा-"ठीक है तुम आगे बढ़ो और मुझे पीट दो"
यदि वह डोगो से पिफर मिलता है, जेनगेन वैसा ही समान नहीं होगा। उसने
अब किसी चीज का स्वाद ले लिया है जिसने उसे बदल दिया है वह अंतिम स्थिति को उपलब्ध नहीं हुआ है अंतिम स्थिति तो अभी आयेगी- लेकिन उसने एक नमूना पा लिया है।
सटोरी पंतजलि की समाधि का एक नमूना है और यह बहुत सुंदर है कि नमूना पाना संभव है क्योंकि यदि तुमने उसका स्वाद नही लिया है तो तुम कैसे उसकी ओर आगे बढ़ सकते हो? यदि तुम उसकी थोड़ी सी सुबास भी नहीं लेते तो तुम उसकी ओर कैसे आकर्षित हो सकते हो और उसकी ओर खींचे जा सकते हो। झलक ही एक चुम्बकीय, शक्ति बन जाएगी। तुम पिफर वैसे ही कभी नही बने रहोगे। तुम जानोगे कि वहां कुछ तो बात है और क्या मैं उसे पा सकता हूं अथवा नहीं। यह मेरे ऊपर ही निर्भर है लेकिन तब श्रद्वा का जन्म होगा। सटोरी श्रद्वा देती है और तुम्हारे अंदर अंतिम बुद्वत्व की ओर जो समाधि है, एक विराट गतिविधियां और एक आन्दोलन होना शुरू हो जाता है।

और फूलों की बरसात हुई
छठवां प्रवचन

धर्नुविद्या की कला

लीह्त्सू ने अपनी धर्नुविद्या की कुशलता का पो-हुन-वू-जे के सामने प्रदर्शन किया।
जब उसने धनुष को उसकी पूरी लम्बाई तक खींचा।
तो एक पानी से भरा प्याला उसकी कोहनी के पास
रख दिया गया, और उसने तीर चलाना शुरू कर दिया।
जैसे ही पहला तीर हवा में उड़ते हुए गया, दूसरा तीर
पहले ही से प्रत्यंचा पर था, और तब तीसरे तीर ने
उसका अनुसरण किया। इसके मध्य समय में
वह बिना हिले डुले एक प्रस्तर प्रतिमा की भाँति खड़ा रहा।
पो हुन वू जेन ने कहा: तीर चलाने और निशाना साधने का कला-कौशल सुंदर
और अच्छा है।
लेकिन यह तीर न चलाने की कला कुशलता नहीं है।
हमको पहाड़ पर ऊपर चलना चाहिए और तब तुम आगे की ओर
उभरी चट्टान पर खड़े हो जाना, और तब तीर चलाने का प्रयास करना।
वे लोग एक पहाड़ पर चढ़े और एक आगे को निकली और उभरी हुई चट्टान पर
खड़े हो गए, जो एक दस हजार पफीट ऊँची ढालू कगार थी।
पो-हुन-वू-जेन पीछे की ओर खिसकता गया, जब तक कि उसके पैरों का
एक तिहाई भाग कगार के छोर पर झूलता न रह गया।
तब उसने लीह-त्सू को आगे बढ़कर आने का संकेत किया।
लीह- त्सू जैसे ही नीचे झुका उसकी एड़ियों के नीचे से
पसीना बहने लगा, और वह नीचे भूमि पर गिर पड़ा।
पो-हून-वू-जेन ने कहा: एक पूर्ण व्यक्ति नीले आकाश में
पंख खोलकर उड़ता है, अथवा वह बसंत में खिले पीले पुष्पों की घाटी में नीचे
छलांग लगाता है, अथवा वह विश्व की सभी आठों परीसीमाओं में
सभी स्थानों पर विचरण करता है, तो भी उसकी आत्मा में
परिवर्तन का एक चिन्ह तक नहीं दिखाई देता है
लेकिन तुमने घबड़ाहट के चिन्हों से यह प्रकट कर दिया।
और तुम्हारी आंखे स्तब्ध हैं और उनमें व्याकुलता छलक रही है
पिफर तुम कैसे लक्ष्य पर प्रहार करने की आशा कर सकते हो?

क्रिया को कुशलता की जरूरत होती है। लेकिन अक्रिया को भी कुशलता की जरूरत होती है। क्रिया की कुशलता केवल बाहर परिधि पर होती है पर अक्रिया की कुशलता तुम्हारे अस्तित्व के प्रामाणिक केन्द्र पर होती है। क्रिया की कुशलता बहुत सरलता से सीखी जा सकती है वह उधार ली जा सकती है तुम उसमें शिक्षित हो सकते हो। क्योंकि वह और कुछ भी नहीं बल्कि एक कला कुशलता है। वह तुम्हारी आत्मा नहीं है, वह केवल एक कला है।
लेकिन अक्रिया की कला कुशलता अथवा दक्षता बिल्कुल भी कला कुशलता है
ही नहीं। तुम उसे किसी अन्य व्यक्ति से भी नहीं सीख सकते, वह सीखी नहीं जा सकती, वह तुम्हारे विकसित होने के साथ विकसित होती है। वह तुम्हारे अंतरस्थ के विकास के साथ विकसित होती है और वह एक खिलावट है। बाहर से उसके लिए कुछ भी नहीं किया जा सकता। अंदर से ही कुछ चीज विकसित करनी है। क्रिया की दक्षता बाहर से आती है और अंदर जाती है, पर अक्रिया की निपुणता अंदर से आती है और बाहर प्रवाहित नहीं होती है उनके आयाम पूर्ण रूप से भिन्न है, वे प्रत्यक्ष रूप से विरोधी है। इसलिए पहले इसे समझने का प्रयास करो, तभी हम इस कथा में प्रवेश करने में समर्थ होंगें।
उदाहरण के लिए केवल कला को सीखने से तुम एक चित्रकार बन सकते हो, कलाविद्यालयों में जो कुछ भी सिखाया जाता सकता है तुम वह सभी कुछ सीख सकते हो। तुम निपुण हो सकते हो और तुम सुंदर चित्र बना सकते हो और तुम संसार में

एक प्रसिद्ध व्यक्ति भी बन सकते हो। कोई व्यक्ति भी यह जानने में समर्थ न होगा कि यह केवल कलाकुशलता है, जब तक कि तुम एक सद्गुरु के मध्य से होकर नहीं गुज़रते हो, लेकिन तुम हमेशा जानोगे कि यह केवल कलापटुता है। तुम्हारे हाथ कुशल हो गए है, तुम्हारी बुद्धि जानती है कि कैसे जाना जाए, लेकिन तुम्हारा हृदय प्रवाहित नहीं हो रहा है तुम चित्र बनाते हो, लेकिन तुम एक चित्रकार नहीं हो। तुम कला का एक नमूना सृजित कर सकते हो, लेकिन तुम एक कलाकार नहीं हो। तुम उसे करते हो लेकिन तुम उसमें नहीं होते हो। जैसे तुम दूसरे अन्य कार्य करते हो तुम उसे भी करते हो। लेकिन तुम एक प्रेमी नहीं हो। तुम पूर्ण रूप से उससे चिपके हुए नहीं हो, तुम्हारी अंदर की आत्मा उससे अलग और उदासीन बनी रहती है और एक किनारे दूर खड़ी रहती है। तुम्हारी बुद्वि और तुम्हारे हाथ, वे कार्य किए चले जाते है, लेकिन तुम वहां नहीं हो। वह चित्र तुम्हारी उपस्थिति अपने साथ लेकर नही चलेगा। वह तुम्हें साथ लेकर नहीं चलेगा। वह तुम्हारे हस्ताक्षर साथ लिए हुए चल सकता है लेकिन तुम्हारी आत्मा को नहीं।
एक सद्गुरू तुरंत जान जायेगा, क्योंकि वह चित्र मृत होगा। तुम एक मुर्दे को सजाकर भी सुंदर बना सकते हो, तुम एक मुर्दे का भी चित्र बना सकते हो, तुम उसके होठों पर लिपिस्टिक भी लगा सकते हो और वे लाल दिखाई देंगें, लेकिन लिपिस्टिक कितनी भी लाल क्यों न हो, उसमें प्रवाहित होते हुए रक्त की ऊष्मा नहीं हो सकती है। वे होंठ- चित्रित तो होगें लेकिन उनमें कोई भी जीवन न होगा।
तुम एक सुंदर चित्र बना सकते हो, लेकिन वह जीवंत न होगा। वह केवल तभी जीवंत हो सकता है यदि तुम उसके अंदर प्रवाहित होते हो। जब एक सद्गुरू और एक साधारण चित्रकार चित्र बनाते हैं तो उनके मध्य वही अंतर होता है। एक साधारण चित्रकार वास्तव में हमेशा अनुकरण करता है क्योंकि वह चित्र स्वयं उसके अंदर से उत्पन्न नहीं हो रहा है यह कुछ ऐसी चीज नहीं है जिसके साथ वह परिपूर्ण है। वह दूसरों की नकल करेगा, उसे विचारों के लिए इधर-उधर देखना होगा, वह प्रकृति का अनुकरण कर सकता है- पर उससे कोई भी अंतर नहीं पड़ता है वह एक वृक्ष की ओर देखते हुए उसका चित्र बना सकता है, लेकिन वह वृक्ष उसके अंदर विकसित नहीं हुआ है।
वानगॉग के द्वारा चित्रित वृक्षों की ओर देखो। वे पूर्ण रूप से भिन्न हैं। तुम प्रकृति के संसार में उस तरह के वृक्ष नहीं खोज सकते। वे पूर्ण रूप से भिन्न हैं वे वानगॉग का सृजन हैं, वह उन वृक्ष के द्वारा जी रहा है। वे तुम्हारे चारों ओर के सामान्य वृक्ष नहीं है उसने प्रकृति से उनका अनुकरण करते हुए उनकी प्रतिलिपि नहीं बनाई है और न उसने किसी अन्य व्यक्ति का ही अनुसरण किया है। यदि वह एक परमात्मा हुआ होता तब उसने संसार में उन वृक्षों को सृजित किया होता। चित्रकला में वह परमात्मा है वह सृष्टा है। वह विश्व के सृष्टा की भी नकल नहीं कर रहा है। वह पूरी तरह से स्वयं ही अस्तित्व में है। उसके बनाये वृक्ष इतने अधिक ऊँचे हैं कि वे विकसित होते हुए चाँद ओैर तारों को छूते हैं।
किसी व्यक्ति ने वानगॉग से पूछा-"ये किस तरह के वृक्ष है इनका विचार तुमने कहां से पाया?"
वानगॉग ने कहा: "मैं कहीं और से कल्पना भावना और विचार नहीं लिया करता हूँ, ये मेरे वृक्ष है यदि मैं सृष्टा था, तो मेरे वृक्ष सितारों को छूते क्योंकि मेरे वृक्षों के पास पृथ्वी की कामनाएं और सितारों को छुने के पृथ्वी के सपने है और चूंकि पृथ्वी सितारों तक पहुंचने और उसे छूने का प्रयास कर रही है, इसलिए ये वृक्ष पृथ्वी के हाथ है, और पृथ्वी के ही सपने और कामनाएं है।"
लेकिन ये वृक्ष अनुकरण नहीं है वे वान गॉग के वृक्ष है।
एक सृष्टा के पास संसार को देने के लिए कुछ चीज होती है कुछ चीज उसके साथ उसके गर्भ में होती है। निश्चित रूप से एक वानगॉग के लिए भी कला- कुशलता जरूरी है, क्योंकि उसके लिए हाथों की आवश्यकता होती है। वानगॉग भी बिना हाथों के चित्र नहीं बना सकता- यदि तुम उसके हाथों को काट देते हो, तो वह क्या करेगा। उसको कला- कुशलता की भी आवश्यकता होती है, लेकिन कला- निपुणता सूचना देने का केवल एक ढंग है। कला- पटुता केवल एक वाहन और एक

माध्यम है। कला-कुशलता संदेश नहीं है और न माध्यम एक संदेश है। माध्यम सामान्य रूप से संदेश वहन करने का एक वाहन है उसके पास एक संदेश है प्रत्येक कलाकार एक पैगम्बर होता है- उसे होना ही होता है।
प्रत्येक कलाकार एक सृष्टा है- उसें होना ही है, क्योंकि उसके पास बांटने को कुछ चीज है। निश्चित रूप से कला- कुशलता जरूरी है। यदि मुझे कुछ बात तुमसे कहना है तो शब्दों की जरूरत होती है लेकिन यदि मैं केवल शब्द ही कह रहा हूँ, तब वहां कोई भी संदेश नहीं है, तब यह पूरा कार्य केवल एक व्यर्थ की बकवास है तब मैं दूसरों पर कूड़ा- कचरा पफेंक रहा हूँ। लेकिन यदि शब्द मेरे मौन को वहन कर रहे हैं, यदि शब्द मेरे शब्दहीन संदेश तुम तक साथ ले जा रहें है, केवल तभी कुछ बात कही गई है।
जब किसी बात को कहना है, तो उसे शब्दों में ही कहना होगा, लेकिन जो कुछ
भी कहना है, वे शब्द नहीं है जब किसी चीज को चित्रित करना होता है, तो उसे रंग, बु्रश के द्वारा कैनवास पर ही चित्रित करना होता है, और उसमें पूरी कला-पटुता की जरूरत है- लेकिन कला- पटुता ही संदेश नहीं है। माध्यम के द्वारा ही संदेश दिया जाता है लेकिन माध्यम स्वयं में पर्याप्त नहीं है। एक कला- कुशल व्यक्ति के पास माध्यम होता है, वह एक पूर्ण कुशल माध्यम
हो सकता है लेकिन उसके पास देने को कुछ भी नहीं है उसके पास कोई संदेश नहीं है उसका हृदय अतिरेक से नहीं उमड़ रहा है। वह कुछ कार्य हाथ के साथ और बुद्धि के साथ कह रहा है क्योंकि सीखना बुद्धि में होता है और उसे कैसे जाना जाये यह कुशलता हाथ में होती है। बुद्धि और हाथ सहयोग करते है लेकिन हृदय बिना किसी स्पर्श के अलग बना रहता है तब चित्र तो वहां होगा, लेकिन वह बिना एक हृदय के होगा। वहां उसमें कोई भी धड़कन नहीं होगी, वहां उसमें जीवन की किसी नाड़ी की कोई पफड़पफड़ाहट नहीं होगी और न उसमें कोई भी रक्त प्रवाह होगा- इसे देखना बहुत कठिन है- तुम केवल तभी देख सकते हो यदि तुम स्वयं अपने अंदर ही उस अंतर को जानते हो।
एक दूसरा उदाहरण लो, जो समझने में सरल होगा। तुम एक व्यक्ति से प्रेम करते हो, तुम उसे चूमते हो, तुम उसका हाथ अपने हाथ में लेते हो तुम उसे आलिगंन में लेते हो, और तुम उससे प्रेम करते हो। ये सभी चीजें एक ऐसे व्यक्ति के साथ भी की जा सकती है जिससें तुम प्रेम नहीं करते हो- ठीक उसी तरह का चुम्बन, ठीक उसी तरह का आलिंगन, ठीक उसी तरह से हाथों का थामना और प्रेम करते हुए वैसी ही मुद्राएं बनाना और वैसी ही गतिविधियाँ करना- लेकिन तुम उस व्यक्ति से प्रेम नहीं करते हो। इसमें अंतर क्या होगा? क्योंकि जहां तक क्रिया का संबध है, इस बारे में कोई भी अंतर नही है तुम चुम्बन लेते हो और उसी तरह से जितनी अधिक पूर्णता से संभव है चुम्बन लेते हो। माध्यम वहां है लेकिन वहां संदेश नहीं है। तुम कला कुशल हो, लेकिन तुम्हारा हृदय वहां नही है। वह चुम्बन मृत है। वह पक्षी के उड़ने के समान मुक्त नहीं है वह एक मृत पत्थर की भाँति है।
तुम प्रेम करते समय समान गतिविधियाँ उत्पन्न कर सकते हो, लेकिन वे गतिविधियाँ योग के व्यायाम के समान होगीं, वे उससे अधिक नहीं होगी। वे प्रेम नहीं बनेगी। तुम एक वेश्या के पास जाते हो, वह कला कुशलता जानती है- तुम्हारी प्रेमिका की अपेक्षा कहीं अधिक अच्छी तरह से जानती है उसे जानना ही होता है वह अपने धंधे में निपुण है लेकिन तुम वहां प्रेम नहीं पाओगे। यदि अगले दिन तुम उस वेश्या से सड़क पर मिलते हो, तो वह तुम्हें पहचानेगी भी नहीं। वह "हलो" भी नही कहेगी, क्योंकि कोई संबध अस्तित्व में नहीं है। दूसरा व्यक्ति वहां नही था, और वह एक सम्पर्क न था। तुमसे प्रेम करते समय, वह हो सकता है अपने प्रेमी के बारे सोच रही हो। वह वहां नहीं थी, वह हो भी नहीं सकती थी। वेश्याओं को वहां कैसे अनुपस्थित होकर रहा जाए, यह कला- पटुता सीखनी होती है- क्योंकि वह पूरा कार्य इतना अधिक कुरूप होता है। तुम शरीर को बेच सकते हो पर तुम प्रेम को नहीं बेच सकते तुम अपने कौशल
को बेच सकते हो, पर तुम अपने हृदय को नहीं बेच सकते। एक वेश्या के लिए प्रेम करना एक कारोबारी चीज है वह उसे धन के लिए कर रही है और उसे यह भी सीखना है कि कैसे वहां न हुआ जाए, इसलिए वह अपने प्रेमी के बारे में सोचेगी, वह एक हजार एक चीजों के बारे में सोचेगी, लेकिन तुम्हारे बारे में और जो व्यक्ति वहां मौजूद है उसके बारे में नहीं सोचेगी। क्योंकि उस

व्यक्ति के बारे में सोचना, जो वहां है, बाधा उत्पन्न करेगा। वह वहां नहीं होगी। वह अनुपस्थित होगी। वह गतिविधियाँ उत्पन्न करेगी। वह उसमें कुशल है लेकिन वह उसमें लिप्त नहीं है।
इस घटना का यही प्रयोजन है। तुम इतने अधिक कुशल बन सकते हो कि तुम पूरे संसार को धोखा दे सकते हो, लेकिन तुम स्वयं को धोखा कैसे दोगे? यदि तुम स्वंय को धोखा नहीं दे सकते हो तो तुम बुद्वत्व को उपलब्धएक सद्गुरू को भी धोखा नहीं दे सकते। वह तुम्हें सभी युक्तियों के द्वारा देखेगा, जो तुमने अपने चारो और सृजित की है। वह देखेगा कि तुम अपनी कला- कुशलता में वहां नही हो, यदि तुम एक धर्नुधारी हो तो तुम लक्ष्य पर कुशलता से प्रहार कर सकते हो लेकिन प्रयोजन वह नहीं है। एक वेश्या भी तुम्हें संभोग के सर्वोच्च शिखर पर ले जाती है वह जितनी अधिक निपुणता से संभव हो सकता है लक्ष्य पर चोट करती है और कभी- कभी तो तुम्हारी अपनी प्रेमिका की अपेक्षा भी कहीं अधिक कुशलता से लेकिन प्रयोजन यह नहीं है क्योंकि यद्यपि एक व्यक्ति अधूरा बना रहता है पर एक कला- पटुता उसे सरलता से पूरा बना सकती है।
एक व्यक्ति अधूरा बना रहता है यदि वह बुद्वत्व को उपलब्ध नहीं हो जाता है। बुद्वत्व घटित होने से पूर्व तुम एक व्यक्ति से पूर्ण कुशलता की आशा नहीं कर सकते हो। लेकिन तुम उससे एक कौशल की पराकाष्ठा पर पहुँचने की आशा कर सकते हो। तुम उसकी आत्मा में परिपूर्णता की आशा नहीं कर सकते हो, लेकिन उसकी क्रिया में यह आशा की जा सकती है उस बारे में वहां कोई भी समस्या नही है एक धर्नुधारी बिना लक्ष्य को चूके हुए निशाना लगा सकता है और उसमें नहीं हो सकता है उसने वह कला- कुशलता सीख ली है, वह एक यांत्रित्व एक रोबो बन गया है वह कार्य सामान्य रूप से बुद्वि और हाथों के द्वारा किया जा रहा है।
अब हम इस कहानी में प्रवेश करने का प्रयास करने है। जापान और चीन में अनेक युक्तियों के द्वारा ध्यान सिखाया जाता है और उनमें धर्नुविद्या की कला भी एक है। भारतीय ध्यान तथा चीनी, जापानी और बौद्व ध्यानों के मध्य यही एक अंतर है भारत में ध्यान जीवन में सभी क्रियाओं से हटकर किया जाता रहा है। वह स्वयं अपने में एक पूर्ण विषय है। उसने कठिनाई उत्पन्न की- इसी कारण भारत में धर्म धीमे-धीमें मर गया। उसने एक कठिनाई उत्पन्न की और वह कठिनाई यह है: यदि तुम ध्यान को ही पूरा विषय बना लेते हो, तब तुम समाज पर एक बोझ बन जाते हो। तब तुम अपनी दुकान पर नहीं जा सकते, तुम अपने दफ्तर नहीं जा सकते और तुम कारखाने में कार्य नहीं कर सकते ध्यान तुम्हारा पूरा जीवन बन जाता है तुम पूरी तरह ध्यान ही करते हो। भारत में, लाखों लोग पूरी तरह ध्यान करते हुए ही जीवित रहे और वे लोग समाज पर एक बोझ बन गए, ओैर यह बोझ बहुत अधिक था। किसी न किसी तरह से समाज को उसे रोकना पड़ा।
अब भी, आज लगभग भारत में दस लाख संयासी विद्यमान है। अब उन लोगों का सम्मान नहीं किया जा सकता है। केवल थोड़े से... उन दस लाख में दस का भी सम्मान नहीं किया जाता है वे लोग बस भिखारी बन गए हैं। इस रवैय के कारण जब तुम ध्यान करते हो, जब धर्म ही तुम्हारा जीवन बन जाता है, तब वहां केवल धर्म ही रह जाता है तब तुम जीवन में सभी कुछ छोड़ देते हो। उसका परित्याग कर देते हो। भारतीय ध्यान एक तरह से जीवन-विरोधी है। तुम थोड़े से लोगों को बर्दाश्त कर सकते हो, लेकिन तुम लाखों लोगों को बर्दाश्त नहीं कर सकते हो, और यदि पूरा देश ही ध्यानी बन जाए, तो तुम क्या करोगे? और यदि ध्यान प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपलब्ध नहीं हो सकता, तो इसका अर्थ है कि धर्म का भी अस्तित्व केवल थोड़े से लोगों के लिए ही है और धर्म में भी वर्ग विद्यमान है और परमात्मा भी सभी लोगों को उपलब्ध नहीं है। नहीं, यह नहीं हो सकता। परमात्मा सभी के लिए उपलब्ध है।
भारत में बौद्व धर्म मिट गया। भारत में जिस बौद्व धर्म का स्त्रोत
है। वहीं बौद्व धर्म मर गया, क्योंकि बौद्व भिक्षु एक भारी बोझ बन गए। लाखों बौद्व भिक्षुओं को देश बर्दाश्त न कर सका, उनको सहारा देना असंभव था और उनको मिटना ही पड़ा।
बौद्व धर्म पूरी तरह से विलुप्त हो गया, भारतीय चेतना की जिसमें असाधारण खिलावट हई और वह लुप्त हो गया, क्योंकि तुम एक परजीवी बनकर जीवित

नहीं रह सकते। थोडे़ दिनों तक तो ठीक है थोड़े से वर्षो के लिए भी ठीक है भारत ने उसे बर्दाश्त किया- यह एक महान सहनशील देश है, वह प्रत्येक चीज सहन करता है लेकिन तब वहां एक सीमा होती है हजारों मठ लाखों भिक्षुओं से भर गए। इस निर्धन देश के लिए उनको सहारा देना असंभव हो गया। उन्हें विलुप्त होना ही पड़ा। चीन में, जापान में बौद्व धर्म जीवित रहा क्योंकि बौद्व धर्म ने एक परिवर्तन लिया। वह एक परिवर्तन से होकर गुजरा- उसने जीवन को परित्याग करने का विचार छोड़ दिया। वस्तुतः इसके विपरीत उसने ध्यान को ही जीवन की विषय- वस्तु बनाया।
इसलिए तुम चाहे कुछ भी करते हो, तुम उसे ध्यानपूर्ण होकर कर सकते हो।
इस बारे में उस कार्य को छोड़ने की कोई भी आवश्यकता नहीं है।
यह एक नया विकास था और यही बौद्व धर्म के ज़ेन का आधार है जीवन को अस्वीकार नहीं करना है। एक जेन भिक्षु कार्य किये चले जाता है वह बगीचे में कार्य करेगा, वह खेतों में कार्य करेगा और वह अपने परिश्रम पर जीता है। वह परजीवी नहीं हैं वह एक प्यारा व्यक्ति है उसे समाज के बारे में फिक्र करने की जरूरत नहीं है और वह उस व्यक्ति की अपेक्षा जिसने समाज का परित्याग कर दिया है कहीं अधिक स्वंतंत्र है तुम समाज से कैसे मुक्त हो सकते हो, यदि तुमने उसका परित्याग कर दिया है? तब तुम स्वतंत्र नहीं हो, तुम एक परजीवी बन जाते हो- और एक परजीवी के पास स्वतंत्रता नहीं हो सकती। यही मेरा संदेश भी है समाज में बने रहो और एक संयासी बनो। कभी भी एक परजीवी मत बनो। किसी भी व्यक्ति पर आश्रित मत बनो। क्योंकि प्रत्येक तरह की निर्भरता और आश्रय अंतिम रूप से तुम्हें एक गुलाम बना देगा। वह तुम्हें मुक्त नहींं बना सकता वह तुम्हें पूर्ण रूप से एक स्वंतत्र व्यक्ति नहीं बना सकता।
चीन और जापान में उन लोगों ने ध्यान को सहारा देने, एक सहायता और विषय वस्तु की भाँति अनेक और कौशलों का प्रयोग करना प्रारम्भ किया है धनुविधा उनमें से एक है और धनुर्विद्या सुंदर और आकर्षक हैं क्योंकि यह एक बहुत सूक्ष्म कौशल है और तुम्हें उसमें कुशल बनने के लिए बहुत अधिक सजगता की जरूरत होती है।
लीहत्सू ने अपनी धनुर्विद्या की कुशलता का
सद्गुरू पो-हुन- वू जेन के सामने प्रदर्शन किया।
पो-हुन- वू- जेन एक बुद्वतव का उपलब्ध सद्गुरू था। बाद में लीहत्सू स्वंय भी बुद्वत्व को उपलब्ध हुआ। इस कहानी का संबध उसकी खोज करने के दिनो का है। लीहत्सू स्वयं अपनी योग्यता से ही एक सद्गुरू बना। लेकिन यह कथा उसके बुद्वत्व को उपलब्ध होने के पूर्व की है।
लीहत्स ने प्रदर्शन किया...
प्रदर्शन करने की कामना एक अज्ञानी मन की कामना है। तुम प्रदर्शन क्यों करना चाहते हो? तुम क्यों चाहते हो कि लोग तुम्हें जाने? उसका क्या कारण है और तुम प्रदर्शन को अपने जीवन में क्यों इतना अधिक महत्वपूर्ण बनाते हो, कि लोग यह सोचें कि तुम बहुत महत्वपूर्ण प्रभावी और एक असाधारण व्यक्ति हो क्यों? क्योंकि तुम्हारे पास आत्मा नहीं है तुम्हारे पास केवल एक अहंकार है जो आत्मा का एक प्रतिरूप है।
अंहकार महत्वपूर्ण नहीं है, महत्वपूर्ण है आत्मा, लेकिन वह तुम्हें ज्ञात नहीं है और एक व्यक्ति बिना में की अनुमति के नहीं जी सकता। "मैं" की अनुभूति के बिना जीना बहुत अधिक कठिन है तब तुम किस केन्द्र से कार्य करते हुए शक्ति और अधिकार पाओगे? तुम्हें एक "मैं" की आवश्कता है यदि वह झूठा भी है तो भी सहायक होगा। बिना मैं के तुम पूरी तरह से देहलीज पर ही खण्ड-खण्ड हो जाओगे। कौन तुम्हारे खण्डों को जोड़कर पूर्ण बनायेगा। किस केन्द्र से तुम कार्य करोगे?
यदि तुम आत्मा को नही जानते हो। तुम्हें अहंकार के साथ ही जीना होगा। अहंकार का अर्थ है आत्मा का एक प्रतिरूप, नकली आत्मा, तुम आत्मा को नहीं जानते इसलिए तुम अपना आत्म स्वयं सृजित कर लेते हो। यह एक मानसिक सृजन है और किसी भी चीज के लिए जो नकली होती है तुम सहारे और समर्थन बनाते हो।
प्रदर्शन तुम्हें एक अबलम्ब देता है।

यदि कोई व्यक्ति कहता है तुम एक सुदंर व्यक्ति हो, तो तुम अनुभव करना शुरू कर देते हो कि तुम सुंदर हो। यदि कोई भी व्यक्ति ऐसा नही कहता है तो तुम्हारे लिए यह अनुभव करना कठिन हो जाएगा। कि तुम सुंदर हो, तुम संदेह और संशय करना शुरू कर दोगे। यदि तुम कुरूप व्यक्ति से भी निंरतर कहते हो तुम सुंदर हो तो उसके मन से कुरूपता छूट जाएगी और वह यह अनुभव करना शुरू कर देगा कि वह सुंदर है क्योंकि दूसरों के मतों पर निर्भर करता है वह लोगों की राय इकट्ठी करता है और उन पर आश्रित होता है।
अंहकार इस पर आश्रित है कि लोग तुम्हारे बारे में क्या कहते है यदि लोग तुम्हारे बारे में अच्छा अनुभव करता है तो अंहकार को भी अच्छा लगता है यदि वे बुरा महसूस करते है तो अंहकार को बुरा लगता है यदि वे तुम्हारी ओर कोई भी ध्यान नहीं देते है तो समर्थन वापस ले लिया जाता है यदि अनेक लोग तुम्हारी ओर ध्यान देते है तो वे तुम्हारे अंहकार को भोजन देते है यही कारण है कि इतना अधिक ध्यान देते है तो वे तुम्हारे अंहकार को भोजन देते है- यही कारण है कि इतना अधिक ध्यान निंरतर मांगा जाता है
एक छोटा बच्चा भी ध्यान मांगता है। वह शांत पूर्वक खेले चला जा सकता
है लेकिन जब एक मेहमान आता है... और मां ने बच्चे से कहा है कि जब मेहमान आता है तो उसे शांत बने रहना है। वह कहती है कोई भी शोर मत करना और न कोई परेशानी पैदा करना"- लेकिन जब मेहमान आता है तो बच्चे को कोई कार्य तो करना ही है क्योंकि वह भी उसका ध्यान चाहता है अैर वह कुछ अधिक चाहता है क्योंकि केवल विकसित होने के लिए वह अंहकार एकत्रित कर रहा है। वह और अधिक अंहकार का भोजन चाहता है और उससे शांत बने रहने को कहा गया है जो असंभव है उसे कुछ कार्य करना ही होगा। यदि उसे स्वयं को चोट भी पहुंचानी पड़े, वह गिर जायेगा। चोट का दर्द सहा जा सकता है लेकिन उसे ध्यान मिलना ही चाहिए, प्रत्येक व्यक्ति को उसकी ओर ध्यान देना चाहिए और उसे ध्यान का केन्द्र बनना चाहिए।
एक बार मैं एक घर में ठहरा। वहां बच्चे से अनिवार्य रूप से यह कहा गया
था कि जब मैं वहां रहूँ तो उसे कोई भी कठिनाई खड़ी नही करनी है और उसे तथा उसकी हर चीज को शांत बने रहना होगा। लेकिन बच्चा शांत बना नहीं रहा सका, वह मेरा भी ध्यान चाहता था इसलिए उसने शोर मचाना शुरू कर दिया, उसने इधर से उधर दोड़ते हुए चीजें फेंकना शुरू कर दी। मां बहुत नाराज हुई और उसे झिड़कते हुए उससे कहा सुनो यदि तुम यह सब किये चले जाते हो, तो मैं तुम्हें पीटने जा रही हूँ। लेकिन उसने जैसे उसे सुना ही नहीं। तब अंतिम रूप से उसने बच्चे से कहा "सुनो अब कुर्सी पर जाकर बैठ जाओ।"
उसकी प्रमाणिक मुद्रा से बच्चा समझ गया- अब बहुत अधिक हो गया और वह मुझे पीटने जा रही है इसलिए वह कुर्सी तक गया और वहां कुर्सी पर जाकर बैठ गया और मां की ओर देखते हुए उसने बहुत अर्थपूर्ण ढंग से कहा "ठीक है मैं बैठ रहा हूँ पर बाहर जाकर लेकिन अंदर से मैं यहां खड़ा हुआ हूं।"
बचपन से लेकर अपनी मृत्यु के अंतिम दिन तक, तुम ध्यान मांगते चले जाते हो। जब एक व्यक्ति मर रहा है तो उसके मन में लगभग हमेशा केवल एक ही विचार आता है- जब मैं मर जाऊँगा तो लोग मेरे बारे में क्या कहेंगे? मुझे अंतिम विदाई देने कितने अधिक लोग आयेगें। समाचार पत्रों में क्या प्रकाशित होगा? क्या कोई समाचार पत्र सम्पादकीय लिखने जा रहा है ये ही विचार है जो प्रायः आते है बिल्कुल प्रारम्भ से अंत तक हम उसी की ओर देखते हैं जो दूसरे कहते है उसे एक गहन जरूरत होना चाहिए।
अहंकार के लिए ध्यान ही भोजन है केवल एक व्यक्ति जो आत्मोपलब्ध हो गया है, वह इस आवश्यकता को छोड़ देता है जब तुम्हारे पास अपना एक केन्द्र होता है तो तुम्हें दूसरों का ध्यान पाने की जरूरत नहीं होती। तब तुम अकेले भी रह सकते हो। भीड़ में भी अकेले ही होगें, संसार में भी तुम अकेले होगें, तुम भीड़ में जाओगे, लेकिन अकेले बने रहोगे।
ठीक अभी तुम अकेले नही बने रह सकते। ठीक अभी यदि तुम हिमालय जाओ और घने जंगल में जाकर एक वृक्ष के नीचे बैठ जाओ, तुम किसी व्यक्ति की उधर से गुजरने की प्रतीक्षा करोगे, कम-से-कम किसी ऐसे व्यक्ति की जो संसार को यह संदेश ले जा सकता हो की तुम एक महान संत बन गए हैं। तुम प्रतीक्षा करोगे, तुम कई बार यह देखने की अपनी आंखे खोलोगे कि कोई व्यक्ति अभी तक आया अथवा

नहीं? ... क्योंकि तुमने यह कहानियाँ सुनी है कि जब कोई व्यक्ति संसार का परित्याग करता है तो पूरा संसार उसके चरण छूने आता है और अभी तक कोई भी व्यक्ति नहीं आया है न तो समाचार पत्र से कोई व्यक्ति न कोई रिपोर्टर न कोई कैमरामैन, कोई भी नहीं आया है तुम हिमालय पर नहीं जा सकते हो। जब किसी का ध्यान पाने की जरूरत छूट जाती है तुम जहां कभी भी हो, तुम हिमालय में ही होते हो।
लीहत्सू ने अपनी धर्नुविद्या की कुशलता का प्रदर्शन किया...
प्रदर्शन क्यों? उसकी अभी भी दिलचस्पी अंहकार के ही साथ थी वह अभी ध्यान पाने की ओर देख रहा था, और उसने अपने कौशल को पो-हुन-वो ज़ेन को दिखलाया जो बुद्वत्व को उपलब्ध एक सद्गुरू और एक बहुत वृद्व व्यक्ति था। कया कहती है कि वह बहुत-बहुत वृद्व था और जब लीहत्सू उसमें भेंट करने गया तो उसकी आयु लगभग नब्बे वर्ष की थी। वह पो-हुन- के पास क्यों गया? क्योंकि वह ख्याति प्राप्त सद्गुरू था, और यदि वह कहता है- हां लीहत्सू। तुम संसार में एक महान धर्नुधारी हो, तो वह एक ऐसा स्पूफर्तिमय भोजन होगा कि कोई एक उस पर हमेशा के लिए रह सकता है
जब उसने धनुष को उसकी पूरी लम्बाई तक खींचा
तो एक पानी से भरा प्याला उसकी कोहनी के पास रख दिया गया
और उसने तीर चलाना गुरू कर दिया।
और पानी से पूरे भरे प्याले में से जो उसकी कोहनी पर रखा हुआ था और जब
वह तीर चला रहा था, एक बूंद पानी भी नीचे नहीं गिरा।
जैस ही पहला तीर हवा में उड़ते हुए गया, दूसरा तीर-
पहले ही से प्रत्यंचा पर था, और तब तीसरे तीर ने उसका अनुसरण किया।
इसके मध्य समय में: वह बिना हिले डुले
एक प्रस्तर प्रतिमा की भांति खड़ा रहा।
महान कौशल था- लेकिन पो-हुन प्रभावित नहीं हुआ, क्योंकि जिस क्षण तुमने प्रदर्शन करना चाहा, तुम तभी चूक गए। प्रदर्शन करने का वास्तविक प्रयास ही यह दिखलाता है कि तुम आत्मोपलब्ध नहीं हुए हो, और यदि तुम आत्मा को उपलब्ध नहीं हुए हो, तो तुम बाहर तो एक मूर्ति के समान खड़े हो सकते हो- पर अंतरस्थ में अनेकानेक सपनों, कामनाओं और प्रोत्साहनों का अनुसरण करते हुए दौड़ते रहोगे। बाहर तो तुम स्थिर बने रह सकते हो, पर तुम्हारे अंदर वहां सभी तरह की गतिविधियां एक साथ और एक ही समय में चल रही होंगी और तुम अनिवार्य रूप अनेक दिशाओं में दौड़ रहे होंगे। तुम बाहर तो एक मूर्ति के समान बन सकते हो-पर वह अभिप्रायः ही नहीं है।
बोकूजू के बारे में कहा जाता है कि वह अपने सद्गुरु के पास गया और उनके सामने दो वर्षों तक, ठीक एक मूर्ति की भांति, संगमरमर की बुद्ध की एक प्रतिमा के समान बैठा रहा। तीसरा वर्ष प्रारम्भ होते ही सद्गुरु आया और उसने अपने डंडे से उसे पीटते हुए कहा: "तू मूर्ख है" हमारे पास यहां बुद्ध की एक हजार एक मूर्तियां हैं और हमें और अधिक की कोई भी आवश्यकता नहीं है- क्योंकि उसका सद्गुरु एक मंदिर में रहता था, जहां, बुद्ध की एक हज़ार एक मूर्तियां थीं। उसने कहा- "वे कहां पर्याप्त हैं। तुम यहां क्या कर रहे हो?"
मूर्तियों की जरूरत नहीं है, लेकिन एक भिन्न स्थिति का अस्तित्व चाहिए। बाहर वो शांत और स्थिर बैठ जाना बहुत आसान है- उसमें कठिनता क्या है? केवल थोड़े से प्रशिक्षण की जरूरत है। मैंने भारत में एक व्यक्ति को बहुत अधिक सम्मान पाते हुए देखा है, जो दस वर्षों तक खड़ा ही रहा। वह खड़े हुए ही सोता था। उसके पैर सूजकर इतने अधिक मोटे हो गए थे कि वह उन्हें झुका भी नहीं सकता था। लोग उसको बहुत अधिक सम्मान देते थे, लेकिन जब मैं उसे देखने गया तो उसने मुझसे अकेले में मिलना चाहा। और उसने मुझसे कहा: "मुझे बताइये कि ध्यान कैसे करूं? मेरा मन बहुत अधिक अव्यवस्थित रहता है।"
एक मूर्ति के समान दस वर्षों तक खड़े रहना-वह बैठे नहीं, वह सोये भी नहीं, लेकिन समस्या समान बनी रहती है: ध्यान कैसे किया जाये, अंदर से कैसे शांत हुआ जाए! बाहर गतिविधियां न होने पर अनेक गतिविधियां अंदर ही होती हैं। वहां तम्हारे साथ जितनी हैं उनकी अपेक्षा वहां और अधिक ही हो सकती हैं शरीर की गतिविधियों के लिए अधिक ऊर्जा की ज़रूरत होती है। लेकिन एक

व्यक्ति जो बिना गतिविधि के खड़ा रहता है- उसकी पूरी ऊर्जा मन के अंदर गतिशील होती है। वह अंदर से पागल हो जाता है। लेकिन लोग उसका सम्मान करते हैं और वह एक प्रदर्शिनी बन गया है। अहंकार की पूर्ति होती हे लेकिन आत्मा कहीं भी नहीं पाई जाती।
पो-हुन-वू-जेन ने कहा: तीर चलाने और निशाना साधने का
यह कला-कौशल सुंदर और अच्छा है।
लेकिन यह तीर न चलाने की विधि नहीं है।
यह थोड़ा बहुत कठिन हो सकता है, क्योंकि ज़ेन में वे कहते हैं कि तीर चलाने का कला-कौशल केवल प्रारम्भिक चीज़ है, कैसे निशाना लगाना जाना जाए, यह केवल प्रारम्भिक कदम है, लेकिन यह जानना कि कैसे स्वयं तीर न चलाया जाए, जिससे कि तीर स्वयं के द्वारा निशाने पर पहुंच जाये।
इसे समझने का प्रयास करो: जब तुम तीर चलाते हो, तो वहां कर्ता और अहंकार होता है। और तीर न चलाने की कला क्या है! धनुष उसमें भी तीर छोड़ता है, वह लक्ष्य तक पहुंचता भी है, लेकिन प्रयोजन लक्ष्य का नहीं है। वह लक्ष्य को चूक भी सकता है- वह भी अभिप्राय नहीं है। अभिप्राय यह है कि अंदर वहां कोइ्र भी कर्ता न हो। स्रोत ही अभिप्राय है। जब तुम तीर को धनुष पर रखते हो, तो तुम्हें वहां नहीं होना चाहिए। तुम्हें जैसे मानो अनुपस्थित होना चाहिए, पूर्णरूप से खाली अथवा शून्य होना चाहिए और तीर स्वयं अपने आप ही छूट जाता है। अंदर कर्ता न हो,- तब वहां अंहकार भी नहीं हो सकता है। तुम पूरी प्रक्रिया के साथ इतने अधिक एक हो जाते हो कि वहां कोई भी विभाजन नहीं होता। तुम उसमें खो जाते हो। कृत्य और कर्ता दो नहीं रह जाते, "मैं कर्ता हूं और यह मेरी क्रिया है", में थोड़ा सा भी अंतर नहीं रह जाता है। उसे उपलब्ध होने में अनेक वर्ष लगते हैं। और यदि तुम यह नहीं समझते हो, तो इसका प्राप्त होना बहुत कठिन है; यदि तुम इस बात को समझ जाते हो, तो तुम संभावना सृजित करते हौ।
एक जर्मन खोजी हेरीगेल ने अपने सद्गुरु के साथ जापान में तीन वर्षों
तक कार्य किया। वह एक धनुर्धारी था। जब वह जापान पहुंचा तो पहले ही से एक कुशल तीरन्दाज था, क्योंकि उसके तीरों द्वारा सौ प्रतिशत लक्ष्यों को बेध दिया जाता था और वहां उसका कोई जबाब न था। जब वह वहां पहुंचा तो वह ली्हत्स के ही समान पहले से ही एक कुशल धनुर्धारी था। लेकिन उसका प्रदर्शन देखकर सद्गुरु हंसा और उसने कहा: "हां, तुममें तीर चलाने का कौशल है लेकिन तीर न चलाने के बारे में क्या जानते हो?"
हेरीगेल ने कहा: "यह तीर न चलाना क्या होता है? कभी इसके बारे में सुना ही नहीं।"
सद्गुरु ने कहा- "तब मैं तुम्हें सिखाऊंगा।"
तीन वर्ष गुज़र गए। वह अधिक से अधिक कलाकुशलता में प्रवीण हो गया और लक्ष्य उसके निकट से निकटतम और-और निकट हो गया वह पूर्ण रूप से दक्ष हो गया और इस बारे में कहीं कोई भी कमी न थी। और वह फिर भी चिंतित और परेशान था... पश्चिमी मन के लिए यही समस्या है कि पूरब उसे अतर्कपूर्ण और रहस्यमय दिखाई देता है और पूरब ऐसा है भी। वह सद्गुरु को न समझ सका, क्या यह एक पागल था? ...- क्योंकि अब वह परिपूर्ण रूप से कुशल हो गया था, सद्गुरु उसकी एक भी गल्ती न खोज सका, लेकिन वह उससे कहे चला जाता: "नहीं, जीवन के प्रति पूरबी और पश्चिमी मार्गों के मध्य एक खाड़ी जैसी खाई है। सदगुरु, "नहीं" ही कहे चले जाता था और उसे अस्वीकार ही किये चले जाता था।
हेरीगेल निराश हाने लगा। उसने कहा: "लेकिन गल्ती कहां पर है? अब मुझे मेरी गल्ती दिखलाइये और मैं सीख सकता हूं कि कैसे उसके पार जाया जाये।" सदगुरु ने कहा: "वहां गल्ती कोई भी नहीं है। तुम ही गलत हो। वहां त्रुटि कोई भी नहीं है और तुम तीर चलाने में कुशल हो, लेकिन मेरा अभिप्राय यह नहीं है। तुम ही गलत हो; जब तुम तीर चलाते हो तो तुम वहां होते हो, तुम वहां बहुत अधिक होते हो। तीर लक्ष्य तक पहुंचते हैं, यह ठीक है- लेकिन वह मेरा अभिप्राय ही नहीं है। तुम वहां बहुत अधिक क्यें होते हो? आखिर यह प्रदर्शन क्यों? यह तुम्हारा अहकार क्यों? तुम वहां बिना रहे हुए क्या सामान्य रूप से तीर नहीं चला सकते?"

निश्चित रूप से हेरी गेल निरंतर तर्क कर रहा है- "कोई वहां रहे बिना आखिर कैसे तीर चला सकता है?"
और सद्गुरु कहता: "केवल मेरी ओर देखो" और हेरीगेल भी अनुभव करता कि सदगुरु के पास एक भिन्न गुण है, लेकिन यह गुण रहस्यमय है और तुम पकड़ नहीं सकते। उसने कई बार यह अनुभव किया कि जब सद्गुरु तीर छोड़ता है तो वह वास्तव में भिन्न होता है, जैसे मानो वह तीर और धनुष ही बन जाता है, जैसे मानो सद्गुरु फिर और अधिक होता ही नहीं, वह पूरी तरह से एक अविभाजित होता है। तब वह पूछने लगा- "इसे कैसे किया जाये?"
सद्गुरु ने कहा: "यह कोई कला-पटुता नहीं है। तुम्हें इसे समझना होगा,
और तुम्हें इस समझ में स्वयं अपने को अधिक से अधिक सोखना होगा और उसके अंदर डूबना होगा।"
तीन वर्ष नष्ट हो गए थे और तब हेरी गेल ने समझा कि यह संभव नहीं था। या
तो यह व्यक्ति पागल है अथवा एक पश्चिमी के लिए इस तीर न चलाने की विद्या को प्राप्त करना असंभव है। मैंने तीन वर्ष व्यर्थ ही नष्ट कर दिए, अब यह मेरे वापस लौट जाने का समय है।
इसलिए उसने इस बारे में सद्गुरु को स्पष्ट रूप से बताया। सद्गुरु ने कहा: "हां! तुम जा सकते हो।"
हेरीगेल ने कहा: "क्या आप मुझे एक प्रमाण पत्र दे सकते हैं, जिसमें यह उल्लेख हो कि मैं तीन वर्षों तक आपके साथ सीखता रहा हूं।"
सद्गुरु ने कहा: "नहीं, क्योंकि तुमने कोई भी चीज़ नहीं सीखी है। तुम तीन वर्षों तक मेरे साथ रहे लेकिन तुमने कोई भी चीज़ नहीं सीखी है। वह सभी कुछ तुमने सीखा है, उसे तुम जर्मनी में भी सीख सकते थे। इस बारे में तुम्हारे यहां आने की कोई जरूरत ही नहीं थी।"
जिस दिन उसे उस स्थान को छोड़कर जाना था तो सद्गुरु को प्रणाम करने वह उनके पास गया। सद्गुरु उस समय दूसरे शिष्यों को सिखाते हुए उसे प्रदर्शित कर रहे थे। वह ठीक सुबह का समय था, सूर्य उदय हो रहा था और पक्षी गीत गा रहे थे। अब हेरीगेल चिंतित और व्यग्र न था क्योंकि उसने जाने का निर्णय ले लिया था और एक बार निर्णय ले लिया जाये तो तो चिंता तथा परेशानी मिट जाती है। वह जरा भी चिंतित न था। इन तीन वर्षों में उसके मन में एक तनाव रहता था कि कैसे उपलब्ध हुआ जाये? कैसे इस पागल व्यक्ति की शर्तों को पूरा किया जाए? लेकिन अब वहां कोई चिंता नहीं थी। उसने निर्णय ले लिया था कि वह इस स्थान को छोड़ रहा था, उसने टिकट भी ले लिया था और शाम को सभी दुःस्वप्नों को पीछे छोड़कर वह यहां से चला जायेगा। वह केवल सद्गुरु की प्रतीक्षा कर रहा था, जिससे जब वह अपने शिष्यों के साथ कार्य समाप्त कर दे, वह उन्हें धन्यवाद देते हुए गुडबाई कहकर वह स्थान छोड़ दे।
इसलिए वह एक बैंच पर बैठा हुआ था। पहली बार अचानक किसी बात का उसने अनुभव किया। उसने सद्गुरु की ओर देखा। सद्गुरु धनुष की डोरी खींच रहा था और जैसे मानो वह सद्गुरु की ओर टहलता हुआ नहीं जा रहा था। उसने अचानक स्वयं को बेंच से चलते हुए वहां खड़े होने का अनुभव किया। वह सद्गुरु तक पहुंचा, उसके हाथ से धुनष लिया... तीर ने धनुष को छोड़ दिया और सद्गुरु ने कहा: "अच्छा, बहुत सुंदर। तुमने "उसे" प्राप्त कर लिया। अब मैं तुम्हें प्रमाण पत्र दे सकता हूं।"
और हेरीगेल कहता है: "हां, उस दिन मैंने उसे प्राप्त किया। अब मैं उस अंतर को जानता हूं। उस दिन कुछ चीज स्वयं से घटित हुई- मैं तीर चलाने वाला नहीं था, मैं वहां बिल्कुल था ही नहीं। मैं केवल विश्रामपूर्वक बेंच पर बैठा हुआ था। वहां कोई भी तनाव और उसके बारे में कोई भी फिक्र अथवा सोच-विचार नहीं थी। मेरा उससे जैसे कोई भी संबंध ही न था।
इसका स्मरण रहे क्योंकि तुम भी एक पागल व्यक्ति के निकट हो। मेरी शर्तों को पूरा करना बहुत कठिन है- बल्कि वह असंभव है। और वह केवल तभी घटित होगा जब तुम जो कुछ भी कर सकते हो, उस प्रत्येक कार्य को कर चुके होंगे, और जब तुम उस स्थिति पर आते हो जहां से तुम मुझसे अलग होकर मुझे छोड़ देना चाहोगे। वह स्थिति तुम तक केवल तभी आएगी, जब तुम उस स्थिति तक आकर सोचते हो- इन सभी ध्यान प्रयोगों और यहां की प्रत्येक चीज को छोड़ दों यह पूरी चीज एक दुःस्वप्न है।" तब वहां कोई भी फिक्र नहीं होती। लेकिन मेरे पास आना और

आकर मुझे अलविदा कहना न भूल जाना, अन्यथा तुम भी बिना उपलब्ध हुए यह स्थान छोड़ सकते हो।
जब तुम प्रयासों के साथ थककर उन्हें करना समाप्त कर देते हो, जब प्रयास पूर्णता से किया जाता है, तभी चीजें घटित होना शुरू होती हैं। निश्चित रूप से हेरीगेल अपने प्रयास में पूर्ण था, इसी कारण पूरी चीज को वह तीन वर्षों में समाप्त कर सका। यदि तुम अंशत: और खण्डों में कार्य करते हो, तो तुम्हारा प्रयास समग्र नहीं होता, तब तीन जन्म भी पर्याप्त नहीं हो सकते हैं यदि तुम अपने प्रयास में कुनकुने हो, तो तुम उस स्थिति तक कभी नहीं आओगे, तब पूरा प्रयास व्यर्थ बन जाता है।
प्रयास में समग्र बनो। जितना भी संभव हो सके, ध्यान करने की कोई कला- कुशलता सीखो। वह प्रत्येक कार्य करो, जो तुम कर सकते हो। किसी भी चीज़ को रोको मत। किसी चीज से बचकर भागने का प्रयास मत करो और उसे पूरे हृदय से करो। तब वहां एक स्थिति और एक शिखर बिंदु आता है, जहां और अधिक नहीं किया जा सकता है। तब तुम एक ऐसी स्थिति तक आ जाते हो, जहां और अधिक नहीं किया जा सकता है ओर तुमने सभी कुछ कर लिया है और मैं यह कहने जा रहा हूं: "नहीं, यह पर्याप्त नहीं है:- तुम्हें समग्रता तक लाने के लिए, अंतिम स्थिति अथवा शिखर बिंदु तक लाने के लिए, जहां कुछ और अधिक करना संभव नहीं है, मेरा नहीं" कहना जरूरी है।
और तुम नहीं जानते कि तुम कितना अधिक कर सकते हो। तुम्हारे पास विराट ऊर्जा है जिसका तुम प्रयोग नहीं कर रहे हो और उसके केवल एक खण्ड का प्रयोग कर रहे हो। और यदि तुम केवल एक खण्ड का उपयोग कर रहे हो, तो तुम उस बिंदु तक कभी नहीं पहुंचोगे जहां हेरीगेल पहुंचा था- मैं उसे "हेरीगेल बिंदु" कहता हूं।
लेकिन उसने भली-भांति किया। उसने वह सभी कुछ किया, जो किया जा सकता था, अपनी ओर से वह कोई भी चीज़ बचा कर नहीं रख रहा था। तब पानी के खौलने का बिंदु आता है। इस पानी को खौलने के बिंदु पर ही द्वार है। पूरा प्रयास इतना अधिक व्यर्थ हो जाता है कि तुम उसके द्वारा कहीं भी नहीं पहुंच रहे हो, इसलिए तुम उसे छोड़ देते हो। तुम अचानक विश्राम में चले जाते हो- और द्वार खुल जाता है।
अब तुम बिना एक ध्यानी बने हुए ध्यान कर सकते हो। अब तुम ध्यान किए बिना ही ध्यान कर सकते हो। अब तुम वहां बिना अहंकार के होकर ध्यान कर सकते हो। अब तुम ध्यान में हो सकते हो- और वहां कोई भी ध्यान करने वाला नहीं है। कर्त्ता ही कार्य बन जाता है, ध्यानी, ध्यान बन जाता है, तीर चलाने वाला धनुष और बाण बनाता है और बाहर वहां एक वृक्ष पर झूलता हुआ कोई भी लक्ष्य नहीं होता है। लक्ष्य तुम होते हो और तुम्हारे अंदर ही स्रोत होता है। यही है वह जो यो-हुन बू-जेन ने कहा:
"तीर चलाने की कला कुशलता बहुत सुंदर है:"
निश्चित रूप से लीह्त्सु एक अच्छा तीर चलाने वाला एक निपुण धनुर्धारी था।
लेकिन यह तीर न चलाने की कला-कुशलता नहीं है
हमको पहाड़ पर ऊपर चला चाहिए और तब तुम आगे की ओर-
उभरी चट्टान पर खड़े हो जाना और तब तीर चलाने का प्रयास करना।
वह लीह्त्सू से कहां ले जा रहा है। बाहर से तो वह पूर्ण कुशल है, लेकिन अंदर का स्रोत अर्थात उद्गम अभी भी कांप रहा है। क्रिया पूर्ण है, पर अस्तित्व अभी तक कांप रहा है। वहां भय है, वहां मृत्यु है, क्योंकि उसने अभी तक स्वयं को नहीं जाना है। उसने स्वयं जाना नहीं है, वह जो कुछ भी कर रहा है, केवल बुद्धि और हाथों से कर रहा है; तीसरा भ् अर्थात हृदय (भ्मंतज) अभी उसमें नहीं है। सदा स्मरण रहे कि तुम्हारे पास तीनों भ् अर्थातभ्ंदकए भ्मंक (हाथ, हृदय और बुद्धि) तीनों एक साथ रहें। तुमने अभी तक तीन त्श्े सीखे हैं अब तीन भ्श्े सीखो और हमेशा स्मरण रहे कि सिर अथवा बुद्धि इतनी अधिक चालाक है कि वह तुम्हें धोखा दे सकती है और वह तुम्हें यह अनुभूति दे सकती है कि ठीक है, सभी तीनों भ्श्े वहां हैं, क्योंकि जैसे ही कौशल विकसित होता है, जैसे ही तुम अधिक से अधिक तकनीकी रूप से पूर्ण होते हो, बुद्धि कहती है: "अब और क्या ज़रूरी है?"

भ्मंक (बुद्धि) का अर्थ है- पश्चिम, भ्मंतज (हृदय) का अर्थ है पूरब बुद्धि कहती है- "प्रत्येक चीज़ ठीक है।" हेरीगेल बुद्धि है, सद्गुरु हृदय है- और सद्गुरु पागल दिखाई देता है। बुद्धि हमेशा कहती है: "तुम खामोश रहो", अंदर मत आओ, अन्यथा तुम झंझट उत्पन्न करोगे। पूरी चीज को मुझे ही संभालने और निपटाने दो; क्योंकि मैंने प्रत्येक चीज़ सीखी है, मैं गणित जानता हूं और जानता हूं कि कैसे इसके साथ व्यवहार किया जाए। तकनीकी रूप से बुद्धि हमेशा ठीक होती है। तकनीकी रूप से हृदय हमेशा गलत होता है क्योंकि हृदय कोई भी कला-कुशलता नहीं जानता है, वह केवल भाव और अनुभूति जानता है और वह केवल आत्मा का काव्य जानता है। वह कोई भी कला- कुशलता नहीं जानता वह कोई भी व्याकरण नहीं जानता और वह एक काव्यात्मक सत्ता है।
"अब हमको पहाड़ पर ऊपर चलना चाहिए।"
नब्बे वर्ष आयु के अत्यंत वृद्ध सद्गुरु ने कहा-
और तब तुम आगे की ओर उभरी चट्टान पर खड़े हो जाना
और तब तीर चलाने का प्रयास करना
तब हम देखेंगे।
वे लोग एक पहाड़ पर चढ़े और एक आगे की ओर निकली-
चट्टान पर खड़े हो गए, जो एक दस हजार फीट ऊंची ढालू कगार थी--...
और स्मरण रहे, बुद्धि और हृदय के मध्य यही अंतर है: हृदय है दस हजार फीट ऊंचा, और उस उभरी चट्टान से दस हजार फीट गहरी घाटी में ऊपर से देखना...- जब कभी तुम हृदय के निकटतम जाते हो तो तुम व्याकुल होने का अनुभव करेगे। बुद्धि के साथ प्रत्येक चीज भूमितल पर है, वह क्रंक्रीट से बना एक राजमार्ग है। हृदय के साथ तुम जंगल में गतिशील होते हो- जहां कोई राजमार्ग नहीं होता, ऊंचा नीचा ऊबड़-खाबड़ रास्ता होता है, प्रत्येक चीज एक धुंध में छिपी हुई अनजानी और रहस्यमय होती है, कुछ भी स्पष्ट नहीं होता, वहां एक राजमार्ग न होकर एक भूलभुलैया जैसा एक रास्ता होता है और वह एक पहेली के समान अधिक होता है। दस हज़ार फीट ऊंचाई--...
कहीं से नीत्शे के बारे में यह सूचना मिलती है कि एक बार ऐसा हुआ कि उसने स्वयं को अचानक दस हजार फीट ऊंचाई पर, समय से दस हजार फीट की ऊंचाई पर अपने को पाया-जैसे मानो समय एक गहन घाटी थी और उसने स्वयं समय से अपने को दूर दस हजार फीट की ऊंचाई पर पाया। उसकी डायरी से यह सूचना मिलती है कि वह उसी दिन से पागल हो गया। जिस दिन उसने अपनी डायरी में इस बात का उल्लेख किया, उसी दिन उसका पागलपन शुरू हो गया।
यह बहुत व्याकुल और पागल कर देने वाली स्थिति होती है, कोई भी व्यक्ति पागल हो सकता है। जैसे ही तुम अपने हृदय के निकटतम जाते हो, तो तुम अनुभव करोगे कि तुम पागलपन के निकटतम जा रहे हो। "यह मैं क्या कर रहा हूं चीजें भ्रमित कर रही हैं। ज्ञात तुम्हें पीछे छोड़ देता है और अज्ञात प्रवेश करता है। सभी नक्शे व्यर्थ हो जाते है, क्योंकि हृदय के लिए कोई भी मानचित्र अस्तित्व में नहीं हैं। सभी मानचित्र चेतन मन के लिए मौजूद हैं। उसमें सभी चीजें स्पष्ट रूप से हैं और तुम सुरक्षित हो। यही कारण है कि प्रेम तुम्हें भय देता है, मृत्यु तुम्हें भय देती है और ध्यान भी तुम्हें भय देता है। जब कभी भी तुम केंद्र की ओर गतिशील होते हो, भय तुम्हें जकड़ लेता है।
वे लोग एक पहाड़ पर चढ़े, और एक आगे को निकली-
उभरी हुई चट्टान पर खड़े हो गए, जो एक दस हज़ार फीट ऊंची ढालू कगार थी
पो-हुन वू-ज़ेन पीछे की ओर खिसकता गया-
आगे की ओर नहीं, वह इस दस हज़ार फुट ऊंची उभरी चट्टान पर पीछे की ओर गतिशील हुआ।
यो-हुन वू-ज़ेन पीछे की ओर खिसकता गया
जब तक कि उसके पैरों का एक तिहाई भाग कगार के छोर पर-
झूलता हुआ न रह गया।
तब उसने लीह्त्सू को आगे बढ़कर आने का संकेत किया।
यह कहा जाता है कि इस नब्बे वर्ष के बूढ़े व्यक्ति की कमर लगभग झुक गई
थी और वह सीधा खड़ा नहीं हो सकता था। वह बहुत बहुत वृद्ध था। यह झुकी कमर के

बूढ़े व्यक्ति का आधा पैर कगार के छोर पर झूल रहा था और वह उस दिशा में देख भी नहीं रहा था, चट्टान का छोर उसके पीछे की ओर था।
और तब उसने लीह्त्सू को आगे बढ़कर आने का संकेत किया।
यह वही स्थान है, जहां मैं खड़ा हुआ हूं और तुम्हें आगे आने को बुला रहा हूं।
लीह्त्सू भूमि पर नीचे गिर पड़ा।
वह उसके निकट भी नहीं आया। वह उभरे हुए सीधेढालू कगार से दूर खड़ा हुआ था। लीह्त्सू नीचे भूमि पर गिर पड़ा।
उस बूढ़े पागल व्यक्ति के निकट आने का विचार ही, जोझूलती हुई केवल मृत्यु की कगार पर खड़ा हुआ है और वह किसी भी क्षण नीचे खाई में जा गिरेगा और कभी खोजे भी नहीं मिलेगा।
उसकी एड़ियों के नीचे से पसीना बहने लगा।
लीहत्सू, एड़ियों के नीचे से पसीना बहने के साथ ही नीचे भूमि पर गिर पड़ा। स्मरण रहे, पहले पसीना सिर अथवा माथे पर आता है। जब भय लगना प्रारम्भ होता है, पहले तुम्हारे सिर या माथे पर पसीना आता है, एड़ियां तक तो सबसे अंत में जाता है। जब भय तुम्हारे अंदर इतनी अधिक गहराई तक प्रवेश कर जाता है कि न केवल सिर पर पसीना आता है बल्कि एड़ियां भी पसीने से नहा जाती हैं, तब पूरा अस्तित्व भय से भरकर कांपने लगता है। लीह्त्सू खड़ा न रह सका, वह वृद्ध सद्गुरु के निकट जाने के विचार मात्र से ही खड़ा न रह सका। पो-हुनबू-ज़ेन ने कहा: एक पूर्ण व्यक्ति नीले आकाश में
पंख खोल कर उड़ता है, अथवा वह बंसत में खिले पीले पुष्पों की घाटी में नीचे छलांग लगाता है, अथवा वह विश्व की आठों दिशाओं में,
सभी स्थानों पर विचरण करता है, तो भी उसकी आत्मा में
परिवर्तन का एक चिन्ह तक नहीं दिखाई देता है।
लीह्त्सू! तुमको इतना अधिक पसीना क्यों आ रहा है?- बिल्कुल एड़ियों तक
से? और तुम वहां हक्के-बक्के होकर नीचे भूमि पर क्यों गिर पड़े? तुम्हारे
में यह परिवर्तन क्यों हुआ? तुम इतना अधिक क्यों कांप रहे हो? तुम्हें भय क्या है?-क्योंकि एक पूर्ण-कुशल व्यक्ति के पास भय नहीं होता है।
पूर्ण होना ही निर्भयता है... क्योंकि एक पूर्ण मनुष्य जानता है कि वहां कोई मृत्यु नहींहोती है। यदि यह बूढ़ा पो -हुन वू-जेन नीचे भी गिर जाता है और उसका शरीर लाखों टुकड़ों में टूट कर बिखर जाता है और कोई भी व्यक्ति उन्हें फिर से
भी नहींसकता, भी वह जानता है कि वह मर नहींसकता। वह वैसा ही रहेगा, जैसा
वह है। केवल बाहर परिधि की कुछ चीज़ विलुप्त हो जायेगी, पर केंद्र बना रहता
है, जैसा वह है, हमेशा बना रहता है।
केन्द्र के लिए कोई भी मृत्यु नहीं होती है। चक्रवात केवल परिधि पर
रहता है, चक्रवात कभी भी केंद्र तक नहीं पहुंचता है। कोई भी चीज़ केंद्र तक नहीं पहुंचती है। एक पूर्ण मनुष्य केन्द्रित होता है, वह आत्मा में अपनी जड़ें जमाये रहता है। वह निर्भय होता है। वह भयमुक्त नहीं है- नहीं! वह एक बहादुर व्यक्ति नहीं है- नहीं। वह सामान्य रूप से निर्भय है। एक बहादुर व्यक्ति वह होता है जिसके पास भय होता है, लेकिन वह अपने भय के विरुद्ध जाता है! और एक कायर वह व्यक्ति होता है जिसके पास भी भय होता है, लेकिन वह अपने भय के साथ जाता है। बहादुर और कायर, उनमें कोई भी अंतर नहीं है, वे दोनों आधारभूत रूप से भिन्न नहीं हैं, उन दोनों के पास भय होता है। एक बहादुर वह व्यक्ति है जो भय होने के बावजूद जाता है और कायर वह व्यक्ति होता है जो अपने भय का अनुसरण करता है। लेकिन एक पूर्ण मनुष्य इनमें से कोई भी नहीं होता, वह पूर्ण रूप से निर्भय होता है। वह न तो एक कायर है और न वह बहादुर है। वह पूरी तरह से जानता है कि मृत्यु एक कल्पित कथा है, मृत्यु एक झूठ है-वह सबसे बड़ा झूठ है, मृत्यु का कोई अस्तित्व ही नहीं है।
स्मरण रहे, एक पूर्ण मनुष्य के लिए मृत्यु अस्तित्व में नहीं है- उसके लिए अस्तित्व में केवल जीवन है अथवा परमात्मा है। तुम्हारे लिए परमात्मा नहीं, केवल मृत्यु ही अस्तित्व में है। जिस क्षण तुम शाश्वतता का अनुभव करते हो, तो तुमने जीवन के प्रमाणित उद्गम का अनुभव कर लिया है।
पूर्ण मनुष्य नीले आकाश में पंख खोलकर उड़ता है,
अथवा वह बसंत में खिले पीले पुष्पों की घाटी में नीचे छलांग लगाता है,

अथवा वह विश्व की सभी आठों परिसीमाओं में सभी स्थानों पर विचरण करता है,
तो भी उसकी आत्मा में परिवर्तन का एक चिन्ह तक नहीं दिखाई देता है। परिवर्तन बाहर परिधि पर घटित हो सकता है, लेकिन उसकी आत्मा में वहां कोई भी परिवर्तन नहीं होता है। अंतरस्थ में वह स्थिर बना रहता है। अंतरस्थ में वह वैसा ही शाश्वत बना रहता है।
लेकिन तुमने घबड़ाहट के चिन्हों से यह प्रकट कर दिया,
और तुम्हारी आंखें स्तब्ध हैं और उनमें व्याकुलता छलक रही है
फिर तुम कैसे लक्ष्य पर प्रहार करने की आशा कर सकते हो?
क्योंकि यदि तुम अपने अंदर कांप रहे हो, तुम चाहे जितना भी लक्ष्य पर ठीक निशाना लगाओ, वह ठीक हो ही नहीं सकता, क्योंकि तुम अंदर से कांप रहे हो और वह तुम्हारे हाथ में कंपन उत्पन्न कर देगा। वह अदृश्य हो सकता है, लेकिन वह वहां होगा। सभी बाहर के प्रयोजनों के लिए तुम लक्ष्य को बेध सकते हो लेकिन आत्मा के प्रयोजनों के लिए तुम विफल हो गए हो। तुम लक्ष्य को कैसे भेद सकते हो?
इसलिए मूल बात लक्ष्य पर प्रहार करना नहीं है, मौलिक बात है एक अकम्प अस्तित्व को उपलब्ध होना। तब चाहे तुम लक्ष्य को बेधते हो अथवा नहीं, यह गौण है। उसे तै करना बच्चों का काम है और वह बच्चों का खेल है।
यही अंतर है तीर चलाने की कला ओर तीर न चलाने की कला के मध्य। यह संभव
है कि यह बूढ़ा सद्गुरु लक्ष्य से चूक सकता है, लेकिन तब भी वह तीर न चलाने की कला है। लीह्त्स लक्ष्य को कभी नहींचूकेगा, लेकिन तब भी वह असली लक्ष्य से
चूक गया है, वह स्वयं से ही चूक चुका है।
इसलिए वहां दो स्थितियां हैं: वह उद्गम जहां से तीर चलता है और वह
अंत, जहां वह तीर पहुंचता है। धर्म का संबंध हमेशा स्रोत अथवा उद्गम के साथ होता है जहां से सभी तीर गतिशील होते हैं। वे कहां पहुंचते हैं, प्रयोजन यह नहीं है, मूल बात है कि वे कहां से चलते हें- क्योंकि यदि वे एक अकम्प प्राणी द्वारा चलाये जाते हैं, वे लक्ष्य को उपलब्ध होंगे। वे पहिले ही उपलब्ध हो गए है, क्योंकि उद्गम में ही अंत है, प्रारम्भ में ही अंत है, बीज में ही वृक्ष है, "अल्फा" (आदि) में ही "उमैगा" (अंत) है।
इसलिए मूल बात परिणाम के बारे में चिंतित होना नहीं है। सारभूत बात है, स्रोत के बारे में सोचना और उस पर ध्यान करना। यदि मेरी मुद्रा पूर्ण प्रेम की मुद्रा है अथवा नहीं है, प्रयोजन यह नहीं है। यदि प्रेम प्रवाहित हो रहा है, प्रयोजन इससे भी नहीं है। यदि वहां प्रेम है तो वह उसकी अपनी कलाकुशलता खोज लेगा, यदि प्रेम वहां है तो वह उसकी अपनी निपुणता खोज लेगा। लेकिन यदि वहां प्रेम नहीं है और तुम कला-पटुता में निपुण हो तो कलाकुशलता उसका प्रेम नहीं खोज सकती- यह बात स्मरण रखने की है।
केंद्र हमेशा उसकी परिधि खोज लेगा, लेकिन परिधि केन्द्र को नहीं खोज सकती। आत्मा हमेशा उसकी नैतिकता और उसका चरित्र खोज लेगी, लेकिन चरित्र आत्मा नहीं खोज सकेगा। तुम बाहर से अंदर की ओर गतिशील नहींहो सकते। इस बारे में केवल एक ही मार्ग है: ऊर्जा अंदर से बाहर की ओर प्रवाहित होती है। गति आगे नहीं बढ़ सकती यदि वहां स्रोत नहीं है, उसका कोई उद्गम स्थल नहीं है। तब पूरी चीज़ ही झूठी होगी। यदि तुम्हारे पास उद्गम है तो नदी प्रवाहित होगी और वह सागर को प्राप्त कर लेगी, फिर इस बारे में कोई समस्या ही नहीं है। वह जहां कहीं से भी जाती है, वह लक्ष्य तक पहुंचेगी। यदि स्रोत अतिरेक से प्रवाहित हो रहा है, तो तुम उपलब्ध हो जाओगे और यदि तुम पूरी तरह से खिलौनों जैसी कला-कुशलता के साथ खेल रहे हो, तो तुम चूक जाओगे।
पश्चिम में विशेष रूप से तकनीकी ज्ञान इतना अधिक महत्वपूर्ण बन गया
है कि वह मनुष्य के संबंधों में भी प्रविष्ट हो चुका है। क्योंकि तुम कुशल विधियों के बारे में इतना अधिक जानते हो, तुम प्रत्येक चीज को टेक्नोलॉजी में बदलने का प्रयास कर रहे हो। यही कारण है कि प्रत्येक वर्ष प्रेम के बारे में हजारों पुस्तकें प्रकाशित होती हैं-उसमें कुशल विधियां दी गई हैं- कैसे प्रेम किया जाए और कैसे संभोग के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचा जाए। प्रेम भी कला विवरण संबंधी समस्या बन गया है और संभोग के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचना भी कला विवरण संबंधी एक विषय बन गया है जिसे कलाकुशल व्यक्तियों

के द्वारा हल किया जाना है। यदि प्रेम भी एक कला-विवरण संबंधी एक समस्या बन गया है तब फिर बचा क्या है? तब कुछ भी नहीं बचा, तब पूरा जीवन केवल एक टेक्नोलोजी है। तब तुम्हें जानना है- कैसे जानें- लेकिन तुम चूक जाते हो, तुम वास्तविक लक्ष्य से चूक जाते हो, जो स्रोत है।
जहां तक वह ले जाती है कोई भी कुशल विधि अच्छी है, लेकिन वह प्रमुख नहीं है। वह सारभूत नहीं है। सारभूत है-स्रोत और एक व्यक्ति को पहले स्रोत के लिए देखना चाहिए- और तब कलाकुशलता आ सकती है।
यह अच्छा है कि तुमने कला-पटुता सीख ली है। लोग मेरे पास आते हैं और मैं देखा हूं कि उनकी दिलचस्पी हमेशा विधि में होती है। वे पूंछते हैं- ध्यान कैसे करें। वे यह नहीं पूछते कि ध्यान क्या है? वे पूछते हैं- कैसे? कैसे शांति प्राप्त की जाए? वे कभी नहीं पूछते कि शांति क्या है? जैसे मानों वे उसे पहले ही से जानते हैं।
मुल्ला नसरुद्दीन ने अपनी पत्नी की हत्या कर दी और इस बारे में कचहरी में उस पर मुकदमा चला न्यायाधीश ने नसरुद्दीन से पूछा: "नसरुद्दीन! तुम बार-बार यह आग्रह किए चले जाते हो कि तुम एक शांतिप्रिय व्यक्ति हो। तुम किस तरह के शांतिप्रिय व्यक्ति हो कि तुमने अपनी पत्नी की हत्या कर दी? नसरुद्दीन ने कहा: "हां, मैं फिर से दोहराता हूं कि मैं एक शांतिप्रिय व्यक्ति हूं। आप नहीं जानते कि जब अपनी पत्नी को मैंने मारा तो उसके चेहरे पर एक ऐसी शांति अवतरित हुई और पहली बार मेरे घर में भी चारों ओर एक शांति छा गई।"
कलाकुशलता मारती है। वह तुम्हें एक शांति दे सकती है, जो जीवन से नहीं मृत्यु से संबंधित है। विधि खतरनाक है क्योंकि तुम उद्गम को पूर्ण रूप से भूल सकते हो और तुम विधि के साथ पागल हो सकते हो। विधियां अच्छी हैं यदि तुम सजग बने रहते हो, तुम सचेत बने रहते हो कि वे साध्य नहीं हैं और वे केवल साधन हैं। उनके साथ बहुत अधिक आवेशित हो जाना बहुत हानिकारक है, क्योंकि तुम स्रोत को पूर्ण रूप से भूल सकते हो।
यही वह स्थिति है। इस बूढ़े सद्गुरु, वो-हुन वू-ज़ेन ने उनमें से एक रहस्य लीह्त्सू को दिखलाया। लीह्त्सू बाद में स्वयं बुद्धत्व को उपलब्ध एक व्यक्ति बना, वह स्वयं वैसा ही बना, जैसा कि उस क्षण वह बूढ़ा व्यक्ति था, दस हजार फीट ऊंची कगार पर पीछे की ओर खिसकता हुआ, जब तक कि उसके पैरों का एक तिहाई भाग कगार के छोर पर झूलता हुआ न रह गया- और एक बहुत बूढ़ नब्बे वर्ष आयु का वृद्ध शरीर, और तब भी उस बूढ़े व्यक्ति में कोई कंपकपाहट नहीं आई, ज़रा-सा भी परिवर्तन नहीं आया और न कोई भी थरथराहट आई। अपने अंतरस्थ में अनिवार्य रूप से उसे पूर्ण निर्भय होना चाहिए। अपने अंतरस्थ में निश्चित रूप से स्वयं की भूमि में वह गहरी जड़ें जमाये हुए था ओर केन्द्रित था। इस बात का सदा स्मरण बना रहे, क्योंकि इस बारे में हमेशा कलाकुशलता और विधियों का एक शिकार बनने की संभावना है।
तुम तक अंतिम और सर्वोच्च सत्य केवल तब आता है जब सभी कला कुशलता की विधियां छोड़ दी जाती हैं। वह सर्वोच्च तुम्हें केवल तब घटित होता है, जब वहां कोई भी विधि नहीं होती, क्योंकि केवल तभी तुम खुले हुए होते हो। वह अंतिम उपलब्धि केवल तभी तुम्हारा द्वार खटखटायेगी, जब तुम वहां नहीं होते हो। जब तुम अनुपस्थित होते हो, तुम तैयार होते हो, क्योंकि जब तुम अनुपस्थित हो केवल तभी उस सर्वोच्च सत्य के लिए तुम्हारे अंदर प्रवेश करने का एक अंतराल होता है।
तब तुम एक गर्भ बनते हो। यदि तुम वहां हो, तो तुम हमेशा बहुत अधिक होते हो, वहां उस सर्वोच्च उपलब्धि के लिए तुम्हारे अंदर प्रवेश करने के लिए थोड़ा- सा भी अंतराल अथवा स्थान नहीं मिलता है- और वह सर्वोच्च अथवा अंतिम इतना अधिक विराट है, कि तुम्हें इतनी अधिक विपुलता से शून्य होना होगा, इतना अधिक असीम शून्य होना होगा, केवलतभी वहां मिलन की एक संभावना है। इसी कारण मैं कहे चला जाता हूं कि तुम कभी भी परमात्मा से मिलने में समर्थ न हो सकोगे, क्योंकि जब परमात्मा आता है, तो तुम्हें वहां नहीं होना होगा। और जब तक तुम हो, वह नहीं आ सकता। तुम ही वह अवरोध हो।

और फूलों की बरसात हुई
सातवां प्रवचन

मठ में लगी हुई आग

जिस समय तोकाई एक विशिष्ट मठ में
एक अभ्यागत की भांति रुका हुआ था।
तो रसोईघर में नीचे फर्श पर,
एक आग लगना शुरू हो गई।

एक भिक्षु ने तेज़ी से तोकाई के-
शयनकक्ष में प्रवेश करते हुए
और चिल्लाते हुए कहा:
"सद्गुरु! एक आग, आग लग गई है।"

थोड़ा-सा उठते हुए तोकाई ने पूछा: "ओह! कहां?" "कहां" भिक्षु ने चिल्लाते हुए कहा:
"वह रसोई घर के फर्श पर नीचे लगी हुई है,
आप तुरन्त उठ जाइये।"

उनींदी स्थित में डूबे हुए सद्गुरु ने कहा:
"बस रसोई घर में? ठीक है, मुझे बताना
कि आगे क्या हुआ, और जब वह गलियारे तक
पहुंचती है तब लौटकर आना और मुझे बताना।"

और तोकाई शीघ्र ही फिर से खर्राटे लेने लगा।

मन की पूरी अज्ञानता वर्तमान में न बने रहने में ही है। मन हमेशा भविष्य में अथवा अतीत में गतिशील हो रहा है। मन कभी भी अभी और यहीं में नहीं होता है। वह हो भी नहीं सकता। मन का वास्तविक स्वभाव ही ऐसा है कि वह वर्तमान में रह ही नहीं सकता, क्योंकि मन को सोचना है, और वर्तमान क्षण में वहां सोचने की कोई भी संभावना नहीं है। तुम्हें देखना है, तुम्हें सुनना है, तुम्हें उपस्थित बने रहना है, लेकिन तुम सोच नहीं सकते।
वर्तमान क्षण इतना अधिक तंग है कि वहां सोचने के बारे में कोई भी अंतराल नहीं है। तुम हो सकते हो, लेकिन विचार नहीं हो सकते हैं। तुम कैसे सोच सकते हो? यदि तुम सोचते हो तो इसका अर्थ है कि पहले ही से अतीत है और वह क्षण चला गया है। अथवा तुम सोच सकते हो, यदि वह अभी तक नहीं आया है, तो वह भविष्य में है।
सोचने के लिए स्थान की ज़रूरत है, क्योंकि सोचना एक टहलने के समान है-
वह मन का टहलना अथवा एक यात्रा है। स्थान की ज़रूरत है। तुम भविष्य में चहलकदमी कर सकते हो, तुम अतीत के गलियारे में घूम सकते हो, लेकिन वर्तमान में तुम कैसे चलफिर सकते हो? वर्तमान इतना अधिक निकट है, वास्तव में वह निकट ही नहीं है, तुम ही वर्तमान हो। अतीत और भविष्य तो समय के भाग हैं, वर्तमान तुम हो और यह समय का भाग नहीं है। यह एक काल नहीं है। यह बिल्कुल भी समय का भाग नहीं है। यह समय का भाग है ही नहीं। वर्तमान तुम हो, अतीत और भविष्य तुम्हारे से बाहर है।
मन वर्तमान में नहीं रह सकता। यदि तुम यहां हो सकते हो, पूर्ण रूप से उपस्थित हो सकते हो तो मन विलुप्त हो जाएगा। मन कामना कर सकता है, वह सपने देख सकता है, वह एक हज़ार एक विचारों के स्वप्न देख सकता है। वह संसार के वास्तविक छोर तक गतिशील हो सकता है, वह संसार के बिल्कुल प्रारम्भ तक जा सकता है, लेकिन वह यहीं और अभी में नहीं रह सकता- वह उसके लिए असंभव है। पूरा अज्ञान इसे न जानने में ही रहता है। और तब तुम अतीत के बारे में फिक्र करते हो, जो अब और नहीं रह गया है- वह पूर्ण रूप से मूर्खतापूर्ण है। तुम अतीत के बारे में कोई कार्य नहीं कर सकते हो। तुम अतीत के बारे में जो अब

और है ही नहीं, कोई भी कार्य कैसे कर सकते हो? कुछ भी नहीं किया जा सकता, वह पहले ही जा चुका है, लेकिन तुम उसके बारे में फिक्र करते हो और तुम उसके बारे में चिंता करते हुए स्वयं अपने को व्यर्थ नष्ट कर रहे हो।
अथवा तुम भविष्य के सपनों और कामनाओं के बारे में सोचते हो। क्या तुमने कभी निरीक्षण किया है कि भविष्य कभी भी नहीं आता है। वह आ भी नहीं सकता। जो कुछ भी आता है, हमेशा वर्तमान ही होता है और वर्तमान तुम्हारी कामनाओं और तुम्हारे सपनों से पूर्णरूप से भिन्न होता है। यही कारण है कि तुम जिसके बारे में कामनाएं करते हो सपने देखते हो और जिसके बारे में फिक्र और कल्पना करते हुए योजना बनाते हो, वे कभी भी पूरे नहीं होते हैं। लेकिन वे तुम्हें व्यर्थ बर्बाद करते हैं। तुम्हारा ह्नास होता चला जाता है। तुम मरते चलते जाते हो। तुम्हारी ऊर्जाएं एक मरुस्थल में भटकती चली जाती हैं और वे किसी लक्ष्य पर न पहुंचते हुए तुम्हें पूरी तरह से बर्बाद किये चली जाती हैं। और तब मृत्यु तुम्हारे द्वार पर दस्तक देती है। और स्मरण रहे: मृत्यु कभी अतीत में द्वार नहीं खटखटाती और मृत्यु कभी भविष्य में द्वार नहीं खटखटाती मृत्यु वर्तमान में ही द्वार पर दस्तक देती है। तुम मृत्यु से यह नहीं कह सकते- "कल आना" मृत्यु वर्तमान में ही दस्तक देती है। जीवन भी वर्तमान में द्वार खटखटाता है। परमात्मा भी वर्तमान में ही दस्तक देता है। प्रत्येक चीज जो हमेशा दस्तक देती है, वर्तमान में ही देती है और प्रत्येक वह चीज जो हमेशा नहीं है, अतीत अथवा भविष्य का भाग है। तुम्हारा मन एक नकली सत्ता है क्योंकि वह कभी भी वर्तमान में दस्तक नहीं देता। सत्यता का इसी को मापदण्ड बनने दो! जो कुछ भी है, हमेशा यहीं और अभी है, जो कुछ भी नहीं है, वह कभी भी वर्तमान का भाग नहीं है। उस सभी को छोड़ दो जो अभी में कभी दस्तक नहीं देता है। और यदि तुम अभी में गतिशील हो, तो एक नया आयाम खुलता है- शाश्वतता का आयाम।
अतीत और भविष्य एक समतल रेखा में गतिशील होते हैं। "अ" "ब" की ओर जाता है, "ब" "स" की ओर जाता है, और एक ही रेखा में उसी तरह "स" "द" की ओर जाता है। शाश्वतता लम्बवत गतिशील होती है। "अ", "अ" के अंदर ही गहराई में जाता है, वह "अ" के अंदर ऊंचाई की ओर भी जाता है और वह "ब" के अंदर ही गहराई में जाता है, वह "अ" के अंदर ऊंचाई की ओर भी जाता है और वह "ब" की ओर नहीं जाता है। "अ", गहराई में और ऊंचाई में दोनों तरह से गतिशील होता है। वह लम्बवत है। वर्तमान क्षण लम्बवत गतिशील होता है और समय समतल और रेखावत गतिशील होता है। समय और वर्तमान कभी नहीं मिलते। और तुम वर्तमान हो: तुम्हारा पूरा अस्तित्व लम्बवत गतिशील होता है। गहराई खुली हुई है, ऊंचाई खुली हुई है, लेकिन तुम मन के साथ समतल और रेखावत चल रहे हो। इसी तरह से तुम परमात्मा से चूक जाते हो।
लोग मेरे पास आते हैं और वे पूछते हैं कि परमात्मा से कैसे मिलन हो, कैसे उसके दर्शन हों ओर कैसे उसका अनुभव हो? अभिप्राय यह नहीं है, अभिप्राय यह है कि तुम कैसे उससे चूक रहे हो?- क्योंकि वह अभी और यहीं है और तुम्हारे द्वार पर दस्तक दे रहा है। वह अन्यथा हो ही नहीं सकता है। यदि वह सत्य है तो उसे यहीं और अभी होना चाहिए। केवल असत्य ही यहीं और अभी में नहीं होता है। वह पहले ही से तुम्हारे द्वार पर है- लेकिन तुम ही वहां नहीं हो। तुम घर पर कभी रहते ही नहीं हो। तुम लाखों शब्दों में भटकते चले जाते हो, लेकिन तुम "कभी भी घर पर नहीं होते हो। वहां तुम कभी पाये ही नहीं जाते और परमात्मा वहां तुमसे मिलने के लिए आता है, सत्य वहां तुम्हें चारों ओर से घेर लेता है लेकिन तुम्हें वहां कभी नहीं पाता है। असली प्रश्न यह नहीं है कि तुम्हें कैसे परमात्मा से मिलना चाहिए, वास्तविक प्रश्न यह है कि तुम्हें कैसे घर पर होना चाहिए, जिससे जन परमात्मा दस्तक देता है, वह वहां तुम्हें पाये यह प्रश्न तुम्हारा उसे खोजने का नहीं है, यह प्रश्न उसका तुम्हें पाने का है।
इसलिए यही वास्तविक ध्यान है। एक समझदार व्यक्ति परमात्मा के बारे में अथवा उसी तरह के मामले के बारे में फिक्र नहीं करता है क्योंकि वह एक दार्शनिक नहीं है। यह पूरी तरह से घर पर होने का प्रयास करता है और यह ध्यान करता है कि अतीत और भविष्य के बारे में कैसे फिक्र करना बंद किया जाए, अतीत और भविष्य के बारे में विचार न करते हुए, वह ध्यान करता है कि

यहीं और अभी में कैसे व्यवस्थित हुआ जाए, और कैसे इस क्षण से गतिशील न हुआ जाए। एक बार तुम इस क्षण में होते हो, तो द्वार खुलता है। यह क्षण ही द्वार है।
मैं एक बार एक कैथोलिक पादरी और उनके परिवार के साथ ठहरा हुआ था। एक शाम मैं पादरी, उनकी पत्नी और उनके छोटे बच्चे और पूरे परिवार के साथ बैठा हुआ था और उनका किशोर बच्चा, कमरे के एक कोने में थोड़े से लकड़ी के ब्लोक्स (चौकोर सांचों) के साथ खेलते हुए कुछ चीज बना रहा था। तभी अचानक बच्चे ने कहा: "अब प्रत्येक व्यक्ति को खामोश हो जाना चाहिए क्योंकि मैंने एक चर्च बनाया है। चर्च बनकर तैयार है, अब कृप्या खामोश हो जाइए।"
पिता बहुत प्रसन्न हुए कि बच्चा यह समझ गया है कि चर्च में प्रत्येक व्यक्ति को मौन होना चाहिए। उसे प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने उससे पूछा: "प्रत्येक व्यक्ति को चर्च में खामोश क्यों होना चाहिए?"
लड़के ने उत्तर दिया- "क्योंकि लोग सो रहे हैं।"
लोग वास्तव में सो रहे हैं, न केवल चर्च में बल्कि प्रत्येक जगह, पूरी पृथ्वी पर सो रहे हैं। वे चर्च में सो रहे हैं, क्योंकि वे बाहर से सोए हुए ही आते हैं। वे चर्च से बाहर जाते हैं, तो वे जैसे नींद में ही चलते हैं- प्रत्येक व्यक्ति नींद में चलने की आदत रखने वाला बन गया है। और सोते रहने की यही प्रवृति है: तुम कभी भी कहीं और अभी में नहीं होते, क्योंकि यदि तुम्हें यहीं और अभी में रहना है तो तुम्हें जागना होगा।
नींद का अर्थ है कि तुम भूतकाल में हो, नींद का अर्थ है कि तुम भविष्य में हो। मन ही नींद है, मन एक गहन आत्मसम्मोहन है- वह गहरी नींद में है। और तुम अनेक तरह से प्रयास करते हो, लेकिन कोई भी चीज तुम्हारी सहायता करती हुई प्रतीत नहीं होती क्योंकि यदि तुम्हारी नींद में कोई भी कार्य किया जाता है, तो वह अधिक सहायता नहीं करेगा, क्योंकि यदि तुम नींद में कुछ करते हो तो वह एक सपने से अधिक न होगा।
मैंने सुना है कि एक बार एक व्यक्ति एक मनोविश्लेषक के पास आया। वह बहुत खोया-खोया रहने वाला मनोविश्लेषक था- और प्रत्येक व्यक्ति खोया-खोया सा ही रहता है क्योंकि मन ही खोया-खोया हुआ है कोई भी घर पर नहीं है ओर खोये-खोये से मन का यही अर्थ होता है। एक व्यक्ति बिल्कुल ऐसे ही खोये- खोये से रहने वाले मनोविश्लेषक के पास गया और उससे कहा: "मैं एक असाधारण कठिनाई में पड़ गया हूं। मैंने सभी तरह के डाक्टर्स के द्वारों पर दस्तक देकर उनसे उपचार कराया, लेकिन कोई भी मेरी सहायता न कर सका और वे लोग कहते हैं कि कहीं कुछ भी गलत नहीं है। लेकिन मैं मुसीबत में हूं। मैं सोते समय इतनी अधिक तेज ध्वनि के साथ खर्राटे लेता हूं कि उनको सुनकर में स्वयं जाग जाता हूं। और ऐसा रात में अनेक बार हो चुका है और खर्राटों की आवाज़ इतनी अधिक तेज़ और शोर से भरी हुई होती है कि मैं स्वयं जाग जाता हूं।"
वह व्यक्ति क्या कह रहा है, उसे ठीक से सुने बिना ही मनोविश्लेषक ने उससे कहा: "आप सामान्य रूप से दूसरे कमरे में जाकर सो जायें।"
तुम समझते हो?- यह ठीक वही है, जो प्रत्येक व्यक्ति कर रहा है। तुम कमरे बदलते जा रहे हो, लेकिन नींद निरंतर जारी है, खर्राटे भी जारी हैं, क्योंकि तुम एक दूसरे कमरे में भी उन्हें लेना नहीं छोड़ सकते हो। यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है, जो तुमसे पृथक हो, यह तुम हो, यह तुम्हारा मन है, यह तुम्हारा पूरा इकट्ठा किया गया अतीत है, तुम्हारी स्मृति है। तुम्हारा ज्ञान है- यह वही है जिसे हिंदू "संस्कार" कहते हैं! वे सभी आदतें, नियम और अनुशासन हैं, जिन्हें तुम्हारे मन ने निर्मित किया है। तुम दूसरे कमरे में जाते हो, और वे वहां भी तुम्हारा अनुसरण करती हैं।
तुम अपना धर्म बदल सकते हो, तुम हिंदू से एक ईसाई हो सकते हो अथवा तुम
एक ईसाई से एक हिंदू बन सकते हो- तुम केवल कमरे बदलते हो। उससे कुछ भी नहीं होगा। तुम अपने सद्गुरुओं को बदले चले जा सकते हो- तुम एक सद्गुरु के पास से एक दूसरे के पास, एक आश्रम से दूसरे में जा सकते हो, लेकिन किसी से भी अधिक सहायता नहीं मिलेगी। तुम कमरे बदल रहे हो, लेकिन मूल बात कमरों का बदलना नहीं है बल्कि तुम्हारे बदलने का है। तुम्हारे खर्राटे भरने का कमरे के साथ कोई भी संबंध नहीं है, कारण कमरा नहीं है, तुम ही उसके कारण हो।

यह पहली बात है जो समझ लेना है, तभी तुम इस सुंदर कथा का अनुसरण करने में समर्थ हो सकोगे।
जैसा भी है, तुम्हारा मन सोया हुआ है। लेकिन तुम अनुभव नहीं कर सकते
कि वह कैसे सोया हुआ है, क्योंकि तुम्हें प्रतीत होता है कि तुम खुली आंखों के साथ पूरी तरह जाग रहे हो। लेकिन क्या तुमने कभी भी कोई चीज़ देखी है; क्या तुम अपने खुले हुए कानों के साथ पूरी तरह जागे हुए प्रतीत होते हो, लेकिन तुमने क्या कभी कोई बात सुनी है?
तुम मुझे सुन रहे हो इसलिए तुम कहोगे- "हां! लेकिन तुम मुझे सुन रहे हो अथवा तुम अंदर अपने मन को सुन रहे हो? तुम्हारा मन निरंतर व्याख्या कर रहा है। मैं यहां हूं, तुमसे बात कर रहा हूं, लेकिन तुम मुझे सुनते हुए भी यहां नहीं हो। तुम्हारा मन निरंतर व्याख्या कर रहा है- "हां, यह ठीक है। मैं इससे सहमत हूं। यह बात पूरी तरह से झूठ है और मैं इससे सहमत नहीं हूं!" तुम्हारा मन वहां खड़ा हुआ निरंतर व्याख्या कर रहा है। इस टीका-टिप्पणी और मन की इस धुंध और कोहरे के कारण मैं तुम्हारे अंदर प्रवेश नहीं कर सकता। समझ तब आती है, जब तुम व्याख्या नहीं कर रहे हो और जब तुम पूरी तरह से सुन रहे हो।
एक छोटे से स्कूल में शिक्षिका ने पाया कि एक लड़का नहीं सुन रहा है।
वह बहुत चंचल, आलसी और बैचेन था। इसलिए उसने उससे पूछा- क्यों? क्या तुम किसी कठिनाई में हो? क्या तुम मुझे नहीं सुन पा रहे हो?"
लड़के ने कहा- "सुन तो ठीक से रहा हूं, पर ध्यान से सुनना ही एक समस्या है।"
उसने वास्तव में एक सूक्ष्म भेद बना दिया। उसने कहा: सुनना तो ठीक है
और मैं आपको सुन रहा हूं, लेकिन ध्यान से सुनना एक समस्या है- क्योंकि ध्यान से सुनना, सुनने की अपेक्षा कहीं अधिक है। ध्यान से सुनना पूरी सचेतनता के साथ सुनना है। केवल सुनना तो ठीक है, तुम्हारे सभी ओर ध्वनियां हैं, तुम सुन रहे हो, लेकिन तुम उन्हें ध्यान से नहीं सुन रहे हो। तुम्हें सुनना होगा क्योंकि ध्वनियां तुम्हारे कान के पर्दों पर दस्तक देंगीं, तुम्हें उन्हें सुनना ही होगा। लेकिन ध्यान से सुनने के लिए तुम वहां नहीं हो, क्योंकि ध्यान से सुनने का अर्थ है- एक गहन ध्यान देना, एक सम्पर्क जोड़ना, अंदर निरंतर कोई व्याख्या न चल रही हो, अंदर कोई है अथवा नहीं कहने वाला कोई सहमत अथवा असहमत होने वाला न हो, क्योंकि यदि तुम सहमत और असहमत हो, तो उस क्षण में तुम मुझे कैसे ध्यान से सुन सकते हो?
जब तुम सहमत हो, तो मैंने जो कुछ भी कहा वह पहले ही अतीत बन चुका है; और
जब तुम असहमत हो तो वह पहले ही चला गया और उस क्षण में तुम अंदर अपना सिर हिलाकर हां अथवा नहीं कहते हो और तुम चूक जाते हो- और तुम्हारे अंदर यह बात निरंतर चल रही है।
तुम ध्यान से नहीं सुन सकते। और तुम्हारे पास जितना अधिक उधार ज्ञान होता है, ध्यान पूर्ण होकर सुनने में उतनी ही अधिक कठिनाई होती है। ध्यान से सुनने का अर्थ है- निर्दोष ध्यान देना- तुम पूरी तरह ध्यान देकर सुनते हो। वहां उससे सहमत अथवा असहमत होने की कोई भी ज़रूरत नहीं है। मैं तुम्हारी सहमति अथवा असहमति की खोज में नहीं हूं। मैं तुमसे तुम्हारा मत नहीं मांग रहा हूं और न मुझे तलाश है कि तुम मेरा अनुसरण करो। मैं किसी भी तरह से तुम्हें कायल करने का भी प्रयास नहीं कर रहा हूं।
जब एक तोता एक वृक्ष पर बैठा चीखना शुरू करता है, तो तुम क्या करते हो? क्या तुम टीका-टिप्पणी करते हो? हां, तब भी तुम कहते हो; "बाधा उत्पन्न कर रहा है"ः- तुम ध्यान से एक तोते को भी नहीं सुन सकते। जब वृक्षों से गुज़रती हुई हवा चलती है तो एक सरसराहट की ध्वनि होती है, क्या तुम उसे ध्यान से सुनते हो? कभी-कभी, हो सकता वह तुम्हारी अचेतनता को पकड़ती है। लेकिन तब भी तुम टिप्पणी करते हो-"हां! सुंदर है।"
अब निरीक्षण करो: जब कभी तुम टीका-टिप्पणी करते हो, तुम्हें नींद आ जाती हैं अंदर मन आ जाता है और मन के साथ अतीत और भविष्य प्रवेश करते हैं। लम्बवत रेखा खो जाती है और तुम समतल और पृथ्वी के समानंतर हो जाते हो। जिस क्षण मन तुम्हारे अंदर प्रवेश करता है तुम भूमि के समान्तार हो जाते हो।
तुम शाश्वतता को खो देते हो।

पूरी तरह ध्यान से सुनो। वहां हां अथवा नहीं कहने की कोई भी आवश्यकता नहीं है। वहां कायल होने अथवा कायल न होने की भी कोई आवश्यकता नहीं है। पूरी तरह ध्यान से सुनो और सत्य अथवा असत्य तुम पर प्रकट होगा। यदि कोई व्यक्ति व्यर्थ की मूर्खतापूर्ण बात कह रहा है, यदि तुम सामान्य रूप से ध्यान से सुनते हो तो वह व्यर्थ की मूर्खता पूर्ण बात तुम पर मन की बिना किसी टिप्पणी के प्रकट होगी। यदि कोई व्यक्ति सत्य बोल रहा है तो वह तुम पर प्रकट होगा। सत्य अथवा असत्य, तुम्हारे मन की सहमति अथवा असहमति नहीं है, वह एक अनुभूति है। जब तुम पूर्ण संबंध में होते हो तो तुम अनुभव करते हो, और तुम पूरी तरह से यह अनुभव करते हो कि यह सत्य है अथवा असत्य है- और बात समाप्त हो जाती हैं। न उसके बारे में सोचना है और न उस बारे में कोई फिक्र करनी है। सोचने से क्या हो सकता है?
यदि एक विशिष्ट ढंग से तुम्हारा पालन पोषण हुआ है, यदि तुम एक ईसाई अथवा एक हिंदू अथवा एक मुसलमान हो, और मैं जो कुछ बात कह रहा हूं- वह यदि तुम्हारे लालन-पालन के साथ तुम्हारी सहमति से हुई है तो तुम कहोगे "हां" और यदि वह वैसे नहीं हुई है तो तुम कहोगे- नहीं। तुम यहां हो अथवा केवल तुम्हारा लालन-पालन यहां है। और लालन-पालन केवल एक संयोग है।
मन नहीं खोज सकता कि सत्य क्या है और मन यह भी नहीं खोज सकता कि असत्य क्या है। मन इस बारे में तर्क कर सकता है, वह कारण बता सकता है लेकिन सभी तर्क और कारण, थोपे गए नियम, अनुशासन और आदतों पर आधारित हैं। यदि तुम एक हिंदू हो तो तुम एक ढंग से तर्क करते हो, यदि तुम एक मुसलमान हो तो तुम भिन्न ढंग से तर्क देते हो। और प्रत्येक तरह के थोपे गए नीति, नियम, अनुशासन और आदतों अर्थात "कंडीशनिंग" तर्क और प्रमाण से उसे सत्य सिद्ध करते हो। यह वास्तव में तर्क देना और कारण बताना ही नहीं है, तुम उसे प्रमाण जुटाकर सत्य सिद्ध करते हो।
मुल्ला नसरुद्दीन बहुत अधिक बूढ़ा हो गया और वह सौ वर्ष की आयु तक जा पहुंचा। एक रिपोर्टर उससे भेंट करने के लिए आया क्योंकि वह चारों ओर के उन भागों का सबसे अधिक बुजुर्ग नागरिक था। रिपोर्टर ने कहा: "नसरुद्दीन! इस बारे में थोड़े से प्रश्न हैं जो मैं तुमसे पूछना चाहता हूं। उनमें से एक यह है कि क्या तुम यह सोचते हो कि तुम सौ वर्ष और अधिक जीने में समर्थ हो सकते हो?"
नसरुद्दीन ने कहा: "निश्चित रूप से, क्योंकि सौ वर्षों पूर्व मैं इतना अधिक मजबूत नहीं था जितना कि अब हूं।"
सौ वर्ष पूर्व वह हाल ही जन्मा एक बच्चा था, इसीलिए उसने कहा: "सौ वर्ष पूर्व मैं इतना अधिक शक्तिशाली नहीं था जितना कि अभी हूं, और यदि एक छोटा, कमजोर और असहाय बच्चा सौ वर्ष तक जी सका, तो मुझे क्यों नहीं जीना चाहिए?" यह तर्क के द्वारा अपनी बात को सिद्ध करना है। यह तर्कपूर्ण प्रतीत होता है लेकिन इसमें कुछ चीज़ अनुपस्थित है। यह कामना को पूरा करना है। तुम लंबी अवधि तक जीना चाहते हो, इसलिए तुम अपने चारों ओर एक तर्क का आधार सृजित करते हो और तुम आत्मा की शाश्वतता में विश्वास करते हो। तुम एक ऐसी संस्वृफति में पाले-पोसे गए हो जो कहती है कि आत्मा शाश्वत है। यदि कोई व्यक्ति कहता है-"हां, आत्मा अमर है" तो तुम सिर हिलाते हो और तुम कहते हो-"हां, यह ठीक है।" लेकिन वह ठीक नहीं है अथवा गलत है। तुम "हां" इसलिए कहते हो क्योंकि तुम्हारे अंदर गहरी जड़ें जमाए हुए संस्कार हैं। वहां अन्य दूसरे लोग भी हैं। आधा संसार जिसमें हिंदू, बौद्ध और जैन हैं, वे विश्वास करते हैं कि आत्मा अमर है और वहां अनेक पुनर्जन्म भी होते हैं और आधा संसार जिसमें ईसाई, मुसलमान और यहूदी हैं, वे विश्वास करते हैं कि आत्मा अमर नहीं है तथा वहां कोई भी पुनर्जन्म नहीं होता है। केवल एक ही जीवन होता है और तब आत्मा उस सर्वोच्च सत्ता में विलुप्त हो जाती है।
आधा संसार इस बात में विश्वास करता है और आधा संसार उस बात में विश्वास करता है तथा उन सभी के पास अपने-अपने तर्क हैं और उन सभी लोगों के पास अपने तर्कों को सत्य प्रमाणित करने वाले प्रमाण भी हैं। तुम जो भी विश्वास करना चाहते हो, वही विश्वास करोगे। लेकिन नीचे गहराई में तर्क नहीं तुम्हारी कामना ही तुम्हारे विश्वास का कारण बनेगी। मन तर्कपूर्ण प्रतीत होता है लेकिन वह है नहीं। तुम जोकुछ भी विश्वास करना चाहते हो, वह

प्रमाणों द्वारा सत्य सिद्ध करने वाली एक प्रक्रिया है और मन "हां" कह देता है। वह चाह कहां से आ रही है? और वह तुम्हारे पालन-पोषण करने और संस्कारों से आ रही है।
ध्यान से सुनना एक पूर्ण रूप से भिन्न कार्य-व्यवहार है, उसके पास उसका पूर्ण रूप से भिन्न एक गुण और लक्षण है। जब तुम ध्यान से सुनते हो, तुम एक हिंदू अथवा एक मुसलमान अथवा एक जैन अथवा एक ईसाई नहीं हो सकते। जब तुम होशपूर्ण सुनते हो, तुम एक आस्तिक अथवा एक नास्तिक नहीं हो सकते। जब तुम होशपूर्ण होकर सुनते हो तो तुम उसे अपने संप्रदाय अथवा शास्त्रों की त्वचा के द्वारा नहीं सुन सकते- तुम्हें सभी को एक ओर अलग रख देना होता है और तुम उसे पूर्ण रूप से होशपूर्ण होकर सुनते हो।
भयभीत मत हो, मैं तुमसे सहमत होने के लिए नहीं कह रहा हूं। पूर्ण रूप
से उसे तुम सहमति अथवा असहमति की फिक्र किए बिना सुनो और तब एक संवाद घटित होता है।
यदि वहां उसमें सत्य है तो अचानक तुम उसकी ओर खिंचते हो। तुम्हारा पूरा अस्तित्व जैसे मानो एक चुंबक के द्वारा खींच लिया जाता है। तुम उसमें पिघलकर लीन हो जाते हो और तुम्हारा हृदय यह अनुभव करता है कि वह बिना किसी कारण, बिना कोई तर्क-वितर्क के भी सत्य है। इसी कारण धर्म कहते हैं कि परमात्मा तक जाने का मार्ग तर्क नहीं है। वे कहते हैं कि वह आस्था है, वे कहते हैं कि वह श्रद्धा है।
श्रद्धा क्या है? क्या वह एक विश्वास है? नहीं, क्योंकि विश्वास का संबंध मन से है। श्रद्धा एक संवाद है। तुम पूरी तरह से अपने सभी सुरक्षा- कवच और अन्य सुरक्षात्मक साधनों को उठाकर अलग रख देते हो, तुम उसे सहन करने योग्य बन जाते हो। तुम किसी बात को ध्यान से सुनते हो और तुम उसे इतनी अधिक समग्रता से सुनते हो कि तुम्हारे अंदर यह भाव उत्पन्न होते हैं कि वह सत्य है अथवा नहीं है। यदि वह असत्य है, तुम उसे अनुभव करते हो। ऐसा क्यों होता है? यदि वह सत्य है, तुम उसे अनुभव करते हो। ऐसा क्यों होता है?
यह इसलिए होता है क्योंकि सत्य तुम्हारे अंदर ही निवास करता है। जब तुम पूर्ण रूप से निर्विचार होते हो, तुम्हारे अंतरस्थ का सत्य यह अनुभव कर सकता है कि सत्य वहां है क्योंकि समान हमेशा समान का अनुभव कर लेता है: वह उसके अनुरूप होता है। अचानक प्रत्येक चीज़ अनुकूल और ठीक हो जाती है, प्रत्येक चीज़ एक आकार में उतरने लगती है और शून्यता एक सुव्यवस्थित ब्रह्मांड बन जाता है। शब्द एक पंक्ति में उतरने लगते हैं और एक कविता का जन्म होता है, तब प्रत्येक चीज़ पूर्ण रूप से योग्य और अनुरूप हो जाती है। यदि तुम संवाद में हो और सत्य वहां है तो तुम्हारे अंदर की आत्मा की उसके साथ पूर्ण रूप से सहमति बन जाती है, लेकिन यह एक समझौते जैसी सहमति नहीं है। तुम एक समस्वरता का अनुभव करते हो। तुम एक हो जाते हो। यही श्रद्धा है। यदि कुछ चीज़ गलत है तो वह तुमसे सामान्य रूप से गिर जाती है- तुम कभी दुबारा सोचते ही नहीं, तुम उसकी ओर दूसरी बार देखते ही नहीं, उसमें वहां कोई अर्थ होता ही नहीं। तुम कभी नहीं कहते "यह असत्य है" अथवा यह पूरी तरह से अनुकूल नहीं है- तुम गतिशील हो जाते हो। यदि वह अनुकूल है तो वह तुम्हारा घर बन जाता है। यदि वह अनुकूल नहीं है तो तुम आगे बढ़ जाते हो। ध्यानपूर्ण होकर सुनने से ही श्रद्धा आती है। पर होशपूर्ण होकर सुनने में सुनने और ध्यान का जोड़ होता है। तुम गहरी नींद में हो- तुम होशपूर्ण कैसे हो सकते हो? लेकिन गहरी नींद में भी होश का एक खंड तुम्हारे अंदर तैरता रहता है अन्यथा वहां कोई मार्ग ही नहीं होता। तुम एक बंदीघर में हो सकते हो लेकिन संभावनाएं हमेशा बनी रहती हैं- तुम उससे बाहर आ सकते हो। वहां कठिनाइयां हो सकती हैं लेकिन यह असंभव नहीं है क्योंकि बंदी उससे छुटकारा पाकर भाग जाने के लिए जाने जाते हैं। एक बुद्ध उसे छोड़कर निकल जाते हैं, एक महावीर उसे छोड़ देते हैं और एक जीसस उससे छुटकारा पा लेते हैं, वे सभी तुम्हारे समान ही एक बंदी थे। बंदियों ने पहले भी छुटकारा पाया है- बंदी हमेशा से ही मुक्त होते रहे हैं। वहां कहीं-न-हीं एक द्वार खुला रहता है, एक संभावना बनी रहती है, तुम्हें सामान्य रूप से उसके लिए खोज करनी है।

यदि यह असंभव है, यदि वहां कोई भी संभावना नहीं है, तब वहां कोई समस्या नहीं है। समस्या तब उत्पन्न होती है जब वहां संभावना होती है- तुम थोड़े से सजग होते हो। यदि तुम पूर्ण रूप से सजग नहीं थे तब वहां कोई भी समस्या न होती। यदि तुम एक मूर्च्छा में थे तब वहां कोई भी समस्या नहीं होती लेकिन तुम पूर्ण अचेतावस्था में नहीं हो, तुम सोये हुए हो लेकिन पूर्ण रूप से नहीं। दोनों स्थितियों के मध्य वहां एक अंतराल है, वहां एक रिसावट है। तुम्हें स्वयं अपने अंदर ही ध्यान में होने की उस संभावना को खोजना है। कभी-कभी तुम ध्यानपूर्ण बन जाते हो। यदि कोई व्यक्ति आता है और तुम पर चोट करता है तो होश आ जाता है। यदि तुम खतरे में हो, यदि तुम रात में एक जंगल से होकर गुजर रहे हो और वहां अंधेरा है तो तुम एक भिन्न गुण के ध्यान के साथ चलते हो। तुम जाग गए हो और वहां कोई भी विचार नहीं है। तुम पूरी तरह से स्थिति के साथ और जोकुछ भी हो रहा है उसके साथ संवाद बनाए हुए हो। यदि एक पत्ता भी खड़कता है, तुम पूर्ण रूप से सजग हो। तुम ठीक एक खरगोश अथवा एक हिरण के समान हो, वे जीव हमेशा जागे हुए रहते हैं। तुम्हारे कान पहले से बड़े हो गए हैं, तुम्हारी आंखें खुलकर फैल गई हैं, चारों ओर जोकुछ भी हो रहा है, तुम उसका अनुभव कर रहे हो क्योंकि वहां खतरा है। खतरे में तुम्हारी नींद कम हो जाती है, तुम्हारी सजगता अधिक होती है क्योंकि गेस्टाल्ड बदल जाता है। यदि कोई व्यक्ति तुम्हारे हृदय पर एक खंजर रख देता है और बस वह उसे तुम्हारे अंदर भोंकने ही जा रहा है तो उस क्षण में भी वहां कोई विचार नहीं होता है। अतीत लुप्त हो जाता है, भविष्य भी विलुप्त हो जाता है, तुम यहीं और अभी में होते हो।
वहां संभावना बनी रहती हैं यदि तुम प्रयास करते हो तो तुम एक किरण को
भी पकड़ लोगे, जो तुम्हारे अंदर मौजूद है और एक बार तुम एक किरण को पकड़ लेते हो तो सूरज भी बहुत अधिक दूर नहीं है, तब किरण के द्वारा तुम सूरज तक पहुंच सकते हो- किरण ही मार्ग बन जाती है।
इसलिए स्मरण रहे: ध्यान खोजो, एक दिन के चौबीसों घंटे तुम अपने अंदर उसकी निरंतरता बनी रहने दो। तुम भोजन करो अथवा जोकुछ भी करो लेकिन होशपूर्ण बने रहने का प्रयास करो। टहलो लेकिन सचेत बनकर चलो। प्रेम करो लेकिन पूर्ण रूप से सचेत बनकर। प्रयास करो।
यह केवल एक दिन में पूर्ण नहीं बन सकता है लेकिन यदि एक दिन भी तुम इसे पकड़ पाते हो तो तुम्हें एक गहन तृप्ति का अनुभव होगा- क्योंकि गुण समान है, यदि तुम एक किरण को पा लेते हो अथवा पूरे सूरज को। यदि तुम सागर से एक बूंद पानी का स्वाद लो अथवा पूरे सागर का, नमकीन स्वाद समान होगा और स्वाद ही तुम्हारी एक झलक तथा एक सटोरी बन जाती है।
यहां मुझे ध्यानपूर्ण सुनते हुए तुम सजग बने रहो। जब कभी तुम्हें अनुभव हो कि तुम फिर से नींद में चले गए हो तो केवल थोड़ा हिलो या कंपो और स्वयं अपने को वापस ले आओ। जब सड़क पर चल रहे हो और यदि तुम अनुभव करते हो कि तुम नींद में चल रहे हो तो थोड़ा-सा हिलो अथवा कांपो और पूरे शरीर को थोड़ा- सा कांपने दो। सजग हो जाओ। यह सजगता केवल कुछ क्षणों तक बनी रहेगी और तुम फिर उसे खो दोगे क्योंकि तुम इतनी लंबी अवधि तक एक नींद में ही जीते रहे हो, वह एक ऐसी आदत बन जाती है कि तुम नहीं समझ सकते कि कैसे तुम उसके विरुद्ध जा सकते हो।
मैं एक बार हवाई जहाज से कलकत्ते से बंबई तक यात्रा कर रहा था और एक बच्चा बहुत अधिक उत्पात कर रहा था, वह एक कोने से दौड़ते हुए दूसरे गलियारे तक जा रहा था और प्रत्येक व्यक्ति को परेशान कर रहा था- तभी चाय और कॉफी लेकर वेट्रेस आई। बच्चा दौड़कर उसके पास गया और प्रत्येक चीज़ गड्डबड्ड हो गई। तब बच्चे की मां ने उससे कहा-"अब सुनो! मैंने तुमसे कई बार कहा है कि तुम बाहर जाकर क्यों नहीं खेलते?"
केवल पुरानी आदत। वह मेरे बगल में बैठी हुई थी और जोकुछ उसने कहा था
वह उसके प्रति सचेत नहीं थी। जैसे ही उसने यह कहा, मैंने ध्यान से उसे सुना और वह कभी उसके प्रति जोकुछ उसने कहा था सजग ही नहीं हुई। केवल बच्चे ने उसे सजग बनाते हुए कहा-"आपके कहने का क्या अर्थ है? यदि मैं जहाज से बाहर जाता हूं तो मैं समाप्त हो जाउंफगा।"

निश्चित रूप से एक बच्चा कहीं अधिक होशपूर्ण होता है क्योंकि उसके पास कम आदतें होती हैं। एक बच्चा कहीं अधिक सजग होता है क्योंकि उसके पास उसके चारों ओर कम सुरक्षा-कवच होते हैं और वह कैद में कम होता है। इसी कारण सभी धर्म कहते हैं कि जब एक व्यक्ति एक ऋषि बन जाता है तो उसके पास एक बच्चे जैसे कुछ गुण होते हैं: एक निर्दोषता और भोलापन होता है। तब आदतें छूट जाती हैं क्योंकि आदतें तुम्हारा कारागार हैं और सोना सबसे बड़ी आदत है।
अब मेरे साथ इस बोध-कथा में प्रवेश करने का प्रयास करो।
जिस समय तोकाई एक विशिष्ट मठ में, एक अभ्यागत की भांति रुका हुआ था,
तो रसोईघर में नीचे फर्श पर एक आग लगना शुरू हो गई।
एक भिक्षु ने तेजी से तोकाई के शयनकक्ष में प्रवेश करते हुए
और चिल्लाते हुए कहा-"सद्गुरु! एक आग, एक आग लग गई है।"

थोड़ा-सा उठते हुए तोकाई ने पूछा-"ओह! कहां? कहां" भिक्षु ने चिल्लाते हुए कहा-"वह रसोईघर के फर्श पर नीचे लगी हुई है, आप तुरंत उठ जाइये।" उनींदी स्थिति में डूबे हुए सद्गुरु ने कहा-"बस, रसेईघर में? ठीक है मुझे बताना कि आगे क्या हुआ और जब वह गलियारे तक पहुंचे, तब लौटकर आना और मुझे बताना।

और तोकाई शीघ्र ही फिर से खर्राटे लेने लगा।
तोकाई एक असाधारण ज़ेन सद्गुरु था। वह बुद्धत्व को उपलब्ध था और पूर्ण सचेतनता में जी रहा था और जब तुम पूर्ण सचेतना में जीते हो, तुम क्षण-क्षण में जीते हो। तुम योजना नहीं बना सकते, तुम अगले क्षण के लिए भी योजना नहीं बना सकते क्योंकि कौन जानता है कि अगला क्षण कभी नहीं आ सकता है। तुम पहले से ही कैसे योजना बना सकते हो क्योंकि कौन जानता है कि अगले क्षण क्या और कैसी स्थिति होगी? यदि तुम बहुत अधिक योजना बनाते हो तो तुम उसकी ताज़गी और नूतनता से चूक सकते हो।
जीवन एक ऐसा प्रवाह और परिवर्तन है कि कोई भी चीज़ वैसी ही नहीं बनी रहती है और प्रत्येक चीज़ गतिशील रहती है। हेराक्लाईटस ने कहा है कि तुम वैसी ही नदी के समान जल में दोबारा कदम नहीं रख सकते- फिर तुम कैसे योजना बना सकते हो? जिस समय दूसरी बार तुम नदी में कदम रख रहे हो उसमें बहुत अधिक पानी बह चुका है और यह वही समान नदी नहीं है। यदि अतीत स्वयं अपने को दोहराता है तो योजना बनाना संभव है। लेकिन अतीत कभी स्वयं अपने को दोहराता नहीं है। दोहराना कभी होता ही नहीं है यदि तुम किसी भी चीज़ को स्वयं अपने को दोहराते हुए देखते हो तो वह केवल इसलिए है क्योंकि तुम उसे पूर्ण रूप से नहीं देख सकते हो।
हेराक्लाईटस पुनः कहता है कि प्रत्येक दिन सूरज नया होता है। निश्चित रूप से तुम कहोगे, यह तो वही समान सूरज है- लेकिन वह समान नहीं हो सकता है। उसके समान होने की वहां कोई भी संभावना ही नहीं है। बहुत कुछ बदल गया है: पूरा आकाश भिन्न है, सितारों का पूरा स्वरूप भिन्न है और स्वयं सूरज ही अधिक पुराना हो गया है। अब वैज्ञानिक कहते हैं कि चालीस लाख वर्षों के अंदर सूरज मर जाएगा और उसकी मृत्यु निकट आ रही है क्योंकि सूरज एक जीवंत दृश्यसत्ता है और वह बहुत अधिक पुराना और बूढ़ा है और उसे मरना ही होगा। सूरज जन्म लेते हैं, वे जीवित रहते हैं और वे मर जाते हैं। हम लोगों के लिए चालीस लाख वर्षों की अवधि बहुत अधिक लंबी है लेकिन सूरज के लिए यह कुछ भी नहीं है वह इस तरह है जैसे मानो अगले क्षण वह मरने जा रहा हो। और जब सूरज मरता है तो पूरा सौर-परिवार विलुप्त हो जाएगा क्योंकि सूरज ही उनका स्रोत है। सूरज प्रत्येक दिन मर रहा है और वह बूढ़ा और बूढ़ा, पुराना और पुराना होता ही जा रहा है- वह वैसा ही समान नहीं बना रह सकता। प्रत्येक दिन ऊर्जा नष्ट होती है और एक विराट मात्रा में ऊर्जा किरणों में पेंफकी जा रही है। सूरज प्रतिदिन कम हो रहा है, वह थक रहा है। वह वैसा ही समान नहीं है और वह समान हो भी नहीं सकता है।
जब सूर्य उदित होता है, वह एक भिन्न संसार के ऊपर उगलता है और उसको देखने वाले भी समान नहीं होते हैं। कल हो सकता है कि तुम प्रेम से भरे हुए

थे, तब तुम्हारी आंखों की दृष्टि भिन्न थीं और निश्चित रूप से सूरज भिन्न दिखाई दिया था। तुम प्रेम के साथ इतने अधिक भरे हुए थे कि एक विशिष्ट गुणों वाला काव्य तुम्हारे चारों ओर व्याप्त था तथा तुमने उस काव्य के द्वारा उसे देखा था और हो सकता है कि सूरज एक भगवान के समान दिखाई दिया हो, जैसा कि उसे वेदों के ऋषियों ने देखा था। वे लोग काव्य में इतने अधिक डूब गए थे कि उन्होंने सूरज को भगवान कहकर पुकारा। वे अस्तित्व के साथ प्रेम में डूबे हुए कवि थे, वे वैज्ञानिक नहीं थे। वे लोग इस खोज में नहीं थे कि पदार्थ क्या होता है, वे लोग तो इस खोज में थे कि चित्तवृत्ति क्या होती है। उन्होंने सूर्य की आराधना की। उन्हें अनिवार्य रूप से बहुत प्रसन्न और अहोभाव में डूबे परम आनंदित व्यक्ति होना चाहिए क्योंकि तुम केवल तभी आराधना कर सकते हो, जब तुम वरदान, आशीर्वाद और दिव्यानंद का अनुभव करते हो, तुम केवल तभी उसकी आराधना कर सकते हो जब तुम अनुभव करते हो कि तुम्हारा पूरा जीवन एक वरदान बन गया है।
कल हो सकता है कि तुम एक कवि रहे हो, आज हो सकता है तुम किसी भी प्रकार
से एक कवि न हो क्योंकि तुम्हारे अंदर प्रत्येक क्षण एक नदी प्रवाहित हो रही है। तुम भी बदल रहे हो। कल चीज़ें एक-दूसरे के अनुकूल थीं, आज प्रत्येक चीज़ अव्यवस्थित है, तुम क्रोधित हो, तुम निराश और उदास हो। सूरज वैसा ही समान कैसे हो सकता है जब उसे देखने वाला बदल गया है। प्रत्येक चीज़ बदलती है इसलिए एक समझदार व्यक्ति कभी भी ठीक से भविष्य के लिए योजना नहीं बनाता, वह बना भी नहीं सकता है लेकिन भविष्य से मुलाकात करने के लिए वह तुम्हारी अपेक्षा कहीं अधिक तैयार होता हैं यह एक विरोधाभास है। तुम योजना बनाते हो लेकिन तुम इतने अधिक तैयार नहीं होते हो।
वास्तव में योजना बनाने का अर्थ है कि तुम इतने अधिक संकुचित और अपने
को अपर्याप्त होने का अनुभव करते हो और इसी कारण तुम योजना बनाते हो अन्यथा योजना बनाने की आवश्यकता क्या है। एक मेहमान आ रहा है और तुम योजना बनाते हो कि तुम उससे क्या कहने जा रहे हो। कैसी मूर्खता की बात है? जब मेहमान आता है, क्या तुम स्वयं-प्रवर्तित नहीं हो सकते हो? लेकिन तुम भयभीत हो, तुम्हें स्वयं पर विश्वास नहीं है और न तुम्हारे पास कोई आस्था है, तुम योजना बनाते हो और तुम एक रिहर्सल से होकर गुजरते हो। तुम्हारा जीवन एक वास्तविक चीज़ न होकर एक अभिनय है क्योंकि अभिनय करने के लिए ही पूर्वाभ्यास करने की आवश्यकता होती है। स्मरण रहे: जब तुम एक पूर्वाभ्यास से होकर गुजर रहे हो तो जोकुछ भी होता है, वह वास्तविक न होकर एक अभिनय ही होगा। मेहमान अभी आया नहीं है और तुम पहले ही से योजना बना रहे हो कि तुम उससे क्या कहोगे, तुम कैसे उसे हार पहनाओगे, तुम कैसे उसे प्रत्युत्तर देने जा रहे हो, तुम पहले ही उससे बातें कर रहे हो। मन में मेहमान पहले ही से आ पहुंचा है और तुम उससे बातचीत कर रहे हों वास्तव में जिस समय तक मेहमान पहुंचता है तुम उसके साथ थक चुके होगे। वास्तव में जिस समय मेहमान पहुंचता है वह तुम्हारे साथ पहले ही लंबी अवधि तक रह चुका है और तुम उससे ऊब चुके हो और तुम उससे जोकुछ भी कहोगे, वह सत्य और प्रामाणिक न होगा। वह तुम्हारे अंदर से नहीं आएगा, वह तुम्हारी स्मृति से आएगा। वह तुम्हारे अस्तित्व से बंदूक की गोली की तरह नहीं निकलेगा, वह तुम्हारे रिहर्सल से आएगा, जिसे तुम करते रहे हो और जो तुम्हारे पास है। वह नकली होगा और एक मिलन संभव नहीं होगा क्योंकि एक नकली व्यक्ति कैसे मुलाकात कर सकता है? और हो सकता है कि ऐसी ही समान स्थिति मेहमान के भी साथ हो, वह भी योजना बना रहा था और वह भी हो सकता है तुम्हारे साथ पहले ही थक चुका हो। उसने बहुत अधिक बातचीत कर ली हो और वह मौन रहना पसंद करे और तब वह जोकुछ भी कहेगा वह रिहर्सल के बाहर होगा।
इसलिए जहां कहीं भी दो व्यक्ति मिलते हैं तो वहां कम-से-कम चार व्यक्ति मिल रहे हैं और अधिक भी संभव हो सकते हैं। दो असली लोग पीछे हैं, पृष्ठभूमि में हैं और दो नकली लोग एक-दूसरे का आमना-सामना करते हुए मुलाकात कर रहे हैं। प्रत्येक बात नकली है क्योंकि वह योजना से आती है। जब तुम एक व्यक्ति से प्रेम भी करते हो, तुम योजना बनाते हो और एक रिहर्सल से होकर गुजरते हो, वे सभी गतिविधियां तुम करने जा रहे हो कि तुम कैसे चुंबन लेने जा रहे हो और कैसी मुद्राएं बनाने जा रहे हो, वे सभी चीज़ें नकली बन

जाती हैं। तुम स्वयं अपने पर भरोसा क्यों नहीं करते? जब वह क्षण आता है तो तुम्हें अपनी स्वेच्छा से किए गए कार्यों पर विश्वास क्यों नहीं होता? मन उस क्षण विश्वास नहीं कर सकता, वह हमेशा भयभीत रहता है और इसी कारण
वह योजना बनाता है। योजना बनाने का अर्थ है- भय। वह भय ही है जो योजना बनाता है और योजना बनाने के द्वारा तुम प्रत्येक चीज़ से चूक जाते हो। प्रत्येक वह चीज़ जो सुंदर है और सत्य है, प्रत्येक वह चीज़ जो अलौकिक है, तुम उससे चूक जाते हो। योजना बनाने के साथ कोई भी व्यक्ति कभी भी परमात्मा तक नहीं पहुंचा है और न कोई भी व्यक्ति कभी पहुंच सकता है।
जिस समय तोकाई एक विशिष्ट मठ में, एक अभ्यागत की भांति रुका हुआ था तो रसोईघर के नीचे फर्श पर, एक आग लगना शुरू हो गई।
पहली बात: आग, भय उत्पन्न करती है क्योंकि वह मृत्यु है। यदि आग भी भय उत्पन्न नहीं कर सकती तो कोई भी चीज़ भय उत्पन्न नहीं कर सकती। लेकिन आग भी भय उत्पन्न नहीं कर सकती जब तुमने मृत्यु से मुठभेड़ की हो और जब तुम जानते हो कि मृत्यु अस्तित्व में ही नहीं है अन्यथा जिस क्षण तुम "आग" का शब्द सुनते हो, तुम एक दहशत में होते हो। वहां वास्तविक आग होने की भी कोई आवश्यकता नहीं है, केवल कोई व्यक्ति दौड़ता हुआ आता है और कहता है- "आग" और तुम दहशत में हो जाओगे। कोई व्यक्ति ऊपर से नीचे कूद सकता है और स्वयं को मार सकता है और वहां कोई भी आग नहीं थी। केवल आग का शब्द ही तुम्हें दहशत में डाल सकता है।
तुम शब्दों के साथ जीते हो। कोई व्यक्ति कहता है- नींबू और तुम्हारे मुंह प्रवाहित होना शुरू हो जाता है। कोई व्यक्ति कहता है- "आग" और तुम यहां और अधिक नहीं होते, तुम पहले ही भाग चुके होते हो। तुम वास्तविकताओं के साथ नहीं, तुम शब्दों के साथ जीते हो। तुम वास्तविकताओं के साथ नहीं चिह्नों के साथ जीते हो और सभी चिह्न बनावटी हैं और वे वास्तविक नहीं हैं।
मैंने सुना है और संयोग से दूसरों की बातचीत में सुना है कि एक बूढ़ी
महिला एक लड़की को किसी विशिष्ट चीज़ को पकाकर तैयार करने की विधि सिखला रही थी। वह उसे स्पष्ट कर रही थी और तभी उसने कहा-"शीरे की बोतल से तेजी से छह बार उड़ेलना और प्रत्येक बार उड़ेलने पर "ग्लग" जैसी आवाज होगी।"
युवा लड़की ने पूछा-"छह बार ग्लग जैसी आवाज से क्या मतलब है?"
वृद्ध स्त्री ने कहा-"बोतल से शीरा बर्तन में उड़ेलने पर "ग्लग" ध्वनि निकलती है। जब छह बार ग्लग जैसी आवाज निकले, बस उतना ही शीरा।"
युवा लड़की उलझन में पड़ गई और उसने फिर पूछा-"यह "ग्लग" जैसी आवाज क्या होती है? मैंने पहले इसे कभी नहीं सुना।"
वृद्ध महिला ने कहा-"हाय राम! तुम इतनी सरल-सी भी बात नहीं समझती? तब तुम्हें पाक-कला सिखाना बहुत कठिन है।"
युवा लड़की ने कहा-"वृफपा करके मुझे बताइए कि इस "ग्लग" जैसी आवाज से क्या मतलब है?"
बूढ़ी महिला ने कहा-"तुम जग के मुंह कोढककर जरा-सा मुंह हटाओ तो ग्लग जैसी ध्वनि निकलती है। यह हुआ एक ग्लग। इसी तरह पांच ग्लग और छह ग्लग।" लेकिन पूरी भाषा ठीक इसी के समान है। किसी भी शब्द का वास्तव में कुछ
भी अर्थ नहीं होता है। आपसी संबंधों के द्वारा हमी लोग उसे अर्थ देते हैं। इसी कारण संसार में तीन हजार भाषाएं विद्यमान हैं लेकिन वहां तीन हजार वास्तविकताएं नहीं हैं। पूरी भाषा ही ठीक "ग्लग" के ही समान है।
तुम अपनी व्यक्तिगत भाषा स्वयं सृजित कर सकते हो और इस बारे में कोई
भी समस्या नहीं है। प्रेमी हमेशा अपनी निजी भाषा सृजित करते हैं, वे ऐसे शब्दों का प्रयोग करना प्रारंभ कर देते हैं कि जिन्हें कोई भी व्यक्ति नहीं समझता है कि वे क्या कह रहे हैं लेकिन वे लोग उसे समझते हैं। शब्द प्रतीकात्मक हैं। वहां वास्तव में कोई भी अर्थ नहीं होता है, अर्थ तो दिया जाता है। जब कोई व्यक्ति कहता है- "आग" तो वहां शब्द में कोई भी आग नहीं है, वहां वह हो भी नहीं सकती। जब कोई व्यक्ति कहता है " परमात्मा" तो परमात्मा मे ंवहां कोई भी परमात्मा नहीं है - हो भी नहीं सकता है। परमात्मा शब्द परमात्मा नहीं है। जब कोई व्यक्ति कहता है- प्रेम, तो प्रेम के शब्द में प्रेम नहीं है।

जब कोई व्यक्ति कहता है-"मैं तुमसे प्रेम करता हूं", तो शब्दों के द्वारा धोखा मत खा जाना। लेकिन तुम धोखा खाओगे क्योंकि कोई भी व्यक्ति वास्तविकता की ओर नहीं देखता है; लोग केवल शब्दों की ओर देखते हैं। जब कोई व्यक्ति कहता है-"मैं तुमसे प्रेम करता हूं" तो तुम सोचते हो- "हां, वह मुझसे प्रेम करता है" अथवा "हां, वह मुझसे प्रेम करती है"। तुम एक जाल में फंस रहे हो और तुम कठिनाई में पड़ोगे। इस पुरुष अथवा इस स्त्री की केवल वास्तविकता की ओर देखो। शब्दों को मत सुनो, वास्तविकता को सुनों इस व्यक्ति के यथार्थ के साथ संबंध जोड़ो और समझ का जन्म होगा कि वह जोकुछ भी कह रहा है, वे केवल शब्द हैं अथवा वे तृप्त और संतुष्ट करने वाली सामग्री भी अपने साथ लिए हुए हैं। और तृप्त होने वाली सामग्री पर निर्भर रहो तथा कभी भी शब्दों पर आश्रित मत रहो, अन्यथा देर अथवा सवेर तुम निराश होगे। संसार में इतने अधिक प्रेमी, लगभग निन्यानवे प्रतिशत प्रेमी निराश हैं। शब्द ही इसका कारण हैं। उन्होंने शब्दों में विश्वास किया और उन्होंने वास्तविकता की ओर नहीं देखा।
शब्दों के बादलों से घिरे बिना बने रहो। अपनी आंखों को शब्दों से बचाकर स्पष्ट रखो। अपनी आंखों में और अपने कानों में शब्दों को व्यवस्थित होने की अनुमति मत दो अन्यथा तुम एक मिथ्या संसार में जीते रहोगे। शब्द स्वयं अपने में ही नकली हैं और वे केवल तभी अर्थपूर्ण बनते हैं कि जहां से वे शब्द आ रहे हैं, वहां यदि हृदय में कुछ सत्य विद्यमान है।
जिस समय तोकाई एक विशिष्ट मठ में
एक अभ्यागत की भांति रुका हुआ था,
तो रसोईघर के नीचे फर्श पर,
एक आग लगना शुरू हो गई।
आग भय है, आग मृत्यु है- लेकिन आग के शब्द में कुछ भी नहीं है।
एक भिक्षु ने तेजी से तोकाई के शयनकक्ष में प्रवेश करते हुए
और चिल्लाते हुए कहा-"सद्गुरु एक आग, एक आग लग गई है।
वह उत्तेजित था, क्योंकि मृत्यु निकट थी।
थोड़ा-सा उठते हुए तोकाई ने पूछा-"ओह! कहां?"
तुम एक सद्गुरु को उत्तेजित नहीं कर सकते, यदि मृत्यु भी वहां मौजूद
हो क्योंकि उत्तेजना का संबंध मन से है। यदि मृत्यु भी वहां हो, वह भी तुम एक सद्गुरु को चकित नहीं कर सकते, क्योंकि विस्मित होने का संबंध भी मन से है। तुम एक सद्गुरु को चकित क्यों नहीं कर सकते?- क्योंकि वह कभी भी किसी चीज़ की आशा नहीं रखता है। तुम एक ऐसे व्यक्ति को कैसे चकित कर सकते हो जो कभी भी किसी चीज़ की आशा अथवा अपेक्षा नहीं करता। क्योंकि तुम आशा करते हो और तब कुछ अन्य चीज़ घटित होती है, इसी कारण तुम चकित हो जाते हो। यदि तुम एक सड़क पर टहल रहे हो और तुम आते हुए एक मनुष्य को देखते हो और अचानक वह घोड़ा बन जाता है, तुम आश्चर्यचकित हो जाओगे, तुम चकरा जाओगे कि यह हुआ क्या? लेकिन तोकाई के समान व्यक्ति इस पर भी आश्चर्य नहीं करेगा क्योंकि वह जानता है कि जीवन प्रवाहवान है- यहां प्रत्येक चीज़ संभव है: एक मनुष्य एक घोड़ा बन सकता है और एक घोड़ा एक मनुष्य बन सकता है। यह वही है जो पहले भी अनेक बार हो चुका है: अनेक घोड़े मनुष्य बन गए हैं और अनेक मनुष्य घोड़े बन गए हैं और जीवन गतिशील है।
एक सद्गुरु बिना किसी आशा या अपेक्षा के बना रहता है, तुम उसे चकित नहीं कर सकते हो। उसके लिए प्रत्येक चीज़ संभव है और वह किसी भी संभावना के लिए बंद नहीं है। वह पूर्ण रूप से हृदय के द्वार खोलकर इसी क्षण में जीता है, जोकुछ भी होता है, वह होता है। उसके पास वास्तविकता से मिलने के लिए कोई भी योजना नहीं है और उसके पास न कोई सुरक्षा है। वह स्वीकार भाव से जीता है।
यदि तुम किसी चीज़ की आशा करते हो तो तुम उसे स्वीकार नहीं कर सकते। यदि तुम प्रत्येक चीज़ को स्वीकार करते हो तो तुम अपेक्षा या आशा नहीं कर सकते। यदि तुम स्वीकार करते हो और तुम आशा नहीं करते तो तुम आश्चर्यचकित नहीं हो सकते। उत्तेजना एक ज्वर है, वह एक बीमारी है, जब तुम उत्तेजित हो उठते हो तो तुम्हारा अस्तित्व ज्वरग्रस्त हो जाता है और तुम उत्तप्त हो उठते हों तुम कभी-कभी उसे पसंद भी कर सकते हो क्योंकि इस बारे में ज्वर दो

तरह के होते हैं: एक वह है जो प्रसन्नता के कारण आता है और दूसरा पीड़ा और दर्द के कारण आता है। वह एक, जिसे तुम पसंद करते हो तुम उसे प्रसन्नता कहते हो लेकिन वह भी एक ज्वर है, उसमें उत्तेजना होती है; और एक जिसे तुम नापसंद करते हो उसे तुम पीड़ा अथवा दर्द कहते हो, वह एक रुग्णता है- लेकिन दोनों ही उत्तेजनाएं हैं। निरीक्षण करने का प्रयास करो: वे एक-दूसरे में बदलती चली जाती हैं।
तुम एक स्त्री से प्रेम करते हो, तुम उत्तेजित हो उठते हो और तुम एक विशिष्ट प्रसन्नता का अनुभव करते हो। लेकिन उस स्त्री को वहां बने रहने दो और देर अथवा सवेर उत्तेजना चली जाती है। इसके विपरीत एक ऊबाहट अंदर सरक आती है, तुम उससे थक जाने का अनुभव करते हो, तुम उससे छुटकारा पाना पसंद करते हो, तुम अकेले बना रहना चाहते हो। यदि वह स्त्री तब भी बनी रहती है तो अब नकारात्मकता प्रविष्टि होती है। तुम केवल ऊब ही नहीं जाते हो अब तुम एक नकारात्मक ज्वर से ग्रस्त होते हो, तुम रुग्णता का और वमन होने जैसा अनुभव करते हो।
तनिक देखो, तुम्हारा जीवन ठीक एक इंद्रधनुष के समान है। वह अपने साथ सभी रंग लिए हुए है और तुम एक रंग से दूसरे की ओर गतिशील होते चले जाते हो। तुम सभी पराकाष्ठाओं और सभी विरोधों को साथ लिए हुए चलना है, तुम प्रसन्नता और सुख से पीड़ा और दर्द की ओर गतिशील होते हो और पीड़ा तथा दर्द से सुख की ओर गतिशील होते हो। यदि दर्द और पीड़ा एक लंबी अवधि तक बने रहते हैं तो हो सकता है कि तुम उनसे एक विशिष्ट सुख पाना शुरू कर देते हो। यदि सुख और प्रसन्नता भी एक लंबी अवधि तक बने रहते हैं तो निश्चित रूप से तुम उनसे पीड़ा और दुःख पाने लगोगे। दोनों ही उत्तेजना की स्थितियां हैं और दोनों ही ज्वर हैं। एक समझदार व्यक्ति बिना किसी ज्वर के रहता है। तुम उसे उत्तेजित नहीं कर सकते और न तुम उसे चकित कर सकते हो। यदि वहां मृत्यु भी हो तो भी वह शीतलता से पूछेगा-"कहां?" और यह प्रश्न "कहां" बहुत आकर्षक है क्योंकि एक बुद्धत्व को उपलब्ध व्यक्ति का संबंध हमेशा "यहां" के साथ होता हैं उसका संबंध "वहां" के साथ नहीं होता है, उसका संबंध "तब" के साथ नहीं होता है, उसका संबंध केवल "अब" अथवा "अभी" के साथ होता है। अभी, यहीं, यह उसकी वास्तविकता है और "तब" और "वहां" यह तुम्हारी वास्तविकता है।
"एक आग, सद्गुरु! एक आग लग गई है।"
थोड़ा-सा उठते हुए तोकाई ने पूछा-"ओह! कहां?"
वह यह जानना चाहता है: "वहां अथवा यहां?"
"कहां?"भिक्षु ने चिल्लाते हुए कहा
... क्योंकि वह उस पर विश्वास ही न कर सका कि जब वहां एक आग लगी है तो कोई व्यक्ति ऐसा मूर्खतापूर्ण प्रश्न पूछ सकता है। उस एक को सामान्य रूप से खिड़की के बाहर कूदकर घर से बाहर निकल जाना चाहिए था और सूक्ष्म तर्क-वितर्क करने का यह समय नहीं था।
"कहां?"भिक्षु ने चिल्लाते हुए कहा-"वह रसोईघर के फर्श पर नीचे लगी हुई है,
आप तुरत उठ जाइये।" थोड़ा-सा उठते हुए सद्गुरु ने कहा-"ऐं! सिर्फ रसोईघर में? ठीक है, मुझे बताना कि आगे क्या हुआ और जब वह गलियारे तक पहुंचती है,
तब लौटकर आना और मुझे बताना।"
जब वह यहां तक पहुंचे तब आना और मुझे बताना। यदि वह "वहां" है तो उससे मेरा कोई भी संबंध नहीं है। यह घटना बहुत कुछ प्रगट कर रही है। कोई भी चीज़ "वहां" है तो उससे मेरा कोई संबंध नहीं है, केवल जब वह "यहां" है तभी वह सत्य होती है।
एक सद्गुरु भविष्य के लिए योजना नहीं बना सकता। निश्चित रूप से वह तैयार है जोकुछ भी होता है, वह उसका प्रत्युत्तर देगा लेकिन वह एक पूर्वाभ्यास से होकर नहीं गुजर सकता और वह योजना नहीं बना सकता और वह वास्तविकता के आने से पूर्व गतिशील नहीं हो सकता। वह कहेगा-सत्य को सामने आने दो, उस क्षण को मेरे द्वार पर दस्तक देने दो और तब हम देखेंगे। पूर्वाभ्यासों और योजनाओं के बिना बोझ के साथ वह हमेशा स्वयं-प्रवर्तित है और वह जोकुछ भी कहता है अपनी स्वेच्छा के साथ वह हमेशा ठीक है।

इस मापदंड का हमेशा स्मरण बना रहे, वह तुम्हारी स्वेच्छा से बाहर आता
है और वह ठीक है। इस बारे में गलत और ठीक का कोई दूसरा मापदंड अस्तित्व में नहीं है। उस क्षण से जोकुछ भी बाहर आता है उसके प्रति तुम्हारा जीवंत प्रत्युत्तर ही अच्छा है। कोई अन्य चीज़ अच्छी नहीं है तथा अच्छे और बुरे के लिए इस बारे में कोई दूसरा मापदंड विद्यमान नहीं है।
लेकिन तुम भयभीत हो। अपने भय के कारण ही तुम नैतिकता सृजित करते हो।
भय के कारण ही तुम अच्छे और बुरे के मध्य भेद सृजित करते हो। लेकिन क्या तुम यह नहीं देखते कि जब कभी एक स्थिति भिन्न होती है और ठीक गलत बन जाता है और गलत ठीक बन जाता है? लेकिन तुम मृत बने रहते हो। तुम स्थिति की ओर देखते ही नहीं। तुम पूरी तरह से अपने चारों ओर ठीक तथा गलत की अपनी धारणाओं का अनुसरण किए चले जाते हो। यही कारण है कि तुम एक बेमेल व्यक्ति बन जाते हो। वृक्ष भी तुम्हारी अपेक्षा कहीं अधिक बुद्धिमान है-वे बेमेल नहीं हैं। जानवर भी तुमसे कहीं अधिक बेहतर हैं- वे बेमेल नहीं हैं। बादल भी तुम्हारी अपेक्षा कहीं अधिक योग्य हैं, वे बेमेल नहीं हैं। पूरा अस्तित्व एक-दूसरे के अनुकूल है; और केवल मनुष्य ही बेमेल अर्थात अत्यधिक ढीला अथवा बहुत सख्त हैं वह कहां गलत हो गया है?
वह अपने मानसिक भेदभाव के साथ गलत हो गया है कि यह ठीक है और यह गलत है
और जीवन में ऐसी स्थिर चीज़ें उपयोगी नहीं हो सकतीं। इस क्षण कुछ चीज़ गलत है और अगले ही क्षण वह ठीक हो जाती है। इस क्षण कोई चीज़ ठीक है और अगले ही क्षण वह और अधिक ठीक नहीं रह गई है। तुम क्या करोगे? तुम निरंतर एक भय की स्थिति में बने रहोगे और तुम अंदर से तनावग्रस्त तथा चिंतित बने रहोगे। इसलिए उन सभी लोगों की, जिन्होंने जाना है, यह आधारभूत शिक्षा है: सजग
और स्वयं प्रवर्तित बनो तथा तुम्हारी स्वयं प्रवर्तित सजगता से जोकुछ भी होता है, वही ठीक है और जोकुछ भी तुम्हारी निद्रा और अचेतनता के कारण होता है, वही गलत है। जोकुछ भी तुम अचेतन रूप से करते हो वह गलत है और तुम जोकुछ भी सचेतनता के साथ करते हो वह ठीक है। ठीक और गलत का भेदभाव वस्तुओं के मध्य नहीं है, ठीक और गलत का भेद चेतना के मध्य है।
के लिए भारत मेंवहां एक जैन संप्रदाय तेरापंथ मौजूद है। महावीर ने कहा-"किसी भी व्यक्ति के कर्म में हस्तक्षेप मत करो। उसको उसे पूरा करने दो"- एक सुंदर बात है। वास्तव में वह ठीक वही बात कहते हैं जो पश्चिम में अब हिप्पी कह रहे हैं: अपना ही कार्य करो। इसके दूसरी ओर महावीर समान बात ही कहते हैं- किसी अन्य व्यक्ति के कार्य में हस्तक्षेप मत करो। उसे अपना कार्य करने दो, उसे उसको पूरा करने दो। उसमें हस्तक्षेप मत करो। हस्तक्षेप करना हिंसा है। जब तुम किसी अन्य व्यक्ति के कर्म के साथ हस्तक्षेप करते हो तो तुम एक हिंसा कर रहे हो; तुम उस व्यक्ति को उसके मार्ग से पेंफक रहे हो। "हस्तक्षेप मत करो"। एक सुंदर बात है।
लेकिन सुंदर बातें भी कैसे गलत जा सकती हैं। जैनों के इस संप्रदाय तेरापंथ ने इससे यह निष्कर्ष निकाला कि यदि कोई व्यक्ति सड़क के किनारे मर रहा है तो तुम सामान्य रूप से आगे बढ़ जाओ, तुम उसका स्पर्श मत करो, तुम उसको कोई दवा भी मत दो और यदि वह चिल्ला रहा है "मैं प्यासा हूं" तो उसे पानी भी मत दो। उसे पानी भी मत दो क्योंकि किसी भी व्यक्ति के कार्य के साथ हस्तक्षेप मत करो।" यह तर्कपूर्ण है क्योंकि वह अपने अतीत के कर्मों के कारण ही दुःख भोग रहा है, तब तुम हस्तक्षेप करने वाले कौन होते हो? उसने अनिवार्य रूप से विशिष्ट कर्म संग्रहीत किए हैं जिससे इस जीवन में प्यास से तड़पते हुए वह मर जाए। तुम उसे पानी देने वाले कौन होते हो? तुम सामान्य रूप से उसकी उपेक्षा कर आगे बढ़ जाओ।
मैं तेरापंथ मुनियों के मुख्य मुनियों में से एक से बात कर रहा था और मैंने उनसे कहा-"और क्या आपने कभी इस संभावना पर भी विचार किया है कि उसे पानी देना आपके भी कर्म हो सकते हैं।"
तुम उसके कर्म के साथ हस्तक्षेप नहीं कर रहे हो लेकिन तुम अपने साथ ही हस्तक्षेप कर रहे हो। यदि उसकी सहायता करने की इच्छा उत्पन्न होती है तो तुम क्या करोगे? वह इच्छा यह प्रदर्शित करती है कि उसे पानी देना यह तुम्हारा कर्म है। यदि तुम उस कामना का प्रतिरोध करते हुए अपने सिद्धांत के कारण आगे बढ़ जाते हो तो तुम स्वंय प्रवर्तित नहीं बने रहे हो- इसलिए

क्या किया जाए? यदि तुम भारी मृत सिद्धांतों का बोझ अपनी खोपड़ी पर लादे हुए चलते हो तो तुम हमेशा कठिनाई में रहोगे क्योंकि जीवन तुम्हारे सिद्धांतों में विश्वास नहीं करता और जीवन के पास उसके अपने नियम हैं। लेकिन वे तुम्हारे सिद्धांत और तुम्हारा तत्वज्ञान नहीं है।
स्वयं प्रवर्तित बनो। यदि तुम सहायता करने जैसा अनुभव करते हो तो इसकी फिक्र मत करो कि महावीर ने क्या कहा है। यदि तुम सहायता करने जैसा अनुभव करते हो तो सहायता करो। तुम अपना ही कार्य करो। यदि तुम सहायता करने जैसा अनुभव नहीं करते हो तो सहायता मत करो। जीसस ने चाहे जोकुछ भी कहा हो कि लोगों की सहायता करने के द्वारा तुम मेरी ही सहायता करोगे- उसकी फिक्र मत करो क्योंकि कभी-कभी सहायता करना खतरनाक भी हो सकता है। एक व्यकित किसी अन्य व्यक्ति को मारने जा रहा है और वह तुमसे कहता है मुझे पानी पिला दो क्योंकि मैं प्यासा हूं और मैं उस व्यक्ति को मारने के लिए इस लंबी यात्रा पर नहीं जा सकता तो तुम क्या करोगे?
... क्योंकि यदि तुम उसे पानी पिलाते हो तो तुम हत्या करने में उसकी सहायता करोगे। निर्णय लो- लेकिन उस क्षण से पूर्व निर्णय मत लो क्योंकि ऐसे सभी निर्णय नकली होंगे। कोई कभी भी नहीं जानता है कि वहां किस तरह की स्थिति होगी।
इस बारे में भारत के पुराने शास्त्रों में एक कहानी है। एक हत्यारा
एक चौराहे पर आया जहां एक साधु बैठा हुआ ध्यान कर रहा था। वह एक व्यक्ति का पीछा कर रहा था। उसने पहले ही उस व्यक्ति को मारकर घायल कर दिया था लेकिन वह बचकर भाग निकला और वह अपने शिकार का पीछा कर रहा था। चौराहे पर आकर वह उलझन में पड़ गया और उसने उस साधु से पूछा, जो एक वृक्ष के नीचे बैठा ध्यान कर रहा था, क्या आपने यहां से गुजरते हुए एक व्यक्ति को देखा है जिससे रक्त बह रहा हो। यदि ऐसा है तो वह किस दिशा में गया है? क्योंकि वह एक चौराहा था।
उस साधु को क्या करना चाहिए? यदि वह सत्य बताता है कि वह व्यक्ति उत्तर दिशा में गया है तो वह उस हत्या का एक भाग बनेगा। यदि वह कहता है कि वह उत्तर की ओर नहीं गया है तो वह झूठ बोलेगा। उसे क्या करना चाहिए? क्या उसे सत्य कहना चाहिए और उस हत्या को होने की अनुमति देना चाहिए? क्या झूठ बोलकर उसे रोक देना चाहिए। उसे क्या करना चाहिए?
इस बारे में अनेक उत्तर दिए गए हैं। मेरे पास कोई भी उत्तर नहीं है।
जैन कहते हैं यदि वह असत्य बोलने भी जा रहा है तो उसे असत्य ही बोलने
दो क्योंकि हिंसा करना सबसे बड़ा पाप हैं उनके पास उनके अपने मूल्यांकन हैं- हिंसा सबसे बड़ा पाप है, असत्य उसके बाद आता है। लेकिन हिंदू कहते हैं- नहीं, असत्य पहले आता है इसलिए उसे सत्य कहना ही है और जो होता है उसे होने दो। इस बारे में गांधी के पास उनका अपना उत्तर था- उन्होंने कहा-"मैं दो के मध्य चुनाव नहीं कर सकता क्योंकि दोनों ही सर्वोत्तम मूल्य हैं और वहां कोई भी चुनाव नहीं है। इसलिए मैं उसे सत्य बतलाउंफगा और मैं उसके रास्ते में खड़ा होकर उससे कहूंगा: पहले मुझे मारो और तब उस व्यक्ति का पीछा करना।"
यह उत्तर आकर्षित करता है, गांधी जी के उत्तर में आकर्षण है, वह हिंदुओं और जैनों दोनों के उत्तरों की अपेक्षा बेहतर है- लेकिन पूरी स्थिति की ओर देखो: वह व्यक्ति एक हत्या करने जा रहा है और गांधी उसे दो हत्याएं करने के लिए विवश करते हैं। इसलिए उनके कर्म के बारे में क्या कहा जाए?
इसलिए करना क्या है, मेरे पास कोई भी उत्तर नहीं है। अथवा मेरा उत्तर है: पहले ही से कोई निर्णय मत लो, उस क्षण को आने दो और उस क्षण को ही निर्णय लेने दो क्योंकि कौन जानता है? वह शिकार एक ऐसा व्यक्ति भी हो सकता है जो मार देने योग्य हो। कौन जानता है कि वह शिकार एक खतरनाक व्यक्ति भी हो सकता है और यदि वह जीवित बच जाता है तो वह अनेक हत्याएं कर सकता है। कौन जानता है कि क्या कैसी स्थिति होगी क्योंकि वह कभी भी फिर से समान नहीं होगी और तुम पहले से उस स्थिति को नहीं जान सकते। निर्णय मत लो। लेकिन तुम्हारा मन बिना निर्णय लिए एक बेचैनी का अनुभव करेगा, क्योंकि मन को स्पष्ट और निश्चित उत्तरों की आवश्यकता होती है। केवल एक ही चीज़ निश्चित

है कि सजग, सचेत और स्वयं प्रवर्तित बनो तथा किसी भी नियम का अनुसरण मत करो। पूरी तरह से स्वयं प्रवर्तित बनो और जोकुछ भी होता है उसे होने दो। यदि उस क्षण में तुम अनुभव करते हो कि सत्य को खोकर जोखिम लेने जैसी है तो उसे खो दो। यदि उस क्षण में तुम अनुभव करते हो कि वह व्यक्ति इस योग्य नहीं है तो हिंसा को होने दो अथवा यदि तुम अनुभव करो कि वह व्यक्ति मुझसे भी कहीं अधिक योग्य है तो मध्य में खड़े हो जाओ।

वहां लाखों संभावनाएं होंगी। पहले से उसे तय मत करो। केवल सजग और सचेत बने रहो तथा चीज़ों को होने दो। तुम कोई भी बात कहना पसंद नहीं कर सकते हो। क्यों न मौन बने रहो? कोई भी झूठ मत बोलो, पर हिंसा में लिप्त व्यक्ति की सहायता मत करो और हत्यारे को दो हत्याएं करने के लिए विवश मत करो। क्यों न मौन बने रहो। तुम्हें कौन बाध्य बना रहा है?
लेकिन उस क्षण को ही तय करने दो, यह वही बात है जो सभी जागे हुए लोगों
ने कही है।
लेकिन यदि तुम सामान्य नैतिकतावादियों की बात सुनते हो तो वे तुमसे कहेंगे कि जीवन बहुत खतरनाक है और तुम उसमें एक निर्णय के साथ ही जाना अन्यथा तुम कुछ गलत कार्य कर सकते हो। मैं तुमसे कहता हूं कि तुम जोकुछ भी एक निर्णय के द्वारा करते हो वह गलत होगा क्योंकि पूरा अस्तित्व तुम्हारे लिए गए निर्णयों का अनुसरण नहीं कर रहा है और पूरा अस्तित्व अपने ही ढंग से चलता है। तुम उसके एक भाग हो, तुम कैसे पूर्ण के लिए निर्णय ले सकते हो? तुम्हें वहां सामान्य रूप से बना रहना है और स्थिति का अनुभव करना है और तुम जोकुछ भी करो तुम उसे विनम्रता के साथ और उसके गलत होने की प्रत्येक संभावना के साथ कर सकते हो। एक ऐसे अहंकारी मत बनो जो यह सोचे, "मैं जोकुछ भी करता हूं वह ठीक ही होगा।" तब गलत कार्य कौन करेगा? ऐसे अहंकारी मत बनो जो यह सोचे "मैं नैतिक हूं और दूसरा अनैतिक है।" दूसरा भी तुम हो और तुम ही दूसरे हो। एक हैं। हत्यारा और परिस्थिति का शिकार व्यक्ति दो नहीं हैं। लेकिन निर्णय मत लो केवल वहां बने रहो और पूरी स्थिति को महसूस करो, पूरी स्थिति के साथ संपर्क में बने रहो और जोकुछ भी आता है अपनी अंतरस्थ चेतना को उसे करने दो। तुम्हें कर्ता नहीं बनना चाहिए और तुम्हें केवल एक साक्षी बना रहना चाहिए। एक कर्ता को पूर्व में ही निर्णय लेना होता है, पर साक्षी को उसकी आवश्यकता नहीं होती।
गीता और वृफष्ण का पूरा संदेश यही है। वृफष्ण कहते हैं: केवल पूरी स्थिति को देखो और नीतिवादियों के मृत नियमों का अनुसरण मत करो। स्थिति को देखो, एक साक्षी की भांति कार्य करो और एक कर्ता मत बनो। और यह फिक्र मत करो कि परिणाम क्या होगा। कोई भी नहीं कह सकता कि परिणाम क्या होगा। वास्तव में वहां कोई परिणाम नहीं है, हो भी नहीं सकता क्योंकि वह एक शाश्वतता है।
उदाहरण के लिए हिटलर का जन्म हुआ था। यदि इस बच्चे को मां ने मार दिया होता तो संसार-भर के सभी कोर्ट उसे एक हत्यारी मानते। उसे दंड दिया गया होता। लेकिन अब हम जानते हैं कि उसे जीवित छोड़ देने की अपेक्षा उसको मार डालना ही उचित होता क्योंकि उसने लाखों लोगों की हत्या की। इसलिए क्या हिटलर की मां ने इस बच्चे को न मारकर ठीक कार्य किया? क्या वह ठीक थी अथवा वह गलत थी? किसे यह निर्णय करना है? और वह बेचारी मां यह कैसे जान सकती थी कि यह बच्चा इतने अधिक लोगों का हत्यारा बनने जा रहा है?
किसे यह निर्णय करना है? और कैसे निर्णय करना है? ... और यह एक अनंत क्रम है। हिटलर ने अनेक लोगों की हत्या की लेकिन कौन यह निर्णय कर सकता है कि क्या वे ठीक लोग थे जिनको मारना अथवा न मारना ठीक था। कौन कब निर्णय करेगा और कौन कभी उसे जान पाएगा, यह कोई भी व्यक्ति नहीं जानता है। कौन जानता है, शायद परमात्मा ही हिटलर जैसे लोगों को मार डालने के लिए भेजता है जो गलत है क्योंकि किसी-न-किसी तरह से परमात्मा प्रत्येक चीज़ में संबद्ध है। वह ठीक कार्य में है और गलत कार्य में भी है।
जिस व्यक्ति ने हीरोशिमा पर एटम बम गिराया- क्या वह ठीक था अथवा गलत था? क्योंकि उसके बम के कारण ही द्वितीय विश्व-युद्ध बंद हुआ। वास्तव में पूरे शहर हीरोशिमा में बम गिरते ही एक लाख लोग तुरंत मर गए। लेकिन यदि एटम

बम हीरोशिमा पर न गिराया गया होता तो युद्ध आगे भी जारी रहता और कई लाख और लोग मरे होते। यदि जापान केवल एक और अधिक वर्ष तक बना रहता तो उसने भी एटम बम का आविष्कार कर लिया होता और तब उन लोगों ने उसे न्यूयार्क और लंदन पर गिराया होता। कौन यह निर्णय करेगा और कैसे निर्णय करेगा कि वह व्यक्ति जिसने एटम बम गिराया, ठीक था अथवा गलत?
जीवन इतना अधिक जाल में फंसकर गुंथा हुआ है कि प्रत्येक घटना दूसरी घटनाओं की ओर ले जाती है और तुम जोकुछ भी करते हो, तुम लुप्त हो जाओगे, लेकिन तुमने जोकुछ भी किया है उसके परिणाम हमेशा-हमेशा के लिए निरंतर बने रहेंगे। उनका अंत नहीं हो सकता। तुम एक व्यक्ति की ओर देखकर मुस्कराते हो, यह एक छोटा-सा वृफत्य भी करने से तुमने अस्तित्व का पूरा गुण ही बदल दिया है क्योंकि वह मुस्कान बहुत-सी बातों का निर्णय करेगी।
ऐसा हुआ भी है। मैं गेटा गारबो की जीवन पढ़ रहा था। वह एक नाई की दुकान में काम करने वाली मामूली-सी लड़की थी। वह केवल लोगों के चेहरों पर ब्रुश से साबुन लगाती थी और वह वैसी ही समान बनी रहती क्योंकि वह पहले ही बाइस वर्ष की हो चुकी थी और तभी संयोग से एक अमरीकन फिल्म निर्देशक उस नाई की दुकान में आया। उस शहर में वैसी बाइस दुकानें और भी थीं। जब वह उसके चेहरे पर साबुन लगा रही थी तो वह दर्पण में लड़की की ओर देखते हुए मुस्कराया और उसने कहा-"तुम कितनी सुंदर हो?"- और प्रत्येक चीज़ बदल गई।
ग्रेटा गारबो से यह कहने वाला कि तुम कितनी अधिक सुंदर हो, वह पहला व्यक्ति था और उसने स्वयं भी यह कभी नहीं सोचा था कि वह सुंदर है क्योंकि तुम स्वयं के सुंदर होने के बारे में कैसे सोच सकते हो, यदि कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं कहता है।
वह पूरी रात सो न सकी। अगली सुबह खोज करती हुई वह उस निर्देशक के पास वहां पहुंची, जहां वह ठहरा हुआ था और उसने उससे कहा-"क्या आप वास्तव में सोचते हैं कि मैं सुंदर हूं।"
उस निर्देशक ने हो सकता है अकारण ही यह टिप्पणी की हो, यह कौन जानता है। लेकिन जब एक लड़की तुम्हें खोजती हुई तुम्हारे पास आकर तुमसे पूछती है-"क्या वास्तव में? आपने मुझसे जोकुछ भी कहा था, क्या वास्तव में आपके लिए उसका कुछ भी अर्थ है? ...
इसलिए उस निर्देशक ने कहा-"हां, तुम सुंदर हो।"
तब ग्रेटा गारबो ने कहा-"तब आप मुझे अपनी फिल्म में, जो आप बना रहे हैं, मुझे कोई काम क्यों नहीं देते?" अब परिस्थितियां बदलना शुरू हुईं और ग्रेटा गारबो सबसे अधिक प्रसिद्ध अभिनेत्रियों में से एक बन गई।
बहुत छोटी-सी चीज़ें चारों ओर गतिशील हैं और वे चलती चली जाती हैं। यह
एक झील में एक छोटा-सा पत्थर पेंफकने के समान है। इतना अधिक एक छोटा-सा पत्थर और तब लहरें आगे और आगे बढ़ती चली जाती हैं तथा वे वास्तविक अंत तक जाएंगी। जिस समय तक वे किनारे पर पहुंचती हैं, उससे बहुत पहले ही पत्थर गहरे तल में जाकर स्थिर होकर खो जाता है।
वह पत्थर ही अस्तित्व के पूरे गुण बदल देगा, क्योंकि वह सभी कुछ एक जाल है, वह ठीक एक मकड़ी के जाले के समान है, तुम कहीं से भी उसे छुओ, उसे थोड़ा-सा हिलाओ, तो पूरे जाल में तरंगें उत्पन्न हो जाती हैं। प्रत्येक जगह उसका अनुभव किया जाता है। तुम एक व्यक्ति की ओर देखकर मुस्कराते हो- और पूरा संसार एक मकड़ी का जाला है और उस मुस्कान के द्वारा पूरा परमात्मा ही बदल जाता है।
लेकिन कैसे निर्णय किया जाए? वृफष्ण कहते हैं कि तुम्हें निर्णय के साथ चिंता करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह एक ऐसी विराट चीज़ है कि तुम कभी भी एक निर्णय लेने में समर्थ न हो सकोगे। इसलिए परिणाम के बारे में फिक्र मत करो, सामान्य रूप से स्थिति को प्रत्युत्तर दो। स्वयं प्रवर्तित, सजग और एक साक्षी बने रहो तथा एक कर्ता मत बनो।
एक भिक्षु ने तेजी से तोकाई के शयनकक्ष में प्रवेश करते हुए
और चिल्लाते हुए कहा-एक आग, एक आग लग गई है।"
थोड़ा-सा उठते हुए तोकाई ने पूछा-"ओह! कहां? कहां" भिक्षु ने चिल्लाते हुए कहा-"वह रसोईघर के फर्श पर नीचे लगी हुई है, आप तुरंत उठ जाइये।" उनींदी स्थिति में डूबे हुए सद्गुरु ने कहा-"बस, रसेईघर में? ठीक है, मुझे

बताना कि आगे क्या हुआ और जब वह गलियारे तक पहुंचे, तब लौटकर आना और मुझे बताना।
जब वह वर्तमान का भाग बन जाती है, जब मुझे बताना। वह अभी भी भविष्य में है, मुझे परेशान मत करो।
और तोकाई शीघ्र ही फिर से खर्राटे लेने लगा।
एक बुद्धत्व को उपलब्ध व्यक्ति का यही लक्षण होता है: इतना अधिक विश्राममय, कि यद्यपि रसोईघर में आग लगी हुई है, आग मठ में फैल रही है- प्रत्येक व्यक्ति उत्तेजित होकर चारों ओर दौड़ रहा है और कोई भी नहीं जानता कि क्या होने जा रहा है, प्रत्येक चीज़ अव्यवस्थित है और वह शिथिल होकर फिर से नींद में चला जाता है। बिना कोई समय लिए वह खर्राटे लेने लगा। यह तनावहीनता प्रकाशित होनी चाहिए और एक गहन आस्था कि जोकुछ भी होता है, अच्छा है, उसे भी प्रकाशित होना है। वह चिंतित नहीं है, यदि वह मर भी जाता है तो भी वह परेशान नहीं है और यदि आग आती है तथा उसे जला देती है तो भी उसे तनिक भी फिक्र नहीं है क्योंकि अब वह और अधिक है ही नहीं। वहां अहंकार नहीं है, अन्यथा वहां भय भी होगा, वहां फिक्र होगी, वहां एक भविष्य होगा वहां एक योजना होगी और वहां स्वयं को बचाकर पलायन कर जाने की एक कामना होगी। वह चिंतित नहीं है वह पूरी तरह से नींद में विश्रामपूर्ण होकर वापस लौट जाता है।
मन का केंद्र अहंकार ही है और यदि तुम्हारे पास एक मन है और अहंकार है
तो वहां विश्राममय होने की कोई भी संभावना नहीं है। तुम तनावग्रस्त होगे, तुम तनाव में बने रहोगे। फिर विश्राम कैसा? क्या वहां विश्राममय होने का कोई उपाय है? वहां कोई भी उपाय नहीं है यदि वहां समझ नहीं है। यदि तुम संसार के स्वभाव को और इस वास्तविक अस्तित्व के स्वभाव को समझते हो, तब तुम फिक्र करने वाले होते कौन हो और तब तुम क्यों परेशान स्थिति में निरंतर बने रहो?
तुम्हारे जन्म लेने के बारे में किसी भी व्यक्ति ने तुमसे नहीं पूछा
था और जब तुम्हारे लिए अलग होने का समय आता है तो कोई भी व्यक्ति तुमसे पूछने नहीं जा रहा है। तब चिंतित क्यों होते हो? तुम्हारे जन्म लेने की घटना घटित हुई और तुम्हारी मृत्यु भी घटित होगी, तुम बीच में आने वाले होते कौन हो?
सभी कार्य घटित हो रहे हैं। तुम भूख लगने का अनुभव करते हो, तुम प्रेम करने का अनुभव करते हो, तुम क्रोधित होने का अनुभव करते हो- तुम्हारे साथ प्रत्येक चीज़ घटित होती है, पर तुम एक कर्ता नहीं हो। प्रवृफति तुम्हारी देखभाल करती है। तुम भोजन करते हो और प्रवृफति उसे पचाती है, तुम्हें इस बारे में फिक्र करने की कोई भी आवश्यकता नहीं है कि पेट कैसे कार्य कर रहा है और कैसे भोजन रक्त बनता जा रहा है। यदि तुम इस बारे में बहुत अधिक तनावग्रस्त हो जाते हो तो तुम्हारे उदर में साधारण नहीं बड़े-बड़े फोड़े हो जाएंगे। फिक्र करने की कोई भी आवश्यकता नहीं है।
यह "पूर्ण" गतिशील हो रहा है। यह विराट और अनंत सागर गतिशील हो रहा है। तुम उसके अंदर की केवल एक लहर हो। विश्राम करो और कार्यों को होने दो। एक बार तुम जान लेते हो कि कैसे बिना फिक्र के विश्रामपूर्ण ढंग से रहा जाए तो तुमने वह सभी कुछ जान लिया जो जानने योग्य है। यदि तुम नहीं जानते हो कि कैसे बिना फिक्र के विश्रामपूर्ण ढंग से रहा जाए तो तुम जोकुछ भी जानते हो वह व्यर्थ है, वह एक कूड़ा-कर्कट है।

और फूलों की बरसात हुई
आठवां प्रवचन

तोज़ान के पांच पाउन्ड़स

सद्गुरु तोज़ान भंडारघर में
कुछ पटसन को तौल रहा था।

एक भिक्षु उसके पास आया
और उससे पूछा-"बुद्ध कौन है?"

तोज़ान ने कहा-"इस पटसन
का भार पांच पाउंड्स है।

धर्म का दार्शनिक प्रश्नों और उत्तरों के साथ कोई भी संबंध नहीं है।
इस तरह से देखते चले जाना मूर्खता है और जीवन, समय, ऊर्जा और चेतना को केवल व्यर्थ नष्ट करना है, क्योंकि तुम पूछे चले जा सकते हो और उत्तर भी दिए जा सकते हैं- लेकिन उत्तरों से केवल अधिक प्रश्न ही प्रकट होंगे। यदि प्रारंभ में वहां केवल एक प्रश्न था तो अंत में अनेक उत्तरों द्वारा वहां लाखों प्रश्न होंगे।
दर्शनशास्त्र अर्थात तत्वज्ञान कुछ भी हल नहीं करता है। वह वायदे करता है लेकिन कभी भी किसी भी समस्या का उत्तर नहीं खोज पाता। वे सभी वायदे अधूरे बने रह जाते हैं। तब भी वह वायदे किए चले जाता है। लेकिन वह अनुभव जो मन की पहेलियों को सुलझा सकता है, दार्शनिक विचारों और कल्पनाओं द्वारा उपलब्ध नहीं हो सकता।
बुद्ध पूर्ण रूप से दर्शनशास्त्र के विरुद्ध थे, बुद्ध की अपेक्षा दर्शनशास्त्र के विरुद्ध कभी भी उनसे अधिक कोई भी व्यक्ति नहीं हुआ है। अपने ही कटु अनुभव के द्वारा उनकी यह समझ में आया कि दर्शनशास्त्र की वह सभी गंभीरता और गूढ़ता केवल बहुत उथली है। यहां तक कि सबसे अधिक महान दार्शनिक भी किसी अन्य व्यक्ति जैसा सामान्य बना रहता है। उसके द्वारा किसी भी समस्या को सुलझाना तो दूर उसे स्पर्श तक भी नहीं किया गया है। वह बहुत अधिक ज्ञान और अनेक उत्तरों को साथ लेकर चलता है लेकिन वह अपनी वृद्धावस्था में भी वैसा ही बना रहता है और उसे कोई भी नूतन जीवन घटित नहीं होता है। और पहेली है- महत्वपूर्ण विषय का केंद्र वह मन, जो एक प्रश्न खड़े करने वाला विभाग है, वह किसी भी तरह के प्रश्न खड़े कर सकता है, तब वह उनके उत्तर देने के द्वारा स्वयं को ही बेवकूफ बना सकता है लेकिन तुम ही प्रश्नकर्ता हो और तुम ही वह व्यक्ति हो जो उनको हल करता है।
अज्ञान प्रश्नों को सृजित करता है और अज्ञान ही उत्तर सृजित करता है- वही समान मन दोनों भागों का सृजन करता है। प्रश्न करने वाला मन कैसे एक उत्तर तक आ सकता है? नीचे गहराई में मन स्वयं एक प्रश्न है।
इसलिए दर्शनशास्त्र मन के प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करता है
और धर्म वास्तविक आधार की ओर देखता है। मन ही प्रश्न है और जब तक मन नहीं गिरा दिया जाता है तुम्हारे सामने उत्तर प्रकट नहीं होगा- मन उसकी अनुमति नहीं देता क्योंकि मन ही अवरोध और एक दीवार है। जब वहां कोई मन नहीं होता है, तुम एक अनुभव करने वाले अस्तित्व होते हो और जब मन वहां होता है तुम शब्दों के प्रयोग करने वाले एक निपुण व्यक्ति होते हो।
एक छोटे से स्कूल में एक बार ऐसा हुआ कि वहां एक बहुत मूर्ख लड़का था। उसने कभी भी कोई प्रश्न नहीं पूछा था और शिक्षिका भी उसकी उपेक्षा करती थी, लेकिन एक बार जब शिक्षिका अंकगणित की एक विशिष्ट समस्या की व्याख्या कर रही थी और बोर्ड पर कुछ अंक लिख रही थी, वह बहुत अधिक उत्तेजित हो गया। वह बच्चा बार-बार अपना हाथ ऊपर उठा रहा था और बहुत अधिक उत्तेजित था क्योंकि वह कोई बात पूछना चाहता था। जब शिक्षिका ने समस्या हल करने के बाद अपनी बात समाप्त की और बोर्ड पर लिखे गए अंकों को मिटा दिया तो वह बहुत अधिक प्रसन्न हुई कि पहली बार इस बच्चे ने इतना अधिक उत्तेजित होकर कोई

बात पूछी। उसने उससे कहा-"मैं प्रसन्न हूं कि तुम कुछ बात पूछने के लिए तैयार हो। आगे बढ़कर उसे पूछो।"
बच्चा खड़ा हो गया और उसने कहा-"मैं बहुत परेशान हूं और यह प्रश्न बार-बार मेरे अंदर उठता था लेकिन मैं उसे पूछने का साहस न जुटा सका। आज मैंने तय कर लिया है कि पूंछू कि जब आप बोर्ड से उन अंकों और संख्याओं को साफ कर देती हैं तो वे कहां चले जाते हैं?"
सभी प्रश्नों के समान यह प्रश्न भी बहुत अधिक दार्शनिकता से भरा हुआ है। अनेक लोग पूछते हैं कि जब एक बुद्ध मर जाता है तो वह कहां जाता है? परमात्मा कहां है? प्रश्न समान हैं। सत्य क्या है? यह प्रश्न भी वैसा ही है लेकिन तुम प्रश्नों में छिपी हुई बेवकूफी का अनुभव नहीं कर सकते क्योंकि वे बहुत अधिक गूढ़ दिखाई देते हैं और उनकी एक लंबी परंपरा है- लोग हमेशा से ही उन्हें पूछते आए हैं और जिन लोगों के बारे में तुम सोचते हो कि वे बहुत महान हैं, उनके साथ उनका संबंध बना रहा है: और वे उनके उत्तर खोजते हुए सिद्धांत बनाते हुए व्यवस्थाएं सृजित करते रहे हैं लेकिन पूरा प्रयास ही व्यर्थ है क्योंकि सोचना नहीं केवल अनुभव ही तुम्हें उत्तर दे सकता है। और यदि तुम सोचते चले जाओ तो तुम अधिक-से-अधिक पागल बनते जाओगे और उत्तर तब भी बहुत दूर होगा तथा वह सदा की अपेक्षा भी और अधिक दूर होगा। बुद्ध कहते हैं कि मन जब प्रश्न करना बंद कर देता है तभी उत्तर घटित होता हैं यह इस कारण है कि तुम्हारा प्रश्न के साथ बहुत अधिक संबंध जुड़ गया है कि तुम्हारे अंदर उत्तर प्रवेश नहीं कर सकता। तुम ऐसी कठिनाई में हो, तुम इतने अधिक परेशान और इतने अधिक तनावग्रस्त हो कि सत्य तुम्हारे अंदर प्रवेश नहीं कर सकता। तुम अंदर इतने अधिक हिल रहे हो, भय से और मानसिक रुग्णता से इतने अधिक कांप रहे हो और मूर्खतापूर्ण प्रश्नों तथा उत्तरों के साथ, व्यवस्थाओं, सिद्धांतों और तत्वज्ञान के साथ बहुत अधिक भरे हुए हो।
मुल्ला नसरुद्दीन अपनी कार में एक कस्बे से होकर गुजर रहा था। अनेक स्थानों पर कई लोग भीड़ में इकट्ठे थे और प्रत्येक व्यक्ति किसी स्थान अथवा दूसरी इकट्ठी भीड़ में था। तब उसने एक पुलिस का सिपाही देखा और उसने उसे रोककर पूछा-"आखिर मामला क्या है? क्या कुछ बात गलत हो गई है? आखिर हुआ क्या है? मैं लोगों को कहीं भी कार्य करते हुए, चलते हुए अथवा दुकानों में नहीं देख रहा हूं- और वे लोग अनेक झुडों में इकट्ठे हैं।"
सिपाही अपने कानों पर विश्वास ही न कर सका। उसने कहा-"आप क्या पूछ रहे हैं? ठीक अभी वहां एक भूकंप आया था। अनेक घर गिर पड़े और बहुत लोग मर गए हैं।"
तब सिपाही ने पूछा-"मैं विश्वास नहीं कर सकता कि आप भूकंप को महसूस नहीं कर सके।"
नसरुद्दीन ने कहा-"शराब के कारण मैं हमेशा ही इतना अधिक हिलता रहता हूं और मेरे हाथ उद्विग्नता और घबराहट से कांपते रहते हैं कि मैं उससे चूक गया।"
यदि तुम्हारे अंदर निरंतर एक भूकंप चल रहा हो तो असली भूकंप तुम्हारे अंदर प्रवेश करने में समर्थ न हो सकेगा। जब तुम शांत और स्थिर होते हो तभी वास्तविकता घटित होती है। प्रश्न करना अंदर से कांप जाना है। प्रश्न करने का अर्थ है संदेह और संदेह का अर्थ है कांपना। प्रश्न करने का अर्थ है कि तुम किसी व्यक्ति पर विश्वास नहीं करते- प्रत्येक बात एक प्रश्न बन गई है और जब प्रत्येक बात एक प्रश्न है तो वहां बहुत अधिक व्यग्रता होगी। क्या तुमने स्वयं अपना ही निरीक्षण किया है? प्रत्येक चीज़ एक प्रश्न बन जाती हैं यदि तुम दुखी हो तो यह एक प्रश्न है: क्यों? यदि तुम प्रसन्न भी हो तब भी यह एक प्रश्न है कि आखिर क्यों? तुम प्रसन्न होकर स्वयं पर विश्वास नहीं कर सकते हो।
लोग जब ध्यान में गहरे जाते हैं और उनके पास झलकें होती हैं तो वे मेरे पास बहुत परेशान होकर आते हैं क्योंकि वे कहते हैं कुछ चीज़ घटित हो रही हैं और वे विश्वास नहीं कर सकते कि यह उनको ही घटित हो रहा है कि एक पूर्णानंद घटित हो सकता है और वहां अनिवार्य रूप से कुछ धोखा होना चाहिए। लोगों ने मुझसे पूछा है-"क्या आप मुझे सम्मोहित कर रहे हैं? क्योंकि कुछ

चीज़ घटित हो रही है।" वे विश्वास ही नहीं कर सकते कि वे आनंद में डूब सकते हैं और कोई व्यक्ति अनिवार्य रूप से उन्हें सम्मोहित कर रहा है। वे विश्वास ही नहीं कर सकते कि वे शांत और मौन हो सकते हैं- यह असंभव है। क्यों? आखिर मैं क्यों मौन हो गया हूं? कोई व्यक्ति बाज़ीगरी कर रहा है। प्रश्न करने वाले मन के लिए विश्वास करना संभव नहीं है तुरंत ही अनुभव वहां आता है और मन एक प्रश्न सृजित करता है- क्यों? फूल वहां है- यदि तुम विश्वास करते हो तो तुम एक खिलते हुए सौंदर्य का अनुभव करोगे लेकिन मन कहता है- क्यों? यह फूल सुंदर क्यों कहा जाता है? सौंदर्य क्या होता है?- तुम भटकते जा रहे हो। तुम किसी के प्रेम में हो, मन पूछता है: क्यों? प्रेम क्या होता है?
ऐसा कहा जाता है कि संत आगस्टाइन ने कहा-"मैं जानता हूं कि समय क्या होता है लेकिन जब लोग मुझसे पूछते हैं तो प्रत्येक चीज़ खो जाती है; और मैं उत्तर नहीं दे सकता। मैं जानता हूं कि प्रेम क्या होता है लेकिन तुम मुझसे पूछते हो कि प्रेम क्या होता है- और मैं घबरा जाता हूं, मैं उत्तर नहीं दे सकता। मैं जानता हूं परमात्मा क्या है लेकिन तुम पूछते हो तो मैं किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाता हूं।" और आगस्टीन ठीक है क्योंकि गूढ़ताओं को पूछा नहीं जा सकता, उन पर प्रश्न नहीं पूछा जा सकता। तुम एक रहस्य पर प्रश्नचिह्न नहीं लगा सकते। यदि तुम एक प्रश्नचिह्न रखते हो तो प्रश्नचिह्न अधिक महत्वपूर्ण बन जाता है और तब प्रश्न ही पूरे रहस्य से आच्छादित हो जाता है। यदि तुम सोचते हो जब तुम प्रश्न को हल कर लोगे, तब तुम उस रहस्य जिओगे पर तुम उसे कभी न जी सकोगे।
धर्म में प्रश्न करना असंगत है। श्रद्धा ही संगत है। श्रद्धा का अर्थ
है बिना अधिक पूछते हुए उस अज्ञात अनुभव में गतिशील होना- और उसे जानने के लिए उसके द्वारा होकर जाना।
मैं तुम्हें बाहर की ओर एक सुंदर सुबह के बारे में बताता हूं और तुम यहां दीवारों से घिरे बंद कमरे में उसके बारे में प्रश्न पूछना शुरू कर देते हो और तुम चाहोगे कि बाहर की ओर कदम उठाने से पूर्व ही तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दिया जाए। यदि तुमने कभी भी यह नहीं जाना है कि सुबह कैसी होती है तो मैं तुम्हें उसे कैसे बता सकता हूं? केवल शब्दों के द्वारा ही कुछ बताया जा सकता है, जो तुम पहले ही से जानते हो। मैं तुम्हें कैसे बता सकता हूं कि वहां प्रकाश है और वृक्षों के द्वारा सुंदर प्रकाश छन-छन कर आ रहा है, अभी-अभी सूर्यादय हुआ है और पूरा आकाश प्रकाश से आलोकित हो उठा है और यदि तुम सदा से ही अंधकार में रहे हो, यदि तुम्हारी आंखें केवल अंधेरे की ही अभ्यस्त हैं तो मैं तुम्हें कैसे स्पष्ट कर सकता हूं कि सूर्य का उदय हो चुका है।
तुम पूछोगे- तुम्हारे कहने का क्या अर्थ है? क्या तुम हमें धोखा देने
का प्रयास कर रहे हो। हम अपने सभी जन्मों में जीवन जीते रहे हैं और हमने कभी भी प्रकाश जैसी किसी चीज़ के बारे में नहीं जाना है। पहले हमारे प्रश्नों का उत्तर दो और तब यदि हम कायल हो जाते हैं तो हम तुम्हारे साथ बाहर आ सकते हैं अन्यथा ऐसा प्रतीत होता है कि तुम हमारा नेतृत्व भटकाने के लिए कर रहे हो, तुम हमें हमारे शरण देने वाले जीवन से भटकाकर दूर कर रहे हो।
लेकिन यदि तुम प्रकाश के बारे में नहीं जानते हो तो कैसे उसके बाबत बताया जा सकता है? लेकिन यही है वह, जिसके बारे में तुम कह रहे हो: हमें परमात्मा के बारे में कायल करो, तभी हम ध्यान करेंगे, तभी हम प्रार्थना करेंगे और तभी हम उसकी खोज करेंगे। इस बारे में कायल होने से पूर्व हम कैसे खोज कर सकते हैं? हम कैसे उसकी तलाश में बाहर जा सकते हैं, जब हम नहीं जानते कि हम कहां जा रहे हैं?
यह अविश्वास है और इस अविश्वास के ही कारण तुम अज्ञात में गतिशील नहीं हो सकते। ज्ञात तुम्हें बांधता है और तुम ज्ञात के साथ लिपट जाते हो- और ज्ञात है मुर्दा अतीत। वह हो सकता हो सुविधामय रहा हो क्योंकि तुम उसमें रहे हो लेकिन अब वह जीवंत न होकर मृत है। जीवंत हमेशा ही अज्ञात होता है जो तुम्हारे द्वार पर दस्तक दे रहा है। उसके साथ गतिशील हो जाओ।

लेकिन तुम बिना विश्वास के कैसे गतिशील हो सकते हो? और संदेह करने वाले व्यक्ति भी यह सोचते हैं कि उनके पास विश्वास है।
एक बार ऐसा हुआ कि मुल्ला नसरुद्दीन ने मुझे बतलाया कि वह अपनी पत्नी
को तलाक देने के लिए सोच रहा है। मैंने उससे पूछा-"क्यों? इतने अधिक अचानक रूप से ही क्यों?"
नसरुद्दीन ने कहा-"मुझे अपने प्रति उसकी वफादारी पर संदेह है।"
इसलिए मैंने उससे कहा-"जरा प्रतीक्षा करो, मैं तुम्हारी पत्नी से पूछूंगा।"
इसलिए मैंने उसकी पत्नी से कहा-"नसरुद्दीन शहर में चारों ओर यह अफवाह फैला रहा है कि तुम उसके प्रति वफादार नहीं हो और वह तुम्हें तलाक देने की सोच रहा है, इसलिए आखिर यह मामला क्या है?"
उसकी पत्नी ने कहा-"यह बहुत अधिक है। किसी भी व्यक्ति ने अभी तक मेरा ऐसा अपमान नहीं किया और मैं आपको बताती हूं कि मैं उसके प्रति दर्जनों बार वफादार बनकर रही हूं।"
यह प्रश्न दर्जनों बार का नहीं है- तुम भी विश्वास करते हो लेकिन दर्जनों बार। वह विश्वास गहन नहीं हो सकता, वह केवल उपयोगिता के सिद्धांत का मानने वाला है। तुम तभी भरोसा करते हो जब तुम अनुभव करते हो कि उसकी कीमत अदा करनी होती है। लेकिन जब कभी अज्ञात तुम्हारे द्वार पर दस्तक देता है, तुम कभी भी भरोसा नहीं करते क्योंकि तुम नहीं जानते कि यदि वह कीमत अदा करने जा रहा है अथवा नहीं। आस्था और विश्वास लाभ के प्रश्न नहीं हैं- वे उपयोगी नहीं हैं, तुम उनका उपयोग नहीं कर सकते। यदि तुम उनका उपयोग करना चाहते हो, तुम उनका उपयोग नहीं कर सकते। यदि तुम उनका उपयोग करना चाहते हो, तुम उनको मार देते हो। वे तनिक भी कीमत अदा करने नहीं जा रहे हैं। तुम उनका आनंद ले सकते हो और तुम उनके बारे में आनंदित हो सकते हो- लेकिन वे कोई भी कीमत नहीं चुकाते।
वे इस संसार की शर्तों में कोई भी मूल्य नहीं चुकाते, इसके विपरीत पूरा संसार तुम्हें एक मूर्ख की भांति देखेगा क्योंकि संसार किसी ऐसे व्यक्ति के ही बुद्धिमान होने पर सोचता है यदि वह संदेह करता है, संसार किसी ऐसे व्यक्ति के ही बुद्धिमान होने पर विचार करता है, यदि वह प्रश्न करता है और संसार केवल उसी व्यक्ति के बुद्धिमान होने पर सोचता है जब वह दृढ़ विश्वास के साथ आगे बढ़ता है और वह कायल होने के पूर्व आगे न हीं बढ़ेगा। संसार की यही चालाकी और मक्कारी है तथा संसार ऐसे लोगों को ही बुद्धिमान कहता है।
जहां तक बुद्धों का संबंध है, (संसार की दृष्टि में) वे लोग मूर्ख हैं क्योंकि अपनी तथाकथित प्रज्ञा के द्वारा वे लोग सबसे अधिक असामान्य होने से ही चूक रहे हैं और इस असामान्यता का उपयोग नहीं किया जा सकता। तुम उसके साथ विलय हो सकते हो पर तुम उसका उपयोग नहीं कर सकते। उसकी कोई उपयोगिता नहीं है, वह एक वस्तु नहीं है, वह एक अनुभव है, वह एक परमानंद है। तुम उसे बेच नहीं सकते, तुम उससे कोई व्यापार नहीं कर सकते- वस्तुतः इसके विपरीत तुम उसमें पूरी तरह से खो जाते हो। तुम कभी भी वैसे ही समान नहीं बने रहोगे। वास्तव में तुम कभी भी वापस नहीं लौट सकते- वह कभी भी लौटकर न आने की वह स्थिति है कि यदि तुम जाते हो तो तुम चले ही जाते हो। तुम वापस नहीं लौट सकते। वहां जाकर लौटना नहीं होता। वह खतरनाक है।
इसलिए केवल बहुत साहसी लोग इस पथ पर प्रविष्ट हो सकते हैं। धर्म कायरों के लिए नहीं है लेकिन तुम चर्चों, मंदिरों और मस्जिदों में कायरों को ही पाओगे: उन्होंने पूरी चीज़ को बर्बाद कर दिया है। धर्म बहुत साहसी लोगों के लिए ही है, वह उन लोगों के लिए है जो सबसे अधिक खतरनाक कदम उठा सकते हैं- सबसे अधिक खतरनाक कदम है ज्ञात से अज्ञात की ओर जाना; सबसे अधिक खतरनाक कदम हैं मन से अ-मन में जाना और सबसे अधिक खतरनाक कदम हैं प्रश्न करने से, बिना प्रश्न किए बने रहना तथा संदेह से श्रद्धा में जाना।
इससे पूर्व कि हम इस छोटे से लेकिन सुंदर प्रसंग में प्रवेश करें- यह
जो केवल एक हीरे के समान बहुत छोटा-सा पर बहुत अधिक मूल्यवान है- थोड़ी-सी कुछ बातें समझ लेने जैसी हैं। पहली बात: तुम केवल तभी समझने में समर्थ होगे जब तुम एक छलांग ले सको, जब तुम किसी तरह ज्ञात का अज्ञात के साथ और मन

का अ-मन के साथ एक सेतु बना सको। दूसरी बात: धर्म किसी भी प्रकार से सोच-विचार करने का एक प्रश्न नहीं है, वह ठीक प्रकार से विचार करने का भी एक प्रश्न नहीं है कि यदि तुम ठीक से विचार करते हो तो तुम एक धार्मिक बनोगे- नहीं- चाहे तुम ठीक से अथवा गलत रूप से विचार करो, तुम अधार्मिक ही बने रहोगे। लोग सोचते हैं कि तुम ठीक से विचार करो, तो तुम धार्मिक बन जाओगे और यदि तुम गलत ढंग से सोचोगे तो तुम भटक जाओगे।
लेकिन मैं तुमसे कहता हूं कि यदि तुम विचार करते हो तो तुम भटक जाओगे- प्रयोजन ठीक से अथवा गलत ढंग से नहीं है। यदि तुम सोच-विचार नहीं करते हो, केवल तभी तुम मार्ग पर हो। सोचोगे और तुम चूक जाओगे। तुम पहले ही से एक लंबी यात्रा पर सभी को छोड़कर बहुत दूर निकल गए हो, तुम अब और यहां नहीं हो, अब वर्तमान अनुपस्थित है और प्रामाणिक अस्तित्व केवल वर्तमान में ही होता है।
मन के साथ तुम चूकते चले जाते हो। मन के पास एक यांत्रिकत्व है जो वर्तुलों में घूमता है, वह एक दुष्चक्र है। तुम अपने मन का निरीक्षण करने का प्रयास करो, क्या वह एक यात्रा पर गया हुआ है अथवा केवल चक्करों में घूम रहा है? क्या तुम वास्तव में चलते रहे हो अथवा केवल एक वर्तुल में घूमते रहे हो? तुम बार-बार उसी को दोहराते हो। परसों भी तुम क्रोधित थे, कल भी तुम क्रोधित थे, आज भी तुम नाराज ही बने हुए हो और इस बारे में प्रत्येक संभावना यही है कि कल भी तुम क्रोधित होने जा रहे हो और क्या तुम यह अनुभव करते हो कि क्रोध कुछ भिन्न प्रकार का है? परसों भी वह समान था, कल भी वह वैसा ही था, आज भी वह समान है और क्रोध समान ही होता है। स्थितियां भिन्न हो सकती हैं, बहाने भिन्न हो सकते हैं लेकिन क्रोध समान है। क्या तुम उसी चक्र में घूम रहे हो? क्या तुम कहीं जा रहे हो? क्या वहां कोई प्रगति है? क्या तुम किसी लक्ष्य के निकट-से-निकट पहुंच रहे हो? तुम कहीं भी न पहुंचकर एक वर्तुल में घूम रहे हो। वह वर्तुल बहुत अधिक बड़ा हो सकता है लेकिन तुम कैसे गतिशील हो सकते हो, यदि तुम एक वर्तुल में घूम रहे हो? मैंने एक बार दोपहर बाद दूसरों को बात करते हुए सुना। वह आवाज एक छोटे
से घर के अंदर से आ रही थी और एक बच्चा रोते हुए कह रहा था-"मम्मी! मैं इन चक्करों में घूमने के साथ थक चुका हूं।"
मां ने कहा-"या तो तुम चुप हो जाओ अथवा मैं तुम्हारे दूसरे पैर को भी फर्श पर लगे खूंटे से बांध दूंगी।"
लेकिन तुम अभी तक थके नहीं हो। तुम्हारा एक पैर जमीन पर ठुके खूंटे से बंधा है और तुम उस बच्चे के समान चक्कर लगाते हुए घूम रहे हो। तुम एक टूटे हुए ग्रामोफोन के रिकॉर्ड के समान हो- जो एक ही पंक्ति स्वयं दोहराता है और उसे दोहराए चला जाता है। क्या तुमने कभी टूटे हुए ग्रामोफोन के रिकॉर्ड को सुना है? उसे ध्यान से सुनना- वह महर्षि महेश योगी के भावातीत ध्यान के समान है। "टी.एम." मैं तुम एक शब्द को दोहराते हो, राम, राम, राम, राम... और तुम उसे दोहराते चले जाते हो। तुम ऊब जाते हो, ऊब जाने के द्वारा तुम्हें नींद आने लगती हैं सो जाना अच्छा है। सोने के बाद तुम ताजगी का अनुभव करते हो- लेकिन यह तुम्हें सत्य की ओर किसी भी प्रकार से नहीं ले जा रहा है, वह एक बाजीगरी के द्वारा केवल एक अच्छी नींद में चले जाने के लिए है। लेकिन इस भावातीत ध्यान अर्थात टी.एम. को तुम निरंतर कर रहे हो, तुम्हारा पूरा जीवन एक ही शब्द दोहराने का एक टी.एम. बन गया है, तुम समान लीक पर बार-बार गोल-गोल चले जा रहे हो।
तुम कहां जा रहे हो? जब कभी भी तुम इसके प्रति सचेत होगे तो तुम सामान्य रूप से सोचोगे- यह क्या होता रहा है? तुम्हें बहुत अजीब-सा आघात लगेगा कि तुम पूरे जीवन का एक दुरुपयोग करते रहे हो। तुम एक इंच भी तो आगे नहीं बढ़े हो। अच्छा है जितनी शीघ्रता से यदि तुम इसे समझ जाते हो जितना शीघ्र हो सके उतना ही अच्छा है क्योंकि इस अनुभव और समझ के द्वारा ही कुछ चीज़ होना संभव है।
बार-बार यह दोहराना क्यों? मन एक टूटे हुए ग्रामोफोन के रिकॉर्ड के समान एक ही बात दोहराए चले जाता है। उसका वास्तविक स्वभाव ही टूटे हुए रिकॉर्ड के समान है। तुम उसे बदल नहीं सकते। एक टूटे हुए रिकॉर्ड को सुधारा जा सकता है, पर मन नहीं सुधर सकता है क्योंकि मन का वास्तविक

स्वभाव ही दोहराना है। अधिक-से-अधिक तुम और अधिक बड़े चक्कर बना सकते हो तथा बड़े वृत्तो के साथ तुम अनुभव कर सकते हो कि वहां कुछ स्वतंत्रता है, बड़े वर्तुलों और चक्करों के साथ तुम स्वयं अपने स्वयं को यह धोखा दे सकते हो कि तुम उन्हीं बातों अथवा कार्यों को नहीं दोहरा रहे हो।
किसी व्यक्ति का घेरा केवल चौबीस घंटों का हो सकता है। यदि तुम चालाक
हो तो तुम घेरे को तीस दिनों का बना सकते हो, यदि तुम और अधिक चालाक हो तो तुम घेरे को एक वर्ष का बना सकते हो और यदि और भी अधिक चतुर हो तो तुम घेरे को पूरे जीवन-भर का बना सकते हो, लेकिन घेरा अर्थात चक्कर वही समान बना रहता है। उससे कुछ भी फर्क नहीं पड़ता। बड़ा हो अथवा छोटा हो, तुम समान लीक पर घूमते हो और तुम लौटकर उसी समान बिंदु पर आ जाते हो।
इसी समझ के कारण हिंदुओं ने इसे जीवन-चक्र कहा है। वास्तव में तुम्हारा जीवन एक बुद्ध का जीवन नहीं है। एक बुद्ध वह व्यक्ति होता है जो छलांग लगाकर इस चक्र के बाहर आ गया है। तुम चक्र से चिपके हुए हो, तुम वहां बहुत सुरक्षित होने का अनुभव करते हो और चक्र घूमता ही जाता है और जन्म से लेकर मृत्यु तक वह एक चक्कर पूरा कर लेता है। पुनः जन्म और पुनः मृत्यु। इस विश्व के लिए हिंदू जिस शब्द का प्रयोग करते हैं, वह शब्द है- "संसार", जिसका अर्थ है चक्र। वह एक ही लीक पर घूमता है। तुम आते हो और चले जाते हो और तुम बहुत अधिक कार्य करते हो पर लाभ कुछ भी नहीं पहुंचता। तुम कहां चूक जाते हो? तुम पहला कदम उठाने में ही चूक जाते हो।
मन का स्वभाव है- दोहराना और जीवन का स्वभाव न दोहराने का है। जीवन सदा नूतन है। हमेशा नवीन ही जीवन का स्वभाव है, ताओ, कुछ भी पुराना नहीं है, हो भी नहीं सकता। जीवन कभी अपने को दोहराता नहीं है, वह प्रतिदिन पूरी तरह से नवीन होता है, वह प्रत्येक क्षण नया होता है और मन पुराना है, इसलिए मन और जीवन कभी नहीं मिलते। मन पूरी तरह से दोहराता है और जीवन कभी अपने को दोहराता नहीं- फिर मन और जीवन कैसे मिल सकते हैं? यही कारण है कि दर्शनशास्त्र कभी जीवन को समझ नहीं पाता।
धर्म का पूरा प्रयास है कि कैसे मन को गिराया अथवा छोड़ा जाए और जीवन में गतिशील हुआ जाए, कैसे दोहराने वाले यांत्रिकत्व को छोड़ा जाए और कैसे अस्तित्व की चिरनवीन और सदा ताजगी से भरी दृश्यसत्ता में प्रवेश किया जाए। इस सुंदर कथा का पूरा प्रयोजन यही है- तोज़ान के पांच पाउंड्स। सद्गुरु तोज़ान भंडारघर में, कुछ पटसन अर्थात सन के रेशों को तौल रहा था, एक भिक्षु उसके पास आया और उसने पूछा-"बुद्ध कौन है?"
तोज़ान ने कहा-"इस पटसन का भार पांच पाउंड्स है।"
कई बातें हैं: पहली यह कि एक ज़ेन सद्गुरु एक एकांतवासी संन्यासी नहीं होता है, उसने जीवन का परित्याग नहीं किया है, वस्तुतः इसके विपरीत उसने मन का परित्याग किया है और जीवन में प्रवेश किया है।
वहां संसार में दो तरह के संन्यासी होते हैं: एक तरह के लोग जीवन को त्यागकर पूर्ण रूप से मन के जीवन में प्रविष्ट हो जाते हैं, यह जीवन-विरोधी लोग हैं जो संसार से पलायन कर हिमालय, तिब्बत की ओर पलायन कर जाते हैं। मन में पूरी तरह से लीन होने के लिए वे जीवन का परित्याग कर देते हैं और ऐसे लोग बहुसंख्यक हैं क्योंकि जीवन का त्याग करना सरल है और मन को त्याग देना कठिन है।
कठिनाई क्या है? यदि तुम यहां से पलायन कर भाग जाना चाहते हो तो तुम भाग सकते हो। तुम अपनी पत्नी, अपने बच्चों, अपने घर और अपने धंधे को छोड़ सकते हो- वास्तव में तुम बोझ-मुक्त होने का अनुभव करोगे क्योंकि तुम्हारी पत्नी एक भार बन गई है, बच्चे एक बोझ बन गए हैं और प्रतिदिन कार्य करते हुए धन उपार्जित आदि करने के तुम पूरे कार्य से ही- थक चुके हो। तुम भारमुक्त होने का अनुभव करोगे।
और तुम हिमालय में क्या करोगे? पूरी ऊर्जा मन बन जाएगी। तुम राम, राम, राम जपोगे, तुम वेद और उपनिषद पढ़ोगे तथा तुम गूढ़ सत्यों के बारे में सोचोगे। तुम इस बारे में सोचोगे कि यह संसार कहां से आया है और यह संसार कहां जा रहा है, किसने इस संसार का सृजन किया है तथा उसने क्यों इस संसार की रचना की है, क्या अच्छा है और क्या बुरा है। तुम चिंतन करोगे, महान बातों के बारे में सोचोगे। तुम्हारी पूरी जीवन-ऊर्जा, जो दूसरी चीज़ों में

लगी हुई थी, उनसे मुक्त हो जाएगी और अब तुम मन में तल्लीन हो जाओगे। तुम एक मन बन जाओगे।
और लोग तुम्हें सम्मान देंगे, क्योंकि तुमने जीवन का त्याग किया है। तुम एक महान व्यक्ति हो। मूर्ख लोग तुम्हें एक महान व्यक्ति की भांति पहचानेंगे: केवल मूर्ख लोग ही तुम्हें पहचान सकते हैं क्योंकि तुम सबसे अधिक महान हो और वे तुम्हें सम्मान देंगे, वे तुम्हारे चरणों में झुककर साष्टांग प्रणाम करेंगे क्योंकि तुमने एक महान चमत्कार किया है।
लेकिन इससे हुआ क्या? तुमने जीवन का परित्याग केवल मन बनने के लिए किया है। तुमने केवल बुद्धि बनने के लिए ही पूरे शरीर का त्याग किया है- और बुद्धि ही एक समस्या थी। तुमने बीमारी को बचा लिया और तुमने प्रत्येक चीज़ त्याग दी। अब मन एक कैंसर की तरह विकसित होगा। वह जाप, मंत्र और कठोर तप करेगा- वह प्रत्येक कार्य करेगा; और तब वह एक कर्मकांड बन जाएगा। यही कारण है कि धार्मिक लोग कर्मकांडों में जाते हैं और कर्मकांड का अर्थ है एक दोहराने वाली दृश्यसत्ता। प्रतिदिन, प्रत्येक सुबह उन्हें अपनी प्रार्थना करनी होती है, एक मुसलमान दिन में पांच बार नमाज पढ़ते हुए प्रार्थना करता है- वह जहां कहीं भी हो, उसे पांच बार प्रार्थना करनी होती है। एक हिंदू अपने पूरे जीवन-भर इसी तरह के कर्मकांड किए चले जाता है और ईसाइयों को भी प्रत्येक रविवार केवल एक कर्मकांड निभाने चर्च जाना होता है क्योंकि मन दोहराना पसंद करता है, मन एक कर्मकांड सृजित करता है। तुम्हारे सामान्य जीवन में भी मन एक कर्मकांड सृजित करता है। तुम प्रेम करते हो, तुम मित्रों से मिलते हो, तुम दावतों में जाते हो- और प्रत्येक कार्य को एक कर्मकांड की भांति दोहराते हुए करना होता हैं तुम्हारे पास सभी सातों दिनों के लिए एक कार्यक्रम होता है और कार्यक्रम पहले से तय होता है तथा ऐसा हमेशा ही होता रहता है। तुम जीवंत नहीं हो, तुम एक यंत्रमानव बन गए हो। मन एक रोबोट है। यदि तुम मन की ओर अधिक ध्यान देते हो, वह तुम्हारी सारी ऊर्जा अवशोषित कर लेगा, वह एक कैंसर है, वह विकसित होगा और वह चारों ओर फैल जाएगा।

लेकिन एक ज़ेन सद्गुरु सन्यासियों की दूसरी श्रेणी से संबंध रखता है।
एक ज़ेन सद्गुरु हमेशा से ही एक नवसन्यासी की भांति है इसीलिए मैं उन लोगों के बारे में बात करने से प्रेम करता हूं। मेरा उनके साथ एक गहन संबंध है। उन्होंने मन का परित्याग कर दिया है, वे जीवन का त्याग नहीं करते और न मन में जीते हैं और ठीक इसके विपरीत वे जीवन को पूर्णता से जीते हैं। वे पूरी तरह से मन को त्याग देते हैं क्योंकि वह एक ही कार्य को बार-बार दोहराता है- और वे जीवन को जीते हैं। वे हो सकता है एक गृहस्थ का जीवन जी रहे हो, हो सकता है कि उनके पास पत्नी और बच्चे हों। वे लोग खेतों और बगीचों में कार्य करेंगे, वे गड्ढे खोदेंगे और वे भंडारगृह में पटसन (सन) के रेशों का वजन करेंगे...
एक हिंदू यह सोच भी नहीं सकता कि एक बुद्धत्व को उपलब्ध व्यक्ति को पटसन का वजन क्यों लेना चाहिए- आखिर क्यों? ऐसी एक सामान्य गतिविधि उसे करने की आवश्यकता क्यों? लेकिन एक ज़ेन सद्गुरु मन को त्याग देता है, जीवन को उसकी समग्रता में जीता है। वह मन को गिरा देता है और एक सामान्य प्राणी बन जाता है।
इसलिए पहली बात यह स्मरण रखने की है, यदि तुम मन का परित्याग कर जीवन जीते हो, तो तुम एक सच्चे संन्यासी हो और यदि तुम जीवन का परित्याग कर मन में जीते हो तो तुम एक झूठे संन्यासी हो, तुम एक कपटी संन्यासी हो। और भलीभांति याद रहे, कपटी बनना सदा सरल होता है और प्रामाणिक बनना हमेशा कठिन। एक पत्नी के साथ जीना और आनंदित होकर जीना वास्तव में कठिन है और बच्चों के साथ परम आनंद और अहो भाव से जीना वास्तव में कठिन है। एक दुकान, एक ऑफिस अथवा एक कारखाने में काम करना और परम आनंदित बने रहना वास्तव में कठिन है।
प्रत्येक कार्य छोड़कर और केवल एक वृक्ष के नीचे बैठकर प्रसन्नता का अनुभव करना कठिन नहीं है, कोई भी व्यक्ति उसी ढंग से अनुभव करेगा। कुछ भी न करते हुए तुम निरासक्त बने रह सकते हो और प्रत्येक कार्य करते हुए तुम

उससे जुड़ जाते हो। लेकिन जब तुम प्रत्येक कार्य करते हो और निरासक्त बने रहते हो, जब तुम भीड़ के साथ संसार में घूमते हुए तब भी अकेले बने रहते हो, तब कुछ प्रामाणिक चीज़ घटित हो रही है।
जब तुम अकेले हो और क्रोध का अनुभव नहीं कर रहे हो तो इसमें कोई विशिष्ट बात नहीं है। जब तुम अकेले हो तो तुम क्रोध का अनुभव नहीं करोगे क्योंकि क्रोध एक संबंध है, उसे किसी के प्रति क्रोधित होने की आवश्यकता होती है। यदि तुम पागल नहीं हो तो जब तुम अकेले हो, तुम क्रोध का अनुभव नहीं करोगे। वह अंदर तो रहेगा लेकिन वह बाहर आने का कोई रास्ता नहीं खोज पाएगा। जब वहां दूसरा नहीं होता है तो क्रोधित न होना तभी विशिष्टता होती है। जब तुम्हारे पास कोई भी धन नहीं है, कोई भी वस्तुएं नहीं हैं, कोई भी घर नहीं है और यदि तुम निरासक्त हो तो इसमें कठिनाई क्या है? लेकिन जब तुम्हारे पास प्रत्येक वस्तु हो और तुम महल में एक भिखारी की भांति निरासक्त बने रहते हो, तब वास्तविक गहराई में किसी चीज़ की उपलब्धि हुई है। स्मरण रहे, हमेशा सत्य, प्रेम, जीवन, ध्यान, अद्वैत की स्थिति, परमानंद
और वह सभी जो सत्य, सुंदर और शुभ है, उसे अपने हृदय में ही रखना, हमेशा एक विरोधाभास की भांति वे विद्यमान रहते हैं, मेंरहते हुए भी उसका होकर न रहना, लोगों के साथ तब भी अकेले बने रहना, प्रत्येक कार्य करते हुए भी निष्क्रिय बने रहना, गतिशील होते हुए भी गतिशील न होना, एक सामान्य जीवन जीना और तब भी उसके साथ तादात्म्य बनाकर न रखना, उसी तरह कार्य करना जैसे प्रत्येक अन्य व्यक्ति कार्य कर रहा है, तब भी नीचे गहराई में उससे पृथक बने रहना। संसार में रहते रहना और संसार का बनकर नहीं रहना, यही विरोधाभास है। और जब तुम इस विरोधाभास को उपलब्ध हो जाते हो तो तुम्हें सबसे महान शिखर अनुभव घटित होता है।
एक सामान्य स्थिति में गतिशील होना बहुत सरल है या तो संसार में आसक्त होकर रहना अथवा संसार से बाहर निरासक्त बने रहना- दोनों ही सरल हैं। लेकिन सबसे अधिक असामान्य स्थिति केवल तब आती है जब वह एक जटिल घटना होती हैं यदि तुम हिमालय चले जाते हो और निरासक्त बने रहते हो तो तुम संगीत का एक अकेला स्वर हो, यदि तुम संसार में आसक्त बनकर रहते हो, तुम पुनः संगीत का एक अकेला स्वर हो। लेकिन जब तुम संसार में होते हो और उसके पार होते हो, तुम अपना हिमालय अपने हृदय में साथ लिए हुए चलते हो, तुम एक अकेला स्वर न होकर एक तान हो। सभी बेमेल स्वरों के साथ एक मेल घटित होता है, सभी विरोधों का एक तर्कातीत संश्लेषण होता है और दो किनारों के मध्य एक सेतु बनता है और सर्वोच्च उपलब्धि केवल तभी संभव है जब जीवन सबसे अधिक जटिल होता है और केवल उस असाधारण में, उस जटिलता में ही वह सर्वोच्च घटित होता है।
यदि तुम सामान्य बने रहना चाहते हो तो तुम इन विकल्पों में से कोई एक चुन सकते हो- लेकिन तुम असाधारणता से चूक जाओगे। यदि तुम जटिलता अर्थात असाधारणता में भी सामान्य बने नहीं रह सकते तो तुम एक जानवर के समान होगे अथवा किसी ऐसे व्यक्ति की भांति होगे, जो जीवन परित्याग कर हिमालय में एक जानवर के समान रह रहा हो- क्योंकि वे लोग एक दुकान में नहीं जाते, वे एक कारखाने में काम नहीं करते, उनके पास पत्नियां नहीं हैं और न उनके पास बच्चे हैं।
मैंने ऐसे अनेक लोगों का निरीक्षण किया है, जिन्होंने जीवन का परित्याग कर दिया है। मैं उन लोगों के साथ रहा हूं और उनका गहनता से निरीक्षण किया है, वे जानवरों के समान बन गए हैं। मैं नहीं देखता कि उनमें कोई चीज़ सर्वोत्तम घटित हुई है, वस्तुतः इसके विपरीत वे और पीछे जा गिरे हैं। निश्चित रूप से उनके जीवन में कम तनाव हैं क्योंकि एक जानवर के जीवन में भी बहुत कम तनाव होता है, उनके पास चिंताएं नहीं हैं क्योंकि किसी जानवर को कोई भी चिंता नहीं होती। वास्तव में वे नीचे तल पर गिरते जा रहे हैं, वे पीछे लौट रहे हैं, वे वनस्पतियों के समान हो गए हैं, वे वनस्पति की भांति जीते हैं। यदि तुम उनके पास जाओ तो तुम देखोगे कि वे साधारण हैं, उनमें कोई जटिलता विद्यमान नहीं है लेकिन तुम उन्हें वापस इस संसार में लाओ तो तुम उनमें अपनी अपेक्षा कहीं अधिक जटिलताएं पाओगे क्योंकि जब स्थिति उत्पन्न होती है तो वे कठिनाई में होंगे। यह एक तरह का दमन है। पीछे की ओर मत लौटो, पीछे मत हटो और आगे बढ़ो।

एक बच्चा सरल होता है, लेकिन एक बच्चे न बनकर परिपक्व बनो। वास्तव में
जब तुम पूर्ण रूप से परिपक्व हो जाते हो, एक बचपन फिर से घटित होता है लेकिन गुणात्मक रूप से वह भिन्न होता है। एक ऋषि फिर से एक बच्चे जैसा बन जाता है, पर उसमें बचपना नहीं होता। एक ऋषि फिर से एक पुष्प बन जाता है और उसमें एक बच्चे की नूतनता और सुवास होती है, लेकिन वहां एक गहन अंतर भी होता है। एक बच्चे के अंदर पीछे की ओर लौट जाने की अनेक चीज़ें होती हैं और जब कभी भी अवसर दिया जाता है वे प्रकट होंगी। सेक्स बाहर आएगा, क्रोध बाहर निकलेगा और वह संसार में गतिशील होकर आसक्त बनेगा और खो जाएगा। उसके पास उन सभी के बीज उसके अदंर ही हैं। एक ऋषि के पास कोई भी बीज नहीं होते और वह नीचे नहीं गिर सकता, वह असफल नहीं हो सकता क्योंकि अब वह और है ही नहीं। वह अपने अंदर कुछ भी नहीं ढो रहा है।
ज़ेन सद्गुरु बहुत साधारण और सामान्य जीवन जीते हैं- इस संसार में रहते हुए भी वे दूसरे संसार का जीवन जीते हैं। वे किसी भी हिंदू संन्यासी की अपेक्षा कहीं अधिक आकर्षक लोग हैं, वे किसी भी कैथोलिक साधु की अपेक्षा कहीं अधिक आकर्षक और सुंदर हैं। वास्तव में ज़ेन के लोगों के समान पृथ्वी पर कोई भी व्यक्ति अस्तित्व में नहीं है।
सद्गुरु नोज़ान भंडारघर में कुछ पटसन को तौल रहा था।
एक बोध को उपलब्ध बुद्ध, पटसन को तौल रहा है। तुमने सामान्य रूप से उसे पृथक कर दिया होता। इस व्यक्ति से कोई भी प्रश्न पूछने का क्या औचित्य? यदि उसने कुछ भी जाना है तो वह पटसन न तौल रहा होता क्योंकि तुम्हारे पास एक संत, एक ऋषि में तुम्हारे अपने पार कुछ असामान्य चीज़ होने की धारणा है और वह जैसे आसमान में एक स्वर्ण सिंहासन पर बैठा हुआ है और तुम उस तक नहीं पहुंच सकते। जोकुछ तुम हो, वह तुमसे जैसे बहुत भिन्न है और ठीक तुम्हारे विपरीत है।
एक ज़ेन सद्गुरु उस तरह का नहीं होता है। वह किसी भी तरह से असाधारण नहीं है और तो भी वह असाधारण हैं वह ठीक तुम्हारी ही भांति बहुत सामान्य जीवन जीता है और तब भी वह तुम्हारे जैसा नहीं है। वह कहीं दूर आसमान में न होकर यहीं है लेकिन तब भी वह तुम्हारे पार है। पटसन का वजन करना, उसे तौलना- लेकिन यह ठीक वैसा ही है जैसे कि बुद्ध बोधि-वृक्ष के नीचे बैठे हों। भारत में कोई भी व्यक्ति यह सोच भी नहीं सकता कि महावीर अथवा बुद्ध पटसन तौल रहे हों- यह असंभव है। यह लगभग अधार्मिक वृफत्य दिखाई देगा। भंडारघर में बुद्ध क्या कर रहे हैं? तब तुम्हारे और उनके मध्य अंतर क्या है? तुम भी पटसन तौलते हो और वह भी पटसन को तौल रहे हैं, इसलिए फिर अंतर क्या है?
अंतर बाहर की ओर नहीं है- और बाहर की ओर का अंतर कोई भी परिवर्तन नहीं लाता है। तुम जाकर एक बोधि-वृक्ष के नीचे बैठे सकते हो-कुछ भी नहीं होगा। और जब अंतरस्थ में परिवर्तन होता है फिर बाहर की ओर के साथ फिक्र क्यों की जाए? जोकुछ भी तुम कर रहे थे, उसे करना जारी रखो। जोकुछ भी कार्य तुम्हें करने को दिया जाता है उसे करना जारी रखो। जोकुछ भी अखंड अस्तित्व की इच्छा है उसे करना जारी रखो।
सद्गुरु तोज़ान, भंडारघर में कुछ पटसन को तौल रहा था।
एक भिक्षु उसके पास आया और उससे पूछा-"बुद्ध कौन है?"
बौद्ध धर्म में, ठीक, सत्य क्या है? अथवा परमात्मा क्या है?- के ही समान, यह पूछे जाने वाले प्रश्नों में से सबसे अधिक असाधारण प्रश्न है- क्योंकि बौद्ध धर्म में परमात्मा की धारणा नहीं है। बुद्ध ही भगवान है और कोई दूसरा परमात्मा अस्तित्व में नहीं है। बुद्ध सर्वोच्च सत्य हैं, वह सर्वोच्च शिखर हैं और उनके पार कुछ भी नहीं है। सत्य, परमात्मा, स्वयंभू अथवा ब्रह्म- तुम उसे चाहो जो भी नाम दो, वह बुद्ध हैं।
इसलिए जब एक भिक्षु पूछता है- बुद्ध क्या है अथवा बुद्ध कौन है? तो वह पूछ रहा है- सत्य क्या है? ताओ क्या है? ब्रह्म क्या है? अनेक के मध्य वह एक कौन है? मौलिक सत्य क्या है? अस्तित्व का वास्तविक केंद्रीय बीजकोष क्या है?
तोज़ान ने कहा-"इस पटसन का भार पांच पाउंड्स है।"

उत्तर बेतुका और असंगत है। वह पूर्ण रूप से प्रयोजनहीन प्रतीत होता
है क्योंकि वह व्यक्ति पूछ रहा था-"बुद्ध कौन है?" और यह तोज़ान एक पागल व्यक्ति प्रतीत होता है। वह बुद्ध के बारे में बिल्कुल भी बात नहीं कर रहा है और उसने किसी भी प्रकार से उसके प्रश्न का उत्तर दिया ही नहीं है और तो भी उसने उत्तर दे दिया है। यही विरोधाभास है। यदि तुम इस विरोधाभास को जीना शुरू कर दो तो तुम्हारा जीवन एक मधुर तान अर्थात एकतान बन जाएगा, वह सभी विरोधों का एक उच्चतम-से-उच्चतम संश्लेषण बन जाएगा। तब तुम्हारे अंदर सभी विरोध घुल जाएंगे।
तोज़ान ने कहा-"इस पटसन का भार पांच पाउंड्स है।"
उसने एक बात कही: कि यह प्रामाणिक सामान्य जीवन ही बुद्ध है, वह वास्तविक सामान्य जीवन ही बुद्ध है, यह वास्तविक जीवन ही ब्रह्म है और यही परमात्मा का राज्य है। सिवाय इसके वहां कोई अन्य जीवन नहीं है; वहां "वह" नहीं है और केवल "यह" अस्तित्व में है। हिंदू कहते हैं-"वह है, यह एक भ्रांति है।" तोज़ान ने कहा-"यह सत्य है, वह एक भ्रांति है। यह वास्तविक क्षण ही सत्य है और किसी असाधारण बात के लिए मत पूछो।"
खोजी हमेशा कुछ असाधारण चीज़ के लिए पूछते हैं क्योंकि अहंकार केवल तभी तृप्त होने का अनुभव करता है, जब उसे कुछ असाधारण चीज़ दी जाती है। तुम एक सद्गुरु के पास आते हो और तुम उससे प्रश्न पूछते हो और यदि वह ऐसी बातें कहता है तो तुम सोचोगे कि वह एक पागल है अथवा परिहास कर रहा है अथवा वह व्यक्ति इस योग्य नहीं है कि उससे कुछ पूछा जाए। तुम पूरी तरह से भाग खड़े होगे। क्यों?- क्योंकि वह तुम्हारे अहंकार को पूर्ण रूप से खंड-खंड कर देता है। तुम बुद्ध के बारे में पूछ रहे थे, तुम बुद्ध के बारे में सुनने की कामना कर रहे थे और तुम स्वयं एक बुद्ध बनना चाहते थे, इसीलिए तुम प्रश्न पूछ रहे थे और यह व्यक्ति कहता है: तुम क्या व्यर्थ की बात पूछ रहे हो, जो उत्तर देने योग्य भी नहीं है। इस पटसन का भार पांच पाउंड्स है। यह किसी बुद्ध की अपेक्षा कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। इस क्षण यह पटसन ही पूरा अस्तित्व है। इस पांच पाउंड पटसन में ही संसार का पूरा अस्तित्व केंद्रित है- यहीं और अभी। भटकते मत जाओ, ऐसे दार्शनिक प्रश्नों को मत पूछो। इस क्षण की ओर देखो।
तोज़ान ने एक अद्भुत बात की। तोज़ान एक बुद्ध है। तोज़ान पटसन तौल रहा है, बुद्ध ही पटसन तौल रहे हैं- और सत्य एक है। तोज़ान एक बुद्ध है तथा पटसन भी बुद्ध है और उस क्षण उसका भार पांच पाउंड है। वही सत्य था, वही उस क्षण की वास्तविकता थी। लेकिन यदि तुम दार्शनिकता से भरे हुए हो तो तुम सोचोगे कि यह व्यक्ति पागल है और तुम आगे बढ़ जाओगे।
ऐसा ही आर्थर कोस्टलर के साथ हुआ, जो पश्चिम में प्रखर बुद्धिजीवियों में से एक है। वह पूरी तरह से पूर्ण स्थिति से ही चूक गया। जब वह ज़ेन का अध्ययन करने जापान गया तो उसने सोचा: ये लोग पूरी तरह पागल हैं अथवा वे लोग परिहास कर रहे हैं और तनिक भी गंभीर नहीं हैं। उसने ज़ेन के विरुद्ध एक पुस्तक लिखी। वह मूर्खतापूर्ण लगता है और वह है। वह गलत है और तो भी ठीक है। वह मूर्खतापूर्ण है। यदि तुम ज़ेन की भाषा को नहीं जानते हो तो वह मूर्खतापूर्ण है। यदि तुम तर्कपूर्ण चिंतन के साथ बहुत अधिक तादात्म्य जोड़ बैठे हो तो वह असंगत है। वह अतर्कपूर्ण है- उससे अधिक अतर्कपूर्ण चीज़ तुम कहां खोज सकते हो: कोई व्यक्ति पूछ रहा है-"बुद्ध कौन होता है?" और कोई व्यक्ति उत्तर दे रहा है-"इस पटसन का भार पांच पाउंड्स है।"
तुम आसमान के बारे में पूछते हो और मैं पृथ्वी के बारे में उत्तर देता हूं, तुम परमात्मा के बारे में पूछते हो और मैं चट्टान के बारे में बता रहा हूं- कोई मिलन ही नहीं होता है और तब भी वहां एक मिलन होता है- लेकिन बहुत ग्राह्यपूर्ण दृष्टि की आवश्यकता है, बुद्धिगत रूप से तीक्ष्ण नहीं बल्कि अनुभूतिजन्य ग्राह्यता हो, जिसका तर्क-वितर्क के साथ परिचय न हो, बल्कि जोकुछ घटित हो रहा है, उसे देखने, निरीक्षण करने और साक्षी होने की प्रतीक्षा हो और वह पहले ही से पूर्वाग्रह से ग्रस्त न हो बल्कि खुली हो। कोस्टलर बहुत तीक्ष्ण बुद्धि का है, पर पूर्वाग्रहों से ग्रस्त है जो अरस्तू की परंपरा में चीज़ों पर बहुत तर्कपूर्ण दृष्टि से कार्य कर सकता है, लेकिन कुछ भी नहीं जानता, वह यह बिल्कुल नहीं जानता कि वहां पूर्ण रूप

से एक अरस्तूविहीन ज़ेन का भी संसार है, जहां दो में दो जोड़कर अनिवार्य रूप से चार ही नहीं होते, कभी वे पांच और कभी वे तीन होते हैं-कुछ भी होना संभव है। कोई भी संभावना मिटती नहीं और सभी संभावनाएं अनंत रूप से खुली हुई होती हैं। और दो और दो प्रत्येक समय मिलते हैं तोकुछ अन्य ही घटित होता है। अज्ञात संसार खुला बना रहता है, तुम उसे खाली नहीं कर सकते।
उथले रूप से देखो तो यह व्यक्ति पागल है लेकिन गहराई में तुम इस तोज़ान
की अपेक्षा कोई अन्य समझदार व्यक्ति नहीं खोज सकते। लेकिन कोस्टलर उससे चूक जाएगा और कोस्टलर की बुद्धि बहुत तीक्ष्ण है, वह बहुत तर्कपूर्ण है और तीक्ष्ण बुद्धि में केवल बहुत थोड़े से लोग ही उसके साथ मुकाबला कर सकते हैं, लेकिन वह असफल हो जाता है। इस संसार में बुद्धि एक साधन है और उस संसार में बुद्धि एक अवरोध बन जाती है। बहुत अधिक बुद्धिमान मत बनो अन्यथा तुम वास्तविक प्रज्ञा से चूक जाओगे। बिना किसी पूर्वाग्रह के, बिना अपने किसी मन के तोज़ान की ओर देखो। सामान्य रूप से इस दृश्यसत्ता की ओर देखो कि क्या कुछ घटित हो रहा है?
एक भिक्षु जो शिष्य भी है पूछता है: बुद्ध कौन होता है?- और एक ज़ेन सद्गुरु हमेशा अभी और यहीं में होता है, वह इसी क्षण में जीता है, वह हमेशा अपने शाश्वत घर में ही रहता है, तुम जब कभी भी आते हो तुम उसे वहां ही पाओगे, वह वहां से कभी अनुपस्थित नहीं रहता है और वह इस क्षण में ही बना रहता है। वृक्ष, आकाश, सूर्य, चट्टाने, पक्षी, सभी कुछ और यह पूरा संसार इस क्षण में केंद्रित है। यह क्षण विराट है। यह तुम्हारी घड़ी की केवल एक टिक का समय नहीं है, यह क्षण असीम है, क्योंकि इस क्षण में प्रत्येक चीज़ है। लाखों-करोड़ों सितारे हैं, अनेक नए सितारे जन्म ले रहे हैं, अनेक पुराने सितारे मरने जा रहे हैं, समय और स्थान का पूर्ण अनंत विस्तार इस क्षण में मिलता है। इसलिए इस क्षण को कैसे प्रदर्शित किया जाए? और तोज़ान पटसन तौल रहा था- इस क्षण की ओर कैसे संकेत किया जाए और कैसे इस भिक्षु को यहीं और अभी में लाया जाए। कैसे उसको इस दार्शनिक पूछताछ को अलग रखा जाए? कैसे उसे आघात देकर इस क्षण में, इस क्षण के लिए जगाया जाए?
यह एक आघात ही है- क्योंकि वह अपने मन में सोच-विचार करते हुए बुद्ध के बारे में अनिवार्य रूप से यह जांच-पड़ताल कर रहा होगा कि एक बुद्ध की वास्तविकता क्या होती है? क्या सत्य है, और वह अनिवार्य रूप से एक गूढ़ उत्तर जैसी सर्वोत्तम बात किए जाने की आशा कर रहा होगा कि यह सद्गुरु बुद्धत्व को उपलब्ध है इसलिए उसे कुछ बहुत मूल्यमान बात बतानी चाहिए, वह कभी भी यह आशा कर ही नहीं सकता था कि वह एक ऐसी सामान्य बात कहने जा रहा है, इतनी अधिक सामान्य और असंगत उत्तर। उसे अनिवार्य रूप से आघात लगना ही चाहिए।
उस आघात में तुम एक क्षण के लिए, एक क्षण के खंड में ही जाग सकते हो। जब तुम्हें आघात लगता है तो सोचना जारी नहीं रह सकता। यदि उत्तर में कुछ संगत चीज़ होती है तो सोच-विचार जारी रह सकता है क्योंकि यह वह है जो मन पूछता है- अनुरूपता। यदि कोई बात कहीं जाती है जो प्रश्न के अनुरूप हो तो सोचना जारी रह सकता है और यदि कुछ बात ऐसी कही जाती है जो पूर्ण रूप से व्यर्थ और असंगत है तो विघ्न पड़ जाता है जिसका बिल्कुल भी कोई अभिप्राय नहीं होता, तो मन सोचना जारी नहीं रख सकता। अचानक मन को आघात लगता है ओर निरंतरता टूट जाती है। शीघ्र ही वह फिर सोचना शुरू करेगा, चूंकि मन कहेगा: यह मूर्खतापूर्ण और व्यर्थ है।
मुल्ला नसरुद्दीन का एक मनोविश्लेषक द्वारा विश्लेषण किया जा रहा था। मनोविश्लेषण के कई महीनों और अनेक मुलाकातों के बाद जैसे ही मुल्ला काउच पर लेटने लगा तो मनोविश्लेषक ने कहा-"जो मैं अनुभव करता हूं और जो मैंने निष्कर्ष निकाला वह यह है कि तुम्हें प्रेम में गिर जाने की आवश्यकता है, तुम्हें एक सुंदर स्त्री की आवश्यकता है। प्रेम करना ही तुम्हारी आवश्यकता है।
मुल्ला ने कहा-"यह मेरे और आपके बीच की बात है। क्या आप यह नहीं सोचते
कि प्रेम करना एक मूर्खता है?"
मनोविश्लेषक ने कहा-"यह आपके और मेरे बीच की बात है- वह एक मूर्खता करना ही होगा।"

एक क्षण के लिए उसे आघात लगना ही चाहिए था, लेकिन केवल एक क्षण के लिए ही। यदि तुम अनुरूपता नहीं खोज सकते तो मन तुरंत कहेगा: यह मूर्खतापूर्ण है। यदि तुम अनुरूपता पाते हो तो निरंतरता जारी रहती है। यदि वहां कोई भी बात असंगत या मूर्खतापूर्ण है तो एक क्षणांश के लिए वहां एक विघ्न पड़ता है, कुछ बाधित होता है, जोकुछ कहा गया है मन उसे समझने में समर्थ नहीं होता है लेकिन तुरंत ही वह पूर्व स्थिति में आ जाता है और वह कहेगा- वह मूर्खतापूर्ण है, निरंतरता पुनः प्रारंभ हो जाती है।
लेकिन यह आघात और मन का आग्रह से यह कहना कि वह मूर्खतापूर्ण है एक ही समय में नहीं होते हैं और वहां एक अंतराल होता है। उसी अंतराल में एक सटोरी संभव है। उसी अंतराल में तुम जाग सकते हो और तुम्हारे पास एक झलक हो सकती है। यदि उस अवसर का उपयोग किया गया होता तो वह विलक्षण होता क्योंकि यह व्यक्ति तोज़ान अतुलनीय है। तुम ऐसा व्यक्ति किसी अन्य स्थान पर नहीं खोज सकते और कैसा स्वयंप्रवर्तित उत्तर है? वह पहले से गढ़ा गया और किसी भी तरह पहले से तैयार उत्तर नहीं है, इससे पूर्व कभी भी किसी व्यक्ति ने ऐसा नहीं कहा है और अब वहां उसके कहने में कोई विशिष्टता नहीं है। किसी भी व्यक्ति ने कभी नहीं कहा है-"इस पटसन का भार पांच पाउंड्स है" और यह बुद्ध के बारे में किए गए प्रश्न का उत्तर है कि "बुद्ध क्या होता है।"
तोज़ान स्वयंप्रवर्तित है, वह स्मृति से कोई भी उत्तर नहीं दे रहा है अन्यथा वह शास्त्रों को जानता है। बुद्धत्व को उपलब्ध होने से पूर्व वह एक महान विद्वान था- वह हृदय से जानता है। उसने बुद्धों के सभी शब्दों का पाठ किया है, अनेक वर्षों तक वह तत्वज्ञान पर चर्चा-परिचर्चा करता रहा है। वह जानता है कि भिक्षु क्या पूछ रहा है, वह जानता है कि वह उससे क्या आशा कर रहा है- लेकिन वह पूरी तरह से स्वयंप्रवर्तित है, वह पटसन तौल रहा है। केवल तनिक कल्पना करो और देखो: तोज़ान पटसन तौल रहा है। उस क्षण में,
उस क्षण की वास्तविकता का और अधिक स्वच्छंदता से क्या संकेत दिया जा सकता था, अस्तित्व की वास्तविकता का। उसने सामान्य रूप से कहा-"इस पटसन का भार पांच पाउंड्स है" और बात समाप्त कर दी। उसने बुद्ध के बारे में कोई भी बात नहीं की; वहां उसकी कोई आवश्यकता भी नहीं है। यही बुद्धत्व है। स्वयंप्रवर्तित बने रहना ही बुद्धत्व है। उस क्षण के प्रति सच्चा बना रहना ही बुद्धत्व है।
वह जोकुछ कहता है, वह केवल उसका एक भाग है; और वह जो अनकहा छोड़ देता है वही पूर्ण है। यदि तुम उस क्षण जाग जाते हो तो तुम देखोगे कि बुद्ध ही पटसन तौल रहे हैं- और उस पटसन का भार पांच पाउंड्स है। वह किस ओर इशारा कर रहा है? वह अधिक नहीं कह रहा है लेकिन वह बहुत कुछ प्रदर्शित कर रहा है और अधिक न कहने के द्वारा वह एक संभावना सृजित कर रहा है, तुम एक क्षण के लिए पूर्ण अस्तित्व के प्रति सचेत हो सकते हो, जो वहां इस तोज़ान में केंद्रित है। जब कभी संसार में एक बुद्ध के होने की घटना घटित होती है, पूरा अस्तित्व वहां एक केंद्र पा जाता है। तब सभी सरिताएं उसमें ही गिरती हैं, सभी पर्वत उसके आगे सिर झुकाकर प्रणाम करते हैं और सभी सितारे उसके चारों ओर घूमते हैं। जब कभी भी वहां बुद्धत्व को उपलब्ध एक व्यक्ति होता है तो पूरा अस्तित्व उसके सारभूत तत्व के बिंदु पर आकर मिल जाता है। वह केंद्र बन जाता है।
उस क्षण पटसन तौलते हुए तोज़ान बुद्ध था: पूरा अस्तित्व तोज़ान की ओर प्रवाहित होते हुए उसके केंद्र में आकर मिल रहा था और तोज़ान पटसन तौल रहा था- और पटसन का भार पांच पाउंड्स था। यह क्षण इतना अधिक वास्तविक है कि तुम जाग जाते हो, यदि तुम अपनी आंखें खोलते हो तो सटोरी लगना संभव है। तोज़ान स्वयंप्रवर्तित है, उसके पास पहले से तैयार उत्तर नहीं हैं, वह उस क्षण को प्रत्युक्तर देता है।
अगली बार यदि तुम तोज़ान के पास आओ तो वैसा ही समान उत्तर नहीं दिया जा सकता और दिया भी नहीं जाएगा क्योंकि तोज़ान हो सकता है कुछ भी न तौल रहा हो अथवा हो सकता है कि वह कुछ अन्य वस्तु तौल रहा हो अथवा हो सकता है वह पटसन ही तौल रहा हो- लेकिन तब पटसन का भार पांच पाउंड्स नहीं हो सकता है। अगली बार उत्तर भिन्न होगा। यदि तुम उसके पास बार-बार आओ तो प्रत्येक समय उत्तर भिन्न होगा। एक विद्वान व्यक्ति और एक जानने वाले व्यक्ति में यही अंतर

होता है। एक विद्वान व्यक्ति के पास तय किए गए तैयार उत्तर होते हैं। जब भी तुम उसके पास आते हो तो उसके पास तुम्हारे लिए पहले से तैयार किए गए उत्तर होते हैं। तुम पूछते हो और वह तुम्हें उत्तर देगा और उत्तर हमेशा समान होगा- और तुम अनुभव करोगे कि वह बहुत अधिक स्थिर और दृढ़ है।"
एक बार वहां मुल्ला नसरुद्दीन के विरूद्ध कोर्ट में मुकदमा चल रहा था
और न्यायाधीश ने उससे उसकी आयु पूछी। उसने कहा "चालीस वर्ष।" न्यायाधीश ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा और कहा "नसरुद्दीन! चार वर्ष पूर्व भी तुम यहां आए थे और उस समय भी मैंने पूंछा था- तुम्हारी उम्र क्या है, और तुमने चालीस ही बताई थी। अब यह पूर्ण रूप से परस्पर विरोधी कथन है-तुम अभी भी चालीस वर्ष के कैसे हो सकते हो?"
नसरुद्दीन ने कहा- "मैं एक दृढ़ व्यक्ति हूं जो एक ही बात कहता है। एक बार मैंने चालीस कह दिया मैं हमेशा चालीस का ही बना रहूंगा। जब एक बार मैंने उत्तर दे दिया तो वह उत्तर मैंने हमेशा के लिए दे दिया। आप मुझे भटका नहीं सकते। मैं चालीस वर्ष का हूं और जब कभी भी आप पूछेंगे, मैं वही उत्तर दूंगा। मैं एक ऐसा व्यक्ति हूं जो हमेशा अपनी बात पर दृढ़ रहता है।" एकरूप अथवा दृढ़ व्यक्ति मुर्दा होता है। यदि तुम मर गए हो, केवल तभी तुम चालीस के बने रह सकते हों तब वहां बदलने की कोई आवश्यकता नहीं है। एक मृत व्यक्ति कभी भी विकसित नहीं होता और तुम पंडितों, विद्वानों और सूचना रखने वाले व्यक्तियों की अपेक्षा और अधिक मृत व्यक्ति नहीं खोज सकते।
एक बुद्धत्व को उपलब्ध व्यक्ति क्षण-क्षण में जीता है: तुम पूछते हो
वह प्रत्युक्तर देता है- लेकिन उसके पास कोई पहले से तय किए गए स्थिर उत्तर नहीं होते हैं। इसलिए इस क्षण में जोकुछ भी होता है, वह उसे नियंत्रित नहीं करता है, वह उसके बारे में यह सोचता नहीं है कि तुम उस बारे में क्या पूछ रहे हो। तुम सामान्य रूप से पूछते हो और उसका पूरा अस्तित्व प्रत्युक्तर देता है। उस क्षण में वह घटित हो रहा था कि तोज़ान पटसन तौल रहा था और उसी क्षण में यह भी हुआ कि पटसन का भार पांच पाउंड्स निकला और जब इस भिक्षु ने पूछा-"बुद्ध क्या होता है?"- तो तोज़ान के अस्तित्व में पांच पाउंड्स का भार ही वास्तविकता थी। वह तौल रहा था और तोज़ान के अस्तित्व में पांच पाउंड्स ही एक वास्तविकता थी। उसने सामान्य रूप से कहा-"पटसन पांच पाउंड्स है।"
यह परिधि पर मूर्खतापूर्ण दिखाई देता है। यदि तुम और अधिक गहराई में जाओ, तुम एक अनुरूपता पाते हो, जो एक तर्कपूर्ण अनुरूपता नहीं है और तुम एक दृढ़ता पाते हो, जो बुद्धिगत नहीं है बल्कि अस्तित्वगत है। इसे समझो, इस अंतर को समझने का प्रयास करो। यदि अगली बार तुम आओ और तोज़ान बगीचे में एक गड्ढा खोद रहा है और तुम उससे पूछो-"बुद्ध क्या होता है?" तो वह तुम्हें उत्तर देगा, वह कहेगा-"इस गड्ढे की ओर देखो, यह तैयार है और अब इसमें वृक्ष रोपा जा सकता है।" यदि तुम अगली बार फिर आते हो और यदि वह अपनी टहलने की छड़ी साथ लेकर टहलने जा रहा है तो वह कह सकता है-"यह टहलने की छड़ी है।"
उस क्षण में जोकुछ भी है, वही उत्तर होगा क्योंकि एक बुद्ध क्षण-प्रति-क्षण जीता है- और यदि तुम क्षण-प्रति-क्षण में जीना शुरू कर देते हो, तुम एक बुद्ध बन जाते हो। यही उत्तर है: क्षण-प्रति-क्षण जीओ और तुम एक बुद्ध बन जाओगे। एक बुद्ध वह व्यक्ति होता है, जो क्षण-प्रति-क्षण जीता है, जो भूतकाल में नहीं रहता है, जो भविष्य में नहीं रहता है, जो यहीं और अभी में रहता है। बुद्धत्व यहीं और अभी में उपस्थित बने रहने का एक गुण है- और बुद्धत्व एक लक्ष्य नहीं है, तुम्हें प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है, तुम ठीक अभी और यहीं में हो सकते हो।
यह बातचीत करते हुए कि मैं एक बुद्ध हूं क्योंकि केवल बात घटित हो रही है, पर यदि तुम्हारे साथ दूसरे छोर पर वहां ध्यानपूर्ण ढंग से सुनना भी घटित हो रहा है, तो ध्यानपूर्ण होकर सुनने में ही तुम एक बुद्ध हो। इस क्षण, इस क्षण की एक झलक को पकड़ने का प्रयास करो। इस क्षण तोज़ान पटसन नहीं तौल रहा है। तोज़ान तुमसे बातचीत कर रहा है। इस क्षण तुमने यह नहीं पूछा है कि बुद्ध क्या होता है? लेकिन चाहे तुम पूछो अथवा नहीं, प्रश्न वहां है। प्रश्न चारों ओर घूमता ही रहता है, वह मन में चारों ओर घूमता रहता है कि

सत्य क्या है? बुद्ध क्या है? ताओ क्या है? चाहे तुम पूछो अथवा नहीं, पर प्रश्न वहीं है। तुम ही प्रश्न हो।
इस क्षण में तुम जाग सकते हो। तुम देख सकते हो, तुम मन को थोड़ा-सा हिला- डुला सकते हो और एक विच्छेदन सृजित कर सकते हो और अचानक तुम समझ जाते हो- ऐसा क्या है जिससे आर्थर कोस्टलर चूक जाता है। यदि तुम भी बहुत बद्धिमान हो तो तुम भी चूक जाओगे। बहुत अधिक बुद्धिमान मत बनो और न बहुत अधिक चालाक बनने का प्रयास करो क्योंकि वहां एक प्रज्ञा भी है जो उन लोगों के द्वारा प्राप्त की जाती है जो पागलों के समान बन जाते हैं, वहां एक प्रज्ञा है जो केवल तभी उपलब्ध होती है जब तुम मन को खो देते हो।
तोज़ान आकर्षक है। यदि तुम देख सकते हो और यदि तुम समझ सकते हो कि उत्तर मूर्खतापूर्ण नहीं है तो तुमने उसे देख लिया है और तुमने उसे समझ लिया है। लेकिन यदि समझ बुद्धिगत बनी रहती है तो वह अधिक उपयोग की नहीं होगी। मैंने तुम्हें उसे स्पष्ट कर दिया है और तुमने उसे समझ लिया है लेकिन यदि समझ बुद्धिगत बनी रहती है, तुम उसे मन से समझते हो तो तुम फिर चूक जाते हो। कोस्टलर ज़ेन के विरोध में हो सकता है और तुम उसके पक्ष में हो सकते हो लेकिन तुम दोनों ही चूक जाते हो। यह प्रश्न विरोध में अथवा पक्ष में होने का नहीं है, यह प्रश्न है बिना मस्तिष्क के समझना। यदि वह तुम्हारे हृदय से उदित होता है, यदि तुम उसका अनुभव करते हो और उस पर सोच-विचार नहीं करते, यदि वह तुम्हारे पूरे अस्तित्व को छूता है, यदि वह केवल एक मौखिक चीज़ और एक तत्वज्ञान न बनकर तुम्हारे अंदर तीव्रता से प्रविष्ट हो जाता है और एक अनुभव बन जाता है तो वह तुम्हें रूपांतरित कर देगा।
मैं इन कहानियों के बारे में केवल इसलिए बात कर रहा हूं कि वे तुम पर चोट करके तुम्हें मन के बाहर ले जाएं, वे तुम्हें थोड़ा-सा नीचे की ओर हृदय में ले जाएं और यदि तुम तैयार हो तब वे और भी नीचे नाभि की ओर ले जाएं। जितनी दूर तक नीचे जाते हो, तुम उतनी ही और अधिक गहराई तक पहुंचते हो...
और अंतिम रूप से गहराई और उंफचाई समान चीज़ें हैं।

और फूलों की बरसात हुई
नौवां प्रवचन

बहरे, गूंगे और अंधे होना

एक दिन गेंशा ने असंतोष प्रकट करते हुए
अपने अनुयाइयों से कहा-
"दूसरे सद्गुरु हमेशा प्रत्येक व्यक्ति को मुक्त करने की
अनिवार्यता के बारे में पथ-प्रदर्शन करना जारी रखते हैं-
लेकिन तनिक सोचो कि यदि तुम किसी ऐसे व्यक्ति से मिलते हो
जो बहरा, गूंगा और अंधा है:
वह तुम्हारे हाव-भाव और चेष्टाओं को देख नहीं सकता, तुम्हारे उपदेश
को सुन नहीं सकता, अथवा उस महत्वपूर्ण विषय पर वह प्रश्न नहीं पूछ सकता तो उसे मुक्त करने में असमर्थ होकर तुमने स्वयं को एक अयोग्य बौद्ध सिद्ध कर दिया।" इन शब्दों से व्याकुल होकर गेंशा के शिष्यों में से एक परामर्श लेने सद्गुरु उम्मोन के पास गया,
जो गेंशा के समान ही सद्गुरु सेप्पो का एक शिष्य थ।
उम्मोन ने कहा-"वृफप्या सिर नीचे झुकाकर प्रणाम करो।"
यद्यपि भिक्षु को आश्चर्य हुआ, पर उसने सद्गुरु के आदेश का पालन किया,
और तब पूछे गए प्रश्न का उत्तर पाने की आशा में वह सीधा खड़ा हो गया।
लेकिन उत्तर देने के स्थान पर उसने अपना डंडा उठाया
और उसने जोर से उस पर प्रहार किया। वह उछलकर पीछे जा गिरा।
उम्मोन ने कहा-"ठीक है, तो तुम अंधे नहीं हो। अब निकट आओ।"
भिक्षु ने वैसा ही किया, जैसी कि उसे आज्ञा दी गई थी।

उम्मोन ने कहा-"तुमने ठीक वैसा ही व्यवहार किया।
इसलिए तुम बहरे भी नहीं हो। ठीक से समझ गए?"
भिक्षु ने कहा-"श्रीमान समझना कैसा?"
उम्मोन ने कहा-"ओह! तो तुम गूंगे भी नहीं हो।"

इन शब्दों को सुनकर वह भिक्षु
जैसे एक गहरी नींद से जाग गया।

जीसस अपने शिष्यों से न केवल एक बार बल्कि बार-बार यह कहा करते थे-"यदि तुम्हारे पास आंखें हैं तो देखो! यदि तुम्हारे पास कान हैं तो मुझे सुनो।" उनके पास तुम्हारे समान ही आंखें थीं और उनके पास तुम्हारे समान ही कान थे। जब जीसस का अनिवार्य रूप से इन कानों से नहीं, इन आंखों से नहीं बल्कि किसी अन्य चीज़ से तात्पर्य होना चाहिए।
संसार को देखने और सुनने का एक भिन्न ढंग है और होने का भी एक जुदा तरीका है। जब तुम्हारे पास देखने का वह भिन्न गुण होता है तो परमात्मा के दर्शन होते हैं, जब तुम्हारे पास सुनने का एक भिन्न ढंग होता है तोपरमात्मा सुनने देता है और जब तुम्हारे पास होने का एक भिन्न ढंग होता है तो तुम स्वयं ही परमात्मा हो जाते हो। जैसे तुम हो, तुम एक बहरे, गूंगे और अंधे हो- लगभग मृत। तुम परमात्मा के प्रति बहरे हो, तुम परमात्मा के सामने गूंगे हो और परमात्मा के आगे अंधे तथा मृत हो।
नीत्शे ने घोषणा की कि परमात्मा मर गया है। वास्तव में जब तुम मृत हो
तो परमात्मा तुम्हारे लिए कैसे जीवंत हो सकता है? परमात्मा मर गया है क्योंकि तुम मर गए हो। तुम परमात्मा को केवल तभी जान सकते हो, जब तुम प्रचुरता से जीते हो, जब तुम्हारा जीवन अतिरेक से प्रवाहमान बन जाता है, जब वह एक बाढ़ हो जाता है। उस अतिरेक से प्रवाहित आनंद के क्षण में, जीवन और स्फूर्ति के क्षण में तुम पहली बार जानते हो कि परमात्मा क्या होता है क्योंकि परमात्मा सबसे अधिक आनंद के एक बाढ़ जैसी अलौकिक घटना है।
इस संसार में परमात्मा एक अनिवार्यता नहीं है। वैज्ञानिक नियमों की अधिक आवश्यकता है और बिना उनके संसार नहीं हो सकता है। उस तरह से परमात्मा

की आवश्यकता नहीं हैं बिना उसके संसार हो सकता है लेकिन वह मूल्यहीन होगा। बिना उसके तुम अस्तित्व में बने रह सकते हो लेकिन तुम्हारा अस्तित्व केवल एक वनस्पति के अस्तित्व जैसा होगा। बिना उसके तुम एक वनस्पति की भांति हो सकते हो पर वास्तव में तुम जीवंत नहीं हो सकते। परमात्मा एक अनिवार्यता नहीं है- तुम वहां बने रह सकते हो लेकिन तुम्हारे बने रहने का वहां कोई भी अर्थ नहीं होगा, वह किसी भी प्रकार का कोई अर्थ लेकर अपने साथ नहीं चलेगा। उसके पास कोई काव्य न होगा, उसके पास कोई गीत नहीं होगा और न उसके पास कोई भी नृत्य होगा। वह एक रहस्य नहीं बनेगा। वह एक अंकगणित हो सकता है, वह एक व्यापार हो सकता है, लेकिन वह एक प्रेम का संबंध नहीं हो सकता है।
बिना परमात्मा के वह जो सब कुछ सुंदर है, विलुप्त हो जाता है क्योंकि सुंदरता केवल एक बाढ़ की भांति आती है- वह एक सुरुचि संपन्नता है। एक वृक्ष का निरीक्षण करो यदि तुमने उसे भलीभांति पानी से सींचा नहीं है, यदि वृक्ष को मिट्टी से पोषण नहीं मिला है तो वृक्ष अस्तित्व में तो हो सकता है लेकिन उसमें फूल नहीं खिलेंगे। अस्तित्व तो वहां होगा लेकिन व्यर्थ होगा। उसका न होना ही अच्छा होता क्योंकि वह एक निरंतर होने वाली निराशा होगी। वृक्ष पर फूल केवल तभी आते हैं जब वृक्ष के पास इतना अधिक होता है कि वह उसे बांट सके और जब वृक्ष का इतना अधिक पोषण होता है कि वह फल-फूल सके, खिलावट होना एक सुरुचि संपन्नता है। वृक्ष के पास इतना अधिक है कि वह इतनी सामर्थ्य रखता है।
और मैं तुमसे कहता हूं कि परमात्मा संसार में सबसे अधिक ऐश्वर्ययुक्त
एक सुरुचि संपन्न सत्ता है। परमात्मा एक अनिवार्यता नहीं है- तुम उसके बिना जी सकते हो। तुम भलीभांति जीवित रह सकते हो, लेकिन तुम किसी चीज़ से चूकोगे और अपने हृदय में एक रिक्तता का अनुभव करोगे। तुम एक जीवंत शक्ति के समान होने की अपेक्षा एक घाव के समान अधिक बने रहोगे। तुम दुखी रहोगे और तुम्हारे जीवन में वहां कोई भी परमानंद न होगा।
लेकिन इस परमानंद के अर्थ को कैसे खोजा जाए? तुम्हें देखने के एक भिन्न तरीके की आवश्यकता होगी। ठीक अभी तो तुम अंधे हो। वास्तव में तुम पदार्थ देख सकते हो क्योंकि पदार्थ एक अनिवार्यता है। तुम भलीभांति वृक्ष को देख सकते हो, लेकिन तुम फूलों से चूक जाओगे और यदि तुम फूलों को भी देख सकते हो तो तुम उसकी सुवास से चूक जाओगे। तुम्हारी आंखें केवल बाहर परिधि देख सकती है, पर तुम वास्तविक बीज कोष अथवा केंद्र से चूक जाते हो। इसीलिए जीसस कहते चले जाते हैं कि तुम अंधे हो, तुम बहरे हो- और तुम्हें गूंगा भी होना होगा क्योंकि यदि उसको नहीं देखा है तो वहां कहने को है क्या? यदि तुमने उसको नहीं सुना है तो वहां संदेश भिजवाने और पहुंचाने को है क्या? यदि उस कविता का जन्म नहीं हुआ तो वहां गाने को है क्या? तुम अपने मुंह से मुद्राएं बना सकते हो लेकिन उनसे कुछ भी नहीं निकलेगा क्योंकि पहले से ही वहां कुछ भी नहीं है।
जब जीसस जैसा एक व्यक्ति बोलता है तोकुछ चीज़ उसके अधिकार में होती है, जोकुछ उसके द्वारा कहा जाता है उसकी अपेक्षा कुछ चीज़ उसके पास उससे भी महान होती है। जब एक बुद्ध जैसा व्यक्ति बोलता है तो वह गौतम-सिद्धार्थ ही नहीं होता, जिसका जन्म एक राजा के पुत्र के रूप में हुआ था, नहीं, वह अब और अधिक वह रहा ही नहीं। वह अब और अधिक शरीर नहीं रहा, जिसे तुम देख और छू सकते हो, वह अब एक मन भी नहीं रहा जिसे तुम समावेश करते हुए समझ सकते हो। उस पार की कुछ चीज़ उसमें प्रविष्ट हो गई है, कुछ चीज़ जो समय और स्थान की नहीं है, अब समय और स्थान में आ गई है। एक चमत्कार घटित हुआ है। वह तुमसे नहीं बोल रहे हैं, वह तो केवल एक वाहन हैं, कुछ और ही बात उनके द्वारा प्रवाहित हो रही है और वह केवल एक माध्यम हैं। वह अज्ञात किनारे से तुम्हारे लिए कोई चीज़ वहन कर रहे हैं। केवल तभी तुम गीत गा सकते हो, जब परमानंद घटित हो गया है। अन्यथा तुम गीत गाये चले जा सकते हो लेकिन वह उथला होगा। तुम बहुत अधिक शोर उत्पन्न कर सकते हो, लेकिन शोर बात नहीं कर रहा है। तुम अनेक शब्दों का प्रयोग कर सकते हो लेकिन वे रिक्त होंगे। तुम बहुत अधिक बात कर सकते हो, लेकिन वास्तव में तुम कैसे बात कर सकते हो?

जब ऐसा मुहम्मद को घटित हुआ, जब पहले दिन वह परमात्मा के संपर्क में आए, वह नीचे भूमि पर गिर पड़े और उन्होंने जोर से कांपना शुरू कर दिया और पसीने-पसीने हो गए और वह सुबह इस सुबह जैसी ही शीतल थी। वह अकेले थे और उनके पैरों के तलुवों के पोर-पोर से पसीना बहने लगा। वह भयभीत हो गए। किसी अज्ञात चीज़ ने उनका स्पर्श किया था और वह डरा देने वाली मृत्यु जैसी थी। वह भागते हुए घर आए और बिस्तर में लेट गए। उनकी पत्नी बहुत अधिक डर गई। उन्हें अनेक कंबल ओढ़ा दिए लेकिन तब भी उनका कांपना जारी रहा और उनकी पत्नी ने उनसे पूछा-"आखिर हुआ क्या? आपकी आंखें चौंधियाई हुई लगती हैं और आप बोलते क्यों नहीं? आप गूंगे क्यों बन गए हैं?"
मुहम्मद के बारे यह कहा जाता है कि उन्होंने कहा-"अब वहां पहली बार कुछ बात कहने को है। अभी तक मैं गूंगा बनकर रहा और वहां कहने कोकुछ भी नहीं था। मैं मुंह से मुद्राएं बना रहा था। मैं बात कर रहा था लेकिन केवल मेरे होंठ हिल रहे थे। वहां कहने कोकुछ भी नहीं था। अब वहां मेरे पास कहने कोकुछ बात है और इसी कारण मैं इतना अधिक कांप रहा हूं। मैं उस अज्ञात परमात्मा के साथ परिपूर्ण हो गया हूं। कोई चीज़ जन्म लेने जा रही है।" जैसा कि प्रत्येक मां जानती है कि गर्भ का पूर्ण समय हो जाने पर वह पीड़ा लाता है। यदि तुम्हें एक बच्चे को जन्म देना है तो तुम्हें कई दिनों तक पीड़ा से होकर गुजरना होगा और जब जन्म घटित होता है तो वहां बहुत अधिक पीड़ा और दर्द होता है। जब जीवन संसार में प्रविष्ट होता है वह एक संघर्ष होता है।
यह कहा जाता है कि मुहम्मद तीन दिनों तक पूर्ण रूप से गूंगे बने अपने बिस्तर पर ही पड़े रहे। तब धीमे-धीमे ठीक जैसे कि एक छोटा बच्चा बात करना शुरू करता है, उन्होंने बात करनी शुरू कर दी और तब इस तरह कुरान का जन्म हुआ।
तुम गूंगे हो, हो सकता है कहने को बहुत अधिक बातें हों लेकिन याद रहे तुम केवल अपने गूंगेपन को छिपाने के लिए बहुत अधिक बातें करते हो। तुम सूचना देने के लिए बात नहीं करते हो, तुम केवल यह छिपाने के लिए कि वास्तव में तुम गूंगे हो, बात करते हो। अगली बार जब तुम किसी व्यक्ति के साथ बात करना शुरू करो तो निरीक्षण करना: कि तुम बातें क्यों कर रहे हो? तुम इतने अधिक मुखर क्यों हो? उसकी आवश्यकता क्या है? अचानक तुम सचेत हो जाओगे कि भय यह है कि यदि मैं खामोश बना रहा तो दूसरा सोचेगा कि मैं गूंगा हूं। इसलिए केवल इस तथ्य को छिपाने के लिए ही तुम बात करते हो- और तुम जानते हो कि वहां कहने कोकुछ भी नहीं है, तो भी तुम बातें किए चले जाते हो।
मैं एक बार एक परिवार के साथ ठहरा हुआ था, और मैं घर के स्वामी अपने मेजबान के साथ बैठा हुआ था तभी उनका छोटा पुत्र अंदर आया और उसने अपने पिता से पूछा कि क्या वह उसके थोड़े से प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं? पिता ने कहा-"मैं व्यस्त हूं, तुम जाओ और अपनी मां से पूछो।"
बच्चे ने कहा-"लेकिन मैं उतना अधिक नहीं जानना चाहता, क्योंकि यदि वह बातचीत करना शुरू करती हैं तो उसका कहीं अंत नहीं होता और मुझे अपना होमवर्क करना है तथा मैं बहुत अधिक नहीं जानना चाहता।"
लोग बिना यह जाने हुए कि वे क्यों और किसलिए बातें कर रहे हैं, बातें
और बातें और बातें किए चले जाते हैं। वहां बताने को है ही क्या? यह केवल अपने गूंगेपन को छिपाने का प्रयास है। लोग यहां से वहां चक्कर लगाए चले जाते हैं, वे इस शहर से उस शहर में यात्राएं किए चले जाते हैं और अवकाश मनाने वे हिमालय और स्विट्जरलैंड जाते हैं- यह सभी यात्राएं और घूमना, आखिर क्यों? वे यह अनुभव करना चाहते हैं कि वे जीवित हैं।
लेकिन जीवन मात्र गतिविधि करते रहना नहीं है। निश्चित रूप से जीवन के पास एक गहन संवेग अर्थात गतिविधियां हैं लेकिन गतिविधियों का होते रहना ही जीवन नहीं है। तुम एक नगर से दूसरे में घूमने जा सकते हो और तुम पूरी पृथ्वी पर छा सकते हो, लेकिन यह संवेग जीवन नहीं है। वास्तव में जीवन एक बहुत सूक्ष्म गतिविधि है, वह चेतना की एक स्थिति से दूसरी पर जाना है।
जब लोग दुविधा में पड़ जाते हैं, वे बाहर घूमना शुरू कर देते हैं। अब अमेरिकन असली यात्री बन गए हैं। वे इस कोने से उस कोने तक पूरे विश्व-भर में यात्राएं करते हैं क्योंकि अमेरिकन चेतना कहीं इतनी बुरी तरह दुविधा

में पड़ गई है कि यदि तुम एक स्थान पर बने रहते हो तो तुम अनुभव करोगे कि जैसे तुम मर गए हो। इसलिए गतिशील रहा जाए। एक पत्नी से दूसरी के पास जाओ, एक व्यापार अथवा कार्य को बदलकर दूसरे की ओर गतिशील हो जाओ, एक पड़ोस से दूसरे पड़ोस में चले जाओ, एक शहर से दूसरे में प्रस्थान कर जाओ। मनुष्य के इतिहास में ऐसा कभी भी घटित नहीं हुआ। अमेरिका में एक व्यक्ति का एक नगर में रुकने का औसत समय तीन वर्ष है। लोग तीन वर्षों के अंदर दूसरा नगर बदल लेते हैं- और यह तो केवल औसत समय है। वहां ऐसे भी लोग हैं जो प्रत्येक माह गतिशील हो रहे हैं। वे बदलते चले जाते हैं- अपने वस्त्रों को, कारों को, मकानों को और पतियों और पत्नियों को- और प्रत्येक वस्तु को।
मैंने सुना है कि एक बार हॉलीवुड की एक अभिनेत्री अपने बच्चे का अपने
नए पति से परिचय करा रही थी। उसने बच्चे से कहा-"अब अपने नए पिता से मिलो।" बच्चे ने उससे कहा-"मैं आपसे मिलकर बहुत प्रसन्न हूं। क्या आप मेरी अभ्यागतों की डायरी में अपने हस्ताक्षर देना पसंद करेंगे?" क्योंकि वह अनेक नए पिताओं से मिल चुका था।
प्रत्येक वस्तु को बदल देना है, केवल यह महसूस करने के लिए कि तुम जीवित हो। जीवन के लिए एक उत्तेजना से भरी हुई तलाश। वास्तव में जीवन एक गतिविधि है लेकिन एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना नहीं, यह गतिविधि है एक स्थिति से दूसरी में जाने की। यह अंतरस्थ में होने वाली एक गहन गतिविधि है- एक चेतना से दूसरी चेतन में और आत्मा के उच्चतम क्षेत्रों की ओर। अन्यथा तुम मृत हो। जैसे तुम हो, तुम मृत ही हो। इसीलिए जीसस कहे चले जाते हैं-"ध्यान से सुनो!- यदि तुम्हारे पास कान हैं और यदि तुम्हारे पास आंखें हैं तो देखो।" पहले इसे समझ लेना है तब यह कहानी सरल बन जाएगी।
तब दूसरी बात: तुम इतने अधिक मृत क्यों हो? तुम इतने अधिक गूंगे, अंधे
और बहरे क्यों हो? वहां उसमें कुछ चीज़ होनी चाहिए, वहां उसमें कुछ पूंजी लगी होनी चाहिए- अन्यथा इतने अधिक लोग, उनमें से करोड़ों लोग ऐसी स्थिति में नहीं हो सकते थे। वह अनिवार्य रूप से तुम्हें कुछ चीज़ दे रही है, तुम अवश्य ही उससे कुछ चीज़ प्राप्त कर रहे हो, अन्यथा यह कैसे संभव है कि बुद्ध और वृफष्ण तथा जीसस कहे चले जाते हैं-"अंधे मत बनो, बहरे मत बनो, गूंगे मत बनो, मृत मत बनो। जीवंत बनो। सजग बनो। जागो!" और कोई भी व्यक्ति उनकी बात नहीं सुनता है। यद्यपि बुद्धिगत रूप से वे आकर्षित करती हैं, लेकिन तुम उन्हें कभी नहीं सुनते। यदि तुम जीवन के विशिष्ट सर्वोत्तम क्षणों में यह अनुभव करते हो कि वे ठीक हैं तब भी तुम उनका अनुसरण नहीं करते। यदि किसी समय तुम अनुसरण करने का निर्णय लेते हो तो तुम हमेशा कल के लिए स्थगित कर देते हो और तब कल कभी नहीं आता है। उसमें ऐसी कौन-सी गहन पूंजी लगी हुई है? ठीक कल रात ही मैं एक मित्र से बात कर रहा था। वह बहुत शिक्षित और सुसंस्वृफत व्यक्ति हैं जो पूरे संसार-भर में घूमे हैं। वह सोवियत रूस, ब्रिटेन और अमेरिका में रहे हैं, वह चीन भी गए हैं और इस और उस जगह घूमते ही रहे हैं। उनकी बात सुनते हुए मैंने अनुभव किया कि वह पूरी तरह से मृत हैं। तब उन्होंने मुझसे पूछा-"क्योंकि जीवन में इतने अधिक दुःख और पीड़ाएं हैं, इतना अधिक अन्याय है और ऐसी अनेक चीज़ें हैं जो मुझ पर चोट करती हैं, इनके लिए क्या आप किसी समाधान का सुझाव देंगे? जीवन कैसे जिया जाए जिससे आपको चोट लगने जैसा अनुभव न हो, जिससे जीवन तुम्हारे अस्तित्व में इतने अधिक घाव उत्पन्न न कर सके!"
इसलिए मैंने उनसे कहा-"इस बारे में दो रास्ते हैं: पहला जो आसान है लेकिन उसकी एक बहुत बड़ी कीमत चुकानी होती है- उस एक को मृत हो जाना है और जितना अधिक संभव हो सके असंवेदनशील बनना होगा... क्योंकि यदि तुम संवेदनशील नहीं हो, यदि तुम अपने चारों ओर एक मोटी खाल, एक कवच की भांति विकसित कर लेते हो, तब तुमको अधिक परेशान नहीं होना है और कोई भी व्यक्ति तुमको चोट नहीं पहुंचा सकता। कोई व्यक्ति तुम्हारा अपमान करता है तो तुम्हारे पास एक ऐसी मोटी खाल है कि वह कभी भी अंदर प्रविष्ट नहीं होता। वहां अन्याय है लेकिन आप सामान्य रूप से उसके प्रति कभी भी सचेत नहीं होते।
तुम्हारे मृतप्रायः होने का यही यांत्रिकत्व है। यदि तुम अधिक संवेदनशील हो तो तुम्हें चोट कहीं अधिक लगेगी। तब प्रत्येक छोटी-सी चीज़

एक दुःख और पीड़ा बन जाएगी तथा जीवित रहना असंभव बन जाएगा और प्रत्येक को जीना ही है। वहां लाखों लोग हैं, वहां समस्याएं हैं, वहां चारों ओर हिंसा है और वहां चारों ओर दुःख-ही-दुःख हैं। तुम सड़क से होकर गुजरते हो और वहां भिखारी हैं। तुम्हें असंवेदनशील होना ही होगा अन्यथा वह एक दुःख बन जाएगा, वह तुम्हारे ऊपर एक भारी बोझ होगा। ये भिखारी क्यों हैं? ऐसा उन्होंने क्या किया है जिससे वे दुखी हैं। और किसी तरह नीचे गहरे में तुम अनुभव करोगे: मैं भी इसके लिए जिम्मेदार हूं। तुम भिखारी के पास से सामान्य रूप से यों गुजर जाते हो, जैसे मानो तुम बहरे, गूंगे और अंधे हो- जैसे तुमने कुछ देखा ही नहीं।
क्या तुमने कभी एक भिखारी को देखा है? हो सकता है तुमने एक भिखारी देखा हो लेकिन तुमने कभी उसकी ओर नहीं देखा है। तुमने कभी उसका आमना-सामना नहीं किया है, तुम कभी उसके साथ नहीं बैठे हो, तुमने कभी भी उसका हाथ अपने हाथ में नहीं लिया है क्योंकि यह बहुत अधिक हो जाता। वहां इतना अधिक खुला हुआ खतरा है और तुम्हें इस भिखारी के बारे में नहीं अपनी पत्नी के बारे में सोचना है, तुम्हें अपने बच्चों के बारे में सोचना है- और तुम्हारी उसमें कोई दिलचस्पी नहीं है। इसीलिए जब कभी भी वहां एक भिखारी होता है, निरीक्षण करना: तुम्हारी गति बढ़ जाती है, तुम तेजी से चलने लगते हो और उस रास्ते की ओर नहीं देखते।
यदि तुम वास्तव में एक भिखारी की ओर देखते हो, तुम जीवन के पूरे अन्याय का अनुभव करोगे और तुम पूरी पीड़ा तथा दुःख का अनुभव करोगे- और वह बहुत अधिक हो जाएगा। तुम्हें सहन करना असंभव हो जाएगा, तुम्हें कुछ कार्य करना ही होगा, पर तुम क्या कर सकते हो? तुम बहुत असहाय होने का अनुभव करते हो क्योंकि तुम्हारे पास तुम्हारी अपनी समस्याएं भी हैं और तुम्हें उन्हें सुलझाना है।
तुम एक मरते हुए व्यक्ति को देखते हो, तुम क्या कर सकते हो? तुम एक अपंग बच्चे को देखते हो, तुम क्या कर सकते हो? कल ही एक संन्यासी मेरे पास आया और उसने कहा कि बहुत अधिक अव्यवस्थित हो गया है क्योंकि जब मैं सड़क से होकर गुजर रहा था, एक ट्रक ने एक कुत्ते को लगभग मार ही डाला। कुत्ता पहले ही से ठीक हालत में नहीं था निश्चित रूप से उसके दो पैर पहले ही कुचले जा चुके थे। केवल दो पैरों के सहारे ही वह कुत्ता जीने का प्रयास कर रहा था और तब इस ट्रक ने उसे फिर से कुचल दिया। संन्यासी ने बहुत दया और करुणा का अनुभव किया और उसने कुत्ते को अपने हाथों में लिया- और तब उसने देखा कि उसकी पीठ में वहां एक सुराख था जिसमें लाखों कीड़े बिलबिला रहे थे। वह सहायता करना चाहता था लेकिन सहायता कैसे की जाए? और वह इतना अधिक अव्यवस्थित हो गया कि रात-भर सो न सका, उसे दुःस्वप्न आते रहे और उस कुत्ते का ख्याल निरंतर उसके अंदर आता-जाता रहा कि मैंने उसके लिए कुछ भी नहीं किया और मुझे कुछ कार्य करना चाहिए था। लेकिन क्या किया जाए? उसके मन में एक विचार कुत्ते को मार देने का भी आया क्योंकि अब जोकुछ किया जा सकता था वह केवल यही कार्य था। इतने अधिक कीड़ों और उनके अंडों के साथ वह कुत्ता जीवित नहीं रह सकता था और उसका जीवन एक यातना ही होता, इसलिए उसे मार देना ही अच्छा था। लेकिन उसे मारना क्या वह एक हिंसा न होगी। क्या वह एक हत्या नहीं होगी? क्या वह एक कर्म नहीं बनेगा? इसलिए क्या किया जाए? तुम सहायता नहीं कर सकते। तब श्रेष्ठ मार्ग है- असंवेदनशील बने रहना।
वहां कुत्ते हैं और वहां ट्रक भी हैं और चीज़ें घटित होती चली जाती हैं, तुम अपने चारों ओर नहीं देखते और तुम अपने रास्ते पर चल देते हो। देखना खतरनाक है इसलिए तुम सौ प्रतिशत कभी अपनी आंखों का प्रयोग नहीं करते- वैज्ञानिक कहते हैं कि तुम केवल दो प्रतिशत उनका प्रयोग करते हो। अट्ठानवे प्रतिशत तुम अपनी आंखें बंद रखते हो। अट्ठानवे प्रतिशत तुम अपने कान बंद रखते हो, जोकुछ शोर तुम्हारे चारों ओर हो रहा है तुम प्रत्येक ध्वनि को नहीं सुनते। अट्ठानवे प्रतिशत तुम जीते ही नहीं। क्या कभी तुमने इसका निरीक्षण किया है कि जब तुम प्रेम संबंध में होते हो अथवा जब कभी प्रेम ठहर जाता है, तुम कैसे हमेशा एक भय का अनुभव करते हो? अचानक एक भय तुम्हें नियंत्रण में ले लेता है क्योंकि जब कभी तुम एक व्यक्ति से प्रेम करते हो तुम उस व्यक्ति को समर्पण करते हो। और एक

व्यक्ति को समर्पण करना खतरनाक है क्योंकि दूसरा तुम्हें हानि पहुंचा सकता है। तुम्हारी सुरक्षा धराशायी हो जाती है। तुम्हारे पास कोई भी कवच नहीं है। जब कभी तुम प्रेम करते हो तुम खुले हुए और आघात सहन करने योग्य हो और कौन जानता है कि दूसरे में कैसे विश्वास किया जाए? ... क्योंकि दूसरा एक अजनबी है। हो सकता है कि तुम दूसरे को अनेक वर्षों से जानते हो लेकिन उससे कोई भी अंतर नहीं पड़ता है। तुम स्वयं अपने को ही नहीं जानते हो, तुम दूसरे को कैसे जान सकते हो? दूसरा एक अजनबी है। दूसरे को अपने अंतरंग जीवन में प्रवेश करने की अनुमति देने का अर्थ है उसे तुम्हें हानि अथवा आघात पहुंचाने की अनुमति देना।
लोग प्रेम करने से भयभीत हो गए हैं। एक प्रेमिका होने की अपेक्षा एक वेश्या के पास जाना कहीं अधिक अच्छा है क्योंकि पत्नी एक व्यवस्था है। तुम्हारी पत्नी तुम्हें अधिक हानि नहीं पहुंचा सकती क्योंकि तुमने उससे कभी प्रेम नहीं किया है। वह तुम्हारे माता-पिता और ज्योतिषी के द्वारा की गई व्यवस्था थी... सिवाय तुम्हारे उससे प्रत्येक व्यक्ति संबद्ध था। वह एक प्रबंध था, एक सामाजिक व्यवस्था थी। उसमें अधिक उलझन नहीं थी। तुम उसकी देखभाल करते थे। तुम उसके भोजन और शरणस्थल की व्यवस्था करते थे। वह तुम्हारी देखभाल करती थी, वह घर को संभालती थी, भोजन बनाती थी और बच्चों की देखभाल करती थी- वह एक व्यवस्था थी, वह एक व्यापार जैसी कुछ चीज़ थी। प्रेम खतरनाक है, वह एक व्यापार नहीं है, वह एक मोल-तोल है। तुम प्रेम में दूसरे व्यक्ति को शक्ति देते हो, अपने ऊपर पूरी सत्ता देते हो। यही भय है: दूसरा एक अजनबी है और कौन जानता है... ? जब कभी तुम किसी व्यक्ति पर विश्वास करते हो भय जकड़ लेता है।
लोग मेरे पास आते हैं और वे कहते हैं-"हम आपको समर्पण करते हैं, लेकिन मैं जानता हूं कि वे कर नहीं सकते। यह लगभग असंभव है। उन्होंने कभी प्रेम नहीं किया है, फिर वे कैसे समर्पण कर सकते हैं? वे यह बिना जाने हुए बोल रहे हैं कि वे क्या कह रहे हैं। वे लगभग सोये हुए हैं। वे अपनी नींद में ही बात कर रहे हैं, उसका यह अर्थ नहीं है क्योंकि समर्पण करने का अर्थ है कि यदि मैं कहता हूं-"पहाड़ी के शिखर पर जाओ ओर वहां से कूद जाओ, और तुम "न" नहीं कह सकते। समर्पण करने का अर्थ है कि पूरी शक्ति और सत्ता दूसरे को दे दी गई है: तुम उसे कैसे दे सकते हो?"
समर्पण ठीक प्रेम के समान है। इसी कारण मैं कहता हूं कि केवल प्रेमी
ही संन्यासी बन सकते हैं, क्योंकि वे थोड़ा-बहुत जानते हैं कि कैसे समर्पण किया जाता है। प्रेम परमात्मा की ओर उठाया गया पहला कदम है और समर्पण सबसे अंतिम। इन दो कदमों में ही यात्री पूरी हो जाती है।
लेकिन तुम भयभीत हो। तुम अपने जीवन पर अपना ही नियंत्रण चाहते हो- और इतना ही नहीं- तुम दूसरों के जीवन को भी नियंत्रित करना चाहते हो। इसीलिए पतियों, पत्नियों और प्रेमियों के मध्य निरंतर झगड़े और संघर्ष होना जारी रहता है। और संघर्ष क्या है? संघर्ष है: कौन किस पर प्रभुत्व करेगा? कौन किसे अपने अधिकार में रखेगा? यह पहले तय हो जाना है। यह एक समर्पण नहीं है बल्कि ठीक उसका विरोधी प्रभुत्व जमाना अथवा हावी होना है। जब कभी तुम एक व्यक्ति पर प्रभुत्व जमाते हो, वहां कोई भी भय नहीं होता है। जब भी तुम एक व्यक्ति से प्रेम करते हो तो वहां भय होता है क्योंकि प्रेम में तुम समर्पण करते हो और पूरी सत्ता और शक्ति दूसरे को दे देते हो। अब दूसरा आघात पहुंचा सकता है, दूसरा अस्वीकार कर सकता है और दूसरा नहीं कह सकता है। इसी कारण तुम सौ प्रतिशत नहीं केवल दो प्रतिशत जीवन जीते हो। अट्ठानवे प्रतिशत तुम मृत हो, असंवेदनशील हो। यह असंवेदनशीलता और मृतक के समान जीने को समाज द्वारा बहुत अधिक सम्मान दिया जाता है। तुम जितने असंवेदनशील होते हो, समाज तुम्हारा उतना ही अधिक सम्मान करेगा।
भारत के महान नेताओं में से एक लोकमान्य तिलक के बारे में ऐसा कहा जाता है, यह घटना घटित हुई। वह इसी नगर पूना में रहते थे और गांधी से पूर्व वह भारत में सबसे ऊपर शिखर पर थे और भारतीय परिदृश्य पर उनका पूरा प्रभुत्व था। उनके बारे में यह कहा जाता है कि वह बहुत अधिक अनुशासनप्रिय थे और अनुशासित व्यक्ति हमेशा मृत होते हैं क्योंकि अनुशासन और कुछ भी न होकर वह प्रक्रिया है कि तुम स्वयं अपने को मृतप्रायः कैसे बनाओ। उनकी

पत्नी की मृत्यु हुई और उस समय वह अपने कार्यालय में बैठे हुए थे, जहां से वह "केसरी" समाचारपत्र प्रकाशित करते थे- जो कि अब भी प्रकाशित हो रहा है। जब किसी व्यक्ति ने उन्हें सूचना दी-"आपकी पत्नी का निधन हो गया है, आप तुरंत घर आ जाइये।" इसे सुनकर उन्होंने पीछे टंगी घड़ी में समय देखा और कहा-"लेकिन अभी समय पूरा नहीं हुआ है। मैं अपना कार्यालय केवल पांच बजे ही छोड़ता हूं।"
इस पूरे विषय की ओर देखो। यह किस तरह की घनिष्टता है, यह किस तरह का प्रेम है? यह किस तरह कि देख्र्र्रभाल और सहभागिता थी? यह व्यक्ति अपने काम के बारे में ही चिंता करता है, यह व्यक्ति प्रेम के बारे में नहीं बल्कि समय के बारे में चिंता करता है। जब कोई व्यक्ति उन्हें बताता है कि आपकी पत्नी की मृत्यु हो गई है तो घड़ी को देखते हुए यह कहना लगभग असंभव प्रतीत होता है- "अभी तक समय पूरा नहीं हुआ है और मैं अपना कार्यालय केवल पांच बजे ही छोड़ता हूं।"
और आश्चर्यों में से एक आश्चर्य यह है कि उनकी जीवनी लिखने वाले सभी लोग इस घटना की बहुत अधिक प्रशंसा करते हैं। वे कहते हैं-"यह देश के प्रति उनका प्रेम है। यह बताता है कि एक अनुशासित व्यक्ति कैसा होना चाहिए।" वे सोचते हैं कि यह अनासक्ति है। यह अनासक्ति नहीं है, यह किसी भी व्यक्ति के प्रति प्रेम नहीं है। यह पूरी तरह से मृतप्रायः होना है, यह एक असंवेदनशीलता है। और एक व्यक्ति जो अपनी पत्नी के प्रति असंवेदनशील है, वह पूरे देश के लिए कैसे संवेदनशील हो सकता है? यह असंभव है।
स्मरण रहे, यदि तुम एक व्यक्ति से प्रेम नहीं कर सकते, तो तुम मनुष्यता से भी प्रेम नहीं कर सकते। यह एक तरकीब हो सकती है। जो लोग, लोगों से प्रेम नहीं कर सकते- क्योंकि एक व्यक्ति से प्रेम करना बहुत खतरनाक है- वे लोग हमेशा यह सोचते हैं कि वे मनुष्यता से प्रेम करते हैं। मनुष्यता कहां है? क्या तुम उसे कहीं खोज सकते हो? यह केवल एक शब्द है। मनुष्यता कहीं भी नहीं हैं तुम जहां कहीं भी जाते हो, तुम एक व्यक्ति को ही मौजूद पाओगे। मनुष्यता नहीं, व्यक्ति ही जीवन है। जीवन हमेशा जड़ में चेतन धर्म का आरोपण कर उसे एक जीवधारी मानना है और वह एक वैयक्तिकता की भांति विद्यमान है। समाज, देश, मनुष्यता, ये केवल शब्द हैं। समाज कहां है? कहां है देश और मातृभूमि? तुम एक मां से प्रेम नहीं कर सकते और तुम मातृभूमि से प्रेम करते हो? तुम अनिवार्य रूप से कहीं स्वयं को धोखा दे रहे हो। लेकिन शब्द सुंदर है, भारतीय शब्द में एक आकर्षण है। तुम्हें मातृभूमि के बारे में फिक्र करने की कोई भी आवश्यकता नहीं है क्योंकि मातृभूमि एक व्यक्ति नहीं है, यह तुम्हारे मन की एक कल्पना है। यह तुम्हारा अपना अहंकार है। तुम मनुष्यता से प्रेम कर सकते हो, तुम मातृभूमि से प्रेम कर सकते हो, तुम समाज से प्रेम कर सकते हो और एक व्यक्ति से प्रेम करने में समर्थ नहीं हो- क्योंकि एक व्यक्ति कठिनाइयां उत्पन्न करता है। समाज कभी भी एक कठिनाई उत्पन्न नहीं करेगा क्योंकि वह केवल एक शब्द है। तुम्हें उसके प्रति समर्पण करने की कोई भी आवश्यकता नहीं है। तुम एक शब्द पर और एक कल्पना पर प्रभुत्व कर सकते हो, लेकिन तुम एक व्यक्ति पर प्रभुत्व नहीं कर सकते। एक छोटे से बच्चे पर भी यह करना असंभव है, तुम उस पर प्रभुत्व नहीं कर सकते, क्योंकि उसके पास उसका अपना अहंकार है, उसके पास उसका अपना मन है और उसके पास उसके अपने तरीके हैं। जीवन पर प्रभुत्व करना लगभग असंभव है, लेकिन शब्दों पर आसानी से प्रभुत्व किया जा सकता है- क्योंकि वहां तुम अकेले हो।
वे लोग जो एक व्यक्ति से प्रेम नहीं कर सकते, परमात्मा से प्रेम करना शुरू कर देते हैं। वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं। एक व्यक्ति से बातचीत करना और एक व्यक्ति से संवाद जोड़ना एक कठिन मामला है। इसके लिए कुशलता की आवश्यकता है, इसके लिए बहुत प्रेमपूर्ण हृदय की आवश्यकता है, इसके लिए एक बहुत जानने वाले समझदार हृदय की आवश्यकता है। केवल तभी तुम एक व्यक्ति का स्पर्श कर सकते हो क्योंकि एक व्यक्ति का स्पर्श करना एक खतरनाक अखाड़े की ओर गतिशील होना है क्योंकि वहां जीवन धड़क रहा है। प्रत्येक व्यक्ति इतना अधिक अनूठा है कि तुम उसके बारे में एक मशीनवत नहीं हो सकते। तुम्हें बहुत सजग और सावधान होना है। यदि तुम एक व्यक्ति से

प्रेम करते हो तो तुम्हें बहुत अधिक संवेदनशील बनना है, केवल तभी समझ उत्पन्न होती है।
लेकिन एक परमात्मा से प्रेम करना जो कहीं आसमान में बैठा हुआ है, वह अपने आप से बात करने जैसा है। गिरजाघरों में जाओ, लोग कोई नहीं, कुछ नहीं से बातें कर रहे हैं। वे वैसे ही पागल हैं जैसे लोग तुम एक पागलखाने में पाओगे, लेकिन वह पागलपन समाज के द्वारा स्वीवृफत है और यह पागलपन स्वीकार नहीं किया जाता है, केवल यही एक अंतर है। एक पागलखाने में जाओ, तुम पाओगे कि लोग अकेले में बातें कर रहे हैं और वहां कोई भी व्यक्ति नहीं है। वे लोग बातें करते हैं ओर वे केवल इतना ही नहीं करते, वे कुछ कहते भी हैं, वे उत्तर भी देते हैं। वे अपने एकालाय को ऐसा बना देते हैं कि वह एक संवाद के समान प्रतीत होता है। तब गिरजाघरों और मंदिरों में जाओ, वहां वे लोग परमात्मा से बातें कर रहे हैं। वह भी एक एकालय है, यदि वे वास्तव में पागल हो जाते हैं तो वे दोनों कार्य करना शुरू कर देते हैं, वे कुछ बात कहते हैं और वे कुछ उसका उत्तर भी देते हैं तथा वे अनुभव करते हैं कि परमात्मा ने ही उत्तर दिया है।
तुम उसे तब तक नहीं कर सकते, जब तक तुमने यह न सीखा हो कि कैसे एक व्यक्ति से प्रेम किया जाता हैं यदि तुम एक व्यक्ति से प्रेम करते हो तो धीमे-धीमे वह व्यक्ति ही उस अखंड अस्तित्व का द्वार बन जाता है लेकिन किसी भी व्यक्ति को एक व्यक्ति के साथ, एक बहुत ही लघु अणु के साथ शुरुआत करनी होगी। तुम एक साथ छलांग नहीं लगा सकते। गंगा पूरी तरह से सीधे ही सागर में छलांग नहीं लगा सकती, उसे एक छोटे से सोते गंगोत्री से प्रारंभ करना होता है। और तब वह बड़ी-से-बड़ी और विस्तीर्ण तथा विशाल होती चली जाती है और तब अंतिम रूप से वह सागर में विलीन हो जाती है।
गंगा, प्रेम की गंगा को भी केवल एक छोटे से स्रोत से, व्यक्तियों के साथ से प्रारंभ करना होता है तथा तब वह बड़े-से-बड़ा होता चला जाता है। एक बार तुम इसका सौंदर्य, समर्पण का सौंदर्य, असुरक्षा का सौंदर्य तथा उस सभी के प्रति खुले होने का सौंदर्य जो जीवन तुम्हें देता है, आनंद भी और पीड़ा दोनों को ही जान लेते हो- तब तुम बड़े-से-बड़े और विस्तीर्ण होते चले जाते हो तथा चेतना अंतिम रूप से एक सागर बन जाती है। तब तुम उस अलौकिक परमात्मा में मिल जाते हो। लेकिन भय के कारण तुम असंवेदनशीलता सृजित करते हो, जिसे समाज सम्मान देता हैं समाज यह नहीं चाहता कि तुम बहुत अधिक जीवंत बनो क्योंकि जीवंत लोग विद्रोही होते हैं।
एक छोटे से बच्चे की ओर देखो, यदि वह वास्तव में जीवंत है तो वह विद्रोही बनेगा, वह अपना मार्ग स्वयं पाने का प्रयास करेगा। लेकिन यदि वह गूंगा, अल्पमति और एक मूर्ख है, वह किसी तरह कहीं दुविधा अथवा कठिनाई में पड़ गया है और विकसित नहीं हो रहा है तो वह पूर्ण रूप से आज्ञाकारी बनकर एक कोने में बैठा रहेगा। तुम उससे जाने को कहो वह चला जाता है, तुम उससे आने को कहो वह आ जाता है। तुम उसे नीचे बैठ जाने को कहो वह बैठ जाता है, तुम उससे खड़े होने को कहो वह खड़ा हो जाता है। वह पूर्ण रूप से आज्ञाकारी है क्योंकि उसके पास अपना कोई व्यक्तित्व नहीं है। समाज, परिवार और माता- पिता इस बच्चे को पसंद करेंगे। वे कहेंगे-"देखो वह कितना अधिक आज्ञाकारी है।"
एक बार मैंने सुना: मुल्ला नसरुद्दीन अपने बेटे से बात कर रहा था, जो स्कूल से अपने रिपोर्ट कार्ड के साथ आया था। मुल्ला यह आशा कर रहा था कि वह "ए" ग्रेड प्राप्त करेगा और उसे "डी" ग्रेड मिला था। वास्तव में वह अपने दर्जे में आखिरी था। इसलिए नसरुद्दीन ने कहा-"देखो! तुम कभी भी मेरी आज्ञा का पालन नहीं करते और मैं तुमसे जो कुछ भी कहता हूं तुम उसकी अवज्ञा कर देते हो, अब यह उसी का परिणाम है। पड़ोसी के बच्चे को देखो- वह हमेशा "ए" ग्रेड पाता है और हमेशा दर्जे में प्रथम आता है।"
बच्चे ने नसरुद्दीन की ओर देखा और कहा-"लेकिन वह एक भिन्न मामला है- उसके पास प्रतिभाशाली और बुद्धिमान माता-पिता हैं।"
वह बच्चा बहुत जीवंत है लेकिन उसके पास अपने तौर-तरीके हैं।
आज्ञाकारिता के बारे में उसके पास एक विशिष्ट गूंगापन होता है और अवज्ञा के बारे में उसके पास एक तीक्ष्ण बुद्धि होती है। लेकिन

आज्ञाकारिता सम्मानित की जाती है क्योंकि आज्ञाकारिता कम तकलीफ देती है। तुम एक मृत बच्चे के समान होना पसंद करोगे क्योंकि वह कोई असुविधा उत्पन्न नहीं करेगा। तुम एक जीवंत बच्चे होना पसंद नहीं करते क्योंकि और अधिक जीवंत होने से वहां और अधिक खतरा होता है। माता-पिता, समाज, स्कूल- वे सभी आज्ञाकारी होने को बाध्य करते हैं, वे तुम्हें मंदबुद्धि बना देते हैं और तब वे उन लोगों का सम्मान करते हैं। इसी कारण तुम जीवन में ऐसे लोग कभी नहीं देखते जो स्कूलों और विश्वविद्यालयों में प्रथम श्रेणी में आते हैं और जीवन में वे पूरी तरह से खो जाते हैं। तुम जहां कहीं भी जाओ, तुम जीवन में उन्हें कहीं भी नहीं पाते हो... वे स्कूल में स्वयं अपने को बहुत प्रतिभाशाली सिद्ध करते हैं लेकिन जीवन में वे किसी तरह खो जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि जीवन के रास्तों से स्कूल के रास्ते भिन्न हैं। किसी तरह से जीवन जीवंत लोगों से प्रेम करता है, वे लोग अपनी चेतना, अपने अस्तित्व और अपने व्यक्तित्व के साथ जितने अधिक जीवंत होते हैं, वे उतने ही अधिक विद्रोही होते हैं और ऐसे लोग मृत नहीं होते तथा उनके पास कार्य संपन्न करने के अपने रास्ते होते हैं। स्कूल ठीक इसके विपरीत वरीयता देते हैं। पूरा समाज तुम्हें गूंगा, अंधा, बहरा और मृत बनने में तुम्हारी सहायता करता है।
तुम ईसाई मठों में मृत लोगों को पाओगे, जो संतों की भांति पूजे जाते हैं। वाराणसी जाओ, तुम लोगों को कांटों और कीलों की शैय्या पर लेटे हुए पाओगे- और वे देवताओं के समान पूजे जाते हैं। उन्होंने प्राप्त क्या किया है? यदि तुम उनके चेहरों को देखो, तुम उनसे अधिक मूर्ख चेहरों को कहीं भी नहीं खोज पाओगे। एक व्यक्ति जो कीलों अथवा कांटों की शैय्या पर लेटा है, उसे मूर्ख होना ही है। जीवन के इस रास्ते को जो पहले स्थान पर चुनता है, वह एक को मूर्ख होना ही है। तब वह करेगा क्या? कीलों पर लेटे हुए वह क्या कर सकता है? उसे अपने पूरे शरीर को असंवेदनशील बनाना होगा? केवल वही एक उपाय है कि उसे पीड़ा का अनुभव नहीं होना चाहिए। धीमे-धीमे उसकी त्वचा मोटी हो जाती है और तब कुछ भी फर्क नहीं पड़ता। तब वह पूर्ण रूप से मृत एक चट्टान की तरह बन जाता है। पूरा समाज उसकी पूजा करता है, वह एक संत है और उसे कुछ चीज़ उपलब्ध हुई है। उसने तुम्हारी अपेक्षा कहीं अधिक निर्जीवता प्राप्त की है। अब कीलों से कुछ भी फर्क नहीं पड़ता क्योंकि शरीर संज्ञाशून्य हो गया है।
हो सकता है कि तुम न जानते हो लेकिन यदि तुम शरीर विज्ञानियों से पूछो
तो वे कहते हैं कि वहां शरीर में पहले से ही अनेक बिंदु ऐसे होते हैं जो जीवंत नहीं हैं, वे उन्हें मृत बिंदु कहते हैं। तुम्हारी पीठ पर वहां अनेक मृत बिंदु हैं। अपने मित्रों में से किसी एक को अथवा अपनी पत्नी अथवा पति को केवल एक सुई दे दो और उससे अपनी पीठ में कई बिंदुओं पर सुई चुभोनो को कहो। तुम कुछ बिंदुओं पर चुभन का अनुभव करोगे और कुछ पर अनुभव नहीं करोगे। कुछ बिंदु पहले ही से मृत हैं, इसलिए जब उनमें सुई चुभोई जाती है तो तुम उसकी चुभन का अनुभव नहीं करते। उन लोगों ने एक कार्य किया है। उन्होंने अपने पूरे शरीर को एक मृत स्थान बना लिया है। लेकिन यह विकास नहीं है, यह पीछे की ओर लौट जाना है। वस्तुतः कहीं अधिक दिव्य बनने की अपेक्षा, वे कहीं अधिक जड़ और स्थूल बन रहे हैं क्योंकि दिव्य अथवा अलौकिक बनने का अर्थ है पूर्ण रूप से संवेदनशील बनना, पूर्ण रूप से जीवंत बनना।
इसलिए मैंने उस व्यक्ति से कहा कि वहां केवल एक उपाय है और वह है मृतप्रायः अथवा निर्जीव हो जाने का; जो आसान है और जिसे प्रत्येक व्यक्ति कर रहा हैं लोगों में डिग्रीज का अंतर है लेकिन अपने रास्तों में वे भी वही कर रहे हैं।
तुम अपनी पत्नी से डरे हुए घर वापस लौटते हो, तुम बहरे बन जाते हो, वह जोकुछ कहती है तुम उसे नहीं सुनते हो। तुम समाचारपत्र पढ़ना शुरू कर देते हो, तुम अपने समाचारपत्र को इस तरह से रखते हो कि तुम उसे नहीं देख सकते। वह जोकुछ कहती है तुम पूरी तरह से बहरे बन जाते हो अन्यथा तुम्हें अनुभव होगा कि यदि मैं उसकी बात सुनता हूं तो मैं कैसे जीवित रह सकता हूं? तुम नहीं देखते कि वह चिल्ला रही है अथवा रो रही है। केवल जब वह तुम्हारे लिए

स्थिति असंभव बना देती है, तब तुम देखते हो और वह दृष्टि बहुत क्रोध से भरी होती है।
तुम ऑफिस जाते हो, तुम यातायात से होकर गुजरते हो, प्रत्येक स्थान पर तुम्हें अपने चारों ओर एक विशिष्ट संज्ञाशून्यता सृजित करनी होती है। तुम सोचते हो कि वह तुम्हारी सुरक्षा करती है- वह सुरक्षा नहीं करती, वह केवल मारती है। निश्चित रूप से तुम्हें कष्ट कम होगा लेकिन उतने ही कम आशीर्वाद और उपहार तथा उतना ही कम आनंद तुम तक आएगा। जब तुम मृतप्रायः और निर्जीव बन जाते हो तो पीड़ा तथा कष्ट कम होते हैं क्योंकि तुम उनका अनुभव नहीं कर सकते, उतना ही आनंद भी कम मिलता है क्योंकि तुम उसे महसूस ही नहीं कर सकते। एक व्यक्ति जो उच्चतम परमानंद की खोज में हो, उसे दुःख और कष्ट सहने के लिए भी तैयार होना होगा।
हो सकता है कि तुम्हें यह विरोधाभासी प्रतीत हो कि एक बुद्ध के तल का व्यक्ति, एक व्यक्ति जो जाग गया है और पूर्ण रूप से परमानंद में लीन है और वह पूर्ण रूप से दुःख तथा पीड़ा भी सहन करता है। निश्चित रूप से वह अपने अंतरस्थ में परम आनंदित है, वहां पुष्प खिलते चले जा रहे हैं लेकिन वह चारों ओर के सभी लोगों में प्रत्येक व्यक्ति के लिए दुःख और पीड़ा सहन करता है। उसे करना ही होता है क्योंकि यदि तुम्हारे पास तुम्हें आशीर्वाद देने और तुम्हारे लिए उपलब्ध बने रहने की संवेदनशीलता है तो दुःख तथा पीड़ा भी तुम्हें उपलब्ध बनी रहेगी। एक व्यक्ति को चुनाव करना होता है। यदि तुम दुःख और कष्ट न उठाने का चुनाव करते हो, तुम कष्ट नहीं भुगतना चाहते, तब तुम्हें परमानंद भी उपलब्ध न हो सकेगा- क्योंकि समस्या यह है कि वे दोनों समान द्वार के द्वारा आते हैं। तुम शत्रु के भय से अपना द्वार बंद कर सकते हो लेकिन मित्र भी समान द्वार से ही आता है। इसलिए यदि तुम शत्रु के भय से उस पर ताला डालकर पूर्ण रूप से बंद कर लेते हो और पूरी तरह से अवरोध खड़े कर देते हो तो मित्र भी नहीं आ सकता। तुम्हारे द्वार बंद हैं इसलिए परमात्मा भी तुम तक नहीं आ पा रहा है। तुमने हो सकता है कि उन्हें शैतान के लिए बंद किया हो, लेकिन जब द्वार बंद है तो वे बंद हैं। और एक व्यक्ति जिसे आवश्यकता है, जिसे परमात्मा से मिलने की प्यास है जो उसकी भूख का अनुभव करता है तो उसे शैतान से भी मिलना होगा। तुम एक चुनाव नहीं कर सकते, तुम्हें दोनों से मिलना होगा।
तुमने अनेक कहानियां सुनी होंगी लेकिन मैं अनुभव नहीं करता कि तुमने उन्हें समझना भी है: जब कभी परमात्मा प्रकट होता है, ठीक उसके सामने ही शैतान भी आ जाता है क्योंकि जब कभी भी द्वार खुलता है तो शैतान पहले उसमें तेजी से प्रवेश करता है। वह हमेशा शीघ्रता में होता है। परमात्मा को कोई भी जल्दी नहीं होती है।
ऐसा ही जीसस के साथ हुआ- जब वह अंतिम रूप से बुद्धत्व को उपलब्ध हुए तो शैतान चालीस दिनों तक उन्हें प्रलोभन देता रहा। जब वह ध्यान कर रहे थे, अपने अकेलेपन में उपवास कर रहे थे, जब जीसस, क्राइस्ट के आने के लिए एक स्थान सृजित करते हुए लुप्त हो रहे थे तो शैतान ने उन्हें प्रलोभन दिया। उन चालीस दिनों तक शैतान निरंतर उनके निकट ही बना रहा। उसने बहुत राजनीतिक ढंग से और बहुत आकर्षक तरह से उन्हें लालच दिया। वह एक सबसे बड़ा राजनीतिज्ञ है और अन्य सभी दूसरे राजनीतिज्ञ उसके शिष्य हैं। बहुत ही कूटनीतिक ढंग से उसने कहा-"ठीक है, अब आप एक पैगम्बर अथवा एक संदेशवाहक बन गए हैं और आप जानते हैं कि शास्त्रों में यह कहा गया है कि जब कभी भी परमात्मा एक व्यक्ति को चुनता है और एक व्यक्ति मसीहा अथवा एक पैगम्बर बनता है तो वह अपार शक्तिशाली हो जाता है। अब आप बहुत शक्तिशाली हैं। यदि आप चाहें तो इस पहाड़ से नीचे छलांग लगा सकते हैं और घाटी में फरिश्ते आपको गोद में लेने के लिए तैयार खड़े होंगे। और यदि आप वास्तव में एक मसीहा हैं तो जोकुछ शास्त्रों में कहा गया है, छलांग लगाकर उस कार्य को संपन्न कीजिए।"
प्रलोभन बहुत बड़ा था और वह शास्त्रों को उद्धृत कर रहा था। शैतान हमेशा धर्मग्रंथों को उद्धृत करता है क्योंकि धर्मशास्त्र से कायल करना अपने पक्ष के अंदर ले आना है। शैतान सभी धर्मग्रंथों को हृदय से जानते हैं।

जीसस हंसे और कहा-"तुम ठीक कहते हो लेकिन उसी धर्मग्रंथ में यह भी कहा गया है कि तुम्हें परमात्मा की परीक्षा नहीं लेनी चाहिए।"
तब एक दिन तीस दिनों के उपवास के बाद जब उन्हें बहुत भूख लग रही थी तब
भी शैतान उनकी बगल में बैठा हुआ था- जब परमात्मा आता है, उससे पूर्व शैतान आता है, जिस क्षण तुम द्वार खोलते हो, वह ठीक वहीं खड़ा मिलता है और वह हमेशा पंक्ति में प्रथम स्थान पर रहता है। परमात्मा हमेशा धीमे-धीमे चलता हुआ उसके पीछे आता है और स्मरण रहे कि वह शीघ्रता में नहीं होता है। परमात्मा के पास कार्य करने को अनंत समय है। शैतान के पास अनंत समय नहीं है और केवल कुछ क्षण हैं। यदि वह हार जाता है तो वह हार जाता है और एक बार एक व्यक्ति अलौकिक हो जाता है तो वह फिर और कोई हानि नहीं पहुंचा सकता। इसलिए उसे निर्बल क्षण खोजने होते हैं। जब जीसस विलुप्त हो रहे हैं और क्राइस्ट चेतना प्रविष्ट नहीं हुई है, उसके मध्य का अंतराल ही वह क्षण है जहां वह प्रवेश कर सकता है। तब शैतान ने कहा-"लेकिन धर्मग्रंथों में यह कहा गया है, जब परमात्मा द्वारा एक व्यक्ति चुन लिया जाता है, वह पत्थरों को डबल रोटियों में बदल सकता है। इसलिए आप भूख से क्यों कष्ट पा रहे हैं? इसे सिद्ध कर दीजिए क्योंकि इससे संसार को लाभ पहुंचेगा।" यही कूटनीति थी कि इसके द्वारा संसार को लाभ मिलेगा।
इससे प्रतीत होता है कि शैतान ने कैसे तुम्हारे सत्य साईं बाबा को कायल किया। इसके द्वारा संसार को लाभ मिलेगा क्योंकि जब आप पत्थरों को डबलरोटियों में बदल देंगे तो लोग जानेंगे कि आप परमात्मा द्वारा चुने गए व्यक्ति हैं। वे दौड़ते हुए आएंगे और तब आप उनकी सहायता कर सकते हैं अन्यथा कौन आपके पास आएगा और कौन आपकी बात सुनेगा?"
जीसस ने कहा-"तुम ठीक कहते हो। मैं उन्हें बदल सकता हूं- लेकिन मैं नहीं, परमात्मा ही पत्थरों को डबलरोटियों में बदल सकता है। लेकिन जब कभी भी उसे आवश्यकता होती है वह मुझसे कहेगा, तुम्हें फिक्र करने की आवश्यकता नहीं है। तुम इतनी अधिक परेशानी क्यों ले रहे हो?"
जब कभी तुम ध्यान में प्रवेश करते हो और जिस क्षण तुम द्वार खोलते हो
तो द्वार पर जो पहला व्यक्ति तुम पाओगे, वह शैतान होगा और चूंकि उसका ही भय है कि तुमने द्वार बंद कर लिया है। स्मरण रहे, लेकिन पहले मैं तुम्हें एक प्रसंग बताउंफगा तभी तुम उसे समझोगे।
एक दुकान में क्रिसमस के लिए उन्होंने एक विशेष छूट देने की घोषणा की;
और विशेष रूप से महिलाओं के लिए। एक पुरुष भी उसमें आया क्योंकि उसकी पत्नी बीमार थी और उसने उसे जाने के लिए बाध्य किया क्योंकि यह अवसर खोने जैसा नहीं था। इसलिए एक भद्र व्यक्ति की भांति वह एक घंटे तक पंक्ति में खड़ा रहा लेकिन वह काउंटर तक नहीं पहुंच सका। तुम स्त्रियों को और उनके ढंग को जानते ही हो- एक-दूसरे पर चीखते-चिल्लाते और सीटी बजाते हुए वे बिना पंक्तियों के भी कहीं से भी आगे बढ़ सकती हैं तथा पुरुष पंक्ति के बारे में सोच रहा था, इसलिए वह खड़ा रहा। जब एक घंटा गुजर गया और वह काउंटर के निकट कहीं भी नहीं था, तब उसने भी चीखना-चिल्लाना और धक्के देना शुरू किया और भीड़ में बलपूर्वक घुसना शुरू किया तथा काउंटर पर पहुंच गया।
एक वृद्ध महिला ने चिल्लाते हुए कहा-"क्या? यह क्या कर रहे हैं आप! एक भद्र पुरुष बनिए।"
पुरुष ने कहा-"एक घंटे तक मैं भद्र पुरुष ही बना रहा। पर्याप्त हो चुका। अब मुझे एक महिला की भांति ही व्यवहार करना चाहिए।"
स्मरण रहे, शैतान कभी भी एक भद्रपुरुष के समान व्यवहार नहीं करता है,
वह एक स्त्री के समान व्यवहार करता है। वह पंक्ति में हमेशा पहले स्थान पर होता है और परमात्मा एक भद्रपुरुष की भांति है, पंक्ति में प्रथम स्थान पर होना उसके लिए कठिन है और जिस क्षण तुम द्वार खोलते हो, शैतान प्रवेश करता है क्योंकि उसके भय के कारण ही तुम द्वार बंद रखते हो। यदि शैतान प्रवेश नहीं कर सकता तो परमात्मा भी नहीं कर सकता। जब तुम सहन करने योग्य बन जाते हो तो तुम परमात्मा और शैतान दोनों के लिए सहन करने योग्य बन जाते हो। तुम प्रकाश और अंधकार, जीवन और मृत्यु, प्रेम और घृणा, दोनों विरोधों के लिए उपलब्ध बने रहते हो।

तुमने कष्ट अथवा हानि न सहने का चुनाव किया है, इसीलिए तुम बंद हो। तुम हो सकता है कष्टों को न सहो लेकिन तुम्हारा जीवन एक बहुत बड़ी ऊबाहट है, यद्यपि तुम उतना अधिक कष्ट नहीं सहते हो जितना तुम तब सहोगे, जब तुम खुले हुए हो और कहां कोई आशीर्वाद भी नहीं है। द्वार बंद हैं- न सुबह, न सूरज, न चांद और न आकाश ही उसमें प्रवेश कर पाता है, उसमें ताजी हवा भी प्रवेश नहीं कर पाती तथा प्रत्येक चीज़ बासी और पुरानी पड़ गई है। भय में तुम वहां छिप रहे हो। यह एक घर नहीं है जहां तुम रह रहे हो, तुमने पहले ही उसे एक कब्र में बदल दिया है। तुम्हारे सभी नगर कब्रिस्तान हैं और तुम्हारे घर कब्रें हैं। तुम्हारे जीवन का पूरा ढंग एक मुर्दे की भांति है।
द्वार खोलने के लिए साहस की आवश्यकता है, कष्ट सहने के लिए साहस की आवश्यकता है क्योंकि आशीर्वाद और वरदान केवल तभी मिलना संभव है।
अब हमें इस बहरे, गूंगे और अंधे के सुंदर प्रसंग को समझने का प्रयास करना चाहिए।
एक दिन गेंशा ने असंतोष प्रकट करते हुए, अपने अनुयाइयों से कहा:
दूसरे सद्गुरु हमेशा प्रत्येक व्यक्ति को मुक्त करने की अनिवार्यता
के बारे में-
पथ प्रदर्शन करना जारी रखते हैं लेकिन तनिक सोचो कि यदि तुम किसी ऐसे व्यक्ति से मिलते हो जो बहरा, गूंगा और अंधा है: वह तुम्हारे हाव-भाव और चेष्टाओं को- देख नहीं सकता, तुम्हारे उपदेश को सुन नहीं सकता अथवा उस महत्वपूर्ण विषय पर वह प्रश्न नहीं पूछ सकता तो उसे मुक्त करने में असमर्थ होकर
तुमने स्वयं को एक अयोग्य बौद्ध सिद्ध कर दिया।
सद्गुरु सामान्य रूप से न तो शिकायत करते हैं और न कोई असंतोष ही प्रकट करते हैं, लेकिन जब वे असंतोष प्रकट करते हैं तो इसका अर्थ है कि वह कुछ महत्वपूर्ण बात है। यह केवल गेंशा ही असंतोष प्रकट नहीं कर रहा है, सभी सद्गुरु ऐसा ही असंतोष प्रकट करते हैं। लेकिन यह उनका अपना अनुभव है कि तुम जहां कहीं भी जाते हो तुम बहरे, गूंगे और अंधे लोग ही पाते हो क्योंकि पूरा समाज इसी तरह का है। और तुम कैसे उन्हें मुक्त करोगे? वे देख नहीं सकते, वे सुन नहीं सकते, वे अनुभव नहीं कर सकते, और न वे किसी हाव-भाव तथा चेष्टाओं को समझ सकते हैं। यदि तुम उन्हें मुक्त करने का बहुत अधिक प्रयास करते हो तो वे बचकर भाग जाएंगे। वे सोचेंगे: यह व्यक्ति किसी बात के पीछे पड़ा हुआ है, वह मेरा शोषण करना चाहता है अथवा उसके पास कुछ योजना होनी चाहिए। यदि तुम उनके लिए बहुत अधिक नहीं करते हो तो वे अनुभव करेंगे: यह व्यक्ति मेरे लिए नहीं है क्योंकि वह मेरी पर्याप्त फिक्र नहीं कर रहा है। और जोकुछ भी किया जाता है, वे उसे नहीं समझ सकते।
यह गेंशा का ही असंतोष अर्थात शिकायत नहीं है क्योंकि बुद्धत्व को उपलब्ध व्यक्ति स्वयं अपने लिए न कभी शिकायत करते हैं और न असंतोष प्रकट करते हैं। यह शिकायत सामान्य है, वह कैसे होती है। एक जीसस भी इसी तरह से अनुभव करते हैं, एक बुद्ध भी इसी तरह का अनुभव करते हैं। तुम जहां कहीं भी जाओ, तुम्हें ऐसे ही लोगों से मिलना होगा जो बहरे, गूंगे और अंधे हैं। तुम हाव-भाव से संकेत देते हो, चेष्टाएं करते हो- वे उन्हें देख नहीं सकते, और इससे भी बुरा यह है कि वे कुछ अन्य चीज़ देखते हैं। तुम उन लोगों से बात करो- वे उसे समझ नहीं सकते और इससे भी अधिक बुरा यह है कि वे गलत समझते हैं। तुम कुछ अन्य बात कहते हो, वे कुछ अन्य बात समझते हैं, क्योंकि शब्दों के द्वारा अर्थ नहीं दिए जा सकते। केवल शब्दों को ही प्रतिसंवेदित किया जा सकता है, अर्थ की आपूर्ति सुनने वाले के द्वारा ही की जाती है।
मैं एक शब्द कहता हूं, मेरा अर्थ एक बात से होता है। लेकिन यदि उसे दस हजार लोग सुन रहे हैं तो वहां उसके दस हजार अर्थ होंगे क्योंकि प्रत्येक उसे अपने मन से, अपने पूर्वाग्रहों, अपनी धारणा, तत्वज्ञान और अपने धर्म के अनुसार सुनेगा। वह उसे दिए गए अनुशासन, नियमों और आदतों के अनुसार अर्थात अपनी "कंडीशनिंग" से सुनेगा और उसकी कंडीशनिंग ही अर्थ की आपूर्ति करेगी। यह बहुत कठिन है और लगभग असंभव है। यह ठीक ऐसा है जैसे मानो तुम एक पागलखाने में जाते हो और लोगों से बात करते हो। तुम कैसा अनुभव करोगे? यही है वह जो गेंशा अनुभव करता है और यही उसकी शिकायत है।

यही मेरी भी शिकायत है। तुम्हारे साथ कार्य करते हुए मैं हमेशा एक अवरोध होने का अनुभव करता हूं। या तो तुम्हारी आंखें बंद हैं अथवा तुम्हारे कान बंद हैं अथवा तुम्हारी नाक बंद है अथवा तुम्हारे हृदय में अवरोध है, कहीं-न-कहीं अथवा दूसरी जगह किसी चीज़ की रुकावट है और एक पत्थर जैसी चीज़ आ जाती है। उसे बेधकर प्रवेश करना कठिन है क्योंकि यदि में उसे बहुत अधिक छेदता हूं तो तुम डर जाते हो कि मैं इतनी अधिक दिलचस्पी तुममें क्यों ले रहा हूं? यदि मैं बहुत अधिक प्रयास नहीं करता हूं तो तुम उपेक्षित होने का अनुभव करते हो। यही है वह कि एक अज्ञानी मन किस तरह कार्य करता है। "यह" करो तो वह गलत समझेगा और "वह" करो तब भी वह गलत समझेगा। एक बात निश्चित है कि वह गलत ही समझेगा।
एक दिन गेंशा ने असंतोष प्रकट करते हुए अपने अनुयाइयों से कहा:
दूसरे सद्गुरु हमेशा प्रत्येक व्यक्ति को मुक्त करने की अनिवार्यता
के बारे
में पथ-प्रदर्शन करना जारी रखते हैं।
बुद्ध ने कहा है कि जब तुम मुक्त हो जाते हो तो केवल दूसरों को मुक्त करने का ही कार्य करना है। जब तुमने "उसे" प्राप्त कर लिया है तो केवल उसको दूसरों तक प्रसारित करने का ही कार्य करना है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति संघर्ष कर रहा है। प्रत्येक व्यक्ति मार्ग पर ठोकरें खा रहा है, प्रत्येक व्यक्ति जानबूझकर और बिना जाने-बूझे ही गतिशील हो रहा है और तुम उपलब्ध हो गए हो। दूसरों की सहायता करो।
और यह एक आवश्यकता है, ऊर्जाओं की आंतरिक अनिवार्यता भी है क्योंकि
एक व्यक्ति जो बुद्धत्व को उपलब्ध हो गया है, उसे थोड़े से वर्षों तक ही जीवित रहना होगा क्योंकि बुद्धत्व एक भवितव्यता नहीं है, वह एक जड़ता नहीं है, वह कारण और उद्देश्य नहीं है। जब वह घटित हो तो यह अनिवार्य नहीं है कि वह उसी क्षण हो जब शरीर मरता है। इन दो घटनाओं की एक साथ होने की वहां कोई अनिवार्यता नहीं है। वास्तव में यह लगभग असंभव है क्योंकि बुद्धत्व एक अचानक और अकारण होने वाली घटना है। तुम इसके लिए कार्य करते हो लेकिन यह तुम्हारे कार्य के द्वारा कभी घटित नहीं होता है। तुम्हारा कार्य, स्थिति को सृजित करने में सहायता करता है लेकिन यह किसी अन्य चीज़ के द्वारा घटित होता है- उस कुछ अन्य चीज़ को अनुग्रह कहकर पुकारा जाता है। वह तुम्हारे प्रयासों का एक "बाईप्रोडक्ट" अथवा उपाजात न होकर परमात्मा से मिला एक उपहार होता है। तुम्हारे प्रयास उसके कारण नहीं होते। निश्चित रूप से वे एक स्थिति सृजित करते हैं: मैं द्वार खोलता हूं और प्रकाश प्रवेश करता हैं लेकिन प्रकाश सूरज से मिला एक उपहार है। मैं द्वार खोलने के द्वारा प्रकाश सृजित नहीं कर सकता। द्वार का खुलना उसका एक कारण नहीं है। द्वार का न खुलना एक बाधा थी लेकिन द्वार का ख्ुलना एक कारण नहीं है- मैं कारण नहीं हो सकता। यदि मैं द्वार खोलता हूं और वहां रात है तो प्रकाश प्रवेश नहीं करेगा। द्वार के खुलने से प्रकाश सृजित नहीं हो रहा है लेकिन द्वार के बंद होने से तुम अटक जाते हो।
इसलिए वे सभी प्रयास जो तुम आशाओं की पूर्ति और अनुभव को पाने के ओर करते हो, वे केवल द्वार खोलने के लिए हैं। प्रकाश आता है, जब उसे आना होता हैं तुम्हें एक खुले द्वार के साथ बने रहना है, जिससे वह जब कभी भी आता है, जब भी वह तुम्हारा द्वार खटखटाता है, वह वहां तुम्हें पाता है और द्वार खुला है जिससे वह प्रवेश कर सके। वह हमेशा ही एक उपहार है ओर उसे ऐसा होना ही है क्योंकि यदि तुम उस सर्वोच्च उपलब्धि को अपने प्रयासों के द्वारा प्राप्त कर सकते हो, तो वह एक असंगति होगी। एक सीमित मन प्रयास करने से कैसे उस असीम को पा सकता है। एक सीमित मन प्रयास करता है- सभी प्रयास सीमित ही होंगे। सीमित प्रयासों के द्वारा असीम कैसे घटित हो सकता है? अज्ञानी मन प्रयास कर रहा है- वे प्रयास अज्ञान में किए गए हैं, वे कैसे बदल सकते हैं, वे बुद्धत्व में कैसे रूपांतरित हो सकते हैं? नहीं यह संभव नहीं है। तुम प्रयास करते हो; वे आवश्यक हैं, वे तुम्हें तैयार करते हैं, वे द्वार खोलते हैं- लेकिन घटना तभी घटती है जब उसे घटित होना होता है। तुम उपलब्ध बने रहो। परमात्मा अनेक बार तुम्हारा द्वार खटखटाता है, सूरज प्रतिदिन उदित होता है। स्मरण रहे कि जोकुछ मैं तुमसे कहना चाहता हूं, वह

कहीं भी अन्य स्थान पर नहीं कहा गया है, यद्यपि वह एक सहायता होगी। वह नहीं कहा गया है क्योंकि यदि तुम उसे गलत समझते, तो वह एक बाधा बन सकता था। वहां परमात्मा के लिए एक दिन होता है और वहां एक रात भी होती है। यदि तुम रात में द्वार खोलते हो तो द्वार खुला ही रहेगा, लेकिन परमात्मा नहीं आएगा। वहां एक दिन भी है- यदि तुम ठीक क्षण में द्वार खोलते हो, परमात्मा तुरंत आता है।
ऐसा होना ही है, क्योंकि पूरे अस्तित्व के पास विपरीतताएं हैं। परमात्मा का भी आराम में जाने का समय होता है, जब वह सोता है। यदि तुम द्वार खोलते हो, तब वह नहीं आएगा। वहां एक क्षण ऐसा होता है, जब वह जागता है, जब वह गतिशील होता है- ऐसा होना ही है क्योंकि प्रत्येक ऊर्जा दो विरोधों विश्राम और गतिशीलता के द्वारा गतिशील होती है तथा परमात्मा एक अनंत ऊर्जा है। उसके पास गतिशीलता है और उसके पास एक विश्राम भी है। इसी कारण एक सद्गुरु की आवश्यकता होती है।
यदि तुम अपनी ओर से करते हो तो हो सकता है कि तुम कठोर श्रम कर रहे हो
और कुछ भी घटित नहीं हो रहा हो क्योंकि तुम ठीक क्षण पर कार्य नहीं कर रहे हो। तुम रात में कार्य कर रहे हो, तुम रात में द्वार खोलते हो और केवल अंधकार प्रवेश करता है। भयभीत होकर तुम उसे फिर बंद कर लेते हो। तुम द्वार खोलते हो और वहां कुछ भी नहीं है बल्कि चारों ओर एक विराट शून्यता है। तुम भयभीत हो जाते हो, तुम फिर उसे बंद कर लेते हो और एक बार तुम वह शून्यता देख लेते हो तो तुम उसे कभी नहीं भूलोगे- तुम इतने अधिक भयभीत हो जाओगे कि तुम्हें उसे खोलने का साहस जुटाने में अनेक वर्ष लगेंगे।... क्योंकि एक बार जब परमात्मा सोया हुआ है, जब परमात्मा विश्राम में है, तुम वह अनंत अथाह खाई देख लेते हो, यदि तुम अनंत नकारात्मक वह क्षण और अंधकारमय गहन खाई देख लेते हो तो तुम इतने अधिक डर जाओगे कि अनेक वर्षों तक तुम दूसरा प्रयास नहीं करोगे।
मैं अनुभव करता हूं कि लोग भयभीत हैं, वे ध्यान में जाने से भयभीत हैं, मैं जानता हूं कि अपने पिछले जन्म में उन्होंने कहीं कुछ प्रयास किए थे और उन्हें गलत क्षण में उस अनंत खाई की एक झलक मिली थी। वे हो सकता है इसे न जानते हों लेकिन उनके अचेतन में वह वहां है, इसलिए वे जब कभी भी द्वार के निकट आते हैं और वे जब भी अपना हाथ कुंडी पर रखते हैं और द्वार का खुलना संभव हो जाता है, तो वे डर जाते हैं। वे ठीक उसी क्षण में पीछे दौड़ते हुए वापस लौट आते हैं और वे उसे नहीं खोलते। एक अचेतन भय उन्हें जकड़ लेता है। ऐसा होना ही है क्योंकि अनेक जन्मों से तुम संघर्ष करने का प्रयास करते रहे हो।
इसीलिए एक सद्गुरु की आवश्यकता है जिसने उसे प्राप्त किया है और जो ठीक क्षण को जानता है। वह तुम्हें उन सभी प्रयासों को करने के लिए बताएगा, जब परमात्मा की रात होती है और वह तुमसे द्वार खोलने के लिए नहीं कहेगा। वह रात में तुमसे तैयार होने के लिए कहेगा, तुम जितनी अधिक तैयारी कर सकते हो- वह तुम्हें पहले ही से तैयार होने के लिए बताएगा और जब सुबह आती है तथा पहली किरणें अंधकार को भेदकर संसार में प्रविष्ट हो जाती हैं वह तुमसे द्वार खोलने के लिए कहेगा। अचानक सभी कुछ प्रकाशित हो उठता है, तब पूर्ण रूप से सभी कुछ भिन्न हो जाता है क्योंकि जब प्रकाश होता है तो वहां पूर्ण रूप से भिन्नता होती है।
जब परमात्मा जाग जाता है तब वहां शून्यता और खालीपन नहीं होता है। वह
एक परिपूर्णता होती है, तब पूर्ण कुशलता से कार्य पूरा हो जाता है। प्रत्येक चीज़ परिपूर्ण होती है, पूर्ण से भी अधिक होती है, वह सदा प्रवाहमान एक पराकाष्ठा होती है। वह खाई नहीं, वह एक शिखर होता है। यदि तुम गलत क्षण में द्वार खोलते हो तो वहां अथाह गहरी खाई होती है। तुम भ्रमित होकर पागल हो उठोगे, वह इतना अधिक पागल कर देने वाली अतल गहराई होती है कि एक साथ अनेक जन्मों तक तुम कभी उसका प्रयास ही नहीं करोगे। लेकिन केवल एक, जो जानता है, वह केवल एक जो परमात्मा के साथ एक हो गया है, केवल वह एक ही यह जानता है कि कब रात है और कब दिन है, वही सहायता कर सकता है क्योंकि अब वे उसके अंदर भी घटित होते हैं- उसके पास एक रात होती है और उसके पास भी एक दिन होता है।

हिंदुओं को इसकी झलक मिली थी और उनके पास एक परिकल्पना है: वे उसे ब्रह्म का दिन अर्थात परमात्मा का दिन कहते हैं। जब वहां सृष्टि हुई थी वे उस क्षण को परमात्मा का दिन कहते हैं लेकिन सृष्टि के पास भी एक समय-सीमा होती है और सृष्टि का संहार हो जाता है तथा वह ब्रह्म की रात होती है। ब्रह्म की भी रात शुरू होती है और ब्रह्म के बारह घंटे के दिन में पूरी सृष्टि होती है। तब थककर, पूर्ण-अस्तित्व, अनस्तित्व में लुप्त हो जाता है। तब बारह घंटे के लिए ब्रह्म की रात होती है। परमात्मा के लिए दिन के जो बारह घंटे हैं वह हमारे लिए लाखों और करोड़ों वर्ष हैं।
ईसाइयों के पास भी एक सिद्धांत अथवा एक कल्पना थी- क्योंकि मैं सभी धार्मिक सिद्धांतों को एक कल्पना कहता हूं क्योंकि उनसे कुछ भी सिद्ध नहीं होता है और चूंकि वस्तु का वास्तविक स्वभाव ही ऐसा है इसलिए कुछ भी सिद्ध नहीं किया जा सकता है। वे लोग कहते हैं कि परमात्मा ने संसार की सृष्टि छह दिनों में की, तब सातवें दिन उसने विश्राम किया। इसीलिए रविवार का दिन विश्राम का दिन एक अवकाश का दिन है। छहः दिनों तक वह सृष्टि करता रहा और सातवें दिन उसने विश्राम किया। उनके पास भी एक झलक थी कि परमात्मा को भी विश्राम करना चाहिए।
यह दोनों कल्पनाएं हैं, दोनों ही सुंदर हैं लेकिन तुम्हें उसके सारभूत तत्व खोजने हैं। सारभूत बात यह है कि प्रतिदिन परमात्मा के पास भी एक रात और एक दिन होता है। प्रत्येक दिन वहां प्रवेश करने का एक ठीक क्षण और एक गलत क्षण होता है। गलत क्षण में तुम दीवार के विरुद्ध खड़े होते हो और ठीक क्षण में तुम सामान्य रूप से प्रवेश कर जाते हो। इसी के कारण वे लोग जिन्होंने गलत क्षण पर द्वार खटखटाया था, कहते हैं कि बुद्धत्व को उपलब्ध होना एक क्रमिक और धीमी चीज़ है, तुम उसे तापमान के बढ़ने के द्वारा प्राप्त करते हो; वे लोग जो द्वार पर ठीक क्षण में आए हैं वे कहते हैं कि बुद्धत्व अचानक एक क्षण में घटित होता है। यह तय करने के लिए एक सद्गुरु की आवश्यकता है कि वह ठीक क्षण कब होता है।
ऐसा कहा जाता है कि जब विवेकानंद के शिष्यत्व का प्रारंभ हुआ तो एक दिन उन्हें पहली झलक मिली। तुम उसे सटोरी कह सकते हो, यह समाधि के लिए ज़ेन का शब्द है क्योंकि यह स्थाई स्थिति न होकर एक झलक होती है। यह ठीक ऐसी होती है जैसे मानो वहां आकाश में बादल न हों, आकाश बहुत साफ और स्पष्ट हो और तब एक हजार मील की दूरी से भी तुम अपने सभी गौरव और शान में खड़े गौरीशंकर शिखर की एक झलक पा सकते हो, लेकिन तभी आकाश बादलों से भर जाए तोझलक फिर खो जाती है। यह उपलब्धि नहीं है, तुम गौरीशंकर पर्वत पर पहुंचे नहीं हो, तुम शिखर पर नहीं पहुंचे हो और हजारों मील दूर से तुम्हें उसकी एक झलक मिली थी- वही सटोरी है। सटोरी, समाधि की एक झलक है।
रामवृफष्ण के आश्रम में वहां अनेक लोग थे, कई लोग वहां कार्य कर रहे थे। एक व्यक्ति, जिसका नाम कालू था, एक बहुत सरल, सामान्य और भोला व्यक्ति था। वह भी वहां अपने ढंग से कार्य कर रहा था और रामवृफष्ण ने प्रत्येक मार्ग को स्वीकार किया था। वह एक अनूठे व्यक्ति थे। उन्होंने प्रत्येक विधि और प्रत्येक तकनीक को स्वीकार किया तथा कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपना मार्ग स्वयं खोजना है और वहां कोई भी मार्ग श्रेष्ठतम नहीं है। यह अच्छा है अन्यथा वहां पूरी तरह से यातायात रुक गया होता। इसलिए यह अच्छा है कि तुम स्वयं के मार्ग पर चल सकते हो। वहां अन्य कोई भी व्यक्ति नहीं है जो भीड़ उत्पन्न करे अथवा कोई मुसीबत खड़ी करे।
वह कालू बहुत सीधा सरल व्यक्ति था। उसके पास कम-से-कम सौ देवताओं की मूर्तियां थीं- जैसे कि हिंदू अनेक देवताओं के भक्त होते हैं क्योंकि उनके लिए एक देवता पर्याप्त नहीं है। इसलिए वे अपने पूजा स्थल में इस और उस देवता को अथवा वे जिसकी भी मूर्ति पा सकते हैं, रख लेंगे और यहां तक कि वे देवताओं के चित्र वाले कैलेंडर को भी वहां टांग देंगे। इसमें वहां कुछ भी गलत नहीं है यदि तुम उसे प्रेम करते हो तो वह ठीक है। पर विवेकानंद एक बहुत तीक्ष्ण बुद्धि के तर्कशास्त्री थे। वह हमेशा इस भोले और अज्ञानी व्यक्ति के साथ तर्क करते थे और वह कोई उत्तर नहीं दे सकता था। विवेकानंद कहते-"यह मूर्खता आखिर क्यों? एक ही पर्याप्त है और धर्मग्रंथ भी कहते हैं कि वह एक ही है इसलिए यह एक सौ एक परमात्मा क्यों?" और वे सभी तरह की

आवृफतियों की मूर्ति थीं; और कालू को कम-से-कम तीन घंटे सुबह और तीन घंटे शाम इन देवताओं के साथ पूजा करने का कार्य करना होता था तथा पूरा दिन बीत जाता था क्योंकि प्रत्येक देवता की मूर्ति के साथ उसे कार्य करना होता था और वह चाहे कितनी भी तेजी से कार्य करे, उसमें तीन घंटे सुबह और तीन घंटे शाम लग जाते थे। लेकिन वह एक बहुत-बहुत शांत और मौन रहने वाला व्यक्ति था तथा रामवृफष्ण उससे प्रेम करते थे।
विवेकानंद हमेशा तर्क करते हुए उससे कहते-"इन सभी देवताओं को पेंफक दो"। जब उन्हें सटोरी की एक झलक मिली तो उन्होंने बहुत शक्तिशाली होने का अनुभव किया। अचानक उनके अंदर यह विचार आया कि यदि इस शक्ति में वह कालू को जो उस समय अपने कमरे में पूजा कर रहा था, क्योंकि यह उसकी पूजा करने का समय था, यदि सामान्य रूप से यह टेलीपैथिक संदेश भेज देते हैं कि अपने देवताओं की सभी मूर्तियों को ले जाकर गंगा में पेंफक दो, तो वैसा ही घटित होगा। उन्होंने सामान्य रूप से संदेश भेज दिया। कालू वास्तव में एक सीधा-सरल व्यक्ति था। उसने सभी मूर्तियों को एक चादर में इकट्ठा किया और उन्हें गंगा की ओर ले जाने लगा।
रामवृफष्ण गंगा से आ रहे थे और उन्होंने उससे कहा-"रुको यह तू नहीं है
जो इन्हें पेंफकने जा रहा है। अपने कमरे में वापस लौटकर जा और इन्हें उनके स्थान पर रख दे।" लेकिन कालू ने कहा-"पर्याप्त हो चुका, अब बात ही समाप्त हो गई।"
रामवृफष्ण ने कहा-"ठहर और मेरे साथ आ।"
उन्होंने विवेकानंद का द्वार खटखटाया। विवेकानंद ने दरवाजा खोला और रामवृफष्ण ने उनसे कहा-"यह तुमने क्या किया? यह ठीक नहीं है और यह तुम्हारे लिए सही समय नहीं है, इसलिए तुम्हारे ध्यान की वुंफजी मैं ले लूंगा और इसे अपने पास रखूंगा। जब ठीक क्षण आएगा मैं उसे तुम्हें वापस दे दूंगा।"
और अपने पूरे जीवन-भर विवेकानंद लाखों तरह से उसे प्राप्त करने का प्रयास करते रहे लेकिन वैसी ही झलक वह फिर से न पा सके।
ठीक अपनी मृत्यु से तीन दिन पूर्व रामवृफष्ण उनके स्वप्न में प्रकट हुए और उन्हें वुंफजी देते हुए कहा-"अब तुम इस कंफजी को ले सकते हो और यहां ठीक क्षण आ गया है और तुम द्वार खोल सकते हो।"
अगले ही दिन सुबह उन्हें दूसरी झलक मिली।
एक सद्गुरु जानता है कि वह ठीक समय कौन-सा है। वह तुम्हारी सहायता करता है, उस ठीक क्षण के लिए तुम्हें तैयार करता है और जब वहां ठीक क्षण आता है, वह तुम्हें कंफजी सौंप देगा। तुम सामान्य रूप से द्वार खोलते हो और परमात्मा प्रवेश करता है- क्योंकि यदि तुम द्वार खोलते हो और अंधकार प्रविष्ट होता है तो वह तुम्हें जीवन के समान नहीं, मृत्यु के समान प्रतीत होगा। इसमें गलत कुछ भी नहीं है लेकिन तुम भयभीत हो जाओगे और तुम इतने अधिक भयभीत हो सकते हो कि हो सकता है तुम उसे हमेशा-हमेशा के लिए साथ लेकर चलो।
बुद्ध कहते हैं कि तुम जब कभी भी उपलब्ध होते हो तो दूसरों की सहायता करना शुरू कर दो, क्योंकि तुम्हारी सारी ऊर्जाएं जो कामना में गतिशील हो रही थी- अब वह द्वार व्यर्थ हो गया, अब और अधिक यात्रा ही न रही, लड़खड़ा कर चलने वाली वह यात्रा अब और नहीं रही, अब उन सभी ऊर्जाओं को जो वासना या कामना करने में गतिशील हो रही थीं, अब उन्हें करुणा बनने दो और वहां केवल एक ही करुणा है, उसे सर्वोच्च को पाने में दूसरों की कैसे सहायता की जाए क्योंकि वहां कुछ भी अन्य प्राप्त करने जैसा नहीं है। अन्य सभी कुछ कूड़ा- करकट है। केवल परमात्मा ही प्राप्त करने योग्य है। यदि तुमने उसे पा लिया तो तुमने सभी कुछ पा लिया और यदि तुम उससे चूक गए तो तुमने सभी कुछ खो दिया।
जब कोई एक बुद्धत्व को उपलब्ध होता है तो उसका शरीर अपना चक्र पूरा करे वह उससे पूर्व थोड़े से वर्षों के लिए जीता है। बुद्ध अपने बुद्धत्व के बाद चालीस वर्षों तक जीवित रहे क्योंकि शरीर को अपने पिछले जन्मों के कार्यों से एक जीवन-चक्र मिला था, शरीर को माता-पिता से कोशिकाओं और तंतुओं का एक समूह अर्थात "क्रोमोसोम" मिला था। बुद्धत्व अथवा बिना

बुद्धत्व के उन्हें अस्सी वर्ष तक जीना ही था। यदि बुद्धत्व संभव हुआ अथवा यदि वह घटित हुआ, तब भी उन्हें अस्सी वर्ष तक जीना था। जब वह लगभग चालीस वर्ष के थे, वह तब घटित हुआ और वह चालीस वर्षों तक और जीवित रहे। अब उन ऊर्जाओं के साथ क्या किया जाए? अब वहां न कोई कामना है और न कोई आकांक्षा। तुम्हारे पास अनंत ऊर्जाएं प्रवाहित हो रही हैं। इन ऊर्जाओं के साथ क्या किया जाए? वे करुणा की ओर गतिशील हो सकती हैं। अब वहां ध्यान करने की भी कोई आवश्यकता नहीं है, तुमने उसे प्राप्त कर लिया है, तुम अतिरेक से बाढ़ की तरह प्रवाहित हो रहे हो। अब तुम उसे दे सकते हो, अब तुम उसमें लाखों को सहभागी बना सकते हो।
इसीलिए बुद्ध ने उसे अपनी मूल सिखावन का एक भाग बना लिया हैं वह पहले भाग को ध्यान कहते हैं और दूसरे भाग को "प्रज्ञा", ज्ञान अथवा उपलब्धि कहते हैं। ध्यान के द्वारा तुम प्रज्ञा तक पहुंचते हो। यह तुम्हारी अंतरस्थ की घटना है, जिसके दो भाग हैं: तुमने ध्यान किया और अब तुमने वह प्राप्त कर लिया है। अब बाहर के साथ उसे संतुलित करना है- क्योंकि एक बुद्धत्व को उपलब्ध व्यक्ति हमेशा संतुलित होता है। बाहर, जब वहां कोई भी ध्यान नहीं था और अंदर वहां कामना थी। अब अंदर वहां प्रज्ञा है, वहां करुणा होना ही चाहिए। बाहर की ऊर्जाओं को करुणा बन जाना चाहिए क्योंकि अंतरस्थ की ऊर्जा प्रज्ञा और बोध बन गई है। अंदर बुद्धत्व और बाहर करुणा। एक पूर्ण मनुष्य सदा संतुलित रहता है। इसीलिए बुद्ध कहे चले जाते हैं कि दूसरे लोगों को मुक्त करने में उनकी सहायता करो।
गेंशा ने असंतोष व्यक्त करते हुए कहा-"यदि तुम किसी ऐसे व्यक्ति के पास आते हो जो बहरा, गूंगा और अंधा है तो तुम क्या करोगे? और तुम सदा लगभग ऐसे ही लोगों के मध्य से गुजरते हो क्योंकि वहां केवल वैसे ही लोग हैं। तुम एक बुद्ध के मध्य से होकर गुजरते हो और एक बुद्ध को तुम्हारी आवश्यकता भी नहीं है। तुम ऐसे अज्ञानी व्यक्ति के मध्य से होकर गुजरते हो जो नहीं जानता कि उसे क्या करना है जो नहीं जानता है कि उसे कहां जाना है। उसकी कैसे सहायता करोगे?"
इन शब्दों से व्याकुल होकर, गेंशा के शिष्यों में से एक शिष्य
परामर्श लेने सद्गुरु उम्मोन के पास गया।
उम्मोन भी गेंशा का एक बंधु था- वे दोनों एक ही सद्गुरु सेप्पो के शिष्य थे। इसलिए क्या किया जाए? गेंशा ने इस व्यक्ति से एक ऐसी कठिनाई से भरी बात कह दी थी कि लोगों की फिर कैसे सहायता की जाए? वह उम्मोन के पास गया।
उम्मोन एक बहुत प्रसिद्ध सद्गुरु था। गेंशा बहुत अधिक मौन बना रहता था। लेकिन उम्मोन के पास हजारों शिष्य थे और उसके पास उन लोगों के साथ कार्य करने की अनेक विधियां और युक्तियां थीं। वह गुरु जिएफ के समान एक व्यक्ति था- जो उनके लिए स्थितियां सृजित करता क्योंकि केवल विशिष्ट स्थितियां ही सहायता कर सकती हैं। यद्यपि शब्द सहायता नहीं कर सकते, क्योंकि तुम गूंगे हो तुम बहरे हो- फिर शब्द सहायता नहीं कर सकते। यदि तुम अंधे हो तो हाव-भाव, संकेत और चेष्टाएं भी व्यर्थ हैं। तब क्या किया जाए? केवल सृजित की गईं स्थितियां ही सहायता कर सकती हैं।
यदि तुम अंधे हो तो केवल हाव-भाव और संकेतों के द्वारा तुम्हें दरवाजा नहीं दिखलाया जा सकता क्योंकि तुम उसे नहीं देख सकते। मैं तुम्हें द्वार के बारे में बतला भी नहीं सकता क्योंकि तुम बहरे हो और तुम सुन नहीं सकते। वास्तव में तुम प्रश्न भी नहीं पूछ सकते कि द्वार कहां है? क्योंकि तुम गूंगे हो। क्या किया जाए। मुझे एक स्थिति सृजित करनी होगी।
मैं तुम्हारा हाथ पकड़ सकता हूं, मैं अपने हाथ के द्वारा तुम्हें द्वार की ओर ले जा सकता हूं। न कोई संकेत, न कोई हाव-भाव और न कोई भी शब्द। मुझे कुछ कार्य करना होगा। मुझे एक स्थिति सृजित करनी होगी जिसमें गूंगे, बहरे और अंधे भी गतिशील हो सकते हैं।
इन शब्दों से व्याकुल होकर, गेंशा के शिष्यों में से एक शिष्य
परामर्श लेने सद्गुरु उम्मोन के पास गया।
... क्योंकि वह भली भांति जानता था कि सद्गुरु गेंशा कुछ और अधिक नहीं कहेंगे, वह एक ऐसे व्यक्ति नहीं हैं जो अनेक शब्दों का प्रयोग करें और

उन्होंने कभी भी कोई स्थिति भी सृजित नहीं की है। वह केवल कुछ बात कह देते और फिर मौन में चले जाते। उनके कहने का क्या अर्थ था, इसे पूछने लोगों को दूसरे सद्गुरुओं के पास जाना ही होता। यह एक अलग तरह के अधिकतर मौन में रहने वाले महर्षि रमण जैसे व्यक्ति थे, जो अधिक नहीं बोलते थे। उम्मोन, गुरु जिएफ के समान था। वह भी बहुत अधिक बोलने वाला व्यक्ति न था लेकिन वह स्थितियां सृजित करता और स्थितियां सृजित करने के लिए ही शब्दों को प्रयोग करता।
वह परामर्श लेने सद्गुरु उम्मोन के पास गया
जो गेंशा के समान ही सेप्पो का शिष्य था।
और सेप्पो दोनों से पूर्ण रूप से भिन्न था। यह कहा जाता है कि वह कभी बोला ही नहीं। वह पूर्ण रूप से मौन ही बना रहा। इसलिए उसके लिए वहां कोई भी समस्या नहीं थी- वह कभी भी एक गूंगे, बहरे और अंधे व्यक्ति के मध्य से होकर नहीं गुजरा, क्योंकि वह कभी कहीं गया ही नहीं। केवल वे ही लोग जो खोज में थे, केवल वे ही लोग जिनकी आंखें थोड़ी-सी खुली हुई थीं, केवल वे ही लोग जो बहरे थे लेकिन यदि तुम जोर से बोलो वे कुछ बात सुन सकते थे... इसी कारण अनेक लोग सेप्पो के निकट बुद्धत्व को उपलब्ध हुए क्योंकि केवल वे ही लोग उसके पास पहुंचे, जो उस पार की सीमा रेखा के निकट अथवा केवल कगार पर खड़े हुए थे। ये उम्मोन और गेंशा दो शिष्य, सेप्पो के साथ जो एक पूर्ण रूप से मौन रहने वाला सद्गुरु था, बुद्धत्व को उपलब्ध हुए। सेप्पो पूरी तरह से बस बैठा ही रहता और कुछ भी न करता। यदि तुम सीखना चाहते थे तो उसके साथ बने रह सकते थे और यदि तुम नहीं चाहते थे तो तुम जा सकते थे। वह कुछ भी न कहता। सीखना तुम्हें था, वह कुछ भी न सिखाता। वह एक शिक्षक नहीं था लेकिन अनेक लोगों ने सीखा।
वह शिष्य उम्मोन के पास गया।
उम्मोन ने कहा-"वृफप्या सिर नीचे झुकाकर प्रणाम करो।"
उसने तुरंत कार्य करना प्रारंभ कर दिया क्योंकि जो लोग बुद्धत्व को उपलब्ध होते हैं, वे व्यर्थ ही समय नष्ट नहीं करते, वे तुरंत पूरी तरह से उस स्थिति पर छलांग लगाते हैं।... चूंकि यह कोई तरीका नहीं है। तुम किसी व्यक्ति को नीचे झुककर प्रणाम करने का आदेश नहीं दे सकते। इस बारे में इसकी कोई आवश्यकता भी नहीं है- यदि कोई व्यक्ति नीचे झुकना चाहता है तो वह झुककर प्रणाम करेगा। यदि वह तुम्हें सम्मान देना चाहता है तो वह सम्मान देगा। यदि नहीं तो सम्मान नहीं देगा। यह उम्मोन किस तरह का व्यक्ति है? वह कहता है-"वृफप्या नीचे झुककर प्रणाम करो।" उसने केवल उसके कक्ष में प्रवेश ही किया था और इससे पूर्व कि वह भिक्षु कोई भी बात पूछता और उम्मोन कहता है-"वृफप्या नीचे झुककर प्रणाम करो।"
यद्यपि भिक्षु को आश्चर्य हुआ, पर उसने सद्गुरु के आदेश का पालन किया-
तब पूछे गए प्रश्न का उत्तर पाने की आशा में, वह सीधा खड़ा हो गया। लेकिन उत्तर देने के स्थान पर उसने अपना डंडा उठाया और उसने जोर से उस पर प्रहार किया। वह उछलकर पीछे जा गिरा। उम्मोन ने कहा-"ठीक है, तो तुम अंधे नहीं हो। अब मेरे निकट आओ।"
उसने कहा-"तुम मेरे डंडे को देख सकते हो, इसलिए एक बात तो निश्चित है
कि तुम अंधे नहीं हो। अब मेरे निकट आओ।
भिक्षु ने वैसा ही किया, जैसी कि उसे आज्ञा दी गई थी।
उम्मोन ने कहा-"तुमने ठीक वैसा ही व्यवहार किया।
इसलिए तुम बहरे भी नहीं हो। ठीक, समझ गए?
भिक्षु ने कहा-"श्रीमान! समझना कैसा?
उम्मोन ने कहा-"ओह! तो तुम गूंगे भी नहीं हो।"
उन शब्दों को सुनकर वह भिक्षु
जैसे एक गहरी नींद से जाग गया।
हुआ क्या? उम्मोन किस ओर संकेत कर रहा है? पहली बात, वह यह कह रहा है कि यदि वह तुम्हारे लिए एक समस्या नहीं है तो फिक्र क्यों करते हो?
इस बारे में ऐसे लोग हैं, जो मेरे पास आते हैं...
भारत के समृद्धत्म लोगों में से एक बहुत धनी व्यक्ति मेरे पास आए और उन्होंने कहा-"गरीब लोगों के बारे में क्या किया जाए, आप ऐसे गरीब लोगों की

सहायता किस प्रकार करेंगे?" मैंने उनसे कहा-"यदि आप एक गरीब हैं तभी पूछिए अन्यथा किसी गरीब व्यक्ति को ही इसे पूछने दें। आपके लिए यह समस्या किस तरह से है? आप तो गरीब नहीं हैं इसलिए इससे क्यों एक समस्या उत्पन्न करते हो?"
एक बार मुल्ला नसरुद्दीन के लड़के ने उससे पूछा, मैं उस समय वहां मौजूद
था और वह बच्चा अपने होमवर्क के कार्य को बहुत हठपूर्वक तथा वास्तव में खीजते हुए कर रहा था और तभी अचानक उसने नसरुद्दीन की ओर देखा और कहा-"पापा! यह शिक्षा सामग्री भी कैसी है। किसी भी तरह से इस शिक्षा प्रणाली के कूड़े- करकट का उपयोग क्या है?"
नसरुद्दीन ने कहा-"ठीक है, वहां शिक्षा जैसा कुछ भी नहीं है, वह तुम्हें सिवाय तुम्हारे संसार में अन्य प्रत्येक व्यक्ति के बारे में चिंता करने में समर्थ बनाती है।
वहां शिक्षा जैसी कोई भी चीज़ नहीं है। तुम्हारी पूरी शिक्षा तुम्हें सामान्य रूप से प्रत्येक स्थान की स्थितियों के बारे में सिवाय तुम्हारे प्रत्येक व्यक्ति के बारे में और संसार में होने वाली सभी कठिनाइयों के बारे में फिक्र करने में समर्थ बनाती है। वे वहां हमेशा बनी रहीं हैं और वे वहां हमेशा बनी रहेंगी। इसलिए नहीं, क्योंकि तुम यहां हो और वे कठिनाइयां वहां हैं। तुम नहीं थे, वे तब भी वहां थी, शीघ्र ही तुम नहीं रहोगे और वे वहां बनी ही रहेंगी। वे अपनी आवृफति बदल लेती हैं लेकिन वे बनी रहती हैं। इस विश्व की वास्तविक योजना ही ऐसी है कि ऐसा प्रतीत होता है कि दुखों और कठिनाइयों के द्वारा ही कुछ चीज़ विकसित हो रही है। वह एक तरह से प्रशिक्षित और अनुशासित होने के लिए उठाया गया एक आवश्यक कदम प्रतीत होता है।
उम्मोन जिस पहली बात की ओर संकेत कर रहा है, वह है कि तुम न तो अंधे हो,
न गूंगे हो और न बहरे हो, इसलिए तुम्हारा उससे क्या संबंध है और तुम क्यों कठिनाई में हो? तुम्हारे पास आंखें हैं- फिर अंधे व्यक्तियों के बारे में सोचकर क्यों व्यर्थ समय नष्ट करते हो? अपने सद्गुरु की ओर क्यों नहीं देखते?-क्योंकि अंधे व्यक्ति वहां हमेशा बने रहेंगे और तुम्हारा सद्गुरु वहां हमेशा नहीं रहेगा और तुम अंधे तथा बहरे लोगों के बारे में सोचकर परेशान हो सकते हो कि कैसे उन्हें मुक्त किया जाए लेकिन वह व्यक्ति जो तुम्हें मुक्त कर सकता है, हमेशा के लिए नहीं बना रहेगा। इसलिए तुम स्वयं अपने बारे में रुचि लो।
मेरा अनुभव भी है कि लोग दूसरे लोगों के बारे में अधिक रुचि रखते हैं।
एक बार एक व्यक्ति मेरे पास ठीक एक ऐसा ही प्रश्न लेकर आया। उसने कहा-"हम लोग तो आपको सुन सकते हैं लेकिन उन लोगों के बारे में क्या किया जाए जो आपको सुनने नहीं आ सकते? हम लोग आपको पढ़ सकते हैं लेकिन उन लोगों के बारे में क्या किया जाए जो आपको नहीं पढ़ सकते।"
वे लोग तर्कसंगत प्रतीत होते हैं लेकिन वे लोग पूर्ण रूप से अप्र्रासंगिक हैं। इस कारण से तुम क्यों परेशान और चिंतित हो। और यदि तुम इस ढंग से परेशान हो तो तुम कभी भी बुद्धत्व को उपलब्ध न हो सकोगे, क्योंकि एक व्यक्ति जो दूसरों पर अपनी ऊर्जा का अपव्यय कर उसे व्यर्थ ही नष्ट किए चले जाता है, वह कभी भी स्वयं अपनी ओर नहीं देखता है। यह स्वयं से बचने अथवा पलायन करने का उसके मन का एक छल और कपट है- तुम दूसरों के बारे में सोचे चले जाते हो और तुम्हें बहुत अच्छा-अच्छा महसूस होता है क्योंकि तुम दूसरों के बारे में फिक्र कर रहे हो। तुम एक महान समाज सुधारक अथवा एक क्रांतिकारी अथवा एक आदर्श व्यवस्था को सोचने वाले एक विचारक अथवा समाज के एक महान सेवक हो- लेकिन तुम कर क्या रहे हो? तुम पूरी तरह से मूल प्रश्न को टालकर उससे बच रहे हो, वह कुछ ऐसी चीज़ है जो तुम्हारे साथ ही की जानी है।

पूरे समाज के बारे में भूल जाओ और केवल तभी तुम्हारे लिए कुछ किया जा सकता है और जब तुम मुक्त हो जाते हो, तुम दूसरों को मुक्त करना प्रारंभ कर सकते हो। लेकिन उससे पूर्व वृफप्या कुछ सोचो ही मत- वह असंभव है। जब तक तुम रोगमुक्त न हो जाओ, उससे पूर्व तुम किसी भी व्यक्ति का उपचार नहीं कर सकते। जब तक तुम स्वयं प्रकाश से न भर जाओ, तुम किसी भी व्यक्ति के उसके

अपने हृदय में ज्योति नहीं जला सकते- यह असंभव है- केवल एक जलती हुई ज्योति ही किसी व्यक्ति की सहायता कर सकती हैं पहले एक जलती हुई ज्योति बनो- यह है पहला संकेत।
और दूसरा संकेत है कि उम्मोन ने एक स्थिति सृजित की। वह इस बात को कह
भी सकता था लेकिन वह उसे नहीं कह रहा है, वह एक स्थिति सृजित कर रहा है क्योंकि उस स्थिति में ही तुम पूर्ण रूप से संयुक्त हो। यदि मैं कोई बात कहता हूं तो केवल उसमें बुद्धि ही संयुक्त होती है। तुम मस्तिष्क से सुनते हो, लेकिन तुम्हारे पैर, तुम्हारा हृदय, तुम्हारे गुर्दे, तुम्हारा जिगर और तुम्हारी समग्रता उसमें संयुक्त नहीं होती है। लेकिन जब भिक्षु पर डंडे से प्रहार किया गया, वह समग्रता से उछला। तब वह एक पूर्ण कार्य था, तब न केवल सिर और पैर, उसके गुर्दे, जिगर बल्कि उसका पूरा अस्तित्व उछला। यही पूरा अभिप्राय मेरी ध्यान की विधियों का भी है, तुम्हारे संपूर्ण अस्तित्व को हिलना, उछलना और कूदना है, तुम्हारे पूर्ण अस्तित्व को ही नृत्य करते हुए गतिशील होना है। यदि तुम आंखें बंद कर सामान्य रूप से बैठ जाते हो, तो केवल तुम्हारा सिर ही उसमें संयुक्त होता है और तुम सिर के अंदर कुछ-न-कुछ किए चले जाते हो। इस बारे में अनेक लोग हैं जो केवल आंखें बंद कर वर्षों से बैठे हुए एक मंत्र को दोहराए चले जाते हैं। लेकिन एक मंत्र मस्तिष्क में ही घूमता रहता है और तुम्हारी समग्रता उसमें संयुक्त नहीं होती- और तुम्हारी समग्रता अस्तित्व में संयुक्त होती है। तुम्हारा मस्तिष्क उतना ही अधिक परमात्मा में होता है, जितना कि गुर्दे, जिगर और पैर। तुम समग्र रूप से उसमें ही होते हो और केवल मस्तिष्क इसे अनुभव नहीं कर सकता।
तीव्रता से सक्रिय कोई भी चीज़ सहायक होगी। निष्क्रिय होकर, मन के अंदर तुम केवल असंबद्ध बातें किए चले जाते हो; और उनका कोई भी अंत नहीं होता, सपनों और विचारों का कोई अंत ही नहीं है। वे अनंत समय तक चलते चले जाते है।
कबीर ने कहा है-"संसार में वहां दो असीमताएं हैं- एक है अज्ञान और दूसरा है परमात्मा। ये दो चीज़ें अंतहीन हैं- परमात्मा अंतहीन है और अज्ञान भी। तुम एक मंत्र दोहराए चले जा सकते हो लेकिन वह तब तक सहायता न करेगा, जब तक तुम्हारा पूरा जीवन ही एक मंत्र न बन जाए, जब तक तुम उसमें पूर्ण रूप से संयुक्त न हो जाओ, कहीं कोई रुकना न हो और न विभाजन हो। यही था वह जो उम्मोन ने किया। भिक्षु पर डंडे का एक जोरदार प्रहार हुआ।
वह उछलकर पीछे जा गिरा
उम्मोन ने कहा-"ठीक है, तो तुम अंधे नहीं हो।
अब मेरे निकट आओ।"
भिक्षु ने वैसा ही किया, जैसी कि उसे आज्ञा दी गई थी।
उम्मोन ने कहा-"ठीक है, तो तुम बहरे भी नहीं हो।"
वह किस ओर संकेत कर रहा है? वह इस ओर संकेत कर रहा है-"तुम समझ सकते हो, इसलिए क्यों व्यर्थ ही समय नष्ट कर रहे हो।" तब वह पूछता है-"ठीक है, तो समझ गए?" उम्मोन ने बात समाप्त कर दी। स्थिति पूरी हो गई। लेकिन शिष्य अभी तैयार न था, वह अभी भी उसका अभिप्राय समझ नहीं पाया। उसने कहा-"श्रीमान! समझना कैसा?" अब वहां पूरी चीज़ थी। उम्मोन को जोकुछ भी कहना था, उसने कह दिया था। उसने एक ऐसी स्थिति सृजित की थी, जहां विचार नहीं थे: जब कोई व्यक्ति डंडे से तुम पर आघात करता है, तुम बिना किसी विचार के उछल पड़ते हो अथवा कूद पड़ते हो। यदि तुम सोचते हो तोकूद नहीं सकते, क्योंकि जब तुम यह निर्णय लेते हो कि तुम्हें कूदना अथवा उछलना है, डंडा तुम पर प्रहार कर देगा। वहां कोई भी समय है ही नहीं।
मन को समय की आवश्यकता होती है। सोचने के लिए भी समय की आवश्यकता होती है। जब कोई व्यक्ति डंडे से तुम पर आघात करता है अथवा अचानक तुम रास्ते पर एक सांप पाते हो, तुम उछलकर दूर हट जाते हो। तुम उस बारे में सोचते नहीं, तुम तर्क-वितर्क करते हुए कोई निर्णय नहीं लेते, तुम यह नहीं कहते-"यहां एक सांप है, एक सांप खतरनाक होता है और उससे मृत्यु भी संभव है, मुझे कूदकर दूर हट जाना चाहिए। तुम वहां अरस्तू के तर्क का अनुसरण नहीं करते। तुम पूरी तरह अरस्तू आदि सभी को एक किनारे अलग रख देते हो- और तुम कूद जाते हो।

यह फिक्र नहीं करते कि अरस्तू क्या कहता है, तुम अतर्कपूर्ण हो जाते हो लेकिन जब कभी तुम अतर्कपूर्ण होते हो, तुम पूर्ण होते हो।
यही वह बात है जो उम्मोन ने कही है। तुम पूर्ण रूप से कूद जाते हो। यदि तुम पूर्ण रूप से कूद सकते हो, तो पूर्ण रूप से अथवा समग्रता से ध्यान क्यों नहीं कर सकते? जब एक डंडा तुम पर प्रहार करता है, तुम संसार के बारे में फिक्र किए बिना कूद पड़ते हो। तुम यह नहीं पूछते-"यह तो ठीक है, लेकिन एक अंधे के बारे में क्या होगा? जब एक डंडा तुम पर प्रहार करता है तो वह एक अंधे व्यक्ति की कैसे सहायता करेगा? तुम तब प्रश्न नहीं पूछते- तुम पूरी तरह से कूदकर अपने को बचा लेते हो। उस क्षण में पूरा संसार लुप्त हो जाता है, समस्या केवल तुम ही हो और समस्या वहां है- तुम्हीं को उसे हल करना है और उससे निकलकर बाहर आना है।
"समझे?"
यह वही है जो उम्मोन ने पूछा था। संकेत पूरा और स्पष्ट था।
भिक्षु ने कहा-"श्रीमान! समझना कैसा?"
उसने उस संकेत को अभी तक ग्रहण नहीं किया।
"ओह! तुम तो गूंगे भी नहीं हो- तुम बोल भी सकते हो।
इन शब्दों को सुनकर वह भिक्षु, जैसे एक गहरी नींद से जाग गया।
एक पूरी स्थिति- अमौखिक, अतर्कपूर्ण और अपने आप में पूर्ण। जैसे मानो किसी व्यक्ति ने उसे हिला दिया हो और उसकी नींद से उसे बाहर ले आया हो। एक क्षण के लिए वह जागा और प्रत्येक चीज़ स्पष्ट हो गईं एक क्षण के लिए वहां विद्युत जैसी कौंध हुई और वहां कोई भी अंधकार न था। सटोरी घटित हो गई। अब वहां उसका स्वाद है। अब शिष्य उस स्वाद का अनुसरण कर सकता है। अब वह जान गया है। वह उसे कभी भी भूल नहीं सकता।
अब खोज पूर्ण रूप से भिन्न होगी। इससे पूर्व वह खोज किसी अज्ञात चीज़
के लिए थी- और तुम एक अज्ञात के लिए खोज कैसे कर सकते हो? उसके लिए तुम अपने पूरे जीवन की प्रतिष्ठा कैसे गिरा सकते हो? लेकिन अब वह पूर्ण होगा, अब वह कुछ चीज़ अनजानी जैसी नहीं है, उसको उसकी एक झलक दी जा चुकी है। उसने सागर का स्वाद ले लिया है, हो सकता है एक प्याले भर जल से लिया हो, पर स्वाद समान है। अब वह जानता है। वह वास्तव में एक बहुत छोटा-सा अनुभव था- एक खिड़की खुली थी लेकिन वहां पूरा आकाश मौजूद था। अब वह घर से बाहर आकर गतिशील हो सकता है। वह बाहर खुले आकाश के नीचे आ सकता है और उसमें जी सकता है। अब वह जानता है कि प्रश्न वैयक्तिक है।
उसे सामाजिक मत बनाओ। तुम ही प्रश्न हो और जब मैं तुमसे यह कहता हूं
तो मेरा अर्थ "तुम" हो, प्रत्येक व्यक्ति है, वह तुम जो एक समूह की भांति नहीं है, वह तुम जो एक समाज की भांति नहीं है। जब मेरा अर्थ तुमसे है तो पूरी तरह से मेरा अर्थ तुम हो, वैयक्तिक रूप से तुम ही- और मन की चालबाजी है जो उसे सामाजिक बना देता है। मन दूसरों के बारे में फिक्र करना चाहता है- तब वहां कोई भी समस्या नहीं है। तुम अपनी निजी समस्या को स्थगित कर सकते हो और कैसे जन्म-जन्मों से तुम उसे व्यर्थ नष्ट करते रहे हो। अब उसे और अधिक नष्ट मत करो।
मैं इन वार्ताओं द्वारा तुम पर चोट करता रहता हूं, जो उम्मोन की अपेक्षा उसके बराबर अथवा कहीं अधिक सूक्ष्म थीं, लेकिन यदि तुम मुझे नहीं सुनते हो तो हो सकता है मुझे स्थूल चीज़ें खोजनी हों।
दूसरों के बारे में मत सोचो। पहले अपनी समस्या का समाधान करो, तब तुम्हारे पास स्पष्टता होगी, जिससे तुम दूसरों की भी सहायता कर सको।
और तब तक कोई भी व्यक्ति सहायता नहीं कर सकता, जब तक वह स्वयं बुद्धत्व को उपलब्ध न हो जाए।

और फूलों की बरसात हुई
दसवां प्रवचन

द्वैतता अर्थात दोनों ओर देखना

एक उत्सुक भिक्षु द्वारा
एक सद्गुरू से पूँछा गया-मार्ग क्या है?
सद्गुरू ने कहा: "वह ठीक तुम्हारी आँखों के सामने है।"
भिक्षु ने पूछा: तो मैं स्वयं उसे क्यों नहीं देख पाता?"
सद्गुरू ने कहा:"क्योंकि तुम स्वयं अपने बारे में सोच रहे हो।"

भिक्षु ने पूँछा:" आपके बारे में क्या है?
क्या आप उसे देखते हैं?"
सद्गुरू ने कहा: जितनी दूर तक तुम देखते हो
तुम दोनों ओर द्वैतता देखते हो। ऐसा मैं नहीं करता।
और तुम करते हो और करते ही चले जाते हो।
तुम्हारी आँखों में धुंधलापन और दुविधा है।"

भिक्षु ने कहा: "जब वहाँ न तो मैं हूँ
और न आप हैं, क्या कोई एक उसे देख सकता है?"
सद्गुरू ने उत्तर दिया: "जब वहाँ न तो मै हूँ और न तुम हो,
तब वह एक कौन है, जो उसे देखना चाहता है?"

हाँ, मार्ग ठीक तुम्हारी आँखों के सामने है, लेकिन तुम्हारी आँखें ठीक मार्ग के सामने नहीं हैं- वे बंद हैं, वे सूक्ष्म रूप से बंद हैं। उनमें दुविधा और धुंधलापन है। लाखों विचार उनको बंद कर रहे हैं, उनमें लाखों सपने तैर रहे हैं, जो कुछ भी तुमने देखा है, वह सभी कुछ वहाँ है, जो कुछ तुमने सोचा है, वह सभी कुछ वहाँ है। और तुम अनेक जन्मों से बहुत लम्बी अवधि से जी रहे हो, और तुमने बहुत अधिक सोच विचार किया है और वह सभी कुछ वहाँ तुम्हारी आँखों में संग्रहित हो गया है। लेकिन क्योंकि विचार देखे नहीं जा सकते, तुम समझते हो कि तुम्हारी आँखें वैसी ही सापफ हैं। पर वहाँ स्पष्टता नहीं है। वहाँ तुम्हारी आँखों में विचारों की लाखों पर्तें और सपने हैं। मार्ग ठीक तुम्हारे सामने है वह सभी कुछ ठीक तुम्हारे सामने है। लेकिन तुम यहाँ नहीं हो। तुम उस शांत क्षण में अभी भी नहीं हो, जहाँ आँखे पूर्ण रूप से खाली और बिना दुविधा के होती हैं, और जो कुछ है, तुम वही देखते हो।
इसलिए पहली बात तो यह समझ लेने जैसी है कि दुविधाविहिन दृष्टि कैसे प्राप्त की जाए, कैसे आँखों को खाली बनाया जाए जिससे वे सत्य को प्रतिबिम्बित कर सकें, कैसे अपने अंदर निरंतर एक पागल भीड़ का भाग न बना जाए, कैसे निरंतर सोचने, सोचने और सोचने में न रहा जाए और कैसे विचारों को विश्राममय होने दिया जाए। जब विचार नहीं होते हैं, तो देखना घटित होता है, जब विचार होते हैं तुम उनकी व्याख्या किए चले जाते हो और चूकते चले जाते हो।
वास्तविकता के व्याख्याकार मत बनो, कल्पनाशील बनो। उसके बारे में सोचो मत, उसे देखो और समझो।
करना क्या है? जब कभी भी तुम देखो, तो बस देखना ही बन जाओ प्रयास करो।
यह कठिन बनने जा रहा है, केवल तुम्हारी पुरानी आदतों के कारण कठिन। लेकिन प्रयास करो। वह घटित होता है। वह अनेक लोगों को घटा है, तुम्हें क्यों नहीं? तुम कोई अपवाद नहीं हो। विश्वजनीन नियम वैसा ही तुम्हें भी उपलब्ध है जैसा कि बुद्व अथवा किसी अन्य व्यक्ति को है। केवल थोड़ा- सा प्रयास करना है।
तुम एक पफूल देखते हो, तब केवल उसे देखो। कोई भी बात कहो मत। नदी बह रही है, उसके तट पर बैठ जाओ और नदी को देखो, लेकिन कोई भी बात कहो मत। आकाश

में बादल तैर रहे है। भूमि पर नीचे लेट जाओ, और देखो, कुछ भी कहो मत। बस उन्हें शब्द मत दो।
शब्द देते हुए मौखिक रूप से कहने की यह सबसे गहनतम आदत है, यही तुम्हारा प्रशिक्षण है कि वास्तविकता से तुरंत शब्दों पर कूद जाना और तुरंत शब्दों में अभिव्यक्त करना शुरू कर देना, जैसे-फूल सुंदर है, सूर्यास्त बहुत प्यारा है, यदि वह प्यारा है, तो उसे प्यारा ही रहने दो। उसे शब्दों में क्यों लाना? यदि वह सुंदर है, तो क्या तुम सोचते हो कि तुम्हारा सुंदर शब्द क्या उसे और अधिक सुंदर बना देगा? इसके विपरित तुम एक परमानंद के क्षण से चूक गए। शब्द उसके अंदर आ गए। इसके पहले कि तुम उसे देख सकते थे, तुम गतिशील हो गए, तुम अपने अंदर शब्दों के विचारों के भ्रमण की ओर गतिशील हो गए। यदि तुम इस भ्रमण में बहुत अधिक दूर तक चले जाते हो तो तुम पागल हो जाओगे।
एक पागल व्यक्ति कौन होता है? वह कभी वास्तविकता तक नहीं आता है, जो हमेशा अपनी निजी शब्दों के संसार में विचरण करता रहता है- और उसने इतनी अधिक दूर तक भ्रमण कर लिया है कि तुम उसे पीछे वापस नहीं ला सकते। वह सत्यता के साथ नहीं हैं, लेकिन क्या तुम सत्यता के साथ हो? तुम भी नहीं हो। अंतर केवल "डिग्रीज" का है। एक पागल व्यक्ति विचरण करता हुआ बहुत दूर तक चला गया है, और तुमने उतनी दूर तक भ्रमण नहीं किया है- तुम केवल पास पड़ोस में ही हो- और तुम बार-बार आते हो, और सत्यता का स्पर्श करते हो और फिर चले जाते हो।
तुम्हारे पास एक छोटा-सा स्पर्श है, कहीं-न-कहीं तुम्हारा थोड़ा- सा सम्पर्क है, तुम भी जड़ों से उखड़ गए हो लेकिन तब भी लगता है कि एक जड़ अभी भी वास्तविकता में जमी हुई है। लेकिन वह जड़ बहुत नाजुक है, किसी भी क्षण, किसी भी दुर्घटना में वह टूट सकती है-पत्नी मर जाती है, पति पलायन कर भाग जाता है अथवा तुम बाजार में दीवालिया हो जाते हो-और वह नाजुक जड़ टूट जाती है। तब तुम विचरण और विचरण ही किए चले जाते हो-और तब वहाँ से वापस लौटना नहीं होता है। तब तुम कभी भी सत्यता का स्पर्श नहीं करते हो। एक पागल व्यक्ति की यही स्थिति है, और सामान्य मनुष्य केवल "डिग्रीज" में भिन्न है।
और एक बुद्वत्व को, ताओं को अथवा समझ या चेतना को उपलब्ध व्यक्ति अर्थात एक बुद्व की स्थिति क्या होती है? उसकी जड़े सत्यता में गहरी जमी होती हैं, वह उससे दूर कभी विचरण नहीं करता और वह एक पागल के ठीक विपरीत होता है।
तुम मध्य में हो। तुम मध्य से या तो एक पागल व्यक्ति बनने की ओर गतिशील होते हो अथवा तुम एक बुद्व बनने की ओर गतिशील होते हो। यह तुम्हारे ऊपर निर्भर है। विचारों को बहुत अधिक ऊर्जा मत दो, वह आत्मघाती होना है और तुम स्वयं अपने को विष दे रहे हो। जब भी सोचना शुरू होता है, यदि वह अनावश्यक है-और निन्यानवे के प्रतिशत वह अनावश्यक होता है, तुरंत ही स्वयं को सत्यता तक वापस ले आओ। कोई भी चीज सहायता करेगी, यहाँ तक कि उस कुर्सी का स्पर्श जिस पर तुम बैठे हो अथवा उस पलंग का स्पर्श जिस पर तुम लेटे हो। उस स्पर्श का अनुभव करो, वह परमात्मा के बारे में तुम्हारे विचारों की अपेक्षा कहीं अधिक सत्य है, वह तुम्हारे परमात्मा के बारे में किए गए विचारों की अपेक्षा कहीं अधिक धार्मिक है, क्योंकि वह एक वास्तविक चीज है।
उसका स्पर्श करो, स्पर्श का अनुभव करो, स्पर्श ही हो जाओ, यहीं और अभी में बने रहो। तुम भोजन कर रहे हो- भोजन का भली-भाँति स्वाद और सुवास लो। भली-भाँति उसकी गंध लो, उसे अच्छी तरह से चबाओ- तुम वास्तविकता को चबा रहे हो। विचारों में मत भटकते फिरो। तुम स्नान कर रहे हो- उसका आनंद लो। फौवारे की बौछार तुम्हारे ऊपर हो रही है,- उसका अनुभव करो। वस्तुतः विचारों का एक केंद्र बनने की अपेक्षा अधिक से अधिक अनुभव का एक केंद्र बनो।
और हाँ, मार्ग ठीक तुम्हारी आँखों के सामने ही है, लेकिन तुम्हें अनुभव और अनुभूति करने की अधिक अनुमति नहीं दी गई है। समाज तुम्हारा अनुभव करने वाले प्राणी की भाँति नहीं, एक सोचने वाले प्राणी की भाँति पालन-पोषण करता है- क्योंकि अनुभव के बारे में अनुमान नहीं लगाया जा सकता,

कोई भी नहीं जानता कि वह कहाँ ले जाएगा, और समाज तुम्हें अपनी निजता में नहीं छोड़ सकता। वह तुम्हें विचार देता है। सभी स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय तुम्हें विचार करने के लिए प्रशिक्षिण करने वाले केंद्र हैं और तुम्हें अधिक क्रियात्मक बनाने के लिए मौजूद हैं। तुम्हारे पास जितने अधिक शब्द होगें, तुम्हें उतना ही अधिक प्रतिभाशाली होना सोचा जाता है। तुम्हारी शब्दों के साथ जितनी अधिक पहचान होती है, यह सोचा जाता है कि तुम उतने ही अधिक शिक्षित हो। यह कठिन होगा, क्योंकि तीस, चालीस,
लेकिन जितनी शीघ्रता से तुम प्रारम्भ करते हो, उतना ही अच्छा है। स्वयं अपने को वास्तविकता में वापस ले आओ।
सभी संवेदनशील समूहों का यही अभिप्राय होता है। पश्चिम में वे एक केंद्र बिंदु बन गए हैं, और वे सभी लोग जिनकी दिलचस्पी चेतना और चेतना को बढ़ाने की होती है, उन्हें इन संवेदनशील बनाने वाले समूहों में और अधिक संवेदनशील होने के प्रशिक्षण के लिए रूचि लेनी ही होती है इसे सीखने के लिए तुम्हें कहीं और जाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि पूरा जीवन ही एक संवेदनशीलता है। दिन में चौबीसों घंटें सत्यता ठीक तुम्हारे सामने और चारों ओर है- वह तुम्हें घेरे हुए है, तुम उसी में सांस लेते हो, तुम उसी में भोजन करते हो। तुम जो कुछ भी करते हो, तुम्हें इस वास्तविकता अर्थात इस प्रामाणिक अस्तित्व के साथ ही करना होता है।
लेकिन मन बहुत दूर तक गतिशील होता है। तुम्हारे होने और तुम्हारे मन
के मध्य वहाँ एक अंतराल होता है- वे एक साथ नहीं होते, और मन अन्य कहीं ओर होता है। तुम्हें यहीं इस प्रामाणिक अस्तित्व में होना होता है, क्योंकि जब तुम खाते हो तो तुम्हें वास्तव में असली रोटी ही खानी होती है, और रोटी के बारे में सोचने से कोई भी सहायता नहीं मिलती है। जब तुम्हें स्नान करना होता है तो तुम्हें वास्तव में स्नान करना होता है, उसके बारे में सोचने का कोई भी उपयोग नहीं है। जब तुम सांस लेते हो तो तुम्हें वास्तविक वायु को सांस में लेना होता है, केवल उसके बारे में सोचने से कुछ भी नहीं होता। वास्तविकता तुम्हें हर कहीं से चारों ओर से घेरे हुए है, वह सभी ओर से तुमसे टकरा रही है- तुम जहाँ कहीं भी जाते हो, तुम उसका आमना-सामना करते हो।
यही इसका अभ्रिप्राय है। मार्ग ठीक तुम्हारी आँखों के सामने है। वह प्रत्येक स्थान पर है, क्योंकि अन्य उसके कुछ भी नहीं हो सकता- वह केवल असली यथार्थ अर्थात सत्य ही है।
तब समस्या क्या है? तब लोग क्यों खोजते और खोजते चले जाते हैं और कभी उसे पाते नहीं। समस्या विद्यमान कहाँ है? पूरी कठिनाई का मौलिक केन्द्र क्या है। कठिनाई यह है कि मन विचारों में ही बना रह सकता है। मन के बने रहने की संभावना वहाँ विचारों में ही है। शरीर वास्तविकता में हैं, लेकिन मन विचारों में ही बना रह सकता है और यही द्वैतता है। और तुम्हारे सभी धर्म शरीर के पक्ष में नहीं, वे मन के पक्ष में बने रहे हैं। इस संसार में यही सबसे बड़ा अवरोध हमेशा-हमेशा से ही अस्तित्व में बना रहा है। वे वास्तविकता और सत्यता के लिए नहीं हैं, वे मन के लिए हैं और उन्होंने मनुष्यता के पूरे मन को विषाक्त कर दिया है।
यदि मैं तुमसे कहता हूँः जब तुम भोजन कर रहे हो, तो स्वाद के साथ खाओ
और इतनी पूर्णता से खाओ कि खाने वाले को भूल जाओ और पूरी तरह से भोजन की प्रक्रिया ही बन जाओ-तो तुम्हें आश्चर्य होगा, क्योंकि कोई भी धार्मिक व्यक्ति इस तरह की बात नहीं कहेगा धार्मिक लोग सिखाते रहे हैं कि बिना किसी स्वाद के भोजन करो-अस्वाद व्रत, उन लोगों ने इससे एक महान चीज बना दिया है, अस्वाद के लिए प्रशिक्षण लेना।
गांधी के आश्रम में वहाँ तेरह नियम थे। उनमें से एक अस्वाद का था- खाओ, लेकिन बिना स्वाद के, स्वाद को पूरी तरह मार दो। जल पीओ- लेकिन बिना किसी स्वाद के। अपने जीवन को जितना अधिक असंवेदनशील बनाना संभव है, बनाओ। अपने शरीर को पूरी तरह निर्जीव बनाओ जिससे तुम एक शुद्व मन के बन सको। तुम ऐसे ही बन जाओगे लेकिन यही है वह चीज कि कैसे लोग पागलपन की ओर बढ़ते हैं।
मैं तुम्हें ठीक इसके विरोध में, ठीक इसके विपरित सिखाता हूँ। मैं जीवन के विरूद्व नहीं हूँ और जीवन ही मार्ग है। मैं जीवन को उसकी समग्रता

में स्वीकार करता हूँ। मैं एक निषेधक नहीं हूँ मैं परित्याग करने वाला नहीं हूँ, और मैं तुम्हारे मन को वापस वास्तविकता में लाना चाहता हूँ।
तुम्हारे मन की अपेक्षा तुम्हारा शरीर कहीं अधिक सत्य और वास्तविक है। तुम मन के साथ मूर्ख बन सकते हो लेकिन तुम शरीर के साथ मूर्ख नहीं बन सकते।
शरीर संसार में कहीं अधिक जड़े जमाये हुए है और तुम्हारे मन की अपेक्षा शरीर कहीं अधिक अस्तित्वगत है। तुम्हारा मन केवल मानसिक है। वह सोचता है, वह शब्दों को बुनता हैं और वह व्यवस्थाएँ सृजित करता है- और सभी व्यवस्थाएँ मूर्खतापूर्ण है।
एक बार ऐसा हुआ कि मुल्ला नसरूद्ीन घुड़दौड़ में दाँव लगा रहा था। पहली दौड़ में वह हार गया, दूसरी और तीसरी दौड़ में भी उसका घोड़ा पराजित हो गया और वह दाँव हारता चला गया और ठीक उसकी बगल में बाक्स में बैठी दो महिलाएँ प्रत्येक दौड़ में निरंतर जीत रही थी
तब सातवीं बार वह अपनी उत्सुकता को न रोक सका। वे लोग किस पद्धति का अनुसरण कर रही थीं? प्रत्येक दौड़ में वे विजयी रही थीं और यह सातवी दौड़ थी, और वह अभी तक हारता रहा था और वह उस पर इतना कठोर श्रम करता रहा था। इसलिए साहस एकत्रित कर वह उनकी ओर झुका और महिलाओं से कहा: "आप लोग बहुत अच्छी प्रकार खेल रही है?"
उन्होनें बहुत प्रसन्नता से कहा- "हाँ", और वे प्रसन्नता से मुस्कराये जा रही थीं। इसलिए उसने उनसे फुसफुसाते हुए पूँछा: "क्या आप मुझे अपनी पद्वति के बारे में बता सकती हैं? केवल एक संकेत।"
एक महिला ने हँसते हुए कहा: हमारे पास ढेर सारी रीतियाँ है, लेकिन आज
हम लोगों ने लम्बी दुम वाले घोड़ों पर दाँव लगाया है।"
लेकिन सारी पद्वतियाँ और सारे तत्वज्ञान ठीक उसी के समान हैं- लम्बी पूंछे। वास्तविकता में कोई भी पद्वति सत्य नहीं है। क्योंकि यथार्थ में कोई भी पद्वति सत्य नहीं हो सकती है। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि कोई ओैर पद्वति हो सकती है-नहीं। सत्यता के प्रति कोई भी पद्वति प्रामाणिक नहीं हो सकती, क्योंकि सभी पद्वतियाँ मन के द्वारा भावों और विचारों द्वारा अभिव्यक्त की गई हैं, वे तुम्हारे मन की कल्पनाओं और व्याख्याओं द्वारा गढ़ी गई हैं- मन वास्तविकता पर कार्य कर रहा हैं। इसी तरह से एक पद्वति अथवा एक व्यवस्था का जन्म होता है और सारी व्यवस्थाएँ मिथ्या हैं।
यथार्थ को किसी पद्वति की जरूरत नहीं है। वास्तविकता को एक स्पष्ट अंर्तदृष्टि की जरूरत है। उसकी ओर देखने के लिए किसी तत्वज्ञान की जरूरत नहीं है, वह ठीक अभी और यही हैं। इसके पूर्व कि तत्वज्ञान अर्थात दर्शनशास्त्र में जाना शुरू करो, वह वहाँ है, जब तक तुम वापस लौटते हो, वह वहाँ होगी और वह तुम्हारे साथ हमेशा बनी रहेगी- और तुम उस बारें में सोच विचार कर रहे थे। उसके बारे में सोचना, उससे चूक जाने का मार्ग हैं।
यदि तुम एक हिंदू हो, तो तुम विफल होगे, यदि तुम एक ईसाई हो, तो तुम विफल होगे, तुम एक मुसलमान हो, तो तुम विफल होगे- प्रत्येक सम्प्रदाय का होना ही विफल होने या चूकने का एक ढंग है। यदि तुम्हारे पास तुम्हारे मन में कुरान है, तुम चूकोगे, यदि तुम्हारे पास तुम्हारे मन में गीता है, तुम चूकोगे, तुम चाहे जो भी धर्मग्रंथ साथ लिए हुए चलो-चूकि धर्मग्रंथ मन है, इसलिए वास्तविकता तुम्हारे मन और तुम्हारे मन द्वारा गढ़ी गई झूठी बातों की जरा भी फिक्र नहीं करती और वास्तविकता मन के साथ एक रेखा में नीचे नहीं उतरती।
तुम आकर्षक सिद्वांत बुनते हो, तुम सुंदर तर्क देते हो, और तर्क द्वारा ही किसी भी विषय को सत्य सिद्व करने के प्रमाण खोज लेते हो। तुम कठोर श्रम करते हो। तुम अपने सिद्धांतों को सुधारते हुए उन पर रंग-रोगन किये चले जाते हो, लेकिन वे ठीक उन ईटों की तरह हैं जिन्हें तुम रगड़ते हुए उन पर पालिश किये चले जाते हो, लेकिन वे कभी भी एक दर्पण नहीं बन सकती। लेकिन मैं कहता हूँ कि हो सकता है कि ईंटे एक दर्पण बन सकती हैं, पर मन कभी भी यथार्थ सत्यता के लिए एक दर्पण नहीं बन सकता। मन एक धवस्त करने वाली एक चीज है और वह प्रत्येक चीज को धुंधला बना देती है।
वृफप्या एक दार्शनिक मत बनो, और किसी भी पद्वति के आदी मत बनो। एक शराबी को नशे से वापस लाना आसान है, एक नशीली दवाओं के भी आदी व्यक्ति को

भी वापस लाना सरल है, पर किसी पद्वति अथवा व्यवस्था के प्रति आदी हो जाने वाले व्यक्ति को वापस लाना कठिन है। और वहाँ शराब के आदी तथा नशीली दवाओं के आदी व्यक्तियों को नशे से वापस लाने के लिए कई संस्थाएँ विद्यमान हैं, पर व्यवस्था अथवा किसी पद्वति के प्रति आदी हो जाने व्यक्तियों के लिए वहाँ कोई भी संस्था नहीं है, और वहाँ हो भी नहीं सकती, क्योंकि जब कभी भी वहाँ एक ऐसी संस्था होती है तो वह स्वयं एक व्यवस्था है।
मैं तुम्हें कोई व्यवस्था नहीं दे रहा हूँ। मेरा पूरा प्रयास तुम्हें तुम्हारे व्यवस्था करने वाले मन से बाहर निकाल कर लाने का है। यदि तुम फिर से एक बच्चा बन सको, यदि तुम वास्तविकता की ओर उस बारे में बिना किसी पूर्वधारणाओं के देख सको, तो तुम उसे प्राप्त करोगे। यह सरल है, सामान्य है और इस बारे में विशेष कुछ भी नहीं है। वास्तविकता कुछ भी विशिष्ट और असाधारण नहीं है- वह वहाँ है और हर कहीं है। केवल तुम्हारा मन ही एक नकली और अवास्तविक चीज है। मन भ्रांति और माया सृजित करता है, मन सपने सृजित करता है और तब तुम उनमें दुविधा में पड़ जाते हो। और तुम उस असंभव को करने का प्रयास करते हो, जो नहीं किया जा सकता है और मन के द्वारा सत्य को पाने का प्रयास करते हो। तुम मन के द्वारा सत्य को खो देते हो। तुम उसे मन के द्वारा नहीं पा सकते हो। तुम्हें मन को पूरी तरह से छोड़ना होगा।
हाँ, मार्ग ठीक तुम्हारी आँखों के सामने है- लेकिन तुम वहाँ नहीं हो। पहिली बातः मन सहायता नहीं करेगा। इसे समझने का प्रयास करो, वह एक रूकावट है, एक अवरोध है। और दूसरी बातः तुम्हारी स्वयं अपने बारे में बहुत अधिक दिलचस्पी है और वह सबसे बड़ी बाधा है। यह मेरा निरंतर निरीक्षण रहा है कि वे लोग जो ध्यान करते हैं, वे चूक जाते हैं क्योंकि उनकी स्वयं में बहुत अधिक दिलचस्पी होती है। वे बहुत अहंकार केन्द्रित होते हैं। वे विनम्र होने का बहाना बना सकते हैं और हो सकता है कि वे यह भी जानना चाहते हैं कि अहंकार शून्य कैसे बना जाये, लेकिन वे लोग सबसे अधिक अहंकार केन्द्रित हैं, उनकी चिंता स्वयं अपने बारे में होती है और उनकी दिलचस्पी केवल स्वयं अपने ही साथ होती है।
दूसरों के बारे में फिक्र करना मूर्खता है और स्वयं के बारे में चिंताकरना और अधिक मूर्खता है- क्योंकि चिंतित बने रहना ही मूर्खता है। इस बारे में फर्क नहीं पड़ता कि तुम किसके बारे में चिंतित हो। और वे लोग जो दूसरों के बारे में चिंतित होते हैं, तुम पाओगे कि वे हमेशा अधिक स्वस्थ रहते हैं।
इसलिए पश्चिम में मनोविश्लेषक लोगों की दूसरों के बारे सोचने में सहायता करते हैं और स्वयं अपने बारे में सोचना छोड़ने को कहते हैं। इसलिए पश्चिम में मनोविश्लेषक लोगों को यह सिखाये चले जाते हैं कि कैसे अंतर्मुखी न बनकर बहिर्मुखी बना जाए, क्योंकि एक अंतर्मुखी व्यक्तिरूग्ण हो जाता है। एक अंतर्मुखी व्यक्ति वास्तविकता में दूषित और विकृत हो जाता है। वह निरंतर स्वयं अपने बारे में ही सोचता है, वह एक चहारदीवारी बनाकर अपने को बंद कर लेता है। वह अपनी निराशाओं, चिंताओं, व्यग्रताओं, दुःख, अवसाद, क्रोध, ईर्ष्या, घृणा अथवा इसके और उसके साथ बना रहता है और वह केवल चिंतित बना रहता है। जरा सोचो, वह निरंतर वस्तुओं और व्यक्तियों के बारे में चिंता करते हुए किस तरह के दुःख में जीता है? वह सोचता रहता है कि मैं क्रोधित क्यों हूँ, और मुझे कैसे अक्रोध में बने रहना चाहिए? मैं घृणा क्यों करता हूँ और मुझे कैसे इसके पार जाना चाहिए? मैं इतना अधिक निराश और अवसादग्रस्त क्यों रहता हूँ और मुझे कैसे आनंद को उपलब्ध होना चाहिए?- वह निरंतर चिंतित बना रहता है और इस चिंता के द्वारा वह ऐसी ही समान चीजें सृजित करता है और फिर उनके बारे में चिंतित हो जाता है। यह एक दुष्चक्र बन जाता है।
क्या तुमने कभी इस बात का निरीक्षण किया है, कि जब कभी तुम निराश और अवसाद के पार जाना चाहते हो, अवसाद और अधिक गहन हो जाता है? जब कभी तुम क्रोधित नहीं बने रहना चाहते हो, तुम और अधिक क्रोधित हो जाते हो। जब कभी तुम उदास होते हो, तथा तुम और अधिक उदास नहीं बना रहना चाहते हो, तुम पर और अधिक उदासी उतरने लगती है। क्या तुमने इसका निरीक्षण नहीं किया है? ऐसा विपरीत परिणाम (त्मअमतेम मिमिबज) नियम के कारण होता हैं। यदि तुम उदास हो

और तुम उदास नहीं होना चाहते हो, तो तुम क्या करोगे? तुम उदासी की ओर देखोगे, तुम उसे दबाने का प्रयास करोगे, तुम उसके प्रति ध्यानपूर्ण बनोगे, और ध्यान देना ही उसका भोजन है।
मनोविश्लेषकों ने एक सूत्र पा लिया है। यह सूत्र अंत में बहुत अधिक अर्थपूर्ण नहीं रह जाता। यह तुम्हें वास्तविकता तक नहीं ले जाता। यह तुम्हें सामान्य रूप से अस्वस्थ बना सकता है। यह तुम्हें समायोजन करने वाला बना सकता है- यह एक तरह से चारों ओर के लोगों के साथ एक समझौता है। वे कहते है: दूसरों की परेशानियों और चिंताओं के साथ रूचि लो, दूसरे लोगों की सेवा और सहायता करो।
रोटरी और लाइन्स क्लब के सदस्य और अन्य दूसरे लोग हमेशा कहते हैं: "हम सेवा कहते हैं"। वे लोग बहिर्मुखी हैं। लेकिन तुम अनुभव करोगे कि जो लोग समाज सेवा में हैं और जिन लोगों की स्वयं अपने में कम और दूसरे लोगों में अधिक दिलचस्पी है, वे उन लोगों की अपेक्षा अधिक प्रसन्न रहते हैं जिनका स्वयं अपने साथ ही अधिक सम्बन्ध होता है।
स्वयं अपने ही साथ बहुत अधिक दिलचस्पी लेना एक तरह की रूग्णता है। और
तब तुम अपने अंदर जितनी अधिक गहराई में जाते हो- तुम वह "पंडोरा बाक्स" खोल रहे हो जिससे वह प्रक्रिया शुरू हो जाती है जो न सुलझने वाली अनेक समस्याओं का कारण बनती है, अनेक चीजें बुलबुलों के रूप में ऊपर सतह तक आती हैं और उनका कोई अंत होना प्रतीत नहीं होता। तुम अपनी व्यग्रताओं के द्वारा ही चारों ओर से घिरे हुए हो और तुम अपने ही घावों के साथ खेलते चले जाते हो, तुम यह देखने के लिए कि वे पूरे अथवा नहीं, बार-बार उन्हें छुए चले जाते हो। तुम एक दूषित व्यक्ति बन गए हो।
किया क्या जाए? इस बारे में केवल दो रास्ते प्रतीत होते हैं- या तो बहिर्मुखी बनो, लेकिन बहिर्मुखी बनने के द्वारा तुम कभी भी एक बुद्ध नहीं बन सकते, क्योंकि यदि तुम दूसरों के बारे में चिंतित हो तो यह दूसरों के बारे में चिंतित होना एक पलायन बन सकता है, और वह है। जब तुम दूसरों के बारे में चिंतित होते हो तो तुम अपनी परेशानियों की ओर नहीं देख सकते। तुम्हारे केन्द्र बिन्दु दूसरे लोग है, और तुम एक परछाई हो, लेकिन इस तरह से तुम्हारे अंदर का अस्तित्व कैसे विकसित होगा? तुम अधिक प्रसन्न दिखाई दोगे, तुम ऐसे दिखाई दे सकते हो जैसे मानो तुम जीवन का अधिक आनंद ले रहे हो, लेकिन तुम कैसे विकसित होते जा रहे हो। तुम्हारा आंतरिक अस्तित्व उस स्थिति तक कब आएगा, जब वह प्रकाश बन जाता है। यदि तुम्हारी उसके साथ जरा भी दिलचस्पी नहीं है, तो वह विकसित होने नहीं जा रहा है। बहिर्मुखी होना इस अर्थ में ठीक है कि तुम स्वस्थ बने रहते हो, तुम दूषित नहीं होते। अंर्तमुखी बनना खतरनाक है। यदि तुम गलत तरीके से गतिशील होते हो तो तुम दूषित अथवा विकृत हो जाओगे और गलत तरह से गतिशील होना तुम्हारा बहुत अधिक अभिरूचि लेना ही है। तब क्या किया जाए? स्वयं अपने साथ यों व्यवहार करो जैसे मानो तुम दूसरे व्यक्ति हो, उसमें बहुत अधिक अभिरूचि मत लो।
और तुम दूसरे व्यक्ति ही हो। तुम्हारा शरीर भी दूसरा है वह मेरा अपना निजी शरीर नहीं है? तुम्हारा मन भी दूसरा है, वह मेरा अपनी निजी मन क्यों नहीं है? प्रश्न केवल दूरी का है, तुम्हारा शरीर मेरे से पाँच फीट दूर है, मेरा शरीर थोडा- सा अधिक निकट है, बस सभी कुछ इतना ही है। वहाँ तुम्हारा मन है और यहाँ मेरा मन हैं- अंतर केवल दूरी का है। लेकिन मेरा मन वैसे ही दूसरा है जैसे तुम्हारा मन है, और मेरा शरीर मुझसे उतना ही दूर है जैसे कि तुम्हारा शरीर। और यदि इस पूरे संसार से मेरा कोई संबंध नहीं है तो मुझे स्वयं को एक संबंध क्यों बनाते हो? दोनों को ही क्यों नहीं छोड़ देते और न बहिर्मुखी बनो और न अंर्तमुखी- और यही मेरा संदेश है।
यदि तुम इसका अनुसरण नहीं कर सकते तब अच्छा है कि मनोविश्लेषकों का अनुसरण करो। एक बहिर्मुखी बनो, स्वयं में अभिरूचि मत लो, तुम विकसित तो न हीं हो सकोगे लेकिन कम से कम तुम उतने अधिक कष्ट नहीं उठाओगे जितने अधिक कष्ट एक अंर्तमुखी को भोगने होते हैं। लेकिन एक अंतर्मुखी मत बनो और अपने घावों के साथ मत खेलो। स्वयं में बहुत अधिक दिलचस्पी मत लो। बहुत अधिक स्वार्थी मत बनो और न बहुत अधिक आत्मकेन्द्रित बनो। तुम स्वयं को एक दूरी

से देखो, दूरी वहाँ है और केवल एक बार तुम्हें उसका प्रयास करना है। और तुम उसे अनुभव करोगे। तुम दूसरे भी हो।
जब तुम्हारा शरीर रूग्ण होता हैं तो उसे यों लो, जैसे मानो किसी अन्य व्यक्ति का शरीर रूग्ण है। जो कुछ भी जरूरी हो वह करो, लेकिन बहुत अधिक संबंध मत जोड़ो, क्योंकि उसमें बहुत अधिक दिलचस्पी लेना शरीर की रूग्णता की अपेक्षा और अधिक बड़ी रूग्णता है। यदि तुम्हें बुखार है तो डाक्टर के पास जाओ और दवा लो, और शरीर की देखभाल करो, और सब कुछ इतना ही करना है। बहुत अधिक संबंध जोड़ने से क्या लाभ? क्यों एक दूसरी तरह का ज्वर सृजित करते हो, जिसका कोई भी डॉक्टर उपचार नहीं कर सकता है? शरीर के इस ज्वर का तो उपचार किया जा सकता हैं, लेकिन यदि तुम उसमें अत्यधिक दिलचस्पी लेने लगते हो तो दूसरी तरह का ज्वर उत्पन्न हो जाता है। यह ज्वर कहीं अधिक गहन है और कोई भी डॉक्टर इसमें सहायता नहीं कर सकता है।
और यही समस्या है, शरीर तो शीघ्र ही ठीक हो सकता है, लेकिन दूसरा ज्वर जारी बना रह सकता हैं, और तुम अनुभव कर सकते हो कि शरीर अभी भी रूग्ण है। ऐसा प्रत्येक दिन होता है। बीमारी शरीर से विलुप्त हो जाती है, लेकिन मन से नहीं और मन उसे साथ लिए हुए चलता है। ऐसा अनेक बार हुआ है।
एक बार कोई व्यक्ति मुझे अपने एक मित्र के बारे में बता रहा था, जो एक शराबी है- वह बैसाखियों के सहारे चलता है और उनके बिना वह चल भी नहीं सकता। कोई दुर्घटना बीस वर्ष पूर्व हुई थी और अनेक वर्षां से वह बैसाखियों के सहारे ही चलता रहा है। तब एक दिन उसने बहुत अधिक शराब पी ली, वह बैसाखियों को भूल गया और टहलने के लिए चल पड़ा। एक घंटें के बाद वह एक दहशत में दौड़ता हुआ वापस लौटा और उसने कहा: "मेरी बैसाखियाँ कहाँ है? मैं उनके बिना चल नहीं सकता। मैंने अनिवार्य रूप से बहुत अधिक शराब पी ली है।" लेकिन यदि तुम नशे में गाफिल हो, तो तुम चल सकते हो, तो फिर जब तुम नशे में नहीं हो तो बिना बैसाखियों के क्यों नहीं चल सकते"।
पूरे विश्व भर में लकवे के बारे में अनेक मामले जानकारी में आए हैं। कोई व्यक्ति लकवाग्रस्त है और तब घर में आग लग जाती है, और प्रत्येक व्यक्ति दौड़कर घर से बाहर आ जाता है और वह व्यक्ति जो लकवाग्रस्त था और अपने बिस्तर से उठ भी नहीं सकता था और प्रत्येक कार्य बिस्तर पर ही करता था, वह भी दौड़कर बाहर आ जाता हैं, क्योंकि वह अपने लकवाग्रस्त होने की बात भूल जाता है। घर में आग लगी हुई है, वह पूरी तरह से भूल जाता है कि वह लकवाग्रस्त हैं। इस विस्मरण में वह लकवाग्रस्त नहीं है। और घर के बाहर जब परिवार उसे देखता है और उससे कहता है, तुम यह क्या कर रहे हो? तुम कैसे दौड़ सके? उसकी याददाश्त वापस आ जाती है औरंवह नीचे गिर पड़ता हैं।
तुम हो सकता है अनेक बीमारियाँ सृजित कर रहे हो, इसलिए नहीं कि शरीर रूग्ण है, बल्कि इसलिए क्योंकि मन उसका बीज साथ लेकर चल रहा है और बार-बार कल्पनाएँ किए चले जाता है। अनेक बीमारियाँ, नब्बे प्रतिशत बीमारियों का स्त्रोत मन में है।
स्वयं अपने बारे में बहुत अधिक दिलचस्पी लेना संभव बीमारियों में सबसे अधिक बड़ी बीमारी है। तुम प्रसन्न नहीं रह सकते, तुम स्वयं में आनंद नहीं ले सकते। तुम कैसे आनंद ले सकते हो? तुम्हारे अंदर इतनी अधिक समस्याएं हैं। समस्याएँ ही समस्याएँ हैं और अन्य कुछ भी नहीं और इस बारे में प्रतीत होता है कि उनका कोई भी हल नहीं है। क्या किया जाए? तुम पागल हो जाते हो। अपने अंदर प्रत्येक व्यक्ति पागल है।
मैंने सुना है कि वाशिंगटन में एक बार ऐसा हुआ- कि एक व्यक्ति अचानक झंड़ा फहराने वाले पोल के ऊपर चढ़ गया। उसके चारों ओर एक भीड़ एकत्रित हो गई। पुलिस आ गई और वह जितनी अधिक जोर से चिल्ला सकता था चिल्लाया, उसने कलुषित और अधार्मिक शब्दों का उच्चारण किया और नीचे उतर आया।
वह तुरंत ही पुलिस के द्वारा पकड़ लिया गया और उन लोगों ने उस व्यक्ति
से पूछा: "तुम यहाँ यह क्या कर रहे हो?"
उस व्यक्ति ने कहा: "मुझे परेशान मत कीजिए। यदि मैं ऐसा पागलपन से भरा हुआ कार्य न करता तो मैं अभी अथवा बाद में पागल हो जाता। मैं कहता हूँ, मुझे रोकिए मत, वरना मैं पागल हो जाऊँगा। यदि मैं ऐसा कार्य अभी और बाद में भी करता हूँ तो प्रत्येक चीज सुचारू रूप से चलती रहेगी। और मैं नहीं सोचता

कि कोई भी व्यक्ति इसे जान भी पायेगा कि जहाँ चारो ओर इतना अधिक पागलपन चल रहा है तो कौन इसकी फिक्र करेगा ?"

तुम्हें भी अभी अथवा बाद में पागल होने की जरूरत है। क्रोध कैसे घटित होता है, क्योंकि क्रोध करना एक अस्थाई पागलपन है। यदि तुम अभी और बाद में उसको रिस कर बाहर निकलने की अनुमति नहीं देते तो तुम बहुत अधिक क्रोध इकट्ठा कर लोगे और उसका विस्फोट होगा। तुम पागल हो जाओगे। लेकिन यदि तुम्हारा निरंतर उसके साथ संबंध बना हुआ है तो तुम पहले ही से सनकी हो।

यह मेरा अपना निरीक्षण रहा है कि जो लोग ध्यान और प्रार्थना करते हैं जो सत्य के खोज करने का प्रयास करते हैं उनकी प्रवृत्ति दूसरे लोगों की अपेक्षा मानसिक रूग्णता की ओर अधिक होती है। और कारण है कि उनकी स्वयं के साथ दिलचस्पी बहुत अधिक होती है, वे लोग बहुत अधिक अहंकार केन्द्रित होते हैं और निरंतर इस और उस अवरोध के बारे में सोचते रहते हैं, वे क्रोध अथवा उदासी, सिरदर्द, कमरदर्द पैरों और पेट को लेकर निरंतर अपने ही अंदर गतिशील बने रहते हैं। वे कभी भी ठीक नहीं होते, वे हो भी नहीं सकते हैं, क्योंकि शरीर एक बहुत विराट घटना है और उसमें अनेक चीजें चलती रहती हैं।

और यदि कुछ भी नहीं हो रहा है, तब भी वे चिंतित होते हैं कि कुछ भी क्यों नहीं हो रहा है, और उन्हें तुरंत कुछ चीज सृजित करनी होती हैं, क्योंकि वह उनका निरंतर का कार्यव्यापार बन गया है, अन्यथा वे असफल होने का अनुभव करते हैं। क्या किया जाए? कुछ भी तो नहीं हो रहा है। यह कैसे संभव है कि मुझे कुछ भी नहीं हो रहा है। जब कुछ चीज हो रही है वे केवल तभी अपने अंहकार का अनुभव करते हैं - हो सकता है वह निराशा या अवसाद हो, उदासी, क्रोध अथवा कोई बीमारी हो, लेकिन यदि कुछ चीज घटित हो रही है तो ठीक है, वे स्वयं अपने होने का अनुभव कर सकते हैं।

क्या तुमने बच्चों को देखा है? वे स्वयं अपने अंदर सुई चुभोकर अथवा चिकोटी भरकर यह अनुभव करते है कि वे हैं। वह बच्चा तुम्हारे अंदर ही है, तुम अपने अंदर सुई चुभोकर यह देखना पसंद करते हो कि तुम हो अथवा नहीं हो।

मार्क ट्वेन के बारे में कहा जाता है कि एक बार एक रात्रि भोज में अचानक दहशत से ग्रस्त होकर उन्होंने कहा "मुझे खेद है कि मुझे जाना होगा और आप लोगों को एक डॉक्टर बुलाना होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि मेरा दायाँ पैर लकवाग्रस्त हो गया है।"

उसके बगल में बैठी हुई महिला ने हँसना शुरू कर दिया और कहा "आप फिक्र न करें। आप मेरे पैर में चिकोटी भरते रहे है।"

तब मार्क टुएन ने कहा " एक बार बीस वर्ष पूर्व एक डॉक्टर ने मुझसे कहा था -"किसी न किसी दिन आपका दाहिना भाग लकवा ग्रस्त हो जाएगा, इसलिए तभी से मैं स्वयं अपने शरीर में दिन में बीस या तीस बार चिकोटी भर कर यह अनुभव करता हूँ कि व

मैं चिकोटी भर रहा था ़ ़ ़ ़ ़ ़ वह किसी अन्य व्यक्ति के पैर में चुटकी भर रहा था।

लेकिन तुम चिकोटी ही क्यों भरे जाते हो? लकवा के साथ तुम्हारी इतनी अधिक दिलचस्पी क्यों है? यदि तुम्हें दिन में बीस अथवा तीस बार अपने पैर में चिकोटी भरना होता है, तो यह एक बीमारी से भी कहीं अधिक है। इसकी गिनती करो। यह लकवा मार जाने की अपेक्षा कहीं अधिक बुरा है। लकवा तो केवल एक बार ही घटित होता है और यह एक दिन में बीस अथवा तीस बार घटित हो रहा है। वे कहते है कि बहादुर व्यक्ति एक बार मरता है और कायर लोग लाखों बार मरते है - क्योंकि वे चिकोटी भरकर यह अनुभव किए चले जाते हैं कि उनका अंग मृत है अथवा नहीं है।

तुम्हारी बीमारी तुम्हारे अहंकार को बने रहने में सहायता करती है। तुम अनुभव करते हो कि कुछ चीज घटित हो रही है, निश्चित रूप से वह आनंद अथवा परमानंद न होकर केवल उदासी ही क्यों न हो और तुम सोचते हो "कोई भी व्यक्ति ऐसा उदास नहीं है जैसा मैं हूँ, कोई भी व्यक्ति उतने अधिक अवसाद में नहीं है जैसा कि मैं हूँ और किसी को ऐसा माइग्रेन का दर्द नहीं है जैसा कि मुझे मिला है। इस बारे में तुम श्रेष्ठ होने का अनुभव करते हो और अन्य व्यक्ति तुमसे हीन है।

यदि तुम अपने साथ बहुत अधिक संबंध जोड़ लेते हो तो स्मरण रहे कि तुम उपलब्ध नहीं होगे। यह आवश्यकता से अधिक संबंध जोड़ने से तुम एक बाड़े में

बंद हो जाओगे, और मार्ग ठीक तुम्हारी आँखों के सामने है। तुम्हें अपनी आँखें बंद न रखकर उनको खोलना होगा।
अब इस बोध कथा को समझने का प्रयास करो।
एक उत्सुक भिक्षु द्वारा एक सद्गुरू से पूछा गया:
मार्ग क्या है?
पहली बार तो यह समझने जैसी है कि भिक्षु एक खोजी नहीं है, वह केवल उत्सुक है। यदि तुम एक खोजी हो तो तुम एक भिन्न ढंग से जाँच पड़ताल करते हो। तुम अपनी आत्मा के साथ जाँच पड़ताल करते हो, तुम स्वयं अपने को दाँव पर लगा देते हो और तुम एक जुआरी बन जाते हो। यदि तुम सामान्य रूप से उत्सुक हो तो वह केवल एक खुजली के समान हैं, तुम अपने मन में एक सूक्ष्म खुजली का अनुभव करते हो, लेकिन वह कुछ भी नहीं है। तुम्हारा वास्तव में उसके साथ कोई संबंध नहीं हैं, तुम उसके बारे में ईमानदार नहीं हो- उत्तर चाहे कुछ भी हो तुम फिक्र नहीं करोगे। वह तुम्हें बदलेगा नहीं। और एक उत्सुक व्यक्ति एक उथला व्यक्ति होता है। तुम ऐसे प्रश्नों को मात्र कौतूहल के कारण नहीं पूछ सकते, तुम्हें उन्हें एक बहुत प्रामाणिक खोज के लिए पूँछना होगा। और जब तुम एक सद्गुरू के पास जाते हो, तुम अनुभव करते हो कि तुम्हें कोई बात पूँछनी है, अन्यथा कोई सोचेगा कि तुम मूर्ख हो।
मेरे पास अनेक लोग आते हैं और मैं जानता हूँ कि वे कहाँ से पूँछ रहे हैं। कभी-कभी उन लोगों में सामान्य-सी उत्सुकता होती है, क्योंकि अब वे आ गए हैं तो उन्हें कुछ पूँछना ही होगा अन्यथा वे लोग मूर्ख समझे जायेंगे। और पूँछने के द्वारा ही वे यह सिद्ध करते हैं कि वे मूर्ख हैं, क्योंकि यदि वास्तव में प्रश्न तुम्हारे अंदर उत्पन्न नहीं हुआ है, यदि वह प्रश्न एक गहन जिज्ञासा नहीं बन जाता है, यदि प्रश्न पर प्रत्येक चीज दाँव पर नहीं लगाई गई हैं, यदि वह समस्या जीवन और मृत्यु की समस्या नहीं है, यदि तुम उत्तर के द्वारा रूपांतरित होने के लिए तैयार नहीं हो, तो यदि तुम प्रश्न पूँछते हो तो तुम मूर्ख हो। और यदि तुम हृदय से प्रश्न नहीं कर रहे हो, तो कोई भी उत्तर देना कठिन है। और यदि उत्तर दिया भी जाता है तो उसे तुम गलत समझोगे।
वह भिक्षु एक उत्सुक भिक्षु था और इसी कारण इस बोधकथा के अंत तक वह नहीं जागता है, हमने अनेक बोधकथाओं का अध्ययन किया है, जब खोज सच्ची होती है तो अंत में एक विशिष्ट बुद्धत्व की झलक मिलती है और सटोरी घटित होती है। अचानक एक शिष्य सजग हो जाता है जैसे मानो किसी व्यक्ति ने उसे हिलाकर नींद के बाहर ला दिया हो। एक स्पष्टता आती है। हो सकता है कि वह केवल एक क्षणभर के लिए हो, लेकिन बादल छँट गए हैं और विशाल आकाश दिखाई दे रहा है। बादल फिर आयेंगे, पर इसमें कोई भी समस्या नहीं है, लेकिन अब तुम जानते हो कि वास्तविक आकाश कैसा होता है और तुम उसका बीज अपने अंदर साथ लिए हुए चलोगे। ठीक तरह से देखभाल करने पर यह बीज एक वृक्ष बन जाएगा और हजारों लोग तुम्हारे नीचे शरण पाने और विश्राम करने में समर्थ होंगे। लेकिन यदि तुम्हें केवल कौतुहल है तो कुछ भी घटित नहीं होगा। यदि तुम उत्सुक हो तो प्रश्न तुम्हारे हृदय से नहीं आया है। वह एक बुद्धिगत खुजली है- और मन में बीजों को नहीं बोया जा सकता।
जीसस के पास एक बोध- कथा है, जिसके बारे में वह निरंतर बात करते हैं।
एक किसान बीज बोने के लिए गया और उसने केवल उन्हें यहाँ और वहाँ फेंक दिया। कुछ बीज सड़क पर जा गिरे, और वे कभी भी अंकुरित नहीं हुए क्योंकि सड़क का तल कठोर था और बीज मिट्टी तक नहीं पहुँच सके, वे गहराई तक जा ही नहीं सके और भूमि के अंधकारमय क्षेत्र में नहीं पहुँचे... क्योंकि केवल सघन अंधकार में ही वहाँ जन्म घटित होता है और केवल वहीं परमात्मा अपना कार्य करना प्रारम्भ करता है। वह कार्य एक गुप्त कार्य है और वह छिपा हुआ है।
कुछ बीज सड़क के किनारे गिरे। वे अंकुरित हुए, लेकिन जानवरों ने उन्हें कुचल दिया। केवल कुछ ही ठीक भूमि में गिरे, वे न केवल अंकुरित हुए, बल्कि विकसित होकर वे अपनी पूरी ऊँचाई तक पहुँचे, वे फूले-फले और उन्होंने पूरा कार्य सम्पन्न किया और एक बीज से लाखों बीज उत्पन्न हुए।
यदि तुम उत्सुकता से पूँछते हो, तो तुम सड़क से पूँछ रहे हो। यह सिर केवल एक सड़क है, और उसे वैसा ही होना भी है, उसमें विचारों का निरंतर

यातायात चल रहा है। उसे कंक्रीट की भाँति बहुत अधिक कठोर होना ही है। जितना यातायात तुम्हारे सिर के अंदर होता है, उतना तो तुम्हारी सड़कों पर भी नहीं होता। बहुत तेज गति से अनेक विचार यहाँ से वहाँ जा रहे हैं। हम अभी तक विचारों की अपेक्षा तेज गति के किसी भी वाहन की ईजाद करने में समर्थ नहीं हुए हैं। हमारे विचारों की गति की अपेक्षा हमारे तीव्रतम गति से चलने वाले वाहन भी कुछ नहीं हैं। तुम्हारी अंतरिक्ष यात्री चन्द्रमा पर पहुँच सकते हैं लेकिन वे भी विचारों की गति तक नहीं पहुँच सकते है। वे समय लेंगे, तुम विचारों में सामान्य रूप से तुरंत चन्द्रमा पर पहुँच सकते हो। विचारों के लिए यह ऐसा है, जैसे मानो स्थान अस्तित्व में ही न हो: एक क्षण में तुम यहाँ हो सकते हो, अगले ही क्षण लंदन में और फिर न्यूयार्क में हो सकते हो और कर सकते हो। इतना अधिक यातायात ◌़ ◌़ ◌़ ◌़ ◌़ ◌़ ◌़ सड़क लगभग कंक्रीट की है, वहाँ कोई भी बीज फेंको, वह कभी अंकुरित नहीं हो सकता।

उत्सुकता सिर अथवा मन से ही आती है। एक सद्गुरू से कोई भी बात पूँछना ठीक इस तरह है, जैसे मानो तुम्हारा बाजार में उससे आमना-सामना हो गया हो और तुम उससे कुछ पूँछ रहे हो। मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ। मैं बहुत अधिक यात्राएँ करता था और ऐसे लोगों से बचना एक समस्या थी। प्लेटफार्म पर भी मैं तो एक ट्रेन पकड़ने जा रहा हूँ और वे लोग मेरे साथ-साथ चल रहे हैं और वे पूँछेगें: "परमात्मा के बारे में क्या है? परमात्मा अस्तित्व में है अथवा नही?" ये लोग उत्सुक हैं और वे मूर्ख हैं। कभी भी उत्सुकता के कारण कोई प्रश्न मत पूँछो, क्योंकि वह व्यर्थ है और वह तुम्हारा समय और दूसरों का भी समय व्यर्थ नष्ट करना है।

यदि किसी व्यक्ति ने सद्गुरू से यह प्रश्न ठीक अपने हृदय से पूँछा होता तो कथा का अंत भिन्न हुआ होता। उस व्यक्ति की खिलावट सटोरी में हुई होती और वहाँ एक कार्य पूरा हो जाता। लेकिन वहाँ इस तरह का कोई अंत नहीं हैं क्योंकि वास्तविक शुरूआत ही गलत थी। एक सद्गुरू तुम्हें उत्तर करूणा के कारण देता है। वह भली-भाँति जानता है कि तुम उत्सुक हो - लेकिन कौन जाने यह हो सकता है, कभी संयोग भी घटित होते हैं और कभी-कभी उत्सुक लोग भी प्रामाणिक रूप से अभिरूचि लेने लगते हैं। यह कोई भी नहीं जानता है।

एक उत्सुक भिक्षु द्वारा एक सद्गुरू से पूँछा गया-"मार्ग क्या है?"

सद्गुरू ने कहा: "वह ठीक तुम्हारी आँखों के सामने है।"

यह असंगत है, क्योंकि यदि वह ठीक तुम्हारी आँखों के सामने है, तब लोग उसे क्यों खोजते हैं, क्यों वे लोग अन्वेषण करते हैं? और वे स्वयं उसे क्यों नहीं देख सकते?

थोड़ी-सी बातें समझ लेने जैसी हैं। पहली बातः एक चीज जितनी निकट होती है, उसे देखना उतना ही अधिक कठिन होता हैं। यदि वह सबसे अधिक निकट हो उसे देखना लगभग असंभव है, क्योंकि आँखों को देखने के लिए एक विशिष्ट अंतराल और ग्रास्यपूर्ण चेतना की जरूरत होती है। मैं तुम्हें देख सकता हूँ लेकिन यदि तुम और निकट, निकट से निकटतम आते चले जाते हो तो प्रत्येक चीज धुँधली होती जाएगी, तुम्हारा चेहरा धुँधला हो जाऐगा और रूप रेखाएँ अपनी आकृति खो देती है। और यदि मैं निकट आता चला जाऊँ और अपनी आँखें तुम्हारे चेहरे पर रख दूं, तो कुछ भी दिखाई नहीं देगा और तुम्हारा चेहरा एक दीवार बन जाएगा। लेकिन तब भी थोड़ा-सा देख सकता हूँ क्योंकि थोड़ी-सी दूरी वहाँ बनी रहेगी।

इतना ही नहीं, तुम्हारे और वास्तविकता के मध्य में काफी दूरी मौजूद है। वह ठीक तुम्हारी आँखों को छू रही है, वह ठीक तुम्हारी त्वचा का स्पर्श कर रही हैं - केवल इतना ही नहीं यह तुम्हारी त्वचा में प्रविष्ट हो रही है। वह तुम्हारे रक्त में गतिशील हैं। वह तुम्हारे हृदय की धड़कनों में धड़क रही है। वह तुम ही हो। मार्ग केवल तुम्हारी आँखों के सामने ही नहीं हैं। तुम ही मार्ग हो। तुम उसके साथ एक हो। पथिक, पथ से पृथक नहीं है, वास्तविकता में नहीं, वे एक ही हैं।

इसलिए उसे कैसे देखा जाए? न कोई ग्राह्यशील चेतना और न अंतराल...? यदि तुम एक स्पष्ट बुद्धि और समझ की स्पष्टता को उपलब्ध नहीं हुए हो, तो तुम उसे देखने में समर्थ नहीं होगे। वहाँ दूरी नहीं है, इसलिए देखने के सामान्य ढ़ंग से काम नहीं चलेगा, तुम्हें एक असाधारण सचेतनता की जरूरत है, बहुत असामान्य रूप से सजग बने रहने के लिए तुम्हारे

अंदर कुछ भी सोया हुआ न हो। अचानक द्वार खुलता है। मार्ग वहीं है- तुम ही मार्ग हो। लेकिन तुम इसलिए चूक जाते हो, क्योंकि वह पहले से ही वहाँ है। जब तुम जन्मे थे, वह उससे पूर्व ही हमेशा से ही बना हुआ है। तुम मार्ग पर, मार्ग में, मार्ग के लिए और मार्ग से ही जन्मे थे- क्योंकि मार्ग ही तुम्हारी वास्तविकता है।
स्मरण रहे, यह मार्ग किसी लक्ष्य तक नहीं जाता है, यह मार्ग ही लक्ष्य है। इसलिए वास्तव में वहाँ कोई भी यात्रा नहीं है, केवल सजग बने ठहरे रहना है, कोई भी कार्य न करते हुए स्थिर और शांत बने रहना है, केवल एक स्पष्टता, एक सचेतनता और एक शांत शीतल समझ बने रहना है।
सद्गुरू ने कहा: "वह ठीक तुम्हारी आँखों के सामने है।"
भिक्षु ने पूँछा: "तो मैं स्वयं उसे क्यों नहीं देख पाता?"
जब तुम कौतूहल से भरे हुए हो, तो प्रत्येक उत्तर दूसरे प्रश्न सृजित करेगा, क्योंकि उत्सुकता कभी भी संतुष्ट नहीं हो सकती। जाँच-पड़ताल संतुष्ट हो सकती है, जाँच पड़ताल का एक अंत आ सकता है, और किसी निष्कर्ष तक पहुँचा जा सकता है, लेकिन उत्सुकता कभी नहीं, क्योंकि तुम उसी उत्सुक मन को फिर उत्तर तक ले आते हो, और उससे एक नया प्रश्न फिर से बाहर आ जाता है। तुम उस एक व्यक्ति को संतुष्ट कर सकते हो जो वास्तव में जाँच अपना अन्वेषण कर रहा हो, पर उस व्यक्ति को संतुष्ट नहीं किया जा सकता जो सामान्य रूप से पूँछ रहा हो- "तो मैं स्वयं उसे क्यों नहीं देख पाता?"
एक दूसरी बातः एक उत्सुक व्यक्ति का नीचे गहराई में वास्तविकता के साथ कोई भी संबंध नहीं होता, उसकी दिलचस्पी केवल स्वयं अपने में होती है। वह कहता है: "तो मैं स्वयं उसे क्यों नहीं देख पाता। आप उसे क्यों देख सकते हैं और मैं उसे क्यों नहीं देख सकता? मैं आप पर विश्वास नहीं कर सकता, मैं आस्था नहीं कर सकता, और यदि वह ठीक मेरी आँखों के सामने है, तब मैं उसे क्यों नहीं देख सकता?"
सद्गुरू ने कहा: "क्योंकि तुम स्वयं अपने बारे में सोच रहे हो।"
मार्ग वहीं है, और तुम स्वयं अपने बारे में सोच रहे हो: "मैं उसे क्यों नहीं देख सकता?" कोई भी व्यक्ति नहीं देख सकता, जो अहंकार से इतना अधिक भरा हुआ हो। क्योंकि अहंकार का अर्थ है- तुम्हारा पूरा अतीत, वह सभी कुछ जिसका तुमने अनुभव किया है, उन सभी नियमों, अनुशासनों और आदतों जिनमें ढलकर तुम्हारा पालन पोषण हुआ, वह सभी कुछ जो तुमने जाना, जिसका अध्ययन किया, जिसे संग्रहीत किया और इकट्ठी की गई वे सभी सूचनाएं, धर्मग्रंथ और ज्ञान, इन सभी को उठाकर पृथक रख दो, यह पूरा ढ़ेर और यह सभी कुछ ही तुम्हारा अहंकार है, और यदि तुम्हारा उसके साथ सम्बन्ध है, तो तुम उसे नहीं देख सकते।
एक सद्गुरू जो कुछ भी कहता है, प्रत्येक उत्तर एक सटोरी की ओर ले जा सकता है, यदि वह व्यक्ति ठीक है। ठीक पहिली बात, जब उसने कहा: वह ठीक तुम्हारी आँखों के सामने है,- यदि ठीक व्यक्ति वहाँ रहा होता, तो उसे सुनकर ही वह बुद्धत्व को उपलब्ध हो जाता। लेकिन वह चूक गया, अन्यथा अगला वक्तव्य एक समझ बन गया होता।
उसने कहा: "तो मैं स्वयं उसे क्यों नहीं देख पाता?"
लेकिन नहीं। उत्सुकता संतुष्ट नहीं हो सकती,, उसका अंत कभी नहीं आता है। अचानक जब कभी तुम किसी व्यक्ति के "मैं" को छू देते हो, वह तुम पर कूद पड़ता है। उसने कहा:
" क्या है़़़़
क्या आप उसे देखते हैं?"
अहंकार हमेशा महसूस करता है। यदि मैं उसे नहीं देख सकता, तो कोई अन्य व्यक्ति उसे कैसे देख सकता है? अहंकार कभी भी अनुभव नहीं कर सकता कि कोई अन्य व्यक्ति निःअहंकार हो सकता है: असंभव है। और यदि तुम इसे अनुभव कर सकते हो, तो तुम्हारा अहंकार पहले ही मरना शुरू हो गया है। यदि तुम यह अनुभव कर सकते हो कि कोई व्यक्ति निर्हंकार हो सकता है तो तुम्हारी पकड़ पहिले ही ढीली हो जाती है। अहंकार तुम्हें यह अनुभव करने की अनुमति नहीं देता कि कोई भी व्यक्ति कभी भी बिना अहंकार के हुआ है। और अपने अहंकार के कारण ही तुम दूसरों पर अहंकारों का प्रक्षेपण किए चले जाते हो।

जीसस के बारे में अनेक पुस्तकें लिखी गई हैं- किसी अन्य व्यक्ति के बारे में लिखी गई पुस्तकों की अपेक्षा कहीं अधिक पुस्तकें लिखी गई हैं, और अनेक पुस्तकें यह सिद्ध करने का प्रयास करती हैं कि जीसस को अनिवार्य रूप से एक बहुत बड़ा अहंकारी होना चाहिए, क्योंकि वह यह कहे चले जाते हैं- "मैं ही परमात्मा का पुत्र हूँ, मैं और मेरे पिता एक हैं।" वह कह रहे हैं: मैं ही परमात्मा हूँ। कई मनोविश्लेषकों ने यह व्याख्या करने का प्रयास किया है कि वह एक मनोरोगी थे। तुम यह कैसे कह सकते हो कि तुम एक परमात्मा हो। तुम्हें एक अहंकारी होना ही चाहिए।
जब जीसस जीवित थे तो यहूदी इसी प्रकार का अनुभव करते थे। वे यह भी महसूस करते थे कि यह व्यक्ति अपने अहंकार के साथ केवल एक पागल व्यक्ति है। वह क्या कह रहा है- कि वह परमात्मा है अथवा परमात्मा का केवल मात्र वही पुत्र है? स्वयं के लिए इतना अधिक दावा करना। और उन्होनें उनका उपहास किया। वे लोग हँसे और उन्होनें उनका तिरस्कार किया।
और जब उन्होंने जीसस को सलीब पर लटकाया, उनके साथ उनका व्यवहार सामान्य रूप से नासमझी और अज्ञान से भरा हुआ है। उन्होनें उनके सिर पर काँटों का ताज रखा और कहा: "तो तुम यहूदियों के राजा हो, परमात्मा के पुत्र हो, तुम और तुम्हारे पिता एक हैं, जब हम भी तुम्हारे परमात्मा के राज्य में आएँ, हमें याद करना।" उन्होनें उन्हें अपना सलील ढोने के लिए बाध्य किया। वह कमजोर थे और क्रॉस बहुत अधिक भारी था- उन्होंने जानबूझकर उसे बहुत भारी बनाया था और उन्होंने ठीक एक सामान्य अपराधी की भाँति उन्हें अपने सलीब कोढोकर ले जाने के लिए बाध्य किया। और वह प्यास का अनुभव कर रहे थे क्योंकि जहाँ उन्हें सलीब पर लटकाया जाना था, वह एक पहाड़ी थी और वह गोलगोथा पहाड़ी के नाम से जानी जाती थी। वह अपने से बड़े और भारी क्रॉस कोढोते हुए पहाड़ी पर ऊपर चढ़ते हुए पसीने से नहा रहे थे और प्यास का अनुभव कर रहे थे और चारों ओर के लोग उनका तिरस्कार करते हुए उनकी हँसी उड़ा रहे थे और उनके बारे में मजाक करते हुए उन्होंने कहा: "देखो, इस यहूदियों के राजा को देखो। यह व्यक्ति जो यह दावा करता है कि वह परमात्मा का पुत्र है।" केवल उसका मजा लेने को अनेक लोग वहाँ इकटठे हो गए- वह एक तरह से मनोरंजन था, एक खेल था। केवल इस व्यक्ति पर पत्थर फेंकने को वहां पूरा नगर इकट्ठा हो गया था। वे लोग ऐसा प्रतिशोध क्यों ले रहे थे? क्योंकि वे अनुभव करते थे कि इस व्यक्ति ने उनके अहंकार पर चोट की हैं। वह दावा करता था कि वह स्वयं परमात्मा था। वे समझ न सके कि इस व्यक्ति के पास जरा भी अहंकार न था और इसीलिए वह दावा था। वह दावा अहंकार से नहीं आ रहा था, वह दावा सामान्य रूप से एक वास्तविकता थी। जब तुम्हारा अहंकार गिर जाता हैं तो तुम भी एक परमात्मा होते हो।

लेकिन कोई भी व्यक्ति अहंकार से भी दावा कर सकता है। हमारे सभी दावे अहंकार से ही होते हैं, इसलिए हम यह नहीं देख सकते कि कैसे एक व्यक्ति बिना अहंकार के भी दावा कर सकता है। गीता में कृष्ण अर्जुन से कहते हैं-"सभी कुछ छोड़कर मेरे चरणों में आकर मुझे समर्पण कर।" हिंदु लोग इतने अधिक साहसी नहीं हैं और वे बहुत शिष्ट हैं, उन्होनें यह कहीं भी नहीं लिखा कि यह व्यक्ति एक अहंकारी हैं। लेकिन पश्चिम में अनेक लोगों ने वैसा ही समान अनुभव किया जैसा कि जीसस के साथ किया था। इस व्यक्ति का यह कैसा ढंग है जो कहता है-"मेरे चरणों की शरण में आ।" जब कृष्ण अर्जुन से कह रहे हैं-"मेरी चरणों की शरण में आ"- तो हमारे अहंकार वह अनुभव नहीं कर सकते, क्योंकि वहाँ उनके अंदर कोई भी व्यक्ति नहीं है। वह "कोई नहीं" के चरणों में आ रहा है। लेकिन इसे अहंकारी नहीं देख सकते। जो कुछ तुम हो, तुम केवल वही देख सकते हो, जो तुम नहीं हो, तुम उसे नहीं देख सकते।
तुरंत ही उस भिक्षु ने कहा: "और आपके बारे में क्या है?" वह चोट लगने
का अनुभव करता है क्योंकि सद्गुरू ने कहा था-"क्योंकि तुम स्वयं अपने बारे में सोच रहे हो, इसी कारण तुम मार्ग से चूके जा रहे हो- और वह ठीक तुम्हारे सामने हैं।" अब यह व्यक्ति प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहा है। वह सद्गुरू पर भी चोट करना चाहता है। वह कहता हैं।
"आपके बारे में क्या हैं? क्या आप उसे देखते हैं?"

अपने निजी अहंकार के कारण वह चाहता था, वह यह आशा करता था- कि यह व्यक्ति भी कहेगा "हाँ, मैं उसे देखता हूँ" और तब प्रत्येक चीज सरल हो गई होती। यह कह सकता था-"तब आपकी भी अपने मैं के साथ दिलचस्पी है, फिर आप उसे कैसे देख सकते है? आप भी अपने अहंकार से दावे के साथ कह रहे हैं-आप उसे कैसे देख सकते हैं? हम लोग ठीक समान स्थिति में हैं। और वह खुश-खुश चला गया होता, क्योंकि इस व्यक्ति के साथ उसका हिसाब बंद हो गया होता।
लेकिन एक सद्गुरू के साथ तुम अपना हिसाब बंद नहीं कर सकते। वह कभी भी तुम्हारी अपेक्षाओं की पूर्ति नहीं करता है। वह सामान्य रूप से अनुमानों के पार होता है। तुम उसे अपने जाल में नहीं पकड़ सकते हो, क्योंकि वह हमेशा अपने ढ़ंगों को बदल देता है। तुम्हारा मन तुम्हें वह उत्तर नहीं दे सकता, जो वह देने जा रहा है।
सद्गुरू ने कहा: जितनी दूर तक तुम देखते हो, तुम दोनों ओर द्धैत ही देखते हो।
ऐसा मैं नहीं करता और तुम करते हो और करते ही चले जाते हो।
तुम्हारी आँखों में दुविधा और धुंधलापन है।
सद्गुरू ने स्वयं अपने बारे में कोई भी बात नहीं कही है। यदि वहाँ अर्जुन हुआ होता तो उसके सद्गुरू कृष्ण ने कहा होता: हाँ, मैं उसे देखता हूँ- और तू कृपा करके चारों ओर बाहर ही मत घूमता जा और मेरे चरणों की शरण में आ।" लेकिन यह व्यक्ति अर्जुन नहीं था- केवल एक कौतूहल से भरा हुआ व्यक्ति था और वास्तव में उसकी उसमें दिलचस्पी नहीं थी। वह एक प्रश्न नहीं केवल एक समस्या थी। वह किसी भी तरह से अपने को बदलने नहीं जा रहा था। अधिक से अधिक उसके पास थोड़ी-सी अधिक जानकारी होगी और वह थोड़ा-सा अधिक ज्ञानी बन जायेगा।
इसी कारण सद्गुरू कहते हैं-"जितनी दूर तक तुम देखते हो, तुम दोनों और द्वैतता देखते हो" ऐसा मैं नहीं करता। और तुम करते हो और करते ही चले जाते हो। तुम्हारी आँखों में दुविधा और धुंधलापन है:- क्योंकि भिक्षु की आँखों में "मैं" और "तू" की दुविधा हैं। वे एक ही चीज हैं, इसे समझने का प्रयास करो। मैं और तू एक ही सिक्के के दो पहलू हैं: इस ओर "मैं" और उस ओर "तू"। यदि मैं गिरता है, तुम भी गिर जाता है। यदि मैं वहाँ अधिक नहीं रह जाता तो वहाँ तुम भी और अधिक नहीं रहता, क्योंकि जब सिक्का छूटता हैं तो दोनों ही पहलू एकसाथ छूट जाते हैं। मैं- वह एक ध्रुव है। तू-वह दूसरा ध्रुव हैं, वे दोनों गिर जाते हैं अथवा वे दोनों बने रहते हैं। यदि तुम हो, तो तुम्हारे चारों ओर एक भीड़ हैं, "मैं हूँ", "तुम हो" की हजारों लोगों वाली एक भारी भीड़ है, यदि तुम नहीं हो तो पूरी भीड़ विलुप्त हो जाती है जैसे मानो वह केवल रात में देखा गया एक दुःस्वप्न था- वह था- और पूरी तरह से मौन विद्यमान है, जिसमें वहाँ कोई भी विभाजन नहीं हैं, इसका भी नहीं कि कौन व्यक्ति मैं का है और कौन तू का।
इसी कारण ज़ेन के लोग कभी भी परमात्मा के बारे में बात ही नहीं करते, क्योंकि वे कहते हैं; यदि हम परमात्मा के बारे में बात करते हैं, तो हमें "तू" कहना पड़ेगा। बुद्ध ने कभी परमात्मा के बारे में बात नहीं की और उन्होंने कहा- प्रार्थना मत करो, क्योंकि तुम्हारे प्रार्थना करने से विभाजन जारी रहेगा, द्वैतता रहेगी, मैं और तू की द्वैत-दृष्टि बनी रहेगी। वास्तविक शिखर पर भी सूक्ष्म रीतियों से तुम समान बीमारी ढोये चलोगे, तुम कहोगे मैं, तुम कहोगे तू। चाहे कितना भी प्यार हो, तुम कहते हो- वह, विभाजन बना रहता है, और विभाजन के साथ प्रेम संभव नहीं है। यहूदियों के सोचने और जीसस के सोचने के ढंग में यहीं अंतर है।
मार्टिन बूबर ने एक पुस्तक लिखी है- लवन अर्थात मैं और तू। सबसे अधिक गूढ़ यहूदी विचारकों में से वह एक है- लेकिन वह एक विचारक ही बना रहता है। वह रहस्यवाद के बारे में बात कर सकता हैं, लेकिन वह बात भी एक विचारक और दार्शनिक की है क्योंकि बिल्कुल अंत में वह पुराना मैं और तू का विभाजन बनाए रखता है। अब यहाँ इस संसार में तो "तू" नहीं हैं, लेकिन परमात्मा ही "तू" बन गया है, लेकिन पुराना विभाजन बना रहता हैं।
यहूदियों और मुसलमानों ने हमेशा इससे इंकार किया कि तुम परमात्मा के साथ एक हो सकते हो, केवल इस भय के कारण ही कि मैं दावा कर सकता है कि वह

परमात्मा हो गया है। उन्होनें विभाजन को संभालकर बनाए रखा। वे कहते हैं कि तुम उसके निकट से निकट, निकटतम आ सकते हो, लेकिन तुम, "तुम" बने रहोगे और वह, "वह" बना रहेगा। तुम एक मैं बने रहोगे और उसको "तू" की भाँति सम्बोधित करना होगा।

और यही वह मुसीबत थी जो जीसस ने सृजित कर दी थी, क्योंकि उन्होंने कहा था -"स्वर्ग में मैं और मेरे पिता एक हैं।" उन्होनें "मैं" और "तू" का विभाजन गिरा दिया। भारत में मुसलमानों के साथ भी यही मुसीबत बनी रही, वे लोग उपनिषदों को न समझ सके, वे लोग हिंदुओं की इस शिक्षा को नहीं समझ सके कि तुम उसके ही समान हो। मैं को छोड़ दो फिर वह "तू" भी नहीं रह जाता। वास्तव में, अचानक ध्रुव विलुप्त हो जाते हैं और ऊर्जा एक ही रह जाती है। जहाँ मैं मिटता है, वहाँ तू मिटता है, और ऊर्जा एक है।

कभी-कभी गहन प्रेम में झलकें घटित होती हैं जब न तो तुम एक मैं होते हो, और न तुम्हारा प्रेमी अथवा प्रेमिका एक "तू" रह जाता है - लेकिन ऐसा केवल कभी -कभी ही होता है, जो होना बहुत दुर्लभ है। जब दो ऊर्जाएँ पूरी तरह से मिल जाती हैं और तुम विभाजन नहीं खोज सकते कि वे कहाँ विभाजित हैं, वे मिलकर मिश्रित और एक -दूसरे में समाहित होकर एक हो जाती हैं। तुम अनुभव नहीं कर सकते कि सीमा कहाँ हैं और अचानक सीमा भी विलुप्त हो जाती है। इसी कारण प्रेम भय सृजित करता है।

गहन प्रेम, गहन भय सृजित करता है, क्योंकि जब मैं और तू मिटता है तो वह मृत्यु के समान दिखाई देता है - और वह एक तरह की मृत्यु है। और जब तुम मरते हो, केवल तभी तुम दिव्यता में प्रवेश करते हो, लेकिन तब वह दिव्यता भी फिर और अधिक एक परमात्मा भी नहीं रह जाती, तुम उसको सम्बोधित नहीं कर सकते, इसीलिए बौद्ध धर्म में प्रार्थना का अस्तित्व ही नहीं है।

बुद्ध ने कहा था -"तुम प्रार्थना कैसे कर सकते हो, क्योंकि प्रार्थना केवल एक विभाजन के साथ ही करना ही संभव है -मैं प्रार्थना कर रहा हूँ और तू सुन रहा है -फिर तुम कैसे प्रार्थना कर सकते हो?"

बौद्ध धर्म में केवल ध्यान ही अस्तित्व में है। इस अंतर को समझने का प्रयास करो: प्रार्थना, मैं और तू के पुराने विभाजन के साथ जारी रहती है और ध्यान उस विभाजन को गिरा देता है। प्रार्थना अंतिम रूप से ध्यान में ले जाती है। प्रार्थना अंतिम चीज़ नहीं हो सकती है। वह सुंदर है लेकिन वह अंतिम सत्य नहीं है। अंतिम सत्य केवल यही हो सकता है: जब दोनों ही मिट गए हों और केव ! तुम उससे भयभीत हो जाते हो। मैं और तू के सभी सुविधामय विभाजन विलुप्त हो जाते हैं। सभी रिश्ते और संबंध मिट जाते हैं, यह वही भय था, जिससे बूबर भयभीत है। वह भयभीत है कि यदि वहाँ न मैं है और न तू है, तो पूरी दृश्यसता कितनी अधिक भयानक विकराल और भय सृजित करने वाली होगी... क्योंकि कोई भी संबंध जोड़ना संभव ही नहीं है।

संबंध तुम्हें एक घर देते हैं, संबंध तुम्हें सुविधामय होने का अनुभव देते हैं, संबंध तुम्हें कुछ ऐसी चीज़ देते हैं, जो एक विप्लव के समान तो नहीं दिखाई देती है, और जो भय उत्पन्न करने वाली नहीं है। ध्यान को ही अंतिम सत्य होना है क्योंकि प्रार्थना कभी भी अद्वैत में नहीं ले जा सकती - और यह वही है जो सद्गुरू कह रहा है। वह कहता हैं:

जितनी दूर तक तुम देखते हो, तुम दोनों ओर द्वैतता देखते हो।
ऐसा मैं नहीं करता। और तुम करते हो, और करते ही चले जाते हो।
तुम्हारी आँखों में दुविधा और धुँधलापन हैं।

द्वैतता ही वह दुविधा है। विभाजन के द्वारा ही आँखों में धुंध-सी छा जाती है, विभाजन के द्वारा ही आँखों में धूल-धमास होती है और विभाजन के द्वारा ही तुम्हारी आँखों में अस्पष्टता है, उनमें दुविधा और वे गलत अर्थ निकालती हैं। इस विभाजन को गिरा दो और मार्ग वहीं है।

लेकिन एक कौतूहल से भरा हुआ मन आगे बढ़ता ही चला जाता है। उस क्षण वह भिक्षु बुद्धत्व को उपलब्ध हो सकता था, क्योंकि बुद्धत्व और कुछ भी नहीं, बल्कि एक स्पष्टता है, और एक समझ है। ऐसा गहन गूढ़ सत्य -और उसके बीज अंकुरित होने से इसलिए चूकते चले जाते हैं, क्योंकि वह व्यक्ति एक पक्की सड़क की भाँति है, और उस व्यक्ति में ठीक भूमि और मिट्टी नहीं है। उसने फिर कहा:

जब वहाँ न तो मैं हूँ और न आप हैं

क्या कोई एक उसे देख सकता है?
वह पुनः यह आशा और अपेक्षा करेगा। जब कभी तुम किसी व्यक्ति से एक प्रश्न पूँछते हो, तुम्हारे पास पहले से ही एक अपेक्षित उत्तर होता है। यदि वह तुम्हारे अपेक्षित उत्तर के अनुरूप होता हैं, तब तो वह व्यक्ति ठीक है, और यदि वह तुम्हारी आशा के अनुरूप नहीं होता है तो वह व्यक्ति मूर्खतापूर्ण असंगत बात कह रहा है।
मेरे पास अपने अपेक्षित उत्तर के साथ कभी भी मत आओ, क्योंकि यदि तुम्हारे पास पहले ही से उत्तर है, तो इस बारे में पूँछने की कोई जरूरत ही नहीं है। और यही अंतर है- यदि तुम बिना किसी अपेक्षित उत्तर के एक प्रश्न पूँछते हो, तो तुम उत्तर को सुनने में समर्थ हो सकोगे। यदि तुम्हारे पास एक सूक्ष्म थोड़ी-सी भी आशा है कि यह उत्तर मिलने जा रहा है और यदि तुम्हारे मन ने पहले ही तुम्हें उत्तर दे दिया है, तो तुम सुनने में समर्थ न हो सकोगे। तुम सामान्य रूप से उसे इसलिए सुनोगे कि या तो वह तुम्हारे ठीक उत्तर की पुष्टि करे अथवा यह पुष्टि कर दे कि यह व्यक्ति गलत है- लेकिन किसी भी स्थिति में ठीक तुम ही हो।
इस अनुभूति के साथ कभी भी कोई प्रश्न मत पूछो कि तुम ठीक हो। यदि तुम ठीक हो तो इस बारे में पूँछने की कोई जरूरत ही नहीं है। हमेशा प्रश्न एक ऐसी स्थिति के व्यक्ति की भाँति पूछो, जो अज्ञानी हो, वह भली-भाँति जानता हो कि मैं उसका उत्तर नहीं जानता, इसलिए फिर तुम कैसे अपेक्षा कर सकते हो और कैसे तुम एक उत्तर सृजित कर सकते हो? पूर्ण रूप से यह जानते हुए कि मैं नहीं जानता, प्रश्न पूँछो-और तुम एक ठीक भूमि हो, उसमें बीज गिरेंगे और एक बड़ी फसल उगना संभव होगी। उस व्यक्ति ने फिर पूँछा:
जब वहाँ न तो मैं हूँ और न आप हैं
क्या कोई एक उसे देख सकता है?

एक भिक्षु ने नानसेन से पूँछा:
"क्या वहाँ ऐसी कोई सिखावन है
जिस पर इससे पूर्व किसी भी सद्गुरू ने
कभी भी कोई धर्मोपदेश न दिया हो?"

नानसेन ने उत्तर दिया: "हाँ, वह है।"
भिक्षु ने पूँछा: "वह क्या है?"
नानसेन ने उत्तर दिया: "वह मन नहीं है,
वह बुद्ध नहीं है, वह विषय और वस्तु नहीं है।"

और फूलों की बरसात हुई
ग्यारहवां प्रवचन

न मन, न बुद्ध और न विषय वस्तुएं

जागे हुए लोगों की शिक्षाएँ, किसी भी प्रकार से शिक्षाएँ नहीं हैं क्योंकि वे सिखाई नहीं जा सकती- इसलिए कैसे उन्हें शिक्षाएँ अथवा सिखावनें कहकर पुकारा जाए? एक सिखावन वह होती है जो सिखाई जा सकती है। लेकिन कोई भी व्यक्ति तुम्हें सत्य नहीं सिखा सकता। यह असंभव है। तुम उसका ज्ञान प्राप्त कर सकते हो, लेकिन वह सिखाया नहीं जा सकता। उसे सीखना होता है। तुम उसे अवशोषित कर सकते हो, तुम उसे मन में धारण कर सकते हो, तुम एक सद्गुरू के साथ उसे जी सकते हो और उसे घटित होने को स्वीकार कर सकते हो, लेकिन वह सिखलाया नहीं जा सकता। वह एक बहुत अप्रत्यक्ष प्रक्रिया है। सिखाना प्रत्यक्ष रूप से है: कोई बात कही जाती है। सिखाना अप्रत्यक्ष रूप से होता है। किसी बात को कहा नहीं जाता, उस ओर इंगित किया जाता है-वस्तुतः कुछ चीज दिखाई जाती हैं। एक उँगुली सूरज की ओर उठाई गई, लेकिन उँगुली लक्ष्य नहीं हैं, तुम्हें उँगुली को छोड़ना होगा और सूरज की ओर अथवा चन्द्रमा की ओर देखना होगा। एक सद्गुरू सिखाता है लेकिन सिखावन ठीक एक उँगुली से संकेत करने के समान होती हैं, तुम्हें उसे छोड़ देना होता है और उसे देखना होता है जहाँ वह जिस आयाम, जिस दिशा का अथवा उस पार का संकेत करता है।
एक शिक्षक सिखाता है और एक सद्गुरू जीवन जीता है-तुम उसके जीवन से सीख सकते हो, जिस तरह से वह चलता है, जिस तरह से तुम्हारी ओर देखता है, जिस तरह से तुम्हें स्पर्श करता है, वह मार्ग ही होता है। तुम उसे मन में धारण कर सकते हो, तुम उसके घटित होने को स्वीकार कर सकते हो, तुम उपलब्ध बने रह सकते हो, तुम खुले हुए और सहन करने योग्य बन सकते हो। इस बारे में प्रत्यक्ष रूप से कहने का उसे कोई भी उपाय नहीं है, इसी कारण वे लोग जो बहुत विद्वान और बुद्धिमान हैं, वे उससे चूक जाते हैं- क्योंकि वे लोग सीखने का केवल एक ही रास्ता जानते हैं और वह है प्रत्यक्ष रूप से सीखना। वे पूँछते हैं-सत्य क्या है? और वे लोग एक उत्तर पाने की आशा रखते हैं। ऐसा ही तब घटित हुआ जब पोंटियस पाइलेट ने जीसस से पूँछा-"सत्य क्या है?"- और जीसस मौन बने रहे-वे हिले-डुले भी नहीं, जैसे मानो प्रश्न पूंछा ही न गया हो, जैसे मानो पोंटियस पाइलेट वहाँ नहीं था और न वह उनके सामने वहाँ खड़ा हुआ उनसे कुछ पूँछ ही रहा था। जीसस वैसे ही समान बने रहे, जैसे कि वह प्रश्न उठाने से पूर्व थे, कुछ भी नहीं बदला। पोंटियस पाइलेट ने निश्चित रूप से यह सोचा होगा कि यह व्यक्ति थोड़ा-सा पागल है क्योंकि उसने प्रत्यक्ष प्रश्न करते हुए पूँछा था- "सत्य क्या है?" और यह व्यक्ति खामोश बना रहा, जैसे मानो उसने सुना ही न हो।
पोंटियस पाइलेट एक वाइसरॉय था, भली-भाँति शिक्षित, सुसंस्कृत और एक विकसित बुद्धि का व्यक्ति था और जीसस एक अशिक्षित, अविकसित एक बढ़ई के पुत्र थे। यह ऐसे था, जैसे मानो दो विपरीत ध्रुव मिल रहे थे। पोंटियस पाइलेट सारा तत्वज्ञान जानता था, उसने सीखा था और वह सभी धर्मशास्त्रों को जानता था। यह व्यक्ति जीसस पूर्ण रूप से अशिक्षित था और वास्तव में वह कुछ भी नहीं जानता था- अथवा वह केवल "कुछ नहीं" जानता था। पोंटियस पाइलेट के सामने पूर्ण रूप से खामोश खड़े हुए, उसने उत्तर दिया लेकिन वह उत्तर अप्रत्यक्ष था, उसने एक उँगुली ऊपर उठाई। सत्य की ओर उठी हुई वह उँगुली ही पूर्ण मौन था। लेकिन पोंटियस पाइलेट चूक गया। उसने सोचा, यह व्यक्ति पागल है। या तो यह बहरा है और सुन नहीं सकता, अथवा वह एक अज्ञानी है जो नहीं जानता है-और इसी कारण वह खामोश है। लेकिन मौन सत्य की ओर उठी हुई एक उँगुली हो सकती हैं, वह बात बुद्धिवादी पोंटियस पाइलेट के लिए अगम्य थी।
वह चूक गया। वह एक महानतम अवसर था। हो सकता है कि वह तब भी "सत्य क्या है" उसकी खोज में कहीं और भटक रहा हो। उस दिन सत्य उसके सामने खड़ा था। एक क्षण के लिए भी वह मौन हो सका होता? न पूँछते हुए यदि वह जीसस की उपस्थिति में ही बना रहा होता, केवल उन्हें देखते हुए, निरीक्षण करते हुए यदि वह

प्रतीक्षा कर सका होता? वह थोड़ा-सा जीसस को अपने हृदय में धारण कर सका होता? यदि वह जीसस को अपने ऊपर कार्य करने की अनुमति दे सका होता? वहाँ पूरा अवसर था-और जीसस ने उस ओर संकेत भी किया था। लेकिन पोंटियस पाइलेट चूक गया।
जागे हुए लोगों की सिखावन से बुद्धि हमेशा चूक जाएगी, क्योंकि बुद्धि प्रत्यक्ष मार्ग में विश्वास करती है और तुम इस तरह प्रत्यक्ष रास्ते से सत्य पर चोट नहीं कर सकते। यह बहुत सूक्ष्म और नाजुक चीज़ हैं, जितना संभव हो सकता है यह उससे भी अधिक नाजुक है, तुम्हें बहुत सावधानी से गतिशील होना होगा और तुम्हें बहुत अप्रत्यक्ष तरीके से गतिशील होना होगा। तुम्हें उसका अनुभव करना होगा- वह कभी भी बुद्धि के द्वारा न आकर, हृदय के द्वारा आती है। शिक्षा, बुद्धि के द्वारा आती है और सिखावन हृदय के द्वारा घटित होती है।
मेरी इस बात पर बल देने का स्मरण रखना। वह सद्गुरू नहीं है, जो सिखाता है, वह शिष्य ही है जो सीखता है। यह तुम्हारे ऊपर है- सीखो अथवा न सीखो, सिखाना अथवा न सिखाना, यह मेरे ऊपर नहीं है। एक सद्गुरू स्वयं सहायता नहीं कर सकता क्योंकि वह जिस तरह का है, वह सिखाये चले जाता है। उसका प्रत्येक क्षण, उसकी प्रत्येक श्वास एक सिखावन है, उसका पूरा अस्तित्व एक सिखावन और एक संदेश है। संदेश, सद्गुरू से भिन्न नहीं है। यदि वह भिन्न है, तब सद्गुरू सामान्य रूप से शिक्षक है, वह एक सद्गुरू नहीं है, तब वह दूसरों के शब्दों को दोहरा रहा है। तब तक स्वयं जागा हुआ नहीं है, तब उसके पास उधार का ज्ञान है और अपने अंदर वह उतना ही अज्ञानी है, जैसा कि एक छात्र। इस बारे में उनके अस्तित्व में कोई भी अंतर नहीं है केवल उनके ज्ञान में।
एक शिक्षक और छात्र, जहाँ तक उनके अस्तित्व का संबंध है समान तल पर होते हैं, लेकिन जहाँ तक उनके ज्ञान का संबंध है, वे भिन्न होते हैं। शिक्षक कहीं अधिक जानता है और छात्र कम जानता है। किसी दिन छात्र अधिक जानेगा और वह स्वयं एक शिक्षक बन जायेगा। वह अपने शिक्षक से भी अधिक जान सकता है- क्योंकि ज्ञान को संग्रहित करना एक समतल रेखावत होता है। यदि तुम अधिक सूचनाएँ और अधिक ज्ञान इकटठा कर लेते हो तो तुम एक शिक्षक बन सकते हो, लेकिन एक सद्गुरू नहीं।
एक सद्गुरू सत्य ही होता है। वह सत्य के बारे में नहीं जानता है, वह स्वयं सत्य हो गया है, इसलिए वह स्वयं अपनी ही सहायता नहीं कर सकता। यह एक चुनाव नहीं है और यह प्रश्न सिखाने अथवा न सिखाने का नहीं है। यदि वह गहरी नींद में सोया भी है, वह सिखाता चला जाता है। बुद्ध गहन निद्रा में है, तुम पूरी तरह से उनके निकट बस बैठ जाओ, तुम बहुत अधिक सीख सकते हो, तुम बुद्धत्व को उपलब्ध भी हो सकते हो, क्योंकि वह जिस ढंग से सोते हैं वह पूर्ण रूप से भिन्न है। गुण भिन्न है क्योंकि आत्मा भिन्न है। बुद्ध भोजन कर रहे हैं-तुम केवल सावधानी से उनका निरीक्षण करो, और वह एक संदेश दे रहे हैं। वह संदेश पृथक नहीं है, इसी कारण मैं कहता हूँ कि वह स्वयं अपनी ही सहायता नहीं कर सकते। वह भी संदेश है।
तुम यह प्रश्न नहीं पूँछ सकते कि सत्य क्या है? किसी भी तरह से, वह प्रत्यक्ष रूप से इसका उत्तर नहीं देगें। वह हँस सकते हैं अथवा वह तुम्हें एक प्याला चाय भेंट कर सकते हैं, अथवा वह तुम्हारा हाथ थामकर शांत बैठे रह सकते हैं, अथवा वह तुम्हें सुबह जंगल में अपने साथ टहलने के लिए ले जा सकते हैं, अथवा वह कह सकते हैं, "देखो, यह पर्वत कितना सुंदर है?" लेकिन वह जो कुछ भी कर रहे हैं, वह संकेत करने का अप्रत्यक्ष ढंग है- अपने अस्तित्व की ओर संकेत करना।
वह सभी कुछ जो सुंदर है, सत्य है और शुभ है, वह प्रसन्नता के समान है। मैं कहता हूँ-"प्रसन्नता के समान", क्योंकि तुम उसे समझने में समर्थ हो सकते हो। तुमने प्रसन्नता की कोई चीज़ जानी है। यह हो सकता है कि तुम बहुत दुःख में जीते रहे हो, जैसे कि लोग जीते हैं, लेकिन कभी-कभी तुम्हारे स्वयं की ईर्ष्या में भी वह कुछ क्षण ऐसे घटित होते हैं जब प्रसन्नता तुम्हारे अंदर प्रवेश करती है-तुम एक अनजानी शांति और एक अज्ञात आनंद के साथ भर जाते हो, और वे क्षण अचानक ही आते हैं। तुम एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं खोज सकते, जिसके जीवन में उसके पास प्रसन्नता के थोड़े से भी क्षण न हों।

लेकिन क्या तुमने एक चीज़ का निरीक्षण किया है ?- जब कभी वे क्षण आते हैं, वे अप्रत्यक्ष रूप से आते हैं। वे अचानक घटित होते हैं, वे बिना किसी आशा के घटित होते हैं। तुम उनकी प्रतीक्षा नहीं कर रहे थे, तुम कुछ अन्य कार्य कर रहे थे, और अचानक तुम सचेत हो जाते हो। यदि तुम उनके लिए प्रतीक्षा कर रहे हो, उनकी आशा कर रहे हो, तो वे कभी नहीं आते हैं, और यदि तुम प्रत्यक्ष रूप से उनकी खोज में हो, तो तुम चूक जाओगे।

कोई व्यक्ति कहता है -"जब मैं नदी में तैरने के लिए जाता हूँ तो मैं बहुत अधिक प्रसन्नता का अनुभव करता हूँ।" चूँकि तुम भी उसकी खोज में हो, तुम कहते हो, "तब मैं भी चलूंगा", और तुम उसका अनुसरण करते हो। तुम प्रसन्नता की खोज कर रहे हो - तुम्हारा प्रत्यक्ष रूप से तैरने के साथ कोई भी रूचि नहीं हैं, प्रत्यक्ष रूप से तुम्हारी दिलचस्पी प्रसन्नता के साथ है। तैरना तो केवल एक साधन है। तुम घंटों तैरते हो, तुम थक जाते हो। कुछ भी घटित नहीं हो रहा है, आनंद वहाँ नहीं है, और तुम अपने मित्र से कहते हो : "तुमने मुझे धोखा दिया, मैं घंटों तक तैरता रहा, पूरी तरह से थक गया और एक क्षण के लिए भी प्रसन्नता घटित नहीं हुई।"

नहीं, वह घटित नहीं हो सकती। जब तुम तैरने में पूर्ण रूप से इतने अधिक खो जाते हो कि वहाँ कोई भी व्यक्ति नहीं है,- नाव खाली है, वहाँ घर में कोई भी व्यक्ति नहीं है और मेज़बान खामोश है ... । तैरना इतना अधिक गहन हो कि उसमें तैरने वाला खो जाए, और तुम सामान्य रूप में तैरो, तुम नदी के साथ खेलो, सुबह की शीतल बयार और सूरज की कुनकुनी किरणें और तुम पूरी तरह से उनमें खो जाते हो ... और वहाँ प्रसन्नता होती है। किनारे-किनारे तैरना, नदी में चारों ओर तैरना, सारे अस्तित्व में फैल जाना, उछलकर प्रकाश की एक किरण से दूसरी पर जाना और प्रत्येक हवा का झोंका तुम्हें प्रसन्नता में ले जाता है। लेकिन यदि तुम आशा और अपेक्षा करते हो तो तुम चूक जाते हो, क्योंकि आशा तुम्हें भविष्य में ले जाती है और प्रसन्नता वर्तमान में है।
वह किसी सक्रियता का परिणाम नहीं है, वह एक महिमा है, वह एक बाई प्रोडक्ट अर्थात गौण है। तुम उसमें इतनी अधिक गहनता से सम्बद्ध हो जाते हो कि वह घटित होती है।

स्मरण रहे, वह एक परिणाम नहीं है, वह एक महिमा है, एक परिणाम की आशा की जा सकती है। यदि तुम दो रखकर उसमें दो जोड़ दो, तो चार के परिणाम की आशा की जा सकती है, वह दो धन दो में वहाँ जो पहले से ही है, वह बाहर आयेगा। यदि विषय और वस्तुएँ यांत्रिक और गणतीय हैं, तो परिणाम की आशा हो सकती है। लेकिन एक महिमा एक यांत्रिक चीज़ नहीं है, वह एक मार्मिक घटना है। वह केवल तभी घटित है, जब तुम आशा नहीं कर रहे हो। मेहमान तुम्हारे द्वार पर आता है और उसे खटखटाता है, जब तुम मेहमान के बारे में ज़रा भी नहीं सोच रहे थे। और वह हमेशा एक अजनबी के समान आता है, और वह हमेशा तुम्हें आश्चर्यचकित कर देता है। तुम अचानक अनुभव करते हो कि कुछ चीज़ घटित हो गई है, और यदि तुम उस बारे में सोचना शुरू कर देते हो कि यह क्या घटित हो रहा है, तो तुम उससे तुरंत चूक जाओगे। यदि तुम कहते हो : कितना अद्भुत और कितना अधिक सुंदर है, तो वह पहले ही चला जाता है और मन वापस आ जाता है। फिर से तुम उसी दुःख में वापस फेंक दिए जाते हो।

प्रत्येक व्यक्ति को गहनता से सीखना है कि वह सभी कुछ जो सुंदर है वह अप्रत्यक्ष है। तुम उस पर आक्रमण नहीं कर सकते हो, तुम उसके साथ आक्रामक नहीं हो सकते हो, और तुम उसे अस्तित्व से नहीं छीन सकते हो। यदि तुम हिसंक और आक्रामक हो तो तुम उसे नहीं पाओगे।

एक शराबी के समान उसकी ओर बिना यह जाने हुए कि वह कहाँ है और क्यों हैं, आगे बढ़ो। एक ऐसे शराबी की भाँति जो पूरी तरह नशे में अपने को खो चुका है, उसकी ओर आगे बढ़ो।

सारे ध्यान प्रयोग, सूक्ष्म रूप से तुम्हें उस अज्ञात और अलौकिक परमात्मा के शराबी बनाने के सूक्ष्म उपाय हैं, तब तुम वहाँ अपने कार्य करने वाले चेतन मन के साथ और अधिक नहीं रह जाते हो, तब तुम वहाँ आशा नहीं कर रहे होते हो, तब तुम वहाँ भविष्य की योजनाएँ बनाने को नहीं होते हो। तुम नहीं होते हो, और जब तुम नहीं होते हो, तो अचानक तुम पर आनंद के फूल बरसना प्रारम्भ ह
आश्चर्य से भर जाते हो। तुम कभी भी आशा नहीं कर रहे थे, तुम कभी

जानते तक नहीं थे। तुमने कभी भी यह अनुभव नहीं किया था कि तुम किसी भी समय उस योग्य हो- एक अनुग्रह के समान इसी तरह उसका अनुभव होता है, क्योंकि यह कुछ ऐसी चीज नहीं है जिसे तुम लाए हो, यह कुछ ऐसी चीज है, जो घटित हुई है। इसलिए पहली बातः सत्य सीखा नहीं जा सकता, तुम्हें आनंद दिया नहीं जा सकता और बाजार से परमानंद को खरीदा नहीं जा सकता। लेकिन तुम्हारा मन निरंतर उसे पाने, खरीदने, संग्रहीत करने और खोजने की सीमा में सोचता है। तुम्हारा मन कभी भी घटना घटित होने की सीमा में नहीं सोचता, क्योंकि तुम प्रत्येक अन्य चीज को तो नियंत्रित कर सकते हो पर घटना को नियंत्रित नहीं कर सकते।
मैनें सुना है: एक बार एक व्यक्ति अचानक धनी हो गया। निश्चित रूप से
जब ऐसा हुआ तो उसने वे सभी चीज इकटठी कर लीं, जिनकी हमेशा से वह कामना करता रहा था- एक बड़ा घर, एक बड़ी कार, एक तरणताल, और यह तथा वह। और तब उसने अपनी बेटी को कॉलेज भेजा। वह हमेशा से ही बच्चों को शिक्षित बनाना चाहता था लेकिन वह वैसा नहीं कर सका था, और अब वह अपनी सभी कामनाओं को पूरा करना चाहता था, और जो कुछ वह नहीं कर सका था, अब वह चाहता था कि उसके बच्चे वह करें। लेकिन कुछ दिनों बाद ही कॉलेज के डीन ने उसे पत्र लिखा और उसने पत्र में लिखा: " सच तो यह है कि हम आपकी पुत्री को कॉलेज में भर्ती नहीं कर सकते क्योंकि उसके पास सीखने की क्षमता ही नहीं है।"
पिता ने कहा: " केवल क्षमता? फिक्र मत कीजिए। उसके लिए बाजार में जो श्रेष्ठतम क्षमता उपलब्ध होगी, मैं उसे खरीदूगाँ।"
तुम क्षमता या योग्यता को कैसे खरीद सकते हो? लेकिन एक व्यक्ति जो अचानक धनी हो गया है वह केवल खरीदने की सीमा में सोचता है। तुम शक्ति की सीमा में सोचते हो- क्रय करने की शक्ति, किसी भी चीज़ को पाने की शक्ति। स्मरण रहे, सत्य शक्ति के द्वारा नहीं पाया जा सकता, जब तुम विनम्र होते हो, वह तभी आता है। तुम्हें उसके लिए कुछ भी नहीं खरीदना होता, वह खरीदा ही नहीं जा सकता। और यह अच्छा है कि वह खरीदा नहीं जा सकता अन्यथा कोई भी व्यक्ति उसका मूल्य देने में समर्थ न होता। वह सभी कुछ जो तुम्हारे पास है, वह कूड़ा- करकट है। क्योंकि वह खरीदा नहीं जा सकता, इसी कारण जब कभी वह घटित हो सकता है। वह एक उपहार है। वह तुम्हारे साथ परमात्मा की एक सहभागिता है-लेकिन परमात्मा केवल तभी तुम्हें सहभागी बना सकता है जब तुम उसे ऐसा करने की अनुमति दो और उसे स्वीकार करो। इसीलिए मैं कहता हूँ कि तुम उसे सीख सकते हो, लेकिन वह सिखाया नहीं जा सकता।
वास्तव में आध्यात्मिक संसार में वहाँ सद्गुरू नहीं केवल शिष्य होते हैं। वहाँ सद्गुरू होते हैं, लेकिन वे निष्क्रिय, सहनशील और प्रतिरोधी शक्तियों वाले होते हैं। वे कोई भी कार्य नहीं कर सकते, वे केवल वहाँ एक पुष्प के समान होते हैं। यदि कोई भी व्यक्ति नहीं आता है तो भी पुष्प अपनी सुवास शून्यता में फैलाते चले जायेगें। वह स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकता। पूरी बात शिष्य के द्वारा तै की जाती है; कि कैसे सीखता है? एक फूल से कैसे सीखना है? और एक फूल कुछ चीज प्रदर्शित तो करता है लेकिन उसे कहता नहीं है। वह कहा भी नहीं जा सकता। फूल कैसे कह सकता है कि सौन्दर्य क्या होता है- फूल तो बस सुंदर होता है। तुम्हें उससे प्राप्त करना है, लाभ लेना है, उसे आँखों से देखना है, नाक से उसकी गंध लेना है और कानों से उसे सुनना है, क्योंकि जब हवा उससे होकर गुजरती है तो फूल से एक सूक्ष्म ध्वनि आती है, और फूल की धड़कन का अनुभव करने के लिए तुम्हारे पास एक हृदय के होने की आवश्यकता है, क्योंकि वह भी धड़कता है- प्रत्येक जीवित चीज धड़कती है और पूरा अस्तित्व धड़कता है।
तुमने हो सकता है इसका निरीक्षण न किया हो, क्योंकि गहन ध्यान में जाने से पूर्व वह असंभव है। तुम इस वास्तविकता का निरीक्षण नहीं कर सकते कि पूरा विश्व सांस लेता है। और जैसे तुम फैलते और सिकुड़ते हो, पूरा अस्तित्व भी सिकुड़ता और फैलता है। ठीक जैसे तुम श्वास अंदर लेते हो और वह सीने में भर जाती है और जब तुम श्वास बाहर फेंकते हो और वायु बाहर जाती है तो सीना सिकुड़ जाता है, अस्तित्व भी समान लय और ताल से विद्यमान है। पूरा अस्तित्व श्वास लेता है, फैलता है, वह श्वास अंदर लेता है, वह श्वास बाहर

फेंकता है- और यदि तुम अस्तित्व की लय को खोज सकते हो और उसकी ताल के साथ एक हो सकते हो तो तुम उपलब्ध हो गए।
परमानंद, ध्यान और समाधि की पूरी कला ही यह है कि कैसे विश्व की लय के साथ एक हुआ जाए। जब वह श्वास बाहर पेंफकता है तुम भी श्वास बाहर फेंको। जब वह श्वास अंदर लेता है, तुम भी श्वास अंदर लो। तुम उसमें रहते और जीते हो, उससे पृथक नहीं हो और उसके साथ एक हो। यह कठिन है क्योंकि विश्व बहुत विराट है।
एक सद्गुरू लघुरूप में सम्पूर्ण विश्व ही होता है। यदि तुम यह सीख सकते हो कि कैसे सद्गुरू के साथ श्वास अंदर ली जाए, और कैसे सद्गुरू के साथ ही श्वास बाहर फेंकी जाए, यदि तुम पूरी तरह से यह सीख सकते हो, तो तुम सभी कुछ सीख जाओगें।
उस क्षण जब पोंटियस पाइलेट ने पूँछा था- "सत्य क्या है?" यदि उसने शिष्यत्व का "अ", "ब", "स" अर्थात उसकी कुछ प्रारम्भिक बातों में से कोई भी बात जानी होती और अगला कार्य आँखें बंदकर केवल जीसस के साथ श्वास अंदर लेने और उनके ही साथ श्वास बाहर फेंकने का किया होता... केवल जीसस के साथ श्वास लेने और बाहर छोड़ने का। जिस ढ़ंग से वह श्वास अंदर लेते हैं, तुम भी वैसे ही श्वास अंदर लो, और उसी लय में जिस ढंग से वह श्वास बाहर फेंकते हो, तुम भी श्वास बाहर फेंको और उसी लय में- और अचानक वहाँ अद्वैत अथवा एक्य हो जाता है, शिष्य विलुप्त हो गया और सद्गुरू भी विलुप्त हो गया। उस एक होने अर्थात एक्य में तुम जानते हो कि सत्य क्या है, क्योंकि उस एक्य में तुम सद्गुरू का स्वाद लेते हो।
और अब तुम्हारे पास कुंजी है- और स्मरण रहे कि यह किसी को दी नहीं गई है, इसे तुम्हारे द्वारा सीखा गया है। यह तुम्हें दी नहीं गई है, यह तुम्हें दी भी नहीं जा सकती, क्योंकि यह बहुत सूक्ष्म है। और अब इस कुंजी के साथ प्रत्येक ताला खोला जा सकता है। यह कोई साधारण कुंजी न होकर मास्टर कुंजी है- यह केवल एक ही ताला नहीं खोलती, यह सभी ताले खोलती है। अब तुम्हारे पास वह कुंजी है और एक बार यह कुंजी तुम्हारे पास होती है तो पूरे विश्व के साथ तुम इसका उपयोग कर सकते हो।
कबीर ने कहा: "अब मैं कहीं अधिक कठिनाई में हूँ। परमात्मा और मेरे सद्गुरू, पूरा अस्तित्व और मेरे सद्गुरू मेरे सामने खड़े हुए हैं, अब मैं पहले किसके सामने झुकूँ? अब पहले मैं किसके चरणों में गिरूँ? मैं गहरी कठिनाई में हूँ।" और तब वह कहते हैं; परमात्मा! तू मुझे क्षमा कर, मुझे पहले सद्गुरू के चरणों पर ही जाकर गिरना होगा, क्योंकि मुझे उसने ही तुम्हें दिखलाया है। मैं उसके द्वारा ही तुम तक आया हूँ। इसलिए यदि तुम मेरे सामने खड़े हुए हो, तो मुझे क्षमा करना, पहले मुझे सद्गुरू के ही चरणों का स्पर्श करना होगा।
बहुत सुंदर है यह, इसे ऐसा होना ही है, क्योंकि सद्गुरू उस अज्ञात के लिए द्वार बन जाता है, वह पूरे अस्तित्व की कुंजी बन जाता है। वह ही सत्य है।
यह सीखो कि कैसे सद्गुरू की उपस्थिति में बने रहना है, कैसे उसके साथ श्वास लेना है, कैसे मौन बने रहकर उसे अपने अंदर गतिशील होने देना है, कैसे शांति से मौन बने हुए उसके अंदर विलीन हो जाना है, क्योंकि सद्गुरू और कुछ भी नहीं, बल्कि वह परमात्मा ही है, जिसने तुम्हारे द्वार पर खटखटाया। वह सघन हुआ पूरा अस्तित्व ही है। प्रश्न मत पूँछो, उसके साथ जीओ।
अब इस कथा में प्रवेश करने का प्रयास करो-यह बहुत छोटी है, लेकिन बहुत महत्वपूर्ण है।
एक भिक्षु ने नानसेन से पूँछा: "क्या वहाँ ऐसी कोई सिखावन है, जिस पर इससे पूर्व किसी भी सद्गुरू ने कभी भी कोई धर्मोपदेश न दिया हो?"
जो कुछ भी धर्मापदेश दिया गया है, वह सिखावन अथवा शिक्षा नहीं है, सच्ची सिखावन कभी भी धर्मोपदेश में दी ही नहीं गई। उसे कहा नहीं जा सकता। बुद्ध ने महाकाश्यप से कहा: "सभी दूसरे लोगों से मैनें वही कहा है, जो कहा जा सकता था, और तुम्हें मैं वह देता हूँ जो कहा नहीं जा सकता, जो बताया नहीं जा सकता। अब दो हजार वर्षों से बुद्ध के अनुसरणकर्त्ता, बार-बार और हर बार यह पूँछते रहे हैं कि महाकाश्यप को क्या दिया गया? महाकाश्यप को

ऐसा क्या दिया गया, वह कौन-सी सिखावन थी जिसे बुद्ध ने कभी भी किसी व्यक्ति को नहीं बताई थी, जिसके बारे में बुद्ध ने भी कहा कि वह बताई अथवा कहीं नहीं जा सकती, शब्द उसे वहन करने में समर्थ न होगें।
शब्द इतने अधिक संकीर्ण हैं कि उनमें सत्य की विराटता को बने रहने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता- और वे इतने अधिक छिछले है कि वे गहराई को कैसे वहन कर सकते हैं? यह ठीक इस तरह है कि सागर की एक लहर सागर की गहराई को कैसे वहन कर सकती है? वह कर ही नहीं सकती। चीजों के वास्तविक स्वभाव के द्वारा वह असंभव है, क्योंकि यदि एक लहर अस्तित्व में है तो उसे परिधि पर ही बने रहना है। लहर गहराई तक नहीं जा सकती क्योंकि यदि वह गहराई तक जाती है तो फिर वह और अधिक एक लहर नहीं रह जाती। लहरें केवल हवाओं के साथ स्पर्श में ही अस्तित्व में मौजूद रहती हैं, उन्हें सतह पर ही होना होता है और वे गहराई में नहीं जा सकती और गहराई लहर तक नहीं आ सकती, क्योंकि जिस क्षण वह सतह तक आती है, वह और अधिक गहराई न रहकर स्वयं एक लहर ही बन जाती है।
यही समस्या है। सत्य ही केन्द्र है और शब्द सतह अथवा परिधि पर रहते हैं, जहाँ हवा और सागर मिलते हैं, जहाँ लोग मिलते हैं, जहाँ प्रश्न और उत्तर मिलते हैं, जहाँ सद्गुरू और शिष्य मिलते हैं, शब्द केवल वहाँ परिधि पर मौजूद रहते हैं।
इसलिए क्या किया जाए? वह सभी कुछ जो कहा जा सकता है वह केवल कामचलाऊ होगा, वह सत्य नहीं होगा, वह असत्य भी न होगा और वह ठीक मध्य में होगा- और वह बहुत खतरनाक है, क्योंकि यदि शिष्य सद्गुरू के साथ एकतान में होकर नहीं रहा हैं, तो वह उसे गलत समझेगा। यदि वह सद्गुरू के साथ एकतान होकर रहा है, केवल तभी वह उसे समझेगा, क्योंकि तब वहाँ एक संबंध और सम्पर्क मौजूद होता है।
समझ एक तीक्ष्ण बुद्धि का प्रश्न नहीं है, समझ एक प्रश्न है एक गहन सम्पर्क और संवाद का। समझ एक विचार-शक्ति का, बुद्धि और तर्क का प्रश्न नहीं है। समझ एक प्रश्न है गहन सहानुभूति का अथवा दूसरे व्यक्ति की योग्यता और अनुभवों को जानकर उन स्थितियों से होकर गुजरने का, इसलिए मुख्य महत्व है आस्था और श्रद्धा का। समझ आस्था के द्वारा ही घटित होती है। समझ घटित होती है आस्था के द्वारा, क्योंकि आस्था में ही तुम भरोसा करने लगते हो, भरोसा करने में तुम सहानुभूतिपूर्ण हो जाते हो, भरोसे में ही सम्पर्क करना संभव होता है, क्योंकि तब तुम सुरक्षात्मक नहीं होते हो, इसलिए तुम द्वार खुले छोड़ देते हो।
इस भिक्षु ने नानसेन से पूँछा:" क्या वहाँ ऐसी कोई सिखावन है जिस पर इससे पूर्व किसी भी सद्गुरू ने कभी भी कोई भी धर्मोपदेश न दिया हो?"
हाँ, वहाँ एक सिखावन है; वास्तव में वहाँ प्रत्येक सिखावन है जिस पर इससे पूर्व किसी भी सद्गुरू ने कभी कोई धर्मोपदेश नहीं दिया है। तब सद्गुरू क्यों धर्मोपदेश दिए चले जाते हैं? ऐसा क्यों है कि बुद्ध चालीस वर्षों तक बोलते ही रहे? मैं क्यों बोले चला जाता हूँ, चाहे तुम उसे ध्यान से सुनो अथवा नहीं? फिर वे क्यों बोलते हैं? यदि वह जिसे सीखना ही नहीं कहा जा सकता है। तब वे क्यों बोलते चले जाते हैं? बातें करना केवल एक जाल फैलाने जैसा है। बातचीत करने के द्वारा तुम जाल में फँस जाते हो, तुम अन्य कोई बात नहीं समझ सकते हो। बातचीत करना बच्चों को मिठाई देने जैसा है। तब वे तुम्हारे पास आना शुरू करते हैं, वे आनंदित होते हुए बेखबर होते हैं और प्रयोजन बातचीत का नहीं होता है। आनंदित रूप से बेखबर होते हुए वे मिठाइयों के लिए आते हैं, वे खिलौनों के साथ खुश हैं। लेकिन सद्गुरू जानता है कि एक बार वे आना शुरू करते हैं, तो धीमे-धीमे खिलौने पृथक किए जा सकते हैं और धीमे-धीमे वे बिना खिलौनों के ही सद्गुरू से प्रेम करना शुरू कर देंगे- और एक बार ऐसा हो जाता है तो शब्द छोड़े जा सकते हैं।
जब कभी भी एक शिष्य तैयार होता है, तो शब्दों को छोड़ा जा सकता है। वे केवल तुम्हें निकट लाने का एक उपाय हैं, क्योंकि सिवाय शब्दों के तुम कोई भी चीज नहीं समझ सकते हो। यदि कोई व्यक्ति बोलता है, तो तुम समझते हो, यदि कोई व्यक्ति मौन रहता है तो तुम नहीं समझ सकते। तुम क्या समझोगे? मौन तुम्हारे लिए केवल एक दीवार है, तुम उसमें अपना मार्ग नहीं खोज सकते हो। और मौन अपने साथ एक गहन भय भी लिए चलता है क्योंकि वह मृत्यु के समान होता

है। शब्द जीवन के समान होते हैं और मौन मृत्यु के समान होता है। यदि कोई व्यक्ति मौन है तो तुम भयभीत होना शुरू हो जाते हो और यदि कोई व्यक्ति मौन में बने रहे चला जाता है तो तुम वहाँ से भाग जाने का प्रयास करोगे, क्योंकि वह बहुत अधिक और तुम्हारे लिए बहुत बड़ा बोझ बन जाता है। क्यों?-क्योंकि तुम मौन नहीं बने रह सकते और यदि तुम मौन बने नहीं रह सकते हो, तो तुम मौन को नहीं समझ सकते। तुम्हारे अंदर एक बंदर बैठा हुआ है, वह निरंतर खों- खों करते हुए शोर कर रहा है। किसी व्यक्ति ने मनुष्य को परिभाषित किया है कि वह और कुछ भी नहीं है बल्कि अहंकारपूर्ण सैद्धांन्तिक दर्शन के साथ एक बंदर ही है। और वह दर्शन और सिद्धांत और कुछ भी न होकर, बल्कि अधिक व्यवस्थित और अधिक तर्कपूर्ण ढंग से बकवास किए जाने का एक अच्छा उपाय है। एक सद्गुरू को तुम्हें निकट लाने के लिए बातचीत करनी ही होती है। तुम जितने अधिक निकट आते हो, वह उतना अधिक शब्दों को छोड़ देगा। एक बार तुम उसके मौन की पकड़ में आ जाते हो, तो फिर वहाँ बातचीत करने की कोई भी जरूरत नहीं है। एक बार तुम जान जाते हो कि मौन क्या होता है, एक बार तुम मौन हो जाते हो, एक नया सम्पर्क अस्तित्व में आता है। अब बातें बिना कहे ही कही जा सकती हैं, बिना भेजे हुए भी संदेश दिए जा सकते हैं। बिना उसको उन्हें दिए तुम उनको प्राप्त कर सकते हो। अब शिष्यत्व की दृश्यसत्ता घटित होती है। संसार की सबसे अधिक सुंदर घटनाओं में से शिष्य बनना एक है, क्योंकि अब तुम जानते हो कि सम्बंध और सम्पर्क क्या होता है। अब तुम सद्गुरू के ही साथ श्वास लेते हो वायु को अंदर खींचते हो और उसे बाहर फेंकते हो, अब तुम सीमाओं को खो देते हो और उसके साथ एक हो जाते हो। अब उसके हृदय की कुछ चीज तुम्हारी ओर प्रवाहित होनी शुरू हो जाती है, और अब उसकी कुछ चीज तुम्हारे अंदर आ जाती है।
एक भिक्षु ने नानसेन से पूँछा:- क्या वहाँ ऐसी कोई सिखावन है, जिस पर इससे पूर्व, किसी भी सद्गुरू ने कभी भी कोई भी धर्मोपदेश न दिया हो? नानसेन, ज़ेन के सबसे अधिक प्रसिद्ध सद्गुरूओं में से एक है। उसके बारे में अनेक कहानियाँ कही जाती है। उनमें से एक, मैं तुम्हें कई बार बता चुका हूँ। मैं उसे फिर दोहराऊँगा, क्योंकि इस तरह की कहानियों को बार-बार दोहराना पड़ता है जिससे तुम उन्हें अपने हृदय में धारण कर सको। वे एक तरह का पौष्टिक आहार है। तुम्हें प्रतिदिन पौष्टिक आहार लेना होता है, और तुम यह नहीं कहते-"कल सुबह मैंने नाश्ता लिया था और अब इस बारे में उसकी कोई भी जरूरत नहीं है। प्रत्येक दिन तुम्हें भोजन करना होता है; तुम यह नहीं कहते- "कल मैंने भोजन लिया था, अब उसकी क्या जरूरत है?"
ये कहानियाँ एक पौष्टिक आहार है। इसके बारे में भारत में एक विशिष्ट शब्द मौजूद है, उसका अंग्रेजी में अनुवाद नहीं किया जा सकता। अंग्रेजी में "पढ़ना" शब्द विद्यमान है, भारत में इसके लिए हमारे पास दो शब्द हैं; एक का अर्थ है पढ़ना अथवा अध्ययन करना और दूसरे का अर्थ है एक ही चीज का बार-बार पाठ करना। तुम एक ही समान चीज का बार-बार पाठ करते हो, वह एक भाग के समान है। प्रत्येक दिन सुबह तुम गीता का पाठ करते हो, तब यह उसका पढ़ना नहीं है, क्योंकि तुम्हें उसका अनेक बार पाठ करना होता है। अब यह एक तरह का पौष्टिक भोजन है। तुम उसे पढ़ते नहीं, तुम प्रतिदिन उसका भोजन करते हो।
यह भी एक महान प्रयोग है, क्योंकि प्रतिदिन तुम उनमें नये अर्थों के उतार-चढ़ाव पाओगे और प्रतिदिन अर्थों में बहुत सूक्ष्म अंतर और अनुभूतियाँ पाओगे। एक ही पुस्तक के समान शब्द है लेकिन प्रत्येक दिन तुम अनुभव करोगे कि तुम्हारे सामने कुछ नई गहराइयाँ खुल गई हैं। प्रतिदिन तुम महसूस करोगे जैसे तुम कुछ नई चीज पढ़ रहे हो, क्योंकि गीता अथवा इसी तरह की धर्मग्रंथों के पास एक गहराई है। यदि तुम्हें एक बार ही पढ़ते हो, तो तुम केवल परिधि पर घूमोगे, यदि तुम उसे दूसरी बार पढ़ते हो तो थोड़ी अधिक गहराई पाओगे और तीसरी बार पढ़ने पर, तुम गहराई में उतरते चले जाते हो। एक हजार बार पढ़ोगे, और तब तुम समझोगे कि तुम इन ग्रंथों से कभी थक नहीं सकते, यह असंभव है। तुम जितने अधिक सजग और सचेत होते हो, तुम्हारी चेतना उतनी ही अधिक गहराई तक विकसित होती है- यही इसका अर्थ है।
नानसेन की इस कथा को मैं फिर दोहराऊँगा। एक दर्शनशास्त्र का प्रोफेसर उसके पास आया...- दर्शनशास्त्र अथवा तत्वज्ञान एक बीमारी है, और वह एक

कैंसर के समान है, अभी तक उसकी कोई भी दवा मौजूद नहीं है, तुम्हें आपरेशन से होकर गुजरना होता है, और एक बड़े आपरेशन की जरूरत होती है। कैंसर के बढ़ने और फैलने के समान पि़्ाफलासफी भी विकसित होकर बढ़ती है और फैलती है। यह एक बार तुम्हारे अंदर हो जाती है तो यह स्वयं विकसित होती है और यह तुम्हारी सभी ऊर्जाओं को सोख लेती है। यह एक परजीवी अर्थात एक पैरासाइट है। तुम दुर्बल और अधिक दुर्बल होते चले जाते हो और वह शक्तिशाली से भी शक्तिशाली हो जाती है। प्रत्येक शब्द, दूसरे शब्द का सृजन करता है और वह अनंत तक जा सकती है।
तो एक पि़्ाफलासफर नानसेन के पास आया। नानसेन एक छोटी- सी पहाड़ी पर रहता था, और जब वह दार्शनिक पहाड़ी के ऊपर आया तो वह थककर पसीने से नहा रहा था। जिस क्षण उसने नानसेन की झोपड़ी में प्रवेश किया, उसने पूँछा-"सत्य क्या है?"
नानसेन ने कहा: "सत्य थोड़ी-सी प्रतीक्षा कर सकता है। इस बारे में शीघ्रता करने की कोई जरूरत नहीं है। ठीक अभी आपको एक प्याले चाय की आवश्यकता है, क्योंकि आप इतने अधिक थक गए हैं।" नानसेन अंदर गया और उसने एक कप चाय तैयार की।
यह केवल एक जेन सद्गुरू के ही साथ ही हो सकता है। भारत में तुम यह सोच
भी नहीं सकते कि शंकराचार्य तुम्हारे लिए चाय तैयार कर रहे हैं। तुम्हारे लिए- और शंकराचार्य चाय बनायें? असंभव है। अथवा जरा सोचो, महावीर तुम्हारे लिए चाय बना रहे हैं... यह मूर्खतापूर्ण और असंगत बात है।
लेकिन एक जेन सद्गुरू के साथ यह हो सकता है। उनका पूर्णरूप से भिन्न दृष्टिकोण है। वे जीवन से प्रेम करते हैं। वे जीवन विरोधी नहीं है। वे जीवन को स्वीकार करते हैं और वे उसके विरूद्ध नहीं हैं। और वे सामान्य लोग हैं, और वे कहते हैं कि सामान्य बने रहना ही सबसे बड़ी असामान्य बात है। वे लोग वास्तव में एक सरल सामान्य जीवन जीते हैं। जब मैं कहता हूँ- वास्तव में एक सरल और सामान्य जीवन, तो मेरा अर्थ आरोपित सरलता और सामान्यता से नहीं है। भारत में तुम चारों ओर ऐसे ढ़ोंगी खोज सकते हो जो प्रभावित करने के लिए सरलता ओढ़े हुए हैं। वे नग्न और पूर्ण रूप से नग्न भी हो सकते हैं लेकिन वे सरल सामान्य नहीं है और उनकी नग्नता बहुत जटिल है। उनकी नग्नता एक बच्चे की नग्नता नहीं हैं, उन्होनें उसे उत्पन्न कर विकसित करने का प्रयास किया है और प्रयास से विकसित की गई चीज कैसे सरल और सामान्य हो सकती है? उन्होनें इसके लिए स्वयं को अनुशासित किया है, और एक अनुशासित चीज कैसे सरल हो सकती है? वह बहुत अधिक जटिल है।
तुम्हारे वस्त्र उतने अधिक जटिल और पेचीदा नहीं हैं जितनी कि एक दिगम्बर जैन मुनि की नग्नता है। उसने अनेक वर्षों तक उसके लिए संघर्ष किया है। उन लोगों के पास पाँच कदम हैं, तुम्हें प्रत्येक कदम को धीमे- धीमे पूरा करना होता है, और तब तुम नग्नता को उपलब्ध होते हो। यह एक कार्यसिद्धि है और एक कार्यसिद्धि सरल और सामान्य कैसे हो सकती है? यदि तुम उसके लिए कई वर्षों तक कार्य करते हो, यदि तुम उसे पाने का प्रत्येक प्रयास करते हो, तो वह सरल और सामान्य कैसे हो सकती है? एक सरल और सामान्य चीज तो अभी और यहीं तुरंत ही प्राप्त की जा सकती है और उसके लिए वहाँ कार्य करने की कोई आवश्यकता ही नहीं है।
नग्नता जब सहज और सामान्य होती है तो वह एक प्रभावशाली और गौरवमय घटना होती है; तुम सामान्य रूप से वस्त्र छोड़ देते हो। ऐसा महावीर के साथ घटित हुआ-वह बहुत सहज और सामान्य था। जब उन्होनें घर छोड़ा तो वह एक शाल ओढ़े हुए थे; तब एक गुलाब की झाड़ी से गुजरते हुए उनका शाल काँटों में उलझ गया इसलिए उन्होंने सोचा कि यह शाम का समय है और गुलाब का झाड़ सोने जा रहा है और उसे हटाने से वह अव्यवस्थित हो जाएगा। इसलिए शॉल का आधा भाग जो काँटों में उलझा था, उसे फाड़कर उन्होनें उसे वहीं छोड़ दिया। वह शाम का समय था और उनकी चेष्टा सुंदर थी। वह उन्होनें नग्न होने के लिए नहीं किया था, वह गुलाब की झाड़ी के लिए किया था और अगली सुबह उनके पास आधा शाल बचा था और वह आधे नंगे थे, एक भिखारी ने उनसे कुछ चीज माँगी- और उनके पास देने को अन्य कुछ भी न था। "न" कैसे कहा जाए, जब तुम्हारे पास देने को फिर भी कुछ चीज अर्थात आधा शाल बचा हो इसलिए उन्होनें उसे भिखारी को दे दिया। इस नग्नता

में श्रेष्ठता जैसी कुछ चीज है, जो सहज और सामान्य है। उसका अभ्यास वहीं किया गया था। वह घटित हुई थी। लेकिन एक जेन मुनि उसका अभ्यास करता है। ज़ेन भिक्षु बहुत सहज और सामान्य लोग है। वे एक सामान्य जीवन जीते हैं, जैसे कि अन्य प्रत्येक व्यक्ति जीता है।
वे कोई भी अंतर नहीं बनाते, क्योंकि सभी अंतर मूलरूप से अहंकारपूर्ण हैं। और इस खेल को तुम कई तरह से खेल सकते हो, लेकिन खेल तुम्हारी अपेक्षा अधिक ऊँचा पर समान बना रहता है। खेल वही बना रहता है; मेरे पास अधिक धन है, मैं तुम्हारी अपेक्षा अधिक उच्च हूँ, मैं अधिक शिक्षित हूँ, मैं तुम्हारी अपेक्षा अधिक ऊँचा हूँ, मैं अधिक पवित्र हूँ, और मैं तुम्हारी अपेक्षा उच्च हूँ, मैं अधिक धार्मिक हूँ, मैं तुम्हारी अपेक्षा उच्च हूँ, और मैंने कहीं अधिक त्याग किया है और मैं तुम्हारी अपेक्षा उच्च हूँ।
नानसेन अंदर गया, चाय तैयार की, बाहर आया और प्रोफेसर के हाथ में प्याला दिया और अपनी केतली से उसमें चाय उड़ेली। प्याला पूरा भर गया। उस क्षण तक प्रोफेसर ने प्रतीक्षा की, क्योंकि उस क्षण तक प्रत्येक चीज उचित थीः एक थका हुआ व्यक्ति आता है, तुम उसके लिए करूणा का अनुभव करते हो और तुम चाय तैयार करते हो। वास्तव में वह वैसा ही था जैसा होना चाहिए था। तब तुम प्याले को भरते हो, वह भी ठीक है। लेकिन तभी कुछ असंगत चीज घटित हुई। नानसेन चाय उड़ेलता चला गया, प्याले में से चाय छलक रही थी। तब प्रोफेसर को थोड़ा-सा आश्चर्य हुआ। यह व्यक्ति क्या कर रहा है? लेकिन तब भी उसने प्रतीक्षा की। वह भली-भाँति एक अनुशासित व्यक्ति था, वह इस तरह की छोटी चीजों को सहन कर सकता था। हो सकता है वह थोड़ा- लेकिन तब प्याले के नीचे रखी तश्तरी भी चाय से पूरी भर गई थी और नानसेन चाय उड़ेलता जा रहा था।
अब यह बहुत अधिक हो चुका था। अब कुछ चीज की जानी थी, क्योंकि अब चाय छलक कर फर्श पर गिर रही थी। उसने चीखते हुए कहा: "रूकिए। यह आप क्या कर रहे हैं? अब इस प्याले में और अधिक चाय नहीं आ सकती। क्या आप यह साधारण-सी चीज भी नहीं देख सकते? क्या आप पागल हो गए हैं?"
नानसेन ने हँसना शुरू कर दिया और कहा:" यही है वह बात जो मैं सोच रहा था। क्या आप पागल हैं- क्योंकि आप यह तो देख सकते हैं कि प्याला पूरा भरा हुआ है और उसमें अब एक और बूंद भी नहीं आ सकती, लेकिन आप यह नहीं देख सकते कि आपका मन और बुद्धि भी पूरे भरे हुए हैं और उसमें सत्य की एक और बूंद भी नहीं समा सकती। आपकी बुद्धि का प्याला पूरा भरा हुआ है और आपकी प्लेट भी भरी हुई है और प्रत्येक चीज फर्श पर बह रही है। ज़रा देखिए, आपका तत्वज्ञान मेरी झोपड़ी में चारों ओर बिखरा पड़ा है और आप उसे नहीं देख सकते। लेकिन आप एक बुद्धिमान व्यक्ति हैं, जो कम-से-कम चाय को तो देख सके। अब दूसरी चीज को भी देखिए।"
इस नानसेन ने अनेक लोगों की भिन्न-भिन्न उपायों से जागने में सहायता
की और उसने लोगों को जगाने के लिए अनेक तरह की स्थितियाँ सृजित की।
एक भिक्षु ने नानसेन से पूँछा: क्या वहाँ ऐसी कोई सिखावन है, जिस पर इससे पूर्व किसी भी सद्गुरू ने कभी भी कोई धर्मोपदेश न दिया हो?
नानसेन ने उत्तर दिया:"हाँ, वह है।" भिक्षु ने पूछा: "वह क्या है?" नानसेन ने उत्तर दिया: "वह मन नहीं है, वह बुद्ध नहीं है, वह विषय और वस्तु नहीं है।"
अब यदि किसी भी सद्गुरू ने उसे कभी भी न कहा हो, तो नानसेन उसे कैसे कह सकता है? प्रश्नकर्त्ता मूर्ख है, जो एक मूर्खतापूर्ण प्रश्न पूँछ रहा है। यदि किसी भी व्यक्ति ने उसे नहीं कहा है, तो नानसेन उसे कैसे कह सकता है? यदि सभी बुद्ध भी उसके बारे में मौन रहे हैं, यदि बुद्धों ने एक शब्द का भी उच्चारण नहीं किया है और उसे नहीं कहा जा सका, तब नानसेन उसे कैसे कह सकता है? लेकिन नानसेन ने इस मूर्ख व्यक्ति की भी सहायता करनी चाही।
और इस स्थान में चारों ओर मूर्ख व्यक्ति ही हैं, क्योंकि यदि तुम बुद्धत्व को उपलब्ध नहीं हो जाते, तो तुम मूर्ख ही बने रहते हो। इसलिए मूर्खता एक तिरस्कार नहीं है, वह केवल एक स्थिति और वास्तविकता है। एक व्यक्ति जो बुद्धत्व को उपलब्ध नहीं है, मूर्ख ही बना रहेगा- इस बारे में कोई अन्य उपाय नहीं है। और यदि वह स्वयं को बुद्धिमान होने का अनुभव करता

है, तब वह और अधिक मूर्ख है। यदि वह अनुभव करता है कि वह मूर्ख है, तब प्रज्ञा का प्रारम्भ हो गया है और तब उसका जागना प्रारम्भ हो गया है। यदि तुम अनुभव करते हो कि तुम अज्ञानी हो, तब तुम मूर्ख नहीं हो। यदि तुम अनुभव करते हो कि तुम जानते हो तो तुम पूर्ण रूप से मूर्ख हो-न केवल मूर्ख हो बल्कि तुम भूमि के अंदर इतने अधिक धँसे हुए हो कि उससे बाहर आने की वहाँ कोई भी संभावना प्रतीत नहीं होती है।
नानसेन इस मूर्ख व्यक्ति की सहायता करना चाहता है क्योंकि इस बारे में अन्य दूसरे लोग नहीं हैं, इसी कारण वह बोलता है और वह उत्तर देता है। लेकिन उसे सभी नकारात्मक अथवा निषेधी शब्दों का प्रयोग करना होता है, वह कुछ भी स्पष्ट और सुनिश्चित नहीं कहता है। वह तीन नकारात्मक शब्दों का प्रयोग करता है। वह कहता है।
वह मन नहीं है, वह बुद्ध नहीं है
वह विषय और वस्तु भी नहीं है।
तुम सत्य को तो नहीं कह सकते लेकिन जो नहीं हैं, तुम वह कह सकते हो। तुम नहीं कह सकते कि वह क्या है लेकिन तुम नकारात्मक रूप से उसका संकेत दे सकते हो। नकार के द्वारा वह कहा जा रहा है, जो वह नहीं है। सभी सद्गुरूओं ने यही सब कुछ किया है। यदि तुम आग्रह करते हो कि वे कुछ बात कहें, तो वे कुछ नकारात्मक बात कहेगें। यदि तुम उनके मौन को समझ सकते हो, तो तुम स्पष्ट और सुनिश्चित सत्य को समझ सकते हो। यदि तुम उनके मौन को नहीं समझ सकते हो, और शब्दों के लिए आग्रह करते हो, तो वे कुछ नकारात्मक बात कहेगें। इसे समझो: शब्द नकारात्मक कार्य कर सकते हैं और मौन सुनिश्चित कार्य
कर सकता है। मौन सबसे अधिक सुनिश्चित और स्पष्ट चीज़ है और भाषा सबसे अधिक नकारात्मक है। जब तुम बोल रहे हो तो तुम स्पष्टता में गतिशील हो रहे हो और जब तुम मौन बने रहते हो तो तुम स्पष्टता में गतिशील हो रहे हो। सत्य क्या है? उपनिषदों से पूँछो: कुरान, बाईबिल और गीता से पूछो: वे सभी कहते है- वह क्या नहीं है परमात्मा क्या है? वे सभी कहते हैं-वह क्या नहीं है?
वह तीन चीजों से इन्कार करते हैं- वह विषय-वस्तुएँ नहीं है अर्थात वह संसार नहीं है, यह वह नहीं है जिसे तुम देखते हो, यह वह नहीं है जो तुम्हारे चारों ओर है। यह वह नहीं है जिसे तुम मन के द्वारा देख सकते हो, वह विषय और वस्तुएँ नहीं है। और दूसरा- वह मन नहीं है, वह कार्य करने वाली चेतना नहीं है, न तो तुम्हारे चारों ओर का यह संसार और न यह मन जो तुम्हारे अंदर है। नहीं, ये दो चीजें सिखावनें नहीं हैं, और न वे सत्य हैं।
लेकिन तीसरी चीज, केवल बुद्धों ने उससे इन्कार किया है, केवल पूर्ण सद्गुरूओं ने ही इन्कार किया है, और तीसरी चीज है: वह बुद्ध नहीं है।
और बुद्ध क्या है?
तुम्हारे चारों ओर पहली सीमा है- वस्तुओं का संसार। वस्तुएँ पहली सीमा हैं, विचार दूसरी सीमा हैं- निश्चित रूप से वह निकट है, तुम्हारे निकटतम है। तुम एक ही केन्द्र से तीन वृत खींच सकते है: पहला बड़ा वृत्त है- वस्तुओं का संसार, दूसरा बीच वाला घेरा है- विचारों का संसार, और तब रह जाता है तीसरा वृत और बुद्ध ने उससे भी इन्कार किया है- स्वयं का व्यक्तित्व, साक्षी, आत्मा, चेतना, बुद्ध। केवल गौतम बुद्ध उससे भी इन्कार करते हैं।
उसे सभी दूसरों ने भी जाना है: उसे जीसस जानते हैं, उसे कृष्ण जानते हैं, लेकिन वे उससे इन्कार नहीं करते, क्योंकि वह तुम्हारे समझने के लिए बहुत अधिक हो जाएगा। इसलिए वे दो चीजों से इन्कार करते हैं: वे कहते हैं कि यह संसार एक माया है, एक भ्रांति है और वह मन जो इस संसार को देखता है, वह भी एक भ्रांति है। मन और संसार एक ही चीजें हैं, वे समान सिक्के के दो पहलू हैं। मन स्वप्न सृजित करता है, सपना एक भ्रांति है और उसका स्त्रोत मन भी एक भ्रांति है। लेकिन वे कहते हैं कि वह तीसरा है- साक्षी होना। अपनी गहन चेतना में जहाँ केवल तुम एक साक्षी होते हो, एक विचारक नहीं होते, जहाँ विचारों का कोई भी अस्तित्व नहीं होता, न कोई वस्तु होती है केवल तुम होते हो- वे लोग इससे इन्कार नहीं करते। बुद्ध ने इससे भी इन्कार किया है।
वह कहते हैं: "न संसार, न मन और न आत्मा"। यह सर्वोच्च सिखावन है- क्योंकि यदि वस्तुएँ नहीं हैं, तो विचार कैसे हो सकते हैं? यदि विचार नहीं

हैं तो तुम उनके साक्षी कैसे हो सकते हो? यदि संसार एक माया है, तब मन जो इस संसार की ओर देखता है, सत्य नहीं हो सकता है। मन एक भ्रांति है। तब साक्षी, जो मन की ओर देखता है, वह भी सत्य कैसे हो सकता है? बुद्ध अस्तित्व के गहनतम केन्द्र तक जाते हैं। वह कहते है: वह सभी कुछ जो तुम हो, वह असत्य है - तुम्हारी वस्तुएं तुम्हारे विचार और तुम सभी असत्य हो।

लेकिन ये तीन नकार हैं। बुद्ध का मार्ग, नकारात्मक मार्ग है, उनके वक्तव्य नकारात्मक हैं। इसी कारण हिंदू उन्हें नास्तिक कहते हैं, वे उन्हें परमात्मा में विश्वास न करने वाला पूर्ण रूप से एक शून्यवादी कहते हैं। लेकिन वह ऐसे हैं नहीं। जब इन तीनों चीजों से इन्कार कर दिया गया, तो जो रह जाता हैं वह सत्य है। जब वस्तुएँ विलुप्त हो जाती हैं, विचार मिट जाते हैं और साक्षी होना भी मिट जाता है - जब वे तीनों चीजें जिन्हें तुम जानते हो विलुप्त हो जाती हैं, तो जो बच रहता है, वही सत्य है। और वह जो रह जाता है, वही मुक्त करता है, वह जो रह जाता है, वही निर्वाण अथवा बुद्धत्व है।

बुद्ध बहुत-बहुत गहन हैं। उसके कहने में उनकी अपेक्षा कोई भी व्यक्ति इतनी अधिक गहराई में नहीं गया है। बहुत से लोग सारभूत सत्य तक तो पहुँच गए हैं, लेकिन बुद्ध ने उसे कहने में भी पूर्ण-कुशल होने का प्रयास किया। वह कभी भी एक भी सुनिश्चित बात नहीं कहते हैं। यदि तुम किसी स्पष्टता के बारे में पूँछते हो तो वह पूर्ण रूप से मौन बने रहते हैं। वह कभी नहीं कहते कि परमात्मा है, वह कभी नहीं कहते कि आत्मा है, वास्तव में वह कभी भी "है" शब्द का प्रयोग ही नहीं करते। तुम पूँछो और वह "नहीं" शब्द का प्रयोग करेंगे। प्रत्येक चीज के लिए उनका उत्तर "न" है। और यदि तुम समझ सकते हो, यदि तुम उनके सम्पर्क का अनुभव कर सकते हो, तो तुम देखोगे कि वह ठीक हैं।

जब तुम प्रत्येक चीज से इन्कार करते हो, तो उसका यह अर्थ नहीं है कि तुमने प्रत्येक चीज को मिटा दिया है। इसका केवल यह अर्थ है कि वह संसार जो तुमने सृजित किया था, वह तुमने मिटा दिया है। जो सत्य है वह बना रहता है क्योंकि सत्य से इन्कार नहीं किया जा सकता। लेकिन तुम उसे कह नहीं सकते हो। तुम उसे जानते हो, लेकिन तुम उसे बता नहीं सकते हो। जब तुम इन सभी तीनों से इन्कार करते हो, जब तुम इन तीनों के पार चले जाते हो, तुम एक बुद्ध हो जाते हो। तुम बुद्धत्व को उपलब्ध हो गए हो।

बुद्ध कहते हैं कि जब ये तीनों मूर्च्छाएँ अर्थात निद्राएँ टूटती हैं, केवल तुम तभी जागते हो। एक निद्रा वस्तुओं के साथ अचेत हो जाने की है, अनेक लोग वहाँ सोये हुए हैं। यह सबसे अधिक स्थूल नींद है। लाखों करोड़ों लोग, अठानवें प्रतिशत लोग इस बारे में सोये हुए हैं-यह पहली और स्थूलतम नींद हैं। यह नींद वस्तुओं के साथ है। एक व्यक्ति अपनी बैंक में जमा धनराशि के बारे में सोचता चला जाता है, कोई अन्य व्यक्ति अपने घर के बारे, अपने कपड़ों के बारे में अथवा इसके और उसके बारे में सोचता चला जाता है और वह उन्हीं म केवल वस्तुओं के सूचीपत्रों को ही पढ़ते रहते हैं ़ ़ ़ ़ ़ ़

मैंने एक कहानी सुनी है: एक धार्मिक व्यक्ति रात भर के लिए एक परिवार में ठहरा हुआ था। सुबह होते ही, जैसी कि उसकी आदत थी, उसने बाइबिल के थोड़े-से भाग को पढ़ने के साथ एक छोटी-सी प्रार्थना करनी चाही। उस घर का छोटा बच्चा उस कमरे से होकर गुजर रहा था, इसलिए उसने बच्चे से पूँछा और उस पुस्तक को लाने को कहा-क्योंकि उसने सोचा कि हो सकता है कि बच्चा यह न समझ सके कि कौन-सी पुस्तक लाना है, इसलिए उसने उससे कहा- "वह पुस्तक ले आओ जिसे तुम्हारी मम्मी रोज पढ़ा करती हैं।" बच्चे ने पूरी पृथ्वी भर की सभी वस्तुओं की सूची की पुस्तक लाकर दी, क्योंकि उसकी मम्मी प्रतिदिन, यही वह पुस्तक थी जिसे पढ़ती रहती थीं।

उनमें से अट्ठानवे प्रतिशत लोग वस्तुओं के बारे में सोए हुए हैं। खोजने का प्रयास करो कि तुम कहाँ सोए हुए हो, क्योंकि कार्य वहीं से प्रारम्भ करना है। यदि तुम वस्तुओं के साथ सोये हुए हो, तो तुम्हें वहीं से प्रारम्भ करना होगा। वस्तुओं के साथ की उस नींद को छोड़ दो।

लोग वस्तुओं के बारे में क्यों सोचते चले जाते हैं? मैं कलकत्ते में जिस घर में ठहरा करता था, वहाँ रहने वाली स्त्री के पास अनिवार्य रूप से कम से-कम एक हजार साड़ियाँ तो होना ही चाहिए थीं, और प्रत्येक दिन उसके लिए यह

एक समस्या होती है... जब मैं उसके पति के साथ वहाँ कार में बैठा होता, तो उसका पति पत्नी को बुलाने के लिए कार का भोपूं बजाये चले जाता और वह कहती- "बस, मैं आ रही हूँ"- और उसके लिए यह निर्णय करना कठिन था कि कौन-सी साड़ी पहिनी जाए। इसलिए मैनें उससे पूँछा: "प्रतिदिन, यह आपके लिए एक समस्या क्यों होती हैं?"

इसीलिए वह मुझे अपने कमरे में ले गई और वहाँ टंगी अपनी साड़ियों को मुझे दिखाते हुए कहा-" आप भी उलझन में पड़ गए होगें। मेरे पास एक हजार साड़ियाँ हैं और यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि किसे चुना जाए, कौन-सी इस अवसर के लिए उचित और ठीक होगी?"
क्या तुमने लोगों को देखा है? शुरू होते ही वे अपनी कार की सफाई करना शुरू कर देते हैं, जैसे मानो वह उनकी बाइबिल हो और उनका परमात्मा हो। "वस्तुएं," सबसे अधिक स्थूल हैं, यह पहली नींद है। यदि तुम वस्तुओं के साथ बहुत अधिक आसक्त हो और निरंतर वस्तुओं के बारे में ही सोच रहे हो, तो तुम वहाँ सोये हुए हो। तुम्हें उससे बाहर आना होगा। तुम्हें यह देखना होगा कि तुम्हारे पास किस तरह की आसक्ति है, तुम कहाँ चिपके हुए हो और आखिर किसके लिए? तुम वहाँ से क्या प्राप्त करने जा रहे हो?
तुम अपनी वस्तुओं में वृद्धि कर सकते हो, तुम एक विशाल साम्राज्य इकट्ठा कर सकते हो, लेकिन जब तुम मरते हो, तो तुम वस्तुओं के बिना ही जाओगे। मृत्यु तुम्हें तुम्हारी नींद से बाहर लाएगी? मृत्यु जो भी करती है, उससे पूर्व अच्छा यही है कि तुम स्वयं को उससे बाहर लाओं? तब मृत्यु में वहाँ कोई भी पीड़ा नहीं होगी। मृत्यु इतनी अधिक पीड़ादायक होती है, इस कारण इस पहली नींद को तोड़ना है, क्योंकि तुम्हें वस्तुओं से अपने को खींचकर अलग कर लेना हैं।
तब वहाँ दूसरी नींद है, मन की नींद। इस बारे में ऐसे लोग भी हैं जिनकी वस्तुओं के साथ कोई भी दिलचस्पी नहीं होती है- केवल एक प्रतिशत लोग ऐसे होते हैं जिनकी वस्तुओं में कोई भी अभिरूचि नहीं होती है और जिनका संबंध मन के साथ होता है। वे लोग यह फिक्र नहीं करते कि वे किस तरह के वस्त्रों का प्रयोग करते हैं। सामान्य रूप से ये लोग कलाकार, उपन्यासकार, कवि अथवा चित्रकार होते हैं, जो वस्तुओं के बारे में फिक्र नहीं करते हैं और वे मन में जीते हैं। वे लोग भूखे और नंगे रह सकते हैं, वे एक झोपड़ी में रह सकते हैं, चले जाते हैं। जो उपन्सास वे लिख रहे हैं़़़़़़और वे सोचते चले जाते हैं कि मैं तो अमर नहीं हो सकता हूं, लेकिन मेरा उपन्यास जो मैं लिखने जा रहा हूं वह अमर होने जा रहा है, वह चित्र जो मैं बना रहा हूँ, वह अमर होने जा रहा है। लेकिन जब तुम अमर नहीं हो सकते, तो तुम्हारा चित्र कैसे अमर बन सकता हैं? जब तुम्हें विनष्ट होना है, जब तुम्हें मरना है, तो प्रत्येक चीज जो तुम सृजित करते हो वह भी मरेगी, क्योंकि यह कैसे संभव है कि मृत्यु से किसी शाश्वत चीज का जन्म हो सकता है?
तब इस स्थान में ऐसे लोग भी हैं, जो दर्शनशास्त्र के विचारों के बारे में सोचे चले जाते हैं और वे वस्तुओं को भुलाकर उनके बारे में अधिक चिंतित नहीं हैं।
एक बार ऐसा हुआ: इमेनुअल अपनी क्लास लेने के लिए कॉलेज आ रहा था। वह समय का पूर्ण पाबन्द था, वह कभी भी एक भी बार नियत समय पर अनुपस्थित नहीं होता था और न कभी भी देरी से आता था। वह बिल्कुल ठीक समय पर क्लास में प्रवेश करता। उसने कभी भी अपने वस्त्रों के बारे में, अपने घर अथवा भोजन अथवा किसी भी चीज के बारे में कभी भी कोई फिक्र नहीं की। उसने कभी भी विवाह नहीं किया, क्योंकि वह कोई बड़ी समस्या नहीं थी, केवल एक सेवक से ही उसका काम चल जाता। वह भोजन बना सकता था और घर की देखभाल भी कर सकता था। उसने कभी भी एक पत्नी की अथवा किसी अन्य व्यक्ति की जो घनिष्ट हो अथवा एक मित्र हो, जरूरत महसूस नहीं की। जहाँ तक सांसारिक वस्तुओं का संबंध था उसके लिए एक सेवक ही ठीक था। वह सेवक वास्तव में स्वामी था, क्योंकि वह ही प्रत्येक वस्तु खरीदता, वही उसके धन की, घर की और प्रत्येक बात की देखभाल करता। इमेनुअल कांट उस घर में एक अजनबी के समान रहता था। यह कहा जाता है कि उसने घर की ओर कभी नहीं देखा। वह यह भी नहीं जानता था कि घर में कितने कमरे

गिर जाती है, तुम्हारा वस्तुओं के साथ का सम्मोहन टूट जाता है। वस्तुएँ विलुप्त नहीं होती हैं, इसके विपरित वस्तुएँ जैसी वे हैं, पहली बार वे वैसी ही प्रतीत होती हैं। तब तुम उनके साथ लिपटते या बँधते नहीं हो, उन पर सम्मोहित नहीं होते, तब तुम अपनी कामनाओं में, अपनी आशाओं और निराशाओं में उनको कोई आकृति नहीं देते हो- नहीं। तब तुम्हारी कामनाओं को प्रक्षेपित करने के लिए संसार एक स्क्रिन नहीं होता। जब तुम्हारी कामनाएँ छूट जाती हैं, तो संसार तो वहाँ होता है, लेकिन वह पूर्ण रूप से एक भिन्न संसार होता है। वह बहुत ताजगी से भरा हुआ बहुत रंगीन और सुंदर होता है। लेकिन एक मन जो वस्तुओं के प्रति आसक्त है, उसे नहीं देख सकता, क्योंकि आँखें आसक्ति के साथ बंद हो जाती हैं। एक पूर्ण रूप से भिन्न संसार का उदय होता है।
जब मन विसर्जित हो जाता है, तो विचार विलुप्त हो जाते हैं। ऐसा नहीं
है कि तुम बुद्धिहीन बन जाते हो, इसके विपरित तुम होशपूर्ण बन जाते हो। बुद्ध लाखों बार इस "सम्यक सचेतनता" का प्रयोग करते हैं। जब मन विसर्जित हो जाता है और विचार विलुप्त हो जाते हैं तो तुम होशपूर्ण हो जाते हो। तुम सभी कार्य करते हो, तुम चलते हो, तुम काम करते हो, तुम भोजन करते हो, तुम सोते हो, लेकिन तुम हमेशा सचेत होते हो। मन वहाँ नहीं होता, लेकिन वहाँ सचेतनता होती है। यह होशपूर्ण होना क्या है? यह सचेतनता है। यह पूर्ण सजगता और सचेतनता है।
और जब आत्मभाव अथवा वैयक्तिकता, अंहकार, और आत्मन् विलुप्त होता है
तो क्या होता है? ऐसा नहीं होता कि तुम खो जाते हो या तुम और अधिक नहीं होते हो- नहीं, इसके विपरित तुम पहली बार ही होते हो। लेकिन अब तुम अस्तित्व से पृथक नहीं हो। अब तुम एक द्वीप नहीं रह गए हो, तुम पूरा महाद्वीप बन गए हो, तुम अस्तित्व के साथ एक हो गए हो।
लेकिन वे सुनिश्चित और विधायक चीजें हैं- उन्हें कहा नहीं जा सकता। इसीलिए नानसेन ने कहा: "हाँ, वहाँ ऐसी सिखावन या शिक्षा है, जिस पर किसी भी सद्गुरू ने कभी भी उपदेश नहीं दिया, क्योंकि उसको उपदेश में नहीं कहा जा सकता और वह सिखावन है:
वह मन नहीं है, वह बुद्ध नहीं है,
वह विषय और वस्तु भी नहीं है।
वह सिखावन है शून्यता, वह शिक्षा परिपूर्ण अस्तित्वहीनता अर्थात शून्यता ही है। और जब तुम नहीं हो, तो अचानक पूरा अस्तित्व तुम पर फूलों की वर्षा करना प्रारम्भ कर देता है। जब तुम नहीं होते हो तो अस्तित्व का सम्पूर्ण परमानंद तुमसे मिलकर एक जैसा हो जाता हैं।
जब तुम नहीं हो, तो पूरा अस्तित्व उत्सव, आनंद और समारोह मनाने जैसा अनुभव करता है और तुम पर पुष्प बरसते हैं। वे अभी तक नहीं बरसे हैं, क्योंकि तुम मौजूद हो और वे तब तक नहीं बरसेंगे, जब तक तुम मिट नहीं जाते। जब तुम और नहीं रह गए हो, तुम एक शून्यता हो गए हो, एक अस्तित्वहीनता बन गए हो कि अचानक वे बरसना प्रारम्भ हो जाते हैं। वे बुद्ध पर बरसे हैं, सुभूति पर और नानसेन पर बरसे हैं और वे तुम पर भी बरस सकते हैं, वे प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे द्वार खटखटा रहे हैं। वे बरसने को तैयार हैं। ठीक जिस क्षण तुम शून्य होते हो, वे तुम पर बरसना प्रारम्भ हो जायेंगें।
इसलिए इसका स्मरण रहे: अंतिम मुक्ति तुम्हारी मुक्ति नहीं है, अंतिम मुक्ति तुमसे अलग है। बुद्धत्व तुम्हारा नहीं हैं, हो भी नहीं सकता है। जब तुम नहीं हो, तो वह वहाँ है। अपनी समग्रता में तुम स्वयं को छोड़ दो, वस्तुओं के संसार विचारों के संसार और आत्म के संसार की इन तीनों पर्तों को छोड़ दो। इस त्रिमूर्ति को छोड़ दो, इस त्रिमूर्ति के इन तीनों चेहरों को गिरा दो, क्योंकि यदि तुम वहाँ हो तब केवल एक नहीं हो सकता। यदि तुम वहाँ हो तो केवल एक कैसे हो सकता है?
सभी तीन को विलुप्त हो जाने दो- परमात्मा, पवित्र-आत्मा, और परमात्मा
के पुत्र को ब्रह्मा, विष्णु और महेश, सभी तीन को। इन सभी को छोड़ दो। उन्हें विलुप्त हो जाने दो। कोई नहीं रहता है और तब वहाँ प्रत्येक चीज होती हैं।
जब कुछ नहीं होता है तो सभी कुछ होता है।
तुम पर सभी पुष्प बरसाना प्रारम्भ कर देते हैं।

{
□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□